श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ
महाजन पदावली
— आदि-सम्पादक —
श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति के प्रतिष्ठाता-आचार्य
ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद् भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज

|| श्रीश्रीगुरु-गौरांगौ-जयतः ||

श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ

(महाजन-पदावली)

गौड़ीय गोष्ठीपति जगद्‌गुरु ॐ विष्णुपाद परमहंसस्वामी श्रीश्रीमद्
भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद के नित्यसिद्ध-परिकर

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति एवं तदन्तर्गत भारतव्यापी श्रीगौड़ीय मठों के
प्रतिष्ठाता-आचार्य, गौड़ीय-आचार्य-केसरी,
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज
जी के प्रियतम शिष्य

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति के प्राक्तन सभापति-आचार्य
श्रीकृष्णचैतन्याम्नाय एकादशाधस्तनान्वयवर परमहंस
परिव्राजकाचार्यवर्य नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद् भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज
जी के कृपा-आशीर्वाद से प्रकाशित

श्रीसमिति के वर्तमान आचार्य,
त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त पर्यटक गोस्वामी महाराज

प्रकाशक— त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त सागर महाराज (हरिद्वार)

सम्पादक— हृषीकेश दास

द्वितीय संस्करण—

अक्षय-तृतीया। श्रीजगन्नाथ देव की चंदन यात्रा।
श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति का 75वां स्थापना दिवस।
7 वैशाख, श्रीचैतन्याब्द 529
मंगलवार, 21 अप्रैल, 2015

ग्रन्थ-प्राप्ति स्थान—

(1) श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ— तेघरीपाड़ा, नवद्वीप, नदीया (पश्चिम बंग)।
(2) श्रीभक्तिवेदान्त गौड़ीय मठ— संन्यास रोड, कनखल, हरिद्वार। 09410731806
(3) श्रीगोवर्धन गौड़ीय मठ— आन्योर परिक्रमा मार्ग, दानघाटी, गोवर्धन (उ.प्र.)।
(4) श्रीगोपीनाथजी गौड़ीय मठ— रानापत घाट, सेवाकुँज, वृन्दावन। 09997810369
(5) इमलीतला महाप्रभु मन्दिर— परिक्रमा मार्ग, सेवाकुँज, वृन्दावन (उत्तर प्रदेश)।
(6) श्रीदाउजी गौड़ीय मठ— कैलाश मार्ग, पो: दाउजी (मथुरा) (उत्तर प्रदेश)।
(7) श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ— कंसटीला, मथुरा (उत्तर प्रदेश)।
(8) श्रीरूप सनातन गौड़ीय मठ— दानगली, वृन्दावन (उत्तर प्रदेश)।
(9) श्रीगौर-गोविन्द गौड़ीय सेवाश्रम— 58, तालकटोरा, जयपुर (राजस्थान)।
(10) श्रीविनोदबिहारी गौड़ीय मठ— 28, हालदार बागान लेन, कोलकाता–4
(11) श्रीउद्धारण गौड़ीय मठ— चौमाथा, पो: चुँचुड़ा, हुगली (पश्चिम बंग)।
(12) श्रीनिमाई-तीर्थ गौड़ीय मठ— 1/1 निमाई तीर्थ रोड़, पो: वेद्यवाटी, हुगली (प० बंग)।
(13) श्रीनृसिंहपल्ली सेवाश्रम— नृसिंहपल्ली, मायापुर (पश्चिम बंग)।
(14) श्रीनरोत्तम गौड़ीय मठ— पश्चिम खागड़ाबाड़ी, कूचबिहार (पश्चिम बंग)।
(15) श्रीकृतिरत्न गौड़ीय मठ— श्रीचैतन्य एविनिउ, दुर्गापुर–5, वर्द्धमान (पश्चिम बंग)।
(16) श्रीनीलाचल गौड़ीय मठ— स्वर्ग द्वार, पुरी (उड़ीसा)।
(17) श्रीगोपालजी गौड़ीय प्रचार केन्द्र— पा: रान्दियाहाट, बालेश्वर (उड़ीसा)।
(18) श्रीगालोकगंज गौड़ीय मठ— पो: गोलोकगंज, धुबड़ी (आसाम)।
(19) श्रीशिलचर गौड़ीय मठ— नैशनल हाइवे रोड़, शिलचर–12 (आसाम)।
(20) श्रीकेशव गोस्वामी गौड़ीय मठ— शक्तिगढ़, शिलिगुड़ी, दार्जलिंग (प० बंगाल)।
(21) श्रीश्यामसुन्दर गौड़ीय मठ— मिलनपल्ली, शिलिगुड़ी, दार्जलिंग (प० बंगाल)।
(22) श्रीगोविन्दजी गौड़ीय मठ— रेलवे स्टोर गेट, पाण्डु गौहाटी–12 (आसाम)।
(23) श्रीमेघालय गौड़ीय मठ— पो: तुरा, वैस्ट गारो हिल्स, मेघालय।
(24) श्रीभक्तिविनोद आसन— 31/9 पंचकूला (हरियाणा)। 09855259775

For more information :
WhatsApp : 09888576874
E-mail : hrishikesh.dasa@gmail.com

समर्पण

परम करुणामय एवं अहैतुक कृपालु

अस्मदीय परम–गुरुपादपद्म जगद्गुरु

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री

श्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज जी

के प्रियतम शिष्य व उनकी ही कृपा के अभिन्न स्वरूप

श्रील गुरुपादपद्म

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री

श्रीमद् भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

जी की प्रेरणा से यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है।

उनकी ही वस्तु उन्हीं के श्रीकर कमलों में

सादर समर्पित है।

प्रथम संस्करण के प्रथम खण्ड में निवेदन

"श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ" का प्रथम खण्ड वर्तमान में प्रकाशित हुआ है। इसमें केवल महाजनों की पदावली का सन्निवेश किया गया है। साहित्य जगत में अनेक प्रकार की काव्यमोदी कविताओं और गीतियों का मुद्रण देखा जाता है। पाठशाला और उच्च-शिक्षा क्षेत्र में इसका प्रचुर प्रचलन है। 'गौड़ीय-गीतिगुच्छ' उनसे बिल्कुल अलग है। काव्य-रस के छन्दों द्वारा प्राकृत रस के रसिकजन आमोदित (आनन्दित) होते हैं, किन्तु विशुद्ध गौड़ीय-वैष्णवगण इस श्रेणी की कविता का पाठ कर हृदय में वेदना का अनुभव करते हैं। हमारा यह 'गीतिगुच्छ' उनके हृदय में शान्ति प्रदान करेगा। स्त्री-पुरुष के क्रियाकलाप, प्रकृति का नैसर्गिक नृत्य, पार्थिव आबहवा आदि को लक्ष्य करके जिन समस्त कविताओं या गीतों की रचना होती है, वह अप्राकृत या मायातीत धारणा के विरुद्ध होती है। जो वास्तव मंगलकामी हैं, वे प्राकृत कवियों के काव्य से कभी भी विमुग्द्ध नहीं होते। कवि और साहित्यकारों की लेखनी जीव को माया-मोहित करके चिरकाल तक अध:पतित करती है। उनमें मुक्ति का अनुसंधान करने की प्रवृत्ति तक जन्म नहीं लेती। किन्तु यह 'गीतिगुच्छ' सब विषयों में सुन्दर भाव से गुम्फित हुआ है। जो कवित्व के पक्षपाती हैं, वे भी इसका पाठ और कीर्तन कर प्रचुर आनन्द प्राप्त करेंगे।

श्रीमन् महाप्रभु ने **"कीर्तनीयः सदा हरिः"**—इस मन्त्र में दीक्षित होने के लिए सबको उपदेश किया है। शास्त्रों में भी देखते हैं,—**"कलौ तद्धरिकीर्तनात्।"** अन्यान्य युगों में ध्यान, यजन (यज्ञ), परिचर्या आदि के द्वारा जो अप्राकृत तत्त्व का सान्निध्य और सेवा लाभ होती है, वह कलियुग में कीर्तन के द्वारा ही प्राप्त होगी। वह कीर्तन क्या है, इसकी चर्चा करना आवश्यक है। हम इस प्रसंग में दृढ़ता से कहना चाहते हैं कि,—इस 'गीतिगुच्छ' के गीत-समूह ही पर-जगत के एकमात्र सहायक हैं। जिन समस्त महाजनों के पद इस 'गीतिगुच्छ' में गुम्फित हुए हैं, उनमें से कोई भी प्राकृत (जागतिक) कवि नहीं है। अतः उनकी कविता और काव्य के सहित पृथ्वी के किसी भी कवि की तुलना नहीं होगी। वर्तमान जगत में रवीन्द्रनाथ की कविताओं का विशेष प्रचार देखा जाता है। उनकी कविताओं की अपेक्षा यह कविताएँ अनेक गुणा श्रेष्ठ हैं। निर्विशेष-निराकार चिन्ता-स्रोत को अवलम्बन करके कविता रचित होने से उनका विशेषत्व किस प्रकार रहेगा? रवीन्द्रनाथ ब्राह्म-चिन्ता-स्रोत से भरपूर हैं। उन्होंने दो-एक स्थानों पर, वैष्णव-महाजनों की कविताओं का अनुसरण करने की चेष्टा की है, किन्तु वह भावधारा रवीन्द्रनाथ को स्पर्श नहीं कर सकी। ऐसा कि, उन्होंने सनातन-धर्मावलम्बिगण की सेवा-पूजा आदि के प्रति यथेष्ट कटाक्ष किया है। साधारण भाषा में उनको हिन्दु-विरोधी भी कहना अत्युक्ति नहीं होगी। हमारा यह 'गीतिगुच्छ' उनके समस्त मतवाद का खण्डन करेगा।

गाने-बजाने को शास्त्रों में 'तौर्यत्रिक' कहा

गया है। यह विलास–वासना के अन्तर्गत है। किन्तु यह 'गीतिगुच्छ' विलास–वासना के अन्तर्गत नहीं है। इसमें 'सुर', 'ताल', 'लय', 'मान' आदि संयुक्त होने पर भी इसमें कोई विलास–वासना का प्रसंग नहीं है। इसका सुर–ताल आदि के बिना पाठ होने पर भी सर्वतोभाव से मंगल लाभ किया जायेगा। श्रील जीव गोस्वामी कहते हैं—"**ओष्ठ–स्पन्दनमात्रेण कीर्तनन्तु ततो वरम्।**" होंठो का स्पन्दन होने पर ही कीर्तन होगा। अर्थात् सुर के बिना पाठ करने पर भी कीर्तन का समस्त फल पूर्ण रूप से लाभ होगा। सब समय महाजन–पदों का ही कीर्तन होना आवश्यक है। "**सर्वक्षण बल इथे विधि नाहि आर।**" (हमेशा बोलो इसमें और कोई विधि नहीं है)—श्रीमन् महाप्रभु की यह शिक्षा गीतिगुच्छ में प्रदत्त है। शास्त्र कहते हैं,—'नाम, रूप, गुण और लीला एक ही वस्तु हैं'। 'सर्वदा नाम–कीर्तन' कहने पर नाम के सहित भगवान् के रूप, गुण और लीला को भी समझना होगा। अतः सर्वदा ही यह 'गीतिगुच्छ', श्रवणीय, कीर्तनीय और स्मरणीय है।

गाने–बजाने में एक विशेष इन्द्रिय–तर्पण है। वह श्रवणकारी (श्रोता) के लिये कर्ण–रसायन होता है। साधारण लोगों का कर्ण–रसायन करने के लिये हम 'गीतिगुच्छ' का प्रकाश नहीं कर रहे हैं। समस्त इन्द्रियाँ, यदि भोगोन्मुखी न होकर सेवोन्मुखी होंगी, तो ही हमारा वास्तविक मंगल होगा। यह ग्रन्थ हम लोगों को निश्चय ही सेवोन्मुखी करेगा। जगद्गुरु श्रील प्रभुपाद जी ने—"गाने का अधिकारी कौन है?"—शीर्षक नाम से एक प्रबन्ध लिखा है। श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति

के मुखपत्र मासिक ''श्रीगौड़ीय पत्रिका'' के तृतीय वर्ष, चतुर्थ संख्या में वह प्रकाशित हुआ था। मैं सभी को उस प्रबन्ध का पाठ करने का अनुरोध करता हूँ। उसका पाठ करने से साधारण गान और भजन-गीति में अन्तर को समझ पायेंगे। आत्म-मंगल के इच्छुक व्यक्ति ही कीर्तन करेंगे। पर-मुग्धकारी (दूसरे को खुश करने वाले) व्यक्ति गाने के अधिकारी नहीं हैं। लेकिन स्वजातियाशय-स्निग्ध साधकगण (एक ही श्रेणी के साधक) परस्पर मंगलेच्छु होकर इसका श्रवण-कीर्तन करेंगे।

महाजनों ने कीर्तन का स्तर निरूपण किया है। भक्तों में जिस प्रकार कनिष्ठ-मध्यम-उत्तम के भेद से तीन श्रेणियों को देखा जाता है, महाजनों की पदावली में भी उक्त तीन प्रकार की श्रेणी के भक्तों के लिये ही पद रचित हुये हैं। हम साधारणतः कनिष्ठ और मध्यम-अधिकारी साधक के लिये ही इस 'गीतिगुच्छ' को प्रकाशित कर रहे हैं। उत्तम-अधिकारी महाजनों के द्वारा कीर्तित गीति हम साधारण रूप से प्रकाशित करने की इच्छा नहीं करते। तथापि उससे सम्बन्धित दो-एक कविताएँ भी इसमें सन्निवेशित नहीं हुई हैं, ऐसा नहीं है। पाठक, कीर्तनीयागण इसका विचार करते हुए पाठ और कीर्तन करेंगे।

इस ग्रन्थ में गीतियाँ, क्रमानुसार श्रीगुरु-तत्त्व, श्रीवैष्णव-तत्त्व, श्रीव्यास-तत्त्व, श्रीगदाधर-तत्त्व, श्रीअद्वैत-तत्त्व, श्रीनित्यानन्द-तत्त्व, श्रीगौर-तत्त्व, श्रीराधागोविन्द-तत्त्व नाम से संगृहीत हुई हैं। जब जो जिस तत्त्व के संबंध में कीर्तन करेंगे, उस तत्त्व का शीर्षक देखकर या सूची पत्र

देखकर कीर्तन करेंगे। * * * इस ग्रन्थ की चर्चा करने वाले भक्तवृन्द इसका पाठ और कीर्तन कर भोगोन्मुखी वृत्ति से निवृत्ति लाभ करें और भगवत्-सेवा में प्रतिष्ठित हों, यही प्रार्थनीय है। इति—

श्रीश्रीगौर-जयन्ती फाल्गुनी-पुर्णिमा
30 गोविन्द, 471 गौराब्द
(16 मार्च, 1957)

श्रीभक्तिप्रज्ञान केशव
सम्पादक

प्रथम संस्करण के द्वितीय खण्ड में निवेदन

विगत 1363 वर्ष के द्वितीय चैत्र को ''श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ''-ग्रन्थ का प्रथम खण्ड मुद्रित हुआ था। विभिन्न प्रकार की असुविधाओं के चलते, द्वितीय खण्ड के प्रकाशन में इतना विलम्ब हुआ। इस खण्ड में श्रील भक्तिविनोद ठाकुर द्वारा रचित गीतावलि, शरणागति, यामुन भावावली, कल्याण कल्पतरु, साधक कण्ठमाला ग्रन्थों की विशेष गीतियाँ और अन्यान्य गीति-समूह का सन्निवेश हुआ है। विषय-सूची की चर्चा करने पर पाठकवर्ग द्वितीय खण्ड का गौरव अनुभव कर पायेंगे। वर्णानुक्रमिक श्लोक सूची और पद्य-सूची, इसकी विशेषता है।

प्रथम खण्ड का 'निवेदन'—शीर्षक भूमिका ही इस ग्रन्थ की वास्तविक भूमिका है। पाठक वर्ग इसकी चर्चा करके इस ग्रन्थ के प्रतिपाद्य विषय को हृदयंगम कर पायेंगे। इसलिये इस द्वितीय खण्ड में अधिक कुछ लिखने को अप्रयोजनीय समझता हूँ।

क्षिप्रता-प्रयुक्त (शीघ्रता के कारण) इस खण्ड में भी कुछ मुद्राकर-प्रमाद लक्षित होंगे, किन्तु वे सहज बोध्य हैं। कीर्तनकारी और पाठकों द्वारा इस ग्रन्थ की श्रद्धा सहित चर्चा करने पर वे भजन पथ पर अग्रसर होकर श्रीमन्मह. ाप्रभु और श्रीराधाविनोदबिहारी जी के पादपद्म को प्राप्त कर सकेंगे। विष्णु पादपद्म को लाभ करना ही मोक्ष है। अन्य प्रकार के मोक्ष के अनुसंधान की इच्छा हमें नहीं है। ''श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ'' के द्वितीय खण्ड की चर्चा करने पर यह स्पष्ट अनुभव होगा। माध्व-गौड़ीय वैष्णवों का यही एकमात्र प्रयोजन है। इस गीति-साहित्य के आदर और अनुशीलन के द्वारा ही उक्त प्रयोजन की सिद्धि सुगम होगी। * * * इति—

श्रीभक्तिप्रज्ञान केशव
सम्पादक

श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी-तिथि
8 हृषीकेश, 472 श्रीगौराब्द
6 सितम्बर, 1958

द्वितीय संस्करण में निवेदन

''श्रीगौड़ीय गीतिगुच्छ'' के प्रथम संस्करण के समाप्त हो जाने पर पुनः द्वितीय संस्करण परिवर्तित और परिवर्द्धित आकार में प्रकाशित हुआ है। * * *

इस ग्रन्थ की समस्त गीतियाँ विशुद्ध क्रम-अनुसार गुम्फित हुई हैं। शास्त्रों की चर्चा करने वाले समाज में शास्त्र-प्रारम्भिक मंगलाचरण देखा जाता है। मंगलाचरणहीन किसी भी ग्रन्थ का पठन-पाठन अमंगलकारी है। मंगलाचरण की विधि श्रील वेदव्यास से होकर आज तक धर्म-शिक्षा के क्षेत्र में सर्वतोभाव से चली आ रही है। किसी-किसी अहंग्रह-उपासक में मंगलाचरण की विधि परिलक्षित नहीं होती। इस विषय में विश्व धर्म-जगत के सर्वप्रधान-शिक्षक श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी ने अपने सर्वोत्तम शास्त्र-ग्रन्थ श्रीचैतन्य-चरितामृत में जिस प्रकार वन्दना करते हुए मंगलाचरण का आदर्श प्रदर्शित किया है, मैंने उसी का एकान्त रूप से अनुसरण करते हुए परमहंसकुल-चूड़ामणि जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद 108श्री श्रीमद् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी ठाकुर की शिक्षा-धारा-पद्धति का अनुसरण कर गौड़ीय-गीतिगुच्छ का प्राथमिक अध्याय साधकों के मंगल के लिये रीति अनुसार मालाकार रूप में ग्रथित किया है।

जगद्गुरु श्रील जीव गोस्वामिपाद की शिक्षा यह है कि वर्णन करते समय पहले 'सामान्य-लक्षण' वर्णित होने

पर, बाद में 'विशेष-लक्षण' का उल्लेख करने की विधि है। इस स्थान पर इस विधि का पूर्ण रूप से अनुसरण हुआ है। हम बहुत से क्षेत्रों में, बहुत से स्थानों पर, बहुत प्रकार के समाज में इस विधि का उल्लंघन होते देख सकते हैं। इस स्थान पर और भी देखने वाली बात यह है कि, श्रील नरोत्तम ठाकुर के "पाषन्ड दलनादि" ग्रन्थ से कीर्तन की एक विशेष विधि को लक्ष्य किया गया है। उन्होंने शास्त्र के एक प्रमाण का उदाहरण देकर हमें शिक्षा दी है—

"अवैष्णव-मुखोद्गीर्णं पूतं हरिकथामृतम्।
श्रवणं नैव कर्त्तव्यं सर्पोच्छिष्टं यथा पयः।।"

अर्थात् शास्त्रों की परम पवित्र कथा को भी अवैष्णव के मुख से नहीं श्रवण करना चाहिये। इस प्रकार श्रवण और कीर्तन करने से विषधर सर्प के आघात से जिस तरह मृत्यु हो जाती है, उसी प्रकार भजन पथ से अपसारित (निष्काषित) होना पड़ता है। हम अनेक स्थानों पर इस विधि का अनुसरण और अनुमोदन नहीं देख पाते। कितने ही सिद्धान्त-विरोधी हिन्दी गीत, समाज में चल रहे हैं, यह अत्यन्त दुःख का विषय है। यदि उसे सिद्धान्त-विरोध न भी कहा जाये तब भी "अवैष्णव-मुखोद्गीर्णम्" (अवैष्णव के मुख से कही गई) अच्छी बात भी श्रवण नहीं करनी चाहिये। सभी इस बात का विचार करके कीर्तन करेंगे। सुस्पष्ट रूप से अर्थात् अवैष्णव के मुख से कही गई कोई भी गीति या गाथा इस गीतिगुच्छ के वर्तमान संस्करण में प्रकाशित नहीं हुई है।

वैधी भक्ति में इस विधि का उल्लंघन होना उचित नहीं है। श्रील कविराज गोस्वामी ने भी श्रील जीवपाद के

अनुसृत पथ में शिक्षा दी है। आशा करता हूँ ''श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ'' के द्वितीय संस्करण की विधि-पद्धति का अनुसरण कर गौड़ीय वैष्णवजन पूर्व-पूर्व आचार्यों की शिक्षा का अवलम्बन करते हुए भजन-पद्धति, वन्दना-गीति और सेवा का क्रम निरूपण करेंगे। इस ग्रन्थ के पाठक इसका पाठ और कीर्तन कर अपने-अपने मंगल पथ का अनुसरण करें और भगवत्-सेवा में प्रतिष्ठित हों, यही प्रार्थना है। इति—

श्रील प्रभुपाद की तिरोभाव तिथि
8 नारायण, 481 श्रीगौराब्द
(21 दिसम्बर, 1967)

श्रीभक्तिप्रज्ञान केशव
सम्पादक

तृतीय संस्करण में 'प्रति-निवेदन'

श्रीभगवान् के श्रीनाम-रूप-गुण-लीला श्रवण-कीर्तन-स्मरण द्वारा ही उनको प्राप्त किया जाता है। विशेषतः इस कलियुग में श्रीनाम-संकीर्तन के द्वारा ही सर्वार्थ-सिद्धि की व्यवस्था शास्त्रों में प्रदत्त हुई है। कलियुग-पावनावतारी श्रीमन् महाप्रभु ने 64 प्रकार के भक्ति-अंगों में श्रेष्ठ साधनांग-रूप से श्रीनाम-कीर्तन-प्रवर्त्तन द्वारा जीव का अशेष कल्याण विधान किया है। इसलिये उनके पार्षद परम मुक्त अप्राकृत महाजनगन, जीव-उद्धार के लिए, सुललित छन्द में हृत्-कर्ण-रसायन पदावली की रचना और प्रचार

में व्रती हुए थे। श्रीगौरसुन्दर के समय से आरम्भ कर श्रील नरोत्तम-श्रीनिवास-श्यामानन्द प्रभु और बाद में बहुत से वैष्णव-पदकर्त्ताओं ने इस श्रीनाम संकीर्तन के वैशिष्ट्य को स्थापित किया है।

श्रील नरोत्तम ठाकुर जी के प्रार्थना, प्रेम-भक्ति-चन्द्रिका-ग्रन्थ में वेद-वेदान्त-गीता-भागवत आदि का तत्त्व और सिद्धान्त जिस प्रकार प्रांजल (सरल) भाषा में विवृत हुआ है, वह भक्ति-पथ के पथिकों का विशेष सहायक है। श्रील भक्तिविनोद ठाकुर के गीति-समूह में भी निखिल शास्त्रों का मर्म और रहस्य उद्‌घाटित (प्रकाशित) हुआ है और उन्होंने कुकर्मी, कुज्ञानी, कुयोगी, आउल-बाउल सहजिया आदि मायावादी, कुतार्किकजन के असत्य-मतवाद का खण्डन करते हुए उन लोगों को भक्ति पथ पर आकर्षण का सुवण ाि अवसर प्रदान किया है। जगत-जीवों के प्रति यही उनकी अपार करुणा का निदर्शन (उदाहरण) है। वैष्णव महाजनों के जीवन-आदर्श में इस प्रकार का वैशिष्ट्य और माधुर्य विद्यमान है। अप्राकृत कवि और साहित्यिकगण के पद और रचना, क्या गृहस्थी, क्या त्यागी, सबके लिये ही समान भाव से उपयोगी हैं।

'श्रीगौड़ीय गीतिगुच्छ' (वैष्णव महाजन पदावली) ने दो खण्डों में विभक्त होकर विगत 2 चैत्र, 1363 (ई. 16/3/57) और 20 भाद्र, 1365 (ई. 6/9/58) वर्ष में 'प्रथम संस्करण' के रूप में आत्म-प्रकाश किया है। इसके बाद गत 5 पौष, 1374 (ई. 21/12/67) वर्ष में इसका 'द्वितीय संस्करण' परिवर्तित और परिवर्द्धित कलेवर में पुनः

प्रकाशित हुआ। उक्त दोनों संस्करणों ने ही जगद्गुरु श्रील भक्ति सिद्धान्त सरस्वती प्रभुपाद जी के प्रेष्ठ अंतरंग पार्षद मदीय श्रीगुरुपादपद्म ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद् भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी प्रभुवर द्वारा सम्पादित होकर एक रूप से गीति–काव्यानुरागी भजन–पिपासु श्रद्धालु जनसाधारण का पारमार्थिक कल्याण–विधान और उन्नताधिकारी सिद्ध–महात्माओं का उत्साह वर्द्धन किया है।

श्रील सरस्वती प्रभुपाद जी द्वारा सम्पादित और श्रील भक्तिविनोद ठाकुर जी द्वारा विरचित शरणागति, गीतावली, कल्याणकल्पतरु, गीतमाला व साधक–कण्ठमाला आदि ग्रन्थों के विशेष प्रयोजनीय समस्त गीति–समूह ने उक्त संस्करण–द्वय (प्रत्येक संस्करण दो खण्डों में विभक्त) में स्थान लाभ किया था। उसमें क्रमानुसार श्रीगुरु–तत्त्व, श्रीवैष्णव –तत्त्व, पंचतत्त्व, श्रीराधागोविन्द–तत्त्व, श्रीनाम–कीर्तन, आरति–कीर्तन, श्रीनगर–कीर्तन, पद्यानुवाद सहित श्रीनामाष्टक, श्रीशिक्षाष्टक, श्रीउपदेशामृत, श्रीमनःशिक्षा, षड़ंग–शरणागति, यामुन–भावावलि, श्रीषड़्गोस्वामि–शोचक, शोक–शातन, बाउल–मतवाद–खण्डनकारी बाउल संगीत, श्रीहरिवासर–व्रतपालन–माहात्म्य, महाप्रसाद–माहात्म्य, नाम–धाम–सेवापराध विचार, श्रीनामभजन–प्रणाली आदि विषयों की चर्चा हुई थी। इसके अलावा हमारे अभीष्टदेव श्रील केशव गोस्वामी, श्रील सरस्वती ठाकुर, श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर, श्रील नरोत्तम ठाकुर, श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी, श्रील वृन्दावन दास ठाकुर, श्रील लोचनदास ठाकुर, श्रील रूप–सनातन गोस्वामी, श्रील चण्डीदास–

विद्यापति – जयदेव – रामानन्द राय – प्रबोधानन्द सरस्वतीपाद प्रमुख महाजनों द्वारा बंगला और संस्कृत में रचित पदावली का भी उसमें सन्निवेश हुआ।

वर्तमान तृतीय संस्करण का वैशिष्टय यह है कि इसमें श्रीगुरु – वन्दना के परिशिष्ट रूप में त्रिदण्डिस्वामी श्रीमद् भक्ति वेदान्त त्रिविक्रम महाराज द्वारा रचित 'श्रील केशवाचार्याष्टकम्', श्रील निवासाचार्य द्वारा विरचित 'श्रीषड् – गोस्वाम्याष्टकम्', श्रीवृन्दावन दास ठाकुर – कृत 'श्रीनित्यानन्दाष्टकम्' श्रीमद् रूप गोस्वामी – विरचित 'श्रीचैतन्याष्टकम्', 'श्रीराधिकाष्टम्', 'स्मेरां भंगीत्रयपरिचितां (भः रः सिः 1/2/87) श्लोक का पद्यानुवाद—''बन्धुसंगे यदि तव रंग – परिहास'', श्रीमन्महाप्रभु – श्रीमुख – विगलित 'श्रीजगन्नाथाष्टकम्', श्रील प्रबोधानन्द – सरस्वतीपाद – विरचित 'जय जय प्राणसखे' आदि संस्कृत गीति और स्तव – स्तोत्र आदि और बंगला कविता – छन्द में श्रील प्रभुपाद – वन्दना— ''जयरे जयरे जय'', श्रील भक्तिविनोद ठाकुर – कृत श्रीराधाष्टक का पद्यानुवाद—''वरज विपिने यमुनाकूले'', ''देखिते देखिते भूलिब वा कबे'', श्रीमद् दास – गोस्वामी के उद्देश्य से श्रील गौरकिशोरदास बाबाजी महाराज द्वारा कीर्तित, ''कोथाय गो प्रेममयि राधे राधे'', श्रील नरोत्तम ठाकुर – कृत ''राधाकृष्ण प्राण मोर युगलकिशोर'', ''करंग कौपीन लञा'', ''कबे कृष्ण धन पाव'' आदि गीति – समूह ने इसके कलेवर और सौन्दर्य की वृद्धि की है।

पूर्व दोनों संस्करणों में यामुन भावावलि के (शान्त - दास्य - भक्तिसाधन - लालसा) 26 गीत प्रदत्त हुए थे।

शरणागति के शेषांश में परिशिष्ट रूप में वे प्रकाशित होने के कारण इस बार इसमें मुद्रित नहीं हुए हैं। ओर भी श्रीनामापराध – धामापराध – सेवापराध – विचार "अर्चन-पद्धति" और "श्रीहरिनाम – चिन्तामणि" – ग्रन्थ में प्रदत्त होने के कारण इसमें मुद्रित नहीं हुए हैं। बाहुल्यबोध से पूर्व संस्करण की कुछ – कुछ गीतियाँ वर्तमान संस्करण में नहीं होने पर भी, नये विशेष प्रयोजनीय गीति – स्तव – स्तोत्रादि इसमें संयुक्त होने के कारण ग्रन्थ का गौरव कई गुणा बढ़ गया है। इसमें 10 हिन्दी जनप्रिय श्रीनाम – कीर्तन संयोजित होने से हिन्दी पदावली कीर्तन – अनुरागीगण को विशेष सुविधा होगी, इसमें सन्देह नहीं है।

वर्तमान संस्करण में सम्पादक रूप से इस अकिंचन का नाम घोषित होने पर भी, वस्तुतः हमारे सतीर्थ त्रिदण्डि स्वामी श्रीमद् भक्तिवेदान्त नारायण महाराज ने इसके परिवर्तन और परिवर्द्धन – संयोजनादि विविध गठनमूलक कार्यों में पहले से ही दायित्व ग्रहण किया है। मैं उनके निकट विशेष कृतज्ञ हूँ। * * * इति—

श्रीनित्यानन्द – त्रयोदशी
28 माधव, 486 श्रीगौराब्द,
3 फाल्गुन, 1379 सन
(15 फरवरी, 1973)

श्रीगुरु – वैष्णव – दासानुदास—
श्रीभक्तिवेदान्त वामन

चतुर्थ संस्करण में 'नम्र-निवेदन'

श्रीहरि के नाम-रूप-गुण-लीलादि की पुनः पुनः चर्चा और अनुशीलन के द्वारा उनकी साक्षात् सेवा प्राप्त होती है। निखिल शास्त्र सम्राट ग्रन्थ-चक्रवर्ती श्रीमद्भागवत कहते हैं—**"कीर्त्तनादेव कृष्णस्य मुक्तसंगः परं व्रजेत्"**—सर्व दोषों के आधार कलिकाल में यही एकमात्र महान गुण है कि, मनुष्य इस युग में कृष्णनाम-संकीर्तन के प्रभाव से मुक्त होकर परम पुरुष श्रीभगवान् को प्राप्त होते हैं। किन्तु कलि का ऐसा ही प्रभाव है कि—म्रियमाण (जो मरने वाले हैं), आतुर (पीड़ित), शय्याशायी (शय्या पर लेटे हुए व्यक्ति) और शिथिलेन्द्रिय (जिनकी इन्द्रियाँ शिथिल हो गई हैं, ऐसे) व्यक्ति भी, स्खलित (अस्पष्ट) कण्ठस्वर से जिनका मंगलमय श्रीनाम उच्चारण करके सभी प्रकार के कर्म-बन्धनों से मुक्त होकर परमगति लाभ करते हैं, कलि के जीव, पाषण्डियों द्वारा विकृत-चित्त होकर ब्रह्मादि त्रिलोकेश्वर द्वारा वन्दित चरण—जगत के परमगुरु भगवान् श्रीहरि की आराधना नहीं करना चाहते।

"हरति हृदयग्रन्थिं वासनारूपमिति हरिः"—लीला पुरुषोत्तम अन्तर्यामी श्रीकृष्ण मानवों के हृदय में स्थित होकर द्रव्य-देशादि-वैगुन्य (द्रव्य, देश आदि से सम्बन्धित दोषों) के कारण समस्त दोष और उनके अन्दर की समस्त कामना-वासना रूपी हृदय-ग्रन्थि को हरण कर लेते हैं। उनके श्रीनाम का श्रवण-कीर्तन करने से अनेक जन्मों

के शुभाशुभ—पुण्य-पाप भी विनष्ट हो जाते हैं। इसीलिये वैष्णव-महाजनों ने गाया है,—**"पुण्य से सुखेर धाम, तार ना लइयो नाम, पाप-पुण्य दुइ-इ परिहरि।"** यम-नियम आदि द्वारा चित्त की मलिनता विदूरित नहीं होती और अन्तःकरण की शुद्धि भी असम्भव है। अतः सर्व प्रकार से प्रतिक्षण श्रीनाम के अभ्यास योग की आवश्यकता है। ऐसा होने पर मृत्यु के समय भी उनके ध्यान के विषय में सावधान होकर रहने से परमगति की प्राप्ति निश्चित है। म्रियमान मनुष्यों के लिये परमेश्वर मुकुन्द की आराधना ही कर्त्तव्य है; और उससे ही सभी के आश्रय सर्वभूतान्तर्यामि भगवान् उनको आत्म-स्वरूप प्रदान करते हैं।

आध्यात्मिक आदि दुःख-दावानल-सन्तप्त एवं अति दुस्तर संसार रूपी समुद्र को पार करने के अभिलाषी व्यक्तियों के लिये पुरुषोत्तम भगवान् का श्रीनाम-लीलाकथा-रस सेवन के अलावा अन्य आश्रय नहीं है। सर्वदा भगवद् चिन्ता, नाम-संकीर्तन और अनुध्यान रूप भक्ति-योग पालन के द्वारा अशुभ-वासना और दम्भ-अभिमान आदि विघ्न क्रमशः विनष्ट हो जाते हैं। साधु-महाजनगन निरंतर सर्वविघ्न-विनाशन-स्वरूप जिस श्रीकृष्ण-चरितामृत-माहात्म्य गीति का कीर्तन करते हैं, श्रीभगवान् में विशुद्ध-भक्तिकामी व्यक्तियों के लिए प्रतिदिन अनुक्षण उसे ही श्रवणादि करना कर्त्तव्य है।

सत्ययुग में विष्णु का ध्यान, तेत्रायुग में उनका यज्ञ और द्वापर में उनकी अर्चन करने से जो फल लाभ होता है, कलियुग में एकमात्र श्रीहरिनाम-कीर्तन से ही वह समस्त फल

लाभ होता है। प्रियतम भगवान् श्रीकृष्ण के त्रिलोक-कीर्त्तित, सुमंगल जन्म-कर्म एवं नाम समूह कीर्तन आदि के प्रभाव से, अनुराग युक्त होकर, अनासक्त व अचंचल भाव से, भक्तगण, पृथ्वी पर सर्वत्र विचरण करते हैं। इस कलियुग में एकमात्र श्रीहरि के नाम-कीर्तन द्वारा ही सभी युगों के सर्वविध पुरुषार्थ लाभ होते हैं। इस संसार में भ्रमणशील जीवों के लिए नाम-संकीर्तन के अपेक्षा परम लाभजनक अन्य कुछ भी नहीं है; क्योंकि उसके द्वारा ही परम शान्ति की प्राप्ति एवं संसार के दुःख दूर होते हैं।

जो लोग 'अज' श्रीभगवान् के नाम-लीला आदि की कथा श्रवण नहीं करते हैं, वे अमंगल का आवाहन कर मायावादी हो जाते हैं। श्रीहरि के अप्राकृत नाम-लीला आदि को प्राकृत और मायिक समझकर, वे भ्रमित हो जाते हैं। सौभाग्यवान् सुकृतिशाली जनगन ही सत्संग के प्रभाव से 'अज' के जन्मलीला-रहस्य से अवगत होकर परम मंगल लाभ करते हैं। वे तर्क-पथ को त्यागकर आम्नाय-श्रौतपथाश्रित होकर श्रीनाम-गान करते रहते हैं। इसके द्वारा ही जीवों में अव्यभिचारिणी भक्ति का उदय होने से सर्वार्थ-सिद्धि होती है। अद्वयज्ञान-रहित होकर जीव कैवलाद्वैतवाद का आवाहन करते हुए स्वगत-स्वजातीय-विजातीय भेदरहित जड़ाद्वैत के विचार को बहुमानन कर प्राकत द्वैत-चिन्ता का आवाहन करते हैं। ब्रह्म-सम्प्रदायाचार्य वैष्णव-प्रवर श्रीमध्वमुनि ने इस प्रकार का प्रतिकूल मतवाद नहीं ग्रहण किया। उन्होंने 'अज' भगवान् के नित्य-जन्मादि चिद्विलास को स्वीकार करते हुए शुद्धद्वैतवाद का प्रचार किया है।

पतित, स्खलित, दुःखित, विवश व्यक्ति भी यदि उच्चःस्वर से श्रीनाम उच्चारण करें तो वे भी सब प्रकार के पापों से विमुक्त हो जाते हैं। आर्त्त, अर्थार्थी, जिज्ञासु और ज्ञानी—सुकृतिशाली होकर भगवद् भजन में प्रवृत्त होते हैं। शास्त्र कहते हैं,—**"हरये नमः इत्युच्चैर्मुच्यते सर्वपातकात्"**—"हरये नमः" इसका उच्च स्वर से कीर्तन करने पर सब प्रकार के पाप नष्ट हो जाते हैं। बद्धावस्था में पाप-अभिनिवेश रहने से हम लोगों को पतित, विच्युत, क्लिष्ट, पीड़ित होकर पराधीन रहना पड़ता है। इसीलिये मायाबद्ध जीवों के प्रति अशेष करुना-परवश स्वयं भगवान् श्रीचैतन्य महाप्रभु ने श्रीवास आंगन में (खोलभांगार डांगा में) "हरये नमः" आदि महाजन-पदावली के उच्च संकीर्तन द्वारा प्राकृत भोग-त्याग-रहित होने का उपदेश किया। बाद में ठाकुर नरोत्तम-श्रीनिवासाचार्य-श्यामानन्द प्रभु प्रमुख गुरु एवं आचार्यगण ने भारत में सर्वत्र प्रेमभक्ति-चन्द्रिका, प्रार्थना आदि 'रेणेटी', 'गराणहाटी' 'मनोहरसाही' आदि सुर-ताल-लय-माने पदावली और श्रीनाम-संकीर्तन आदि का प्रचार करके कलियुग के जीवों को धन्य किया। अप्राकृत कवि और साहित्यिक श्रील भक्तिविनोद ठाकुर के गीति-काव्य ने जगत को हिला दिया है।

"कीर्तनीयः सदा हरिः" मन्त्र में दीक्षित होकर विश्व में सर्वत्र श्रीगौरसुन्दर की वाणी का प्रचार ही श्रीचैतन्यानुग-सम्प्रदाय गौड़ीय-गोस्वामी और गुरुवर्ग का विशेष उपदेश है। शास्त्रों में भी विभिन्न स्थानों पर उक्त हुआ है—**"यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ संकीर्त्त्य केशवम्"**, **"गीतानि नामानि**

तदर्थकानि गायन् विलज्जः", "यत्र संकीर्त्तनेनैव सर्वस्वार्थोऽभिलभ्यते", "कांश्चिन्म्मानुध्यानेन नाम-संकीर्त्तनादिभिः", "नाम-संकीर्त्तनं यस्य सर्वपाप-प्रनाशनम्" आदि। कलियुग में श्रीनाम कीर्तन के द्वारा ही अन्यान्य युगों के सभी फल प्राप्त होते हैं, यही समस्त शास्त्रों का तात्पर्य है। कीर्तन और संकीर्तन में जो अन्तर और वैशिष्ट्य है, उसके सम्बन्ध में शास्त्र कहते हैं,— "ओष्ठस्पन्दनमात्रेण कीर्त्तनम्" और "बहुभिर्मिलित्वा यत् कीर्त्तनं तदेव संकीर्त्तनम्।" श्रीभगवान् के नाम-रूप-गुण-लीलाकथा कीर्तन का उपदेश ही शास्त्रों में प्रदत्त हुआ है एवं **"सर्वक्षण बल इथे विधि नाहि आर"**, इसकी भी विशेष व्यवस्था है। अधिकार अनुसार आत्म-कल्याणकामी होकर भजन-कीर्तन करना ही इसकी वास्तव फल-प्राप्ति और सार्थकता है। चारों वर्णाश्रमी ही श्रद्धालु होने से श्रीनाम-संकीर्तन का अनुशीलन करने के अधिकारी हैं। इति—

श्रीगुरु-वैष्णव-दासानुदास—
श्रीभक्तिवेदान्त वामन

श्रीकृष्ण की शारदीया रास-यात्रा
29 पद्मनाभ, 493 श्रीगौराब्द
18 आश्विन 1386 बंगाब्द
5 अक्तूबर, 1979

पंचम संस्करण में 'संक्षिप्त-निवेदन'

"श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ" के प्रथम संस्करण का प्रथम और द्वितीय खण्ड विगत 30 गोविन्द, 471 श्रीगौराब्द; 2 चैत्र, 1363 बंगाब्द; ई. 16/3/1957, श्रीगौर-जयन्ती फाल्गुनी-पूर्णिमा एवं 8 हृषीकेश, 472 श्रीगौराब्द, 20 भाद्र, 1365 बंगाब्द, ई. 6/9/1958; श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी तिथि पर यथाक्रम हमारे गुरुपादपद्म नित्यलीलाप्रविष्ट जगद्गुरु ॐ विष्णुपाद 108श्री श्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज जी द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित हुआ है। दोनों खण्डों में श्रील गुरुपादपद्म ने दो अलग 'निवेदन'-नामक भूमिका लिपिबद्ध की हैं। इस ग्रन्थ का **द्वितीय संस्करण भी** विगत 481 श्रीगौराब्द; ई. 21 दिसम्बर, 1967, श्रील प्रभुपाद जी की तिरोभाव-तिथि पर उनके द्वारा सम्पादित हुआ।

बाद में **तृतीय और चतुर्थ संस्करण** श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति की मैनेजिंग कमेटी द्वारा यथाक्रम गत 28 माधव, 486 श्रीगौराब्द; 3 फाल्गुन, 1379 बंगाब्द, ई. 15/2/1973, श्रीनित्यानन्द-त्रयोदशी एवं 29 पद्मनाभ, 493 श्रीगौराब्द; 18 आश्विन 1386 बंगाब्द, ई 5/10/1979 श्रीकृष्ण की शारदीया-रासयात्रा-तिथि पर सम्पादित और प्रकाशित हुआ। उक्त दोनों संस्करणों में श्रीसमिति के सभापति-अध्यक्ष द्वारा लिखित 'प्रति-निवेदन' और 'नम्र-निवेदन'-नामक भूमिका-द्वय का भी प्रकाशन हुआ। बीच

में द्वादश वर्ष के व्यवधान में गीतिगुच्छ–ग्रन्थ का दो बार प्रकाशन हुआ। इसलिये इस समय अपेक्षाकृत बृहदाकार परिवर्तित और परिवर्द्धित संस्करण को **"पंचम संस्करण"** के रूप में ही उल्लेख किया है। श्रीरूप–रघुनाथ की वाणी का प्रचार ही हमारे प्रति श्रीगुरु–गोस्वामि–आचार्यवर्ग का विशेष आदेश और निर्देश है। प्रत्यक्ष–परोक्ष भाव से उसी निर्देश का प्रतिपालित होना ही हमारे जीवन की सार्थकता एवं सफलता है।

'श्रीगौड़ीय–गीतिगुच्छ' के महिमा–माहात्म्य और वैशिष्ट्य के सम्बन्ध में परमाराध्य श्रील गुरुपादपद्म ने यहाँ भूमिका के रूप में 'निवेदन' में बताया है। वही हमारे लिये यथेष्ट और आदर्श–स्वरूप है। हमारा अपना कोई वक्तव्य नहीं है; श्रीहरि–गुरु–वैष्णवों के उपदेश–निर्देश को मन–प्राण से वास्तव में रूपायित करना ही हमारा सर्वश्रेष्ठ कर्त्तव्य और दायित्व है। हम उनके विघसाशी भृत्यानुभृत्य रूप से उसी का पालन कर जीवन को धन्य करेंगे।

श्रील गुरुपादपद्म ने 'गीतिगुच्छ' के सम्बन्ध में अन्वय–व्यतिरेक भाव से जो समस्त तत्त्व–सिद्धान्त को प्रकाशित किया है, उसका सामान्य अंश जीवन में ग्रहण और त्याग कर सकने पर हमारा सर्वैव कल्याण है। साधक–साधिका के जीवन पथ पर जितने बाधा–विघ्न आकर उपस्थित होते हैं, वे सब साधु–सज्जनगण के शक्तिशाली उपदेश–निर्देश से अनायास ही विदूरित हो जाते हैं और हम वास्तव मंगल लाभ करने में समर्थ होते हैं। पार्थिव जगत की विषय–वस्तु हमें सर्वदा विपथगामी करती है, वह सब समय मायातीत धारणा

की परिपन्थी है। इसलिये ही नित्यसिद्ध-महात्मा, अप्राकृत कवि-साहित्यिकगण की लेखनी से उत्पन्न दिव्य वाणी ही हमारे लिये सर्वक्षण मंगलजनक है।

वर्तमान पंचम संस्करण "गीतिगुच्छ" का यही वैशिष्ट्य है कि इसमें 'मंगलाचरण' के अन्त में विस्तृत रूप से क्रम अनुसार विविध प्रणाम-मन्त्र आदि एवं आश्रय-विषय के भेद से श्रीगुरु-परम्परा अनुसार विविध संस्कृत स्तव-स्तोत्र आदि प्रकाशित हुए हैं। अधिकत्या दूसरे संस्करण में ग्रन्थ का आकार बड़ा होने की आशंका से दो खण्ड के स्थान पर एक ही खण्ड प्रकाशित करने पर प्रथम संस्करण की जो समस्त गीतियाँ मुद्रित नहीं हो सकीं थी, उन्हें भी संपूर्ण रूप से इसमें स्थान प्राप्त हुआ है। श्रीशरणागति, गीतावली, गीतमाला, कल्याण-कल्पतरु, साधक-कंठ-माला आदि गीति-ग्रन्थों की समस्त प्रयोजनीय गीतियाँ संपूर्ण रूप से इस अखण्ड संस्करण में संगृहीत और प्रकाशित हुई हैं।

इस गीतिगुच्छ-ग्रन्थ में प्रधानतः श्रीस्वरूप-रूपानुग गौड़ीय वैष्णवों द्वारा अनुमोदित गीतियाँ ही मुद्रित हुई हैं। श्रील गुरुपादपद्म ने अपने द्वितीय संस्करण की भूमिका में एक स्थान पर लिखा है,—"बहुत सारे सिद्धान्त-विरोधी हिन्दी गीत आजकल समाज में खूब चल रहे हैं, यह अत्यन्त दुःख का विषय है। उन्हें यदि सिद्धान्त-विरोधी न भी कहा जाये तब भी "अवैष्णव-मुखोद्गीर्णम्" (अवैष्णव के मुख से कहे गये हैं, इस) विधि के अनुसार, उनका श्रवण-कीर्तन नहीं करना चाहिये, सभी लोग इस बात का विचार करते हुए कीर्तन करेंगे।"

हमने भी इसीलिये श्रील गुरुपादपद्म के आदेश-निर्देश को शिरोधार्य कर, पूर्व पूर्व संस्करणों के परिशिष्ट अंश में प्रकाशित हिन्दी, असमिया और उत्कल भाषा में कीर्तनों को सामान्य परिवर्तन के साथ प्रकाशित किया है। भविष्य में इन सब को केन्द्रित करके पुनः समालोचना या तत्त्वगत विरोध का क्षेत्र उपस्थित होने से बाद के संस्करणों में उसे संशोधन और परिहार (त्यागने) का प्रयास करेंगे। * * *

श्रीश्रीजगन्नाथदेव की चंदन यात्रा—
अक्षय-तृतीया-तिथि, 17 मधुसुदन,
510 श्रीगौराब्द, 7 वैशाख,
1403 बंगाब्द, (20/4/1996)

श्रीगुरु-वैष्णव-दासानुदास—
श्रीभक्तिवेदान्त वामन

षष्ठ संस्करण में 'विनम्र–निवेदन'

श्रीगौड़ीय महाजनों द्वारा रचित विभिन्न भक्ति-गीतियाँ—गौड़ीय भक्त कुल का कण्ठहार-स्वरूप महानिधि-तुल्य हैं — इन में समग्र शास्त्र-सिन्धु का मंथन कर सर्व-सुसिद्धान्तों को समाहृत किया गया है। धर्म-तत्त्व यथार्थ ही महाजनों की हृदय रूपी गुफाओं में ही निहित है, इसीलिये उनके द्वारा अवलम्बित पथ ही सभी के लिए अनुसरणीय है—**"धर्मस्य तत्त्वं निहीतं गुहायां, महाजनो येन गतः स पंथाः।"**

'महाजन' का अर्थ शास्त्रों में वर्णित है—जिनका हृदय श्रीहरि के पादपद्म से प्रणय-रज्जु (प्रेम रूपी रस्सी) द्वारा सर्वदा आबद्ध (बंधा हुआ) है, उन्हीं भागवत-प्रधान को ही मूलतः महाजन कहकर लक्ष्य किया गया है,—**"प्रणयरसनया धृतांघ्रिपद्मः स भवति भागवतप्रधानः उक्त।।"** (भाः 11/2/55)। और भागवत-धर्म के अलावा अन्यान्य जो धर्म-शास्त्र के प्रणेतागण (लेखक), लोक समाज में 'महाजन' के नाम से पूजित हैं, वे वस्तुतः दैवी-माया से विमोहित हैं, वे यथार्थ शास्त्र-तात्पर्य के सम्बन्ध में अवहित नहीं है।

"प्रायेन वेद तद्दिनं न महाजनोऽयं देव्या विमोहितमतिर्वत माययालम्"। (भाः 6/3/25)

"कृष्णेर भजन छाड़ि ये शास्त्र बाखवाने। से अधम कभु शास्त्रमर्म नाहि जाने।।" (कृष्ण के भजन को छोड़कर जो शास्त्रों का बखान करता है वह अधम शास्त्र के मर्म को नहीं जानता है) (चै: भा:)

इस प्रसंग में भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं ही सखा उद्धव को कहा है,—'शास्त्रों के तात्पर्य का परित्याग करके जो शास्त्रों के पुष्पित वाक्यों द्वारा भ्रमित होने के कारण उसे अधिक-मान्यता देकर अति-मोहित हो गये हैं, उन्हें हमारी वार्ता में अर्थात् उपदेश में (या मुझसे सम्बन्धित कथा में) कभी भी रुचि नहीं होती,—**"एवं पुष्पितया वाचा व्याक्षिप्तमनसां नृणाम्। मानिनांचातिलुब्धानां मद्वार्त्तापि न रोचते।।"** (भा: 11/21/34)। अत: जड़-सविशेषवादी कर्मकाण्डिगण या जड़-निर्विशेषवादी ज्ञान-काण्डिगण और अष्टांग-योगावलम्बिगण कोई भी शास्त्रों के तात्पर्य से अवगत नहीं है, अतएव 'महाजन' पद-वाच्य नहीं हैं। वेद, रामायण, पुराण, महाभारत आदि सर्व शास्त्रों के आदि, मध्य और अन्त में सर्वत्र ही जो श्रीहरि और हरि-भक्ति की कथा ही व्यक्त हुई है, वही जिनकी एकमात्र उपजीविका है—शास्त्रों के अन्यान्य मोहजनक वाक्यजाल की परीक्षा में जिन्होंने उत्तीर्ण होकर श्रीहरि-भक्ति को ही सर्व सारात्सार माना है और आत्म-धर्मगत सुनिर्मल-भक्ति द्वारा श्रीहरि को हृदय में आबद्ध किया है, वे ही वास्तव में 'महाजन' पदवाच्य हैं। उनमें स्वभजन-विभजन-प्रयोजनावतार श्रीराधागोविन्द-मिलिततनु श्रीचैतन्य महाप्रभु ही जिनके एकमात्र हृदय-धन

हैं, उन सर्व महाजनकुल-शिरोमणि श्रीगौड़ीय महाजनों की सम्यक् महिमा वर्णन करने में स्वयं भगवान् भी असमर्थता प्रदर्शन करते हैं।

उन महाजनों की मुख-निःसृत, भगवान् के यश से परिपूर्ण, हृतकर्ण-रसायन गीतिमाला, जीवों के अशेष पाप, पाप बीज को विध्वंस करने के लिए उनके हृदय में प्रेमकल्पतरु के बीज का रोपण करती है। उपनिषदों की ब्रह्मकथा उस गीतिमाला के समक्ष सूर्य के समाने जुगनु की भांति निष्प्रभ है—"**श्रुतमप्यौपनिषदं दूरे हरिकथामृतात् यन्न सन्ति द्रवच्चित्तकम्पाश्रुपुलकादयः।।**" अप्राकृत सविशेष भगवान्—अपने नाम, रूप, गुण, परिकर, लीला-विशिष्ट हैं। उपनिषदों की चर्चा द्वारा परतत्त्व के उस नित्य-वैशिष्ट्य-समूह का अनुभव न होने पर आत्मधर्म का सम्यक् जागरण नहीं होता है। किन्तु शुद्ध-भक्ति पथ-आश्रित महाजनों के हृदय में नित्य-अनुभूत वह भगवान् का नाम-रूप-गुण-विलासामृत, जो उनके मुखपद्म से संकीर्तन-धारा में विनिःसृत होकर नित्यप्रवाहमान है, उससे ही जीवों के आत्म-धर्म का पूर्ण-जागरण हो जाता है। 'श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ' उन्हीं गौड़ीय-महाजनों के उसी असमोर्द्ध्व-कल्याणाकर गीति समूह का समाहार है। इति—

श्रीगुरु-वैष्णव-दासानुदास—

श्रीभक्तिवेदान्त वामन

श्रील प्रभुपाद की आविर्भाव तिथि
5 गोविन्द, 516 श्रीगौराब्द,
8 फाल्गुन, 1409 बंगाब्द,
(21 फरवरी, 2003)

विषय सूची

विषय	पत्रांक

वर्णानुक्रमिक पद्य–सूची

[संस्कृत पद्य]

[बंगला पद्य]

(ट)

(ठ)

(त)

(श)

(श्री)

(स)

[हिन्दी-कीर्तन]

महाजन कौन हैं?

“वेद, रामायण, पुराण, महाभारत आदि सर्व शास्त्रों के आदि, मध्य और अन्त में सर्वत्र जो श्रीहरि और हरि-भक्ति की कथा व्यक्त हुई है, वही जिनकी एकमात्र उपजीविका है — जिन्होंने शास्त्रों के अन्यान्य मोहजनक वाक्य-जाल की परीक्षा में उत्तीर्ण होकर श्रीहरि-भक्ति को ही सर्व-सारात्सार माना है और आत्म-धर्मगत सुनिर्मल-भक्ति द्वारा श्रीहरि को हृदय में आबद्ध किया है, वे ही वास्तव में “महाजन” पदवाच्य हैं। ‘श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ’ उन्हीं गौड़ीय-महाजनों के असमोर्द्ध्व-कल्याणाकर गीति-समूह का समाहार है।”

—ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद् भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति के प्राक्तन सभापति-आचार्य
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद् भक्ति वेदान्त वामन गोस्वामी महाराज
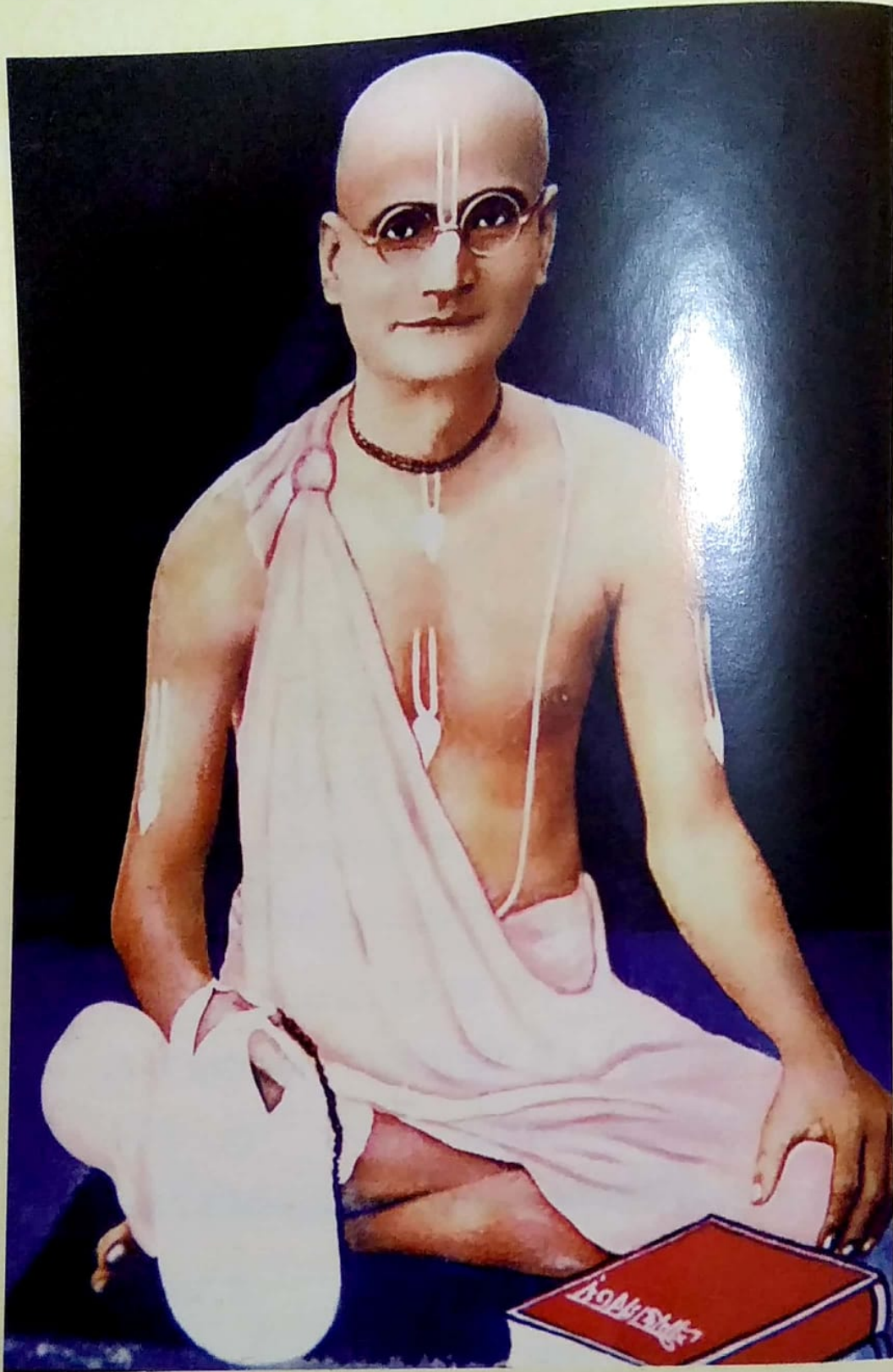
श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति के संस्थापक-आचार्य
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद् भक्ति प्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज
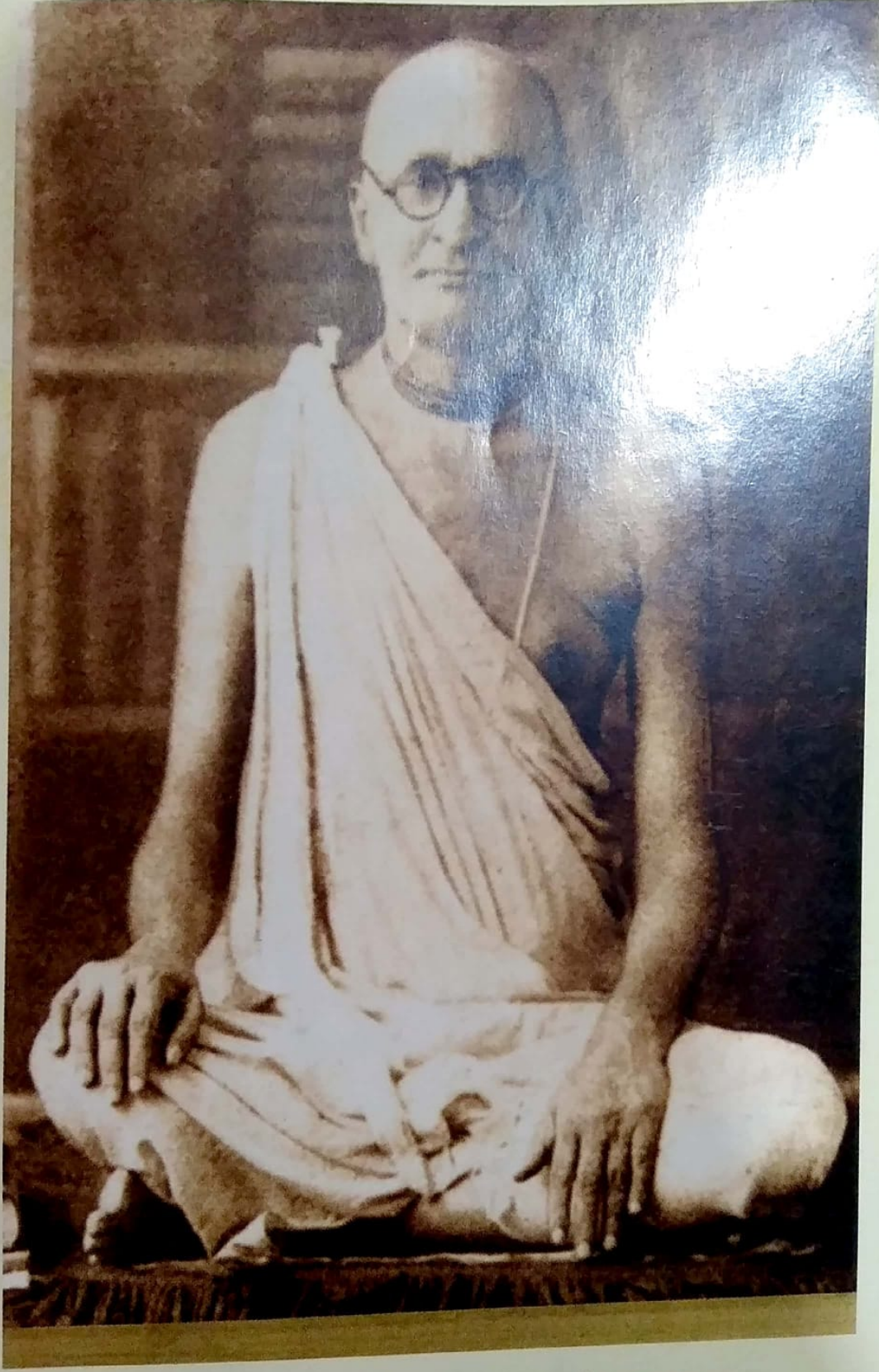
श्रीब्रह्म-माध्व-गौड़ीय-सम्प्रदाय-संरक्षकवर
जगद्गुरु नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद् भक्ति सिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद

श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ, श्रीधाम नवद्वीप में सेवित

श्रीश्रीगुरु-गौरांग-राधा-विनोदबिहारी जिउ

श्रीश्रीगुरु – गौरांगौ – जयतः

श्रीगौड़ीय–गीतिगुच्छ

मंगलाचरण

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुत – पदकमलं श्रीगुरून् वैष्णवांश्च
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण – रघुनाथान्वितं तं सजीवम्।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्य – देवं
श्रीराधा – कृष्णपादान् सहगण – ललिता – श्रीविशाखान्वितांश्च।।

श्रीगुरु – प्रणामः

अज्ञान – तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन – शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

श्रीगुरु – वन्दना

श्रील – वामन – गोस्वामि – वन्दना

नमः ॐ विष्णुपादाय केशवाभिन्न – रूपिणे।
श्रीमते भक्तिवेदान्त – वामन – रूप – धारिणे।।
कृष्ण – वैमुख्य – संसार – विपदुद्धारि – बान्धव।
नमस्ते 'ज्ञान – विज्ञान' – रहस्यांग – प्रदायिने।।
श्रीरूपानुग – प्रज्ञान – भक्तिसिद्धान्त – सम्पुट।
गौरकीर्तन – निष्णात – विग्रहाय नमोऽस्तु ते।।
सर्व – कार्ष्ण – गुणग्राम – दिव्यरत्नाढ्य – मूर्त्तये।
गान्धर्वानुस्वरूपाय नमः कृपामृताब्धये।।

श्रील – केशव – गोस्वामि – वन्दना

नमः ॐ विष्णुपादाय आचार्य – सिंह – रूपिणे।
श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान – केशव – इति – नामिने।।
अतिमर्त्त्य – चरित्राय स्वाश्रितानाञ्च पालिने।
जीव – दुःखे सदार्त्ताय श्रीनामप्रेम – दायिने।।
गौराश्रय – विग्रहाय कृष्णकामैक – चारिणे।
रूपानुग – प्रवराय विनोदेति – स्वरूपिणे।।
प्रभुपादान्तरंगाय सर्वसद्‌गुणशालिने।
मायावाद – तमोघ्नाय वेदान्तार्थविदे नमः।।

श्रील – प्रभुपाद – वन्दना

नमः ॐ विष्णुपादाय कृष्ण – प्रेष्ठाय भूतले।
श्रीमते भक्तिसिद्धान्त – सरस्वतीति – नामिने।।
श्रीवार्षभानवीदेवी – दयिताय कृपाब्धये।
कृष्ण – सम्बन्ध – विज्ञान – दायिने प्रभवे नमः।।
माधुर्य्योज्ज्वल – प्रेमाढ्य – श्रीरूपानुग – भक्तिद।
श्रीगौर – करुणा – शक्ति – विग्रहाय नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते गौर – वाणी – श्रीमूर्त्तये दीन – तारिणे।
रूपानुग – विरुद्धापसिद्धान्त – ध्वान्त – हारिणे।।

श्रील – गौरकिशोर – वन्दना

नमो गौरकिशोराय साक्षाद्वैराग्य – मूर्त्तये।
विप्रलम्भ – रसाम्भोधे पादाम्बुजायते नमः।।

श्रील – भक्तिविनोद – वन्दना

नमो भक्तिविनोदाय सच्चिदानन्द – नामिने।
गौरशक्ति – स्वरूपाय रूपानुगवराय ते।।

श्रील – जगन्नाथदास – वन्दना

गौराविर्भाव – भूमेस्त्वं निर्देष्टा सज्जन – प्रियः।
वैष्णव – सार्वभौम – श्रीजगन्नाथाय ते नमः।।

श्रीवैष्णव – वन्दना

वाञ्छा – कल्पतरुभ्यश्च कृपा – सिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

श्रीपंचतत्त्व – प्रणामः

पंचतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूप – स्वरूपकम्।
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम्।।

श्रीनित्यानन्द – प्रणामः

संकर्षणः कारण – तोयशायी गर्भोदशायी च पयोब्धिशायी।
शेषश्च यस्यांशकलाः स नित्यानन्दाख्य – रामः शरणं ममास्तु।।

श्रीगौरांग – प्रणामः

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेम – प्रदाय ते।
कृष्णाय 'कृष्णचैतन्य' – नाम्ने गौरत्विषे नमः।।

श्रीकृष्ण – प्रणामः

हे कृष्ण करुणा – सिन्धो दीनबन्धो जगत्पते!
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त! नमोऽस्तु ते।।

श्रीराधा – प्रणामः

तप्त – काञ्चन – गौरांगि राधे वृन्दावनेश्वरि!
वृषभानुसुते देवि प्रणमामि हरिप्रिये।।

श्रीसम्बन्धाधिदेव – प्रणामः

जयतां सुरतौ पंगोर्मम मन्द – मतेर्गती।
मत्सर्वस्व – पदाम्भोजौ राधा – मदनमोहनौ ।।

श्रीअभिधेयाधिदेव प्रणामः

दीव्यद् – वृन्दारण्य – कल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागार – सिंहासनस्थौ।
श्रीश्रीराधा – श्रील – गोविन्ददेवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि।।

श्रीप्रयोजनाधिदेव – प्रणामः

श्रीमान् रास – रसारम्भी वंशीवट – तटस्थितः।
कर्षण् वेणु – स्वनैर्गोपीर्गोपीनाथः श्रियेऽस्तु नः।।

श्रीतुलसी – प्रणामः

वृन्दायै तुलसी – देव्यै प्रियायै केशवस्य च।
कृष्णभक्ति – प्रदे देवि सत्यवत्यै नमो नमः।।

श्रीपञ्चतत्त्व

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु – नित्यानन्द।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि – गौरभक्तवृन्द।।

महामन्त्र

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

जय – ध्वनि

श्रीश्रीगुरु – गौरांग – गान्धर्विका – गिरिधारी – श्रीराधाविनोद – बिहारीजी की जय। [उसके पश्चात् अपने – अपने श्रीगुरुदेव का नाम उच्चारण करते हुए जय देनी चाहिए।]

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद् भक्तिवेदान्त वामन गोस्वामी महाराज जी की जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज जी की जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री श्रील भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी प्रभुपाद जी की जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट परमभागवतप्रवर श्रीश्रील गौरकिशोरदास बाबाजी महाराज की जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट श्रीश्रील सच्चिदानन्द भक्तिविनोद ठाकुर जी की जय।

जय नित्यलीलाप्रविष्ट वैष्णवसार्वभौम श्रीश्रील जगन्नाथदास बाबाजी महाराज की जय।

जय गौड़ीय वेदान्ताचार्यभास्कर श्रीश्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभु की जय।

जय श्रील विश्वनाथ चक्रवर्त्ती ठाकुर की जय।

जय श्रील नरोत्तम – श्रीनिवास – श्रीश्यामानन्द – प्रभुत्रय की जय।

जय श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी प्रभु की जय।

जय श्रील वृन्दावनदास ठाकुर की जय।

जय श्रीरूप, सनातन, भट्ट–रघुनाथ, श्रीजीव, गोपाल–भट्ट, दास–रघुनाथ षड्गोस्वामी प्रभु की जय।

जय श्रीस्वरूपदामोदर–रायरामानन्दादि श्रीगौरपार्षदवृन्द की जय।

जय नामाचार्य श्रील हरिदास ठाकुर की जय।

प्रेम से कहो श्रीकृष्णचैतन्य–प्रभुनित्यानन्द–श्रीअद्वैत–गदाधर–श्रीवासादि श्रीगौरभक्तवृन्द की जय।

श्रीअन्तर्द्वीप मायापुर, सीमन्तद्वीप, गोद्रुमद्वीप, मध्यद्वीप, कोलद्वीप, ऋतुद्वीप, जन्हुद्वीप, मोदद्रुमद्वीप और रुद्रद्वीपात्मक श्रीनवद्वीप धाम की जय।

श्रीश्रीराधाकृष्ण–गोप–गोपी–गो–गोवर्धन–द्वादशवनात्मक श्रीब्रजमण्डल की जय।

श्रीराधाकुण्ड–श्यामकुण्ड–गंगा–यमुना–तुलसी–भक्तिदेवी की जय। श्रीजगन्नाथ–बलदेव–सुभद्रा जी की जय।

श्रीनृसिंह–वराहदेव की जय।

भक्तप्रवर श्रीप्रह्लाद महाराज की जय।

श्रीवासुदेव विप्र–श्रीदेवानन्द पण्डित की जय।

चारों धाम की जय।

चारों सम्प्रदायों की जय।

चारों आचार्यों की जय।

योगपीठ–ब्रजपत्तन श्रीचैतन्य मठ की जय।

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति की जय।

श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ और तत्शाखा–मठसमूह की जय।

श्रीहरिनाम–संकीर्त्तन की जय।

अनन्त कोटि वैष्णववृन्द की जय।

श्रीनिताइ–गौर–प्रेमानन्दे हरि हरि बोल।

साधारण – वन्दना

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वं भक्तवृन्द – समन्वितम्।
श्रीचैतन्यप्रभुं वन्दे नित्यानन्द – सहोदितम्।।
श्रीनन्दनन्दनं वन्दे राधिका – चरणद्वयम्।
गोपीजन – समायुक्तं वृन्दावन – मनोहरम्।।

(श्रीबृहद्गनोद्देश – दीपिका)

गुरवे गौरचन्द्राय राधिकायै तदालये।
कृष्णाय कृष्णभक्ताय तद्भक्ताय नमो नमः।।

श्रीगुरु – वन्दना

नामश्रेष्ठं मनुमपि शचीपुत्रमत्र स्वरूपं
रूपं तस्याग्रजमुरुपुरीं माथुरीं गोष्ठवाटीम्।
राधाकुण्डं गिरिवरमहो! राधिकामाधवाशां
प्राप्तो यस्य प्रथितकृपया श्रीगुरुं तं नतोऽस्मि।।

श्रीगुरु – रूप – सखी – वन्दना

राधासम्मुख – संसक्तिं सखीसंग – निवासिनीम्।
तामहं सततं वन्दे माधवाश्रय – विग्रहम्।।
त्वं गोपिका वृषरवेस्तनयान्तिकेऽसि,
सेवाधिकारिणि गुरो! निज – पादपद्मे।
दास्यं प्रदाय कुरु मां ब्रज – कानने श्री –
राधांघ्रि – सेवन – रसे सुखिनीं सुखाब्धो।।

श्रीवैष्णव – वन्दना

चैतन्यचन्द्र – चरितामृत – शुद्ध – सिन्धु –
वृन्दावनीय – सुरसोर्म्मि – समुन्निमग्नाः।

ये वै जगन्निजगुणैः स्वयमापुनन्ति
तान् वैष्णावांश्च हरिनाम – परान् नमामि।।

चतुर्युगीय वैष्णव – वन्दना

स्वयम्भुर्नारदः शम्भुः कुमारः कपिलो मनुः।
प्रह्लादो जनको भीष्मो बलिर्वैयासकिर्वयम्।।

(भा: 6/3/20)

मार्कण्डेयोऽम्बरीषश्च वसुर्व्यासो विभीषणः।
पुण्डरीको बलिः शम्भुः प्रह्लादो विदुरो ध्रुवः।।
दाल्भ्यः पराशरो भीष्मो नारदाद्याश्च वैष्णवैः।
सेव्या हरिं निषेव्यामी नो चेदागः परं भवेत्।।

(लघुभागवतामृत उत्तरखण्ड – 2 संख्याधृत पाद्मवाक्य)

श्रीमन्मध्वाचार्य – वन्दना

आनन्दतीर्थनामा सुखमयधामा यतिर्जीयात्।
संसारार्णवतरणीं यमिह जनाः कीर्त्तयन्ति बुधाः।।

(श्रीप्रमेय – रत्नावली)

श्रील माधवेन्द्रपुरी – वन्दना

श्रीमाधवपुरीं वन्दे यतीन्द्रं शिष्यसंयुतम्।
लोकेष्वंकुरितो येन कृष्णभक्त्यमरांघ्रिपः।।

(श्रीवैष्णव – तोषणी)

श्रील सनातन – गोस्वामि – वन्दना

वैराग्ययुग् भक्तिरसं प्रयत्नैरपाययन्मामनभीप्सुमन्धम्।
कृपाम्बुधिर्यः परदुःखदुःखी सनातनं तं प्रभुमाश्रयामि।।

(श्रीविलापकुसुमांजलिः)

श्रील – रूप – गोस्वामि – वन्दना

आददानस्तृणं दन्तैरिदं याचे पुनः पुनः।
श्रीमद्रूप – पदाम्भोजधूलिः स्यां जन्मजन्मनि।।

(श्रीमुक्ताचरितम्)

श्रीचैतन्यमनोऽभीष्टं स्थापितं येन भूतले।
सोऽयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम्।।

(श्रीप्रेमभक्तिचन्द्रिका)

श्रील रूप – रघुनाथ – गोस्वामि – वन्दना

रूपेति नाम वद भो रसने! सदा त्वं
रूपञ्च संस्मर मनः करुणास्वरूपम्।
रूपं नमस्कुरु शिरः सदयावलोकं
तस्याद्वितीय – सुतनुं रघुनाथदासम्।।

(श्रीभक्तिरत्नाकर – धृत साधनदीपिका)

श्रील – गोपालभट्ट – जीव – गोस्वामि – वन्दना

सनातन – प्रेम – परिप्लुतान्तरं, श्रीरूपसख्येन विलक्षिताखिलम्।
नमामि राधारमणैक – जीवनं, गोपालभट्टं भजतामभीष्टदम्।।
श्रीरूपचरणद्वन्द्व – रागिणं ब्रजवासिनम्।
श्रीजीवं सततं वन्दे वन्देष्वानन्ददायिनम्।।

(भक्तिरत्नाकर)

श्रीषड्गोस्वामि – वन्दना

श्रीरूपं साग्रजं वन्दे रघुनाथं कृपामयम्।
श्रीजीवं भट्टयुगञ्च सज्जन – सुख – दायकम्।।
एषां सहज – स्निग्धानां पादरेणुमभीक्ष्नशः।
सर्वविघ्न – विनाशाय शिरसा धारयाम्यहम्।।

श्रीपञ्चतत्त्व – वन्दना

पंचतत्त्वात्मकं कृष्णं भक्तरूप – स्वरूपकम्।
भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम्।।
वन्दे गुरूनीशभक्तानीशमीशावतारकान्।
तत्प्रकाशांश्च तच्छक्ती कृष्णचैतन्य – संज्ञकम्।।

(श्रीचैतन्यचरितामृत)

हा विश्वम्भर! हा महारसमय! प्रेमिक – सम्पन्निधे!
हा पद्मासुत! हा दयार्द्रहृदय! भ्रष्टैकबन्धूत्तम्।।
हा सीतेश्वर! हा चराचरपते! गौरावतीर्णक्षम।
हा श्रीवास – गदाधरेष्टविषय! त्वं मे गतिस्त्वं गतिः।।

(श्रीश्रीनवद्वीप – शतकम्)

श्रीश्रीवास – वन्दना

श्रीवासपण्डितं नौमि गौरांग – प्रियपार्षदम्।
यस्य कृपालवेनापि गौरांगे जायते रतिः।।
श्रीवास! कीर्त्तनानन्द! भक्तगोष्ठ्येकवल्लभ!
त्वां नमामि महायोगिन्! भक्तरूपोऽसि नारदः।।

श्रीगदाधर – पण्डित – वन्दना

गदाधरमहं वन्दे माधवाचार्य – नन्दनम्।
महाभाव – स्वरूपं श्रीचैतन्याभिन्नरूपिणम्।।
गान्धर्विका – स्वरूपाय गौरांग – प्रेमसम्पदे।
गदाधराय मे नित्यं नमोऽस्तु हे कृपालवे।।

श्रीअद्वैत – प्रभु – वन्दना

महाविष्णुर्जगत्कर्त्ता मायया यः सृजत्यदः।
तस्यावतार एवायमद्वैताचार्य ईश्वरः।।

अद्वैतं हरिणाद्वैतादाचार्यं भक्तिशंसनात्।
भक्तावतारमीशं तमद्वैताचार्यमाश्रये।।

(श्रीस्वरूपगोस्वामि - कड़चा)

श्रीअद्वैत! नमस्तुभ्यं कलिजन - कृपानिधे।
गौरप्रेम - प्रदानाय श्रीसीतापतये नमः।।
प्रेमभक्तिप्रदं श्रीमन्माधवेन्द्रपुरीप्रियम्।
श्रीलाद्वैतप्रभुं वन्दे श्रीमाध्व - सम्प्रदायिनम्।।

(श्रीभक्तिरत्नाकर)

श्रीनित्यानन्द – प्रभु – वन्दना

नित्यानन्द! नमस्तुभ्यं प्रेमानन्द - प्रदायिने।
कलौ कल्मश - नाशाय जाह्नवापतये नमः।।

हाड़ाइ - पण्डित - तनुज! कृपासमुद्र! पद्मावती - तनय! तीर्थपदारविन्द!
त्वं प्रेमकल्पतरुरार्त्तिहरावतार! मां पाहि पामरमनाथमनन्य - बन्धुम्।।

श्रीश्रीगौरांग – महाप्रभु – वन्दना

ध्येयं सदा परिभवघ्नमभीष्टदोहं
तीर्थास्पदं शिव - विरिञ्चि - नुतं शरण्यम्।
भृत्यार्त्तिहं प्रणतपाल - भवाब्धिपोतं
वन्दे महापुरुष ते चरणारविन्दम्।।
त्यक्त्वा सुदुस्त्यज - सुरेप्सित - राज्यलक्ष्मीं
धर्मिष्ठ - आर्यवचसा यदगादरण्यम्।
मायामृगं दयितयेप्सितमन्वधावद्
वन्दे महापुरुषं ते चरणारविन्दम्।।

(भाः 11/5/33 - 34)

आनन्द - लीलामय - विग्रहाय, हेमाभ - दिव्यच्छवि - सुन्दराय।
तस्मै महाप्रेमरस - प्रदाय, चैतन्यचन्द्राय नमो नमस्ते।।

(श्रीचैतन्यचन्द्रामृतम्)

जय नवद्वीप – नवप्रदीप – प्रभावः पाषण्डगजैकसिंहः।
स्वनामसंख्या – जपसूत्रधारी, चैतन्यचन्द्रो भगवान्मुरारिः।।
(श्रीचैतन्यभागवत)

स जयति विशुद्धविक्रमः कनकाभः कमलायतेक्षणः।
वरजानुविलम्बि – षड्भुजो बहुधा भक्तिरसाभिनर्त्तकः।।
(श्रीचैतन्यभागवत)

अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ
समर्पयितुमुन्नतोज्ज्वलरसां स्वभक्ति – श्रियम्।
हरिः पुरट – सुन्दरद्युति – कदम्ब – सन्दीपितः
सदा हृदयकन्दरे स्फुरतु नः शचीनन्दनः।।
(विदग्धमाधवः)

राधाकृष्ण – प्रणयविकृतिर्ह्लादिनीशक्तिरस्मा –
देकात्मानावपि भुवि पुरा देहभेदं गतौ तौ।
चैतन्याख्यं प्रकटमधुना तद्द्वयञ्चैक्यमाप्तं
राधाभावद्युति – सुवलितं नौमि कृष्णस्वरूपम्।।
(श्रीस्वरूप – गोस्वामि – कड़चा)

श्रीश्रीगौर – नित्यानन्द – वन्दना

आजानुलम्बित – भुजौ कनकावदातौ
संकीर्त्तनैक – पितरौ कमलायताक्षौ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्मपालौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ।।
(श्रीचैतन्यभागवत)

वन्दे श्रीकृष्णचैतन्य – नित्यानन्दौ सहोदितौ।
गौड़ोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शन्दौ तमोनुदौ।।
(श्रीचैतन्यचरितामृत)

अवतीर्णौ स-कारुण्यौ परिच्छिन्नौ सदीश्वरौ।
श्रीकृष्णचैतन्य-नित्यानन्दौ द्वौ भ्रातरौ भजे।।

(श्रीमुरारिगुप्त-कृत श्लोक)

श्रीनवद्वीप धाम-वन्दना

श्रुतिश्छान्दोग्याख्या वदति परमं ब्रह्मपुरकं
स्मृतिर्वैकुण्ठाख्यं वदति किल यद्विष्णु-सदनम्।
सितद्वीपञ्चान्ये विरल-रसिकोऽयं ब्रजवनं
नवद्वीपं वन्दे परम-सुखदं तं चिदुदितम्।।

(श्रीनवद्वीप-शतकम्)

श्रीललितादेव्यादि-अष्टसखी-वन्दना

यां कामपि ब्रजकुले वृषभानुजायाः
प्रेक्ष्य स्वपक्ष-पदवीमनुरुद्ध्यमानाम्।
सद्यस्तदिष्ट-घटनेन कृतार्थयन्तीं
देवीं गुणैः सुललितां ललितां नमामि।।

(श्रीललिताष्टकम्)

ललिता च विशाखा च चित्रा चम्पकवल्लीका।
रंगदेवी सुदेवी च तुंगविद्येन्दुरेखिका।।
एताभ्योऽष्टसखीभ्यश्च सततञ्च नमो नमः।
तथापि मम सर्वस्वा ललिता सर्ववन्दिता।।

श्रीरूप-मञ्जरी वन्दना

ताम्बूलार्पण-पादमर्द्दन-पयोदानाभिसारादिभि-
र्वृन्दारण्य-महेश्वरीं प्रियतया यास्तोषयन्ति प्रियाः।
प्राणप्रेष्ठ-सखीकुलादपि किलासंकोचित-भूमिकाः
केलीभूमिषु रूपमञ्जरी-मुखास्तादासिकाः संश्रये।।

(श्रीब्रजविलासस्तवः)

श्रीश्रीराधिका – वन्दना

महाभावस्वरूपा त्वं कृष्णप्रिया – वरीयसी।
प्रेमभक्तिप्रदे! देवि! राधिके त्वां नमाम्यहम्।।
राधे वृन्दावनाधीशे! करुणामृतवाहिनि।
कृपया निज – पादाब्जे दास्यं मह्यं प्रदीयताम्।।
भजामि राधामरविन्दनेत्रां, स्मरामि राधां मधुर – स्मितास्याम्।
वदामि राधां करुणाभरार्द्रां, ततो ममान्यास्ति गतिर्न कापि।।

(श्रीविशाखानन्ददाभिधस्तोत्रम्)

हा देवि! काकुभर – गद्गदयाऽद्य वाचा
याचे निपत्य भुवि दण्डवदुद्भटार्त्तिः।
अस्य प्रसादमबुधस्य जनस्य कृत्वा
गान्धर्विके निजगणे गणनां विधेहि।।

(श्रीगान्धर्वा – संप्रार्थनाष्टकम्)

पादाब्जयोस्तव विना वरदास्यमेव
नान्यत् कदापि समये किल देवि याचे।
सख्याय ते मम नमोऽस्तु नमोऽस्तु नित्यं
दास्याय ते मम रसोऽस्तु रसोऽस्तु सत्यम्।।

(श्रीविलाप – कुसुमाञ्जलि)

श्रीबालगोपाल – वन्दना

करारविन्देन पदारविन्दं, मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्।
ब्रजेश्वरी – क्रोड़गतं हसन्तं, बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि।।
नवीन – नीरद – श्यामं नीलेन्दीवर – लोचनम्।
यशोदानन्दनं नौमि कृष्णं गोपालरूपिणम्।।

(नारदपञ्चरात्रे गोपालस्तोत्रम्)

गोष्ठेश्वरीवदन – फुत्कृति लोलनेत्रं
जानुद्वयेन धरणीमनुसञ्चरन्तम्।

किञ्चिन्नवस्मित–सुधामधुराधराभं
बालं तमालदल–नीलमहं भजामि।।

(पद्यावली–132)

सजल–जलद–नील–न्यक्कृत–श्यामलाङ्गं
करतल–धृत–शैलं वेणुवाद्यानुशीलम्।
मधुर–मधुर–लीलं श्रील–गोपाल–मल्लं
ब्रजजन–कुल–पालं धीमहि ब्रह्ममूलम्।।
दधिमथन–निनादैस्त्यक्त–निद्रः प्रभाते
निभृतपदमगारं बल्लवीनां प्रविष्टः।
मुखकमल–समीरैराशु निर्वाप्य दीपान्
कवलित नवनीतः पातु मां बालकृष्णः।।

(पद्यावली–142)

सव्ये पाणौ नियमितरवं किङ्किणीदाम धृत्वा
कुब्जीभूय प्रपदगतिभिर्मन्दमन्दं विहस्य।
अक्ष्नोर्भंग्या विहसित–मुखीर्वारयन् सम्मुखीना
मातुः पश्चादहरत हरिर्जातु हैयंगवीनम्

(पद्यावली–143)

श्रीश्रीकृष्ण–वन्दना

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गो–ब्राह्मण–हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

(विष्णुपुराणम्)

भवभयमपहन्तुं ज्ञानविज्ञानसारं
निगमकृदुपजह्रे भृंगवद् वेदसारम्।
अमृतमुदधितश्चापाययद् भृत्यवर्गान्
पुरुषमृषभमाद्यं कृष्णसंज्ञं नतोऽस्मि।।

(भाः 11/29/49)

फुल्लेन्दीवर – कान्तिमिन्दु – वदनं बर्हावतंस – प्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदार – कौस्तुभधरं पीताम्बर – सुन्दरम्।
गोपीनां नयनोत्पलार्चित – तनुं गो – गोप – संघावृतं
गोविन्दं कलवेणु – वादनपरं दिव्यांगभूषं भजे।।

कस्तूरीतिलकं ललाट – पटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वर – मौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्री – परिवेष्टितो विजयते गोपाल – चूड़ामणिः।।

(श्रीगोपाल – सहस्त्रनाम – स्तोत्रम्)

वर्हापीड़ाभिरामं मृगमद – तिलकं कुण्डलाक्रान्तगण्डं
कञ्जाक्षं कम्बुकण्ठं स्मित – सुभग – मुखं स्वाधरे न्यस्तवेणुम्।
श्यामं शान्तं त्रिभंगं रविकर – वसनं भूषितं वैजयन्त्या
वन्दे वृन्दावनस्थं युवतीशतवृतं ब्रह्मगोपाल – वेशम्।।

(पद्यावली)

श्रीश्रीराधा – कृष्ण – वन्दना

कनक – जलद – गात्रौ नील – शौणाब्जनेत्रौ
मृगमदवर – भालौ मालती – कुन्दमालौ।
तरल – तरुण – वेशौ नील – पीताम्बरेशौ
स्मर निभृत – निकुञ्जे राधिका – कृष्णचन्द्रौ।।

(श्रीनिकुंजरहस्यस्तवः)

अंगश्यामलिमच्छटाभिरभितो मन्दीकृतेन्दीवरं
जाड्यञ्जागुड़रोचिषां विदधतं पट्टाम्बरस्य श्रिया।
वृन्दारण्य – निवासितं हृदि लसद्दामाभिरामोदरं
राधास्कन्ध – निवेशितोज्ज्वल – भुजं ध्यायेम दामोदरम्।।

(स्तवावली)

श्रीवृन्दावन धाम – वन्दना

जयति जयति वृन्दारण्यमेतन्मुरारेः
प्रियतममति – साधुस्वान्त – वैकुण्ठवासात्।
रमयति स सदा गाः पालयन् यत्र गोपीः
स्वरित – मधुर – वेणुर्वर्द्धयन् प्रेम रासे।।

(श्रीबृहद्भागवतामृतम्)

श्रीबलराम – वन्दना

नमस्ते तु हलग्राम नमस्ते मुषलायुध।
नमस्ते रेवतीकान्त नमस्ते भक्त – वत्सल।।
नमस्ते बलिनां श्रेष्ठ नमस्ते धरणीधर।
प्रलम्बारे नमस्ते तु त्राहि मां कृष्ण – पूर्वज।।

श्रीश्रीगोवर्धन – वन्दना

हन्तायमद्रिरवला हरिदासवर्यो
यद् – रामकृष्णचरण – स्पर्श – प्रमोदः।
मानं तनोति सह – गोगणयोस्तयोर्यत्
पानीय – सुयवस – कन्दर – कन्दमूलैः।।

(भाः 10/21/18)

गोवर्धनो जयति शैलकुलाधिराजो
यो गोपिकाभिरुदितो हरिदासवर्यः।
कृष्णेन शक्रमखभंगकृतार्चितो यः
सप्ताहमस्य करपद्मतलेऽवात्सीत्।।

(श्रीबृहद्भागवतामृतम्)

सप्ताहमेवाच्युत – हस्तपङ्कजे भृंगायमानं फलमूल – कन्दरैः।
संसेव्यमानं हरिमात्मवृन्दकैर्गोवर्धनाद्रिं शिरसा नमामि।।

श्रीश्रीराधाकुण्ड – वन्दना

अनन्त – हरिराधिका – मधुरकेलिवृन्दैः सदा
महाद्भुतमहो! महारस – चमत्कृतीनां निधिम्।
महोज्ज्वलं महासुसौरभतमं च वृन्दावने
समरोन्मद – तदीश्वरीदयित – दिव्यकुण्डं नुमः।।

(श्रीवृन्दावन – महिमामृतम्)

हे श्रीसरोवर! सदा त्वयि सा मदीशा
प्रेष्ठेन सार्द्धमिह खेलति कामरंगैः।
त्वञ्चेत् प्रियात् प्रियमतीव तयोरिती मां
हा दर्शयाद्य कृपया मम जीवितं ताम्।।

(श्रीविलापकुसुमाञ्जलि)

यथा राधा प्रिया विष्णोस्तस्याः कुण्डं प्रियं तथा।
सर्वगोपीषु सैवैका विष्णोरत्यन्तवल्लभा।।

(पाद्मे)

श्रीश्यामकुण्ड – वन्दना

दुष्टारिष्टवधे स्वयं समभवत् कृष्णांघ्रि – पद्मादिदं
स्फीतं यन्मकरन्द – विस्तृतिरिवारिष्टाख्यमिष्टं सरः।
सोपानैः परिरञ्जितं प्रियतया श्रीराधया कारितैः
प्रेम्नालिंगदिव प्रियासर इदं तन्नित्यनित्यं भजे।।

(श्रीब्रजविलासस्तवः)

श्रीयमुना – वन्दना

चिदानन्दोभानोः सदानन्दसूनोः परप्रेमपात्री द्रवब्रह्मगात्री।
अघानां लवित्री जगत्क्षेमधात्री पवित्रीक्रियान्नो वपुर्मित्रपुत्री।।

(पद्मपुराण)

गंगादि – तीर्थ – परिषेवित – पादपद्मां
गोलोक – सख्यरस – पूरमहिं महिम्ना।
आप्लावितारिवल – सुधा – सुजलां सुखाब्धौ
राधा – मुकुन्द – मुदितां यमुनां नमामि।।

श्रीपौर्णमासी – वन्दना

राधेश – केलि – प्रभुता – विनोद – विन्याश – विज्ञां ब्रज – वन्दितांघ्रिम्।
कृपालुताद्यखिल – विश्ववन्द्यां श्रीपौर्णमासीं शिरसा नमामि।।

श्रीवृन्दादेवी – वन्दना

वृन्दावन – स्थिरचरान् परिपालयित्रि!
वृन्दे! तयोरसिकयोरति – सौभगेन।
आद्यासि तत्कुरु कृपां गणना यथैव
श्रीराधिका – परिजनेषु ममापि सिद्धयेत्।।

(श्रीसंकल्प – कल्पद्रुमः)

भक्त्या विहीना अपराधलक्षैः क्षिप्ताश्च कामादि – तरंगमध्ये।
कृपामयि! त्वां शरणं प्रपन्ना वृन्दे नुमस्ते चरणारविन्दम्।।

(श्रीवृन्दादेव्यष्टकम्)

श्रीब्रजवासीवृन्द – वन्दना

मुदा यत्र ब्रह्मा तृणनिकर – गुल्मादिषु परं
सदा कांक्षन् जन्मार्पित – विविध – कर्माप्यनुदिनम्।
क्रमाद् ये तत्रैव ब्रजभुवि वसन्ति प्रियजना
मया ते ते वन्द्याः परमविनयात् पुण्यखचिताः।।

(श्रीब्रजविलासस्तवः)

श्रीगोपीश्वर – शिव – वन्दना

वृन्दावनावनिपते जय सोम सोममौले।
सनक – सनन्दन – सनातन – नारदेड्य।
गोपीश्वर व्रजविलासि – युगांघ्रि – पद्मे
प्रेम प्रयच्छ निरुपाधि नमो नमस्ते।।

(श्रीसंकल्प कल्पद्रुमः)

श्रीतुलसी – वन्दना

महाप्रसाद – जननी सर्व – सौभाग्य – वर्द्धिनी।
आधिव्याधिहरी नित्यं तुलसि! त्वं नमोऽस्तु ते।।

श्रीगंगा – वन्दना

प्रभु – क्रीड़ापात्रीममृत – रसगात्रीमृषिघटा –
शिव – ब्रह्मेन्द्रादीड़ित – महित – माहात्म्य – मुखराम्।
लसत् – किञ्जल्काम्भोजनि – मधुप – गर्भोरु – करुणा –
महं वन्दे गंगामघनिकर – भंगा – जलकणाम्।।

श्रीवेदव्यास – देव – वन्दना

पितापराशरो यस्य शुकदेवस्य यः पिता।
तं व्यासं वदरीवासं कृष्णद्वैपायनं भजे।।

(श्रीसिद्धान्तदर्पणम्)

श्रीशुकदेव – वन्दना

यं प्रवजन्तमनुपेतमपेतकृत्यं
द्वैपायनो विरहकातर आजुहाव।

पुत्रेति तन्मयतया तरवोऽभिनेदु-
स्तं सर्वभूतहृदयं मुनिमानतोऽस्मि।।
यः स्वानुभावमखिल-श्रुतिसारमेक-
मध्यात्म-दीपमतितीर्षतां तमोऽन्धम्।
संसारिणां करुणयाह पुराणगुह्यं
तं व्याससूनुमुपयामि गुरुं मुनीनाम्।।

(भाः 1/2/2-3)

श्रीमद्भागवत-वन्दना

तमादिदेवं करुणानिधानं तमालवर्णं सुहितावतारम्।
अपारसंसार-समुद्र-सेतुं भजामहे भागवत-स्वरूपम्।।

(श्रीपद्मपुराणम्)

श्रीश्रीनाम-वन्दना

जयति जयति नामानन्दरूपं मुरारे-
र्विरमित-निजधर्म-ध्यान-पूजादि-यत्नम्।
कथमपि सकृदात्तं मुक्तिदं प्राणिनां यत्
परमममृतमेकं जीवनं भूषणं मे।।

(श्रीबृहद्भागवतामृतम्)

श्रीश्रीजगन्नाथदेव-वन्दना

महाम्भोधेस्तीरे कनक-रुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज-बलभद्रेण वलिना।
सुभद्रा-मध्यस्थः सकल-सुरसेवावसरदो-
जगन्नाथः स्वामी नयनपथ-गामी भवतु मे।।

(श्रीश्रीजगन्नाथाष्टकम्)

श्रीश्रीनृसिंहदेव – वन्दना

नमस्ते नरसिंहाय प्रह्लादाह्लाद – दायिने।
हिरण्यकशिपोर्वक्षः शिलाटङ्क – नखालये।।
इतो नृसिंहः परतो नृसिंहो यतो यतो यामि ततो नृसिंहः।
बहिर्नृसिंहो हृदये नृसिंहो नृसिंहमादिं शरणं प्रपद्ये।।

(श्रीनृसिंह – पुराणम्)

वागीशा यस्य वदने लक्ष्मीर्यस्य च वक्षसि।
यस्यास्ते हृदये संवित् तं नृसिंहमहं भजे।।

(श्रीभावार्थ – दीपिका)

श्रीश्रीरामचन्द्र – वन्दना

नीलाम्बुज – श्यामल – कोमलांगं, सीतासमारोपित – वामभागम्।
पाणौ महासायक – चारुचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

(श्रीरामचरित – मानस)

दक्षिणे लक्ष्मणो धन्वी वामतो जानकी शुभा।
पुरतो मारुतीर्यस्य तं नमामि रघुत्तमम्।।

श्रीश्रीदशावतार – वन्दना

वेदानुद्धरते जगन्ति बहते भूगोलमुद्विभ्रते
दैत्यान् दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान्मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः।।

(श्रीगीतगोविन्दम्)

श्रीगुरु–परम्परा

[श्रील कविकर्णपूरानुमोदिता; श्रील–गोपालभट्ट–गोस्वामिना, श्रील–बलदेव–विद्याभूषणेन चोद्धृता]

श्रीकृष्ण–ब्रह्म–देवर्षि–बादरायण–संज्ञकान्।
श्रीमध्व–श्रीपद्मनाभ–श्रीमन्नृहरि–माधवान्।।
अक्षोभ्य–जयतीर्थ–श्रीज्ञानसिन्धु–दयानिधीन्।
श्रीविद्यानिधि–राजेन्द्र–जयधर्मान्–क्रमाद्वयम्।।
पुरुषोत्तम–ब्रह्मण्य–व्यासतीर्थांश्च संस्तुमः।
ततो लक्ष्मीपतिं श्रीमन्माधवेन्द्रञ्च भक्तितः।।
तच्छिष्यान् श्रीश्वराद्वैत–नित्यानन्दान् जगद्गुरून्।
देवमीश्वर–शिष्यं श्रीचैतन्यञ्च भजामहे।।
श्रीकृष्णप्रेमदानेन येन निस्तारितं जगत्।
कलि–कलुष–सन्तप्तं करुणासिन्धुना स्वयम्।।
महाप्रभु–स्वरूपश्रीदामोदरः प्रियंकरः।
रूप–सनातनौ द्वौ च गोस्वामि–प्रवरौ प्रभु।।
श्रीजीवो रघुनाथश्च रूप–प्रियो महामतिः।
तत्प्रियः कविराजः श्रीकृष्णदास–प्रभुर्मतः।।
तस्य प्रियोत्तमः श्रील–सेवापरो नरोत्तमः।
तदनुगत–भक्तः श्रीविश्वनाथः सदुत्तमः।।
तदासक्तश्च गौड़ीय–वेदान्ताचार्य–भूषणम्।
विद्याभूषणपाद–श्रीबलदेवः सदाश्रयः।।
वैष्णव–सार्वभौमः श्रीजगन्नाथ–प्रभुस्तथा।
श्रीमायापुर–धाम्नस्तु निर्देष्टा सज्जन–प्रियः।।
शुद्धभक्ति–प्रचारस्य मूलीभूत इहोत्तमः।
श्रीभक्तिविनोदो देवस्तत्प्रियत्वेन विश्रुतः।।

तदभिन्न – सुहृदवर्यो महाभागवतोत्तमः।
श्रीगौरकिशोरः साक्षाद् वैराग्यं विग्रहाश्रितम्।।
मायावादि – कुसिद्धान्त – ध्वान्तराशि – निरासकः।
विशुद्ध – भक्तिसिद्धान्तैः स्वान्तपद्म – विकाशकः।।
देवोऽसौ परमोहंसो मत्तः श्रीगौर – कीर्त्तने।
प्रचाराचार – कार्येषु निरन्तरं महोत्सुकः।।
हरिप्रिय – जनैर्गम्य ॐ विष्णुपाद – पूर्वकः।
श्रीपादो **भक्तिसिद्धान्तसरस्वती** – महोदयः।।
तदन्तरंगवर्यः **श्रीभक्तिप्रज्ञान – केशवः**।।
गौरवाणी – विनोदे यः कृतिरत्नेति – संज्ञकः।।
तस्यानुग – प्रधान – **श्रीभक्तिवेदान्त वामनः**।
सारस्वत – सम्प्रदाय – वैभवाचार्या – भास्करः।।
सर्वे ते गौर – वंश्याश्च परमहंस – विग्रहाः।
वयञ्च प्रणता दासास्तदुच्छिष्ट – ग्रहाग्रहाः।।

श्रीगुर्वष्टकम्

(श्रील – विश्वनाथ – चक्रवर्त्ति – ठक्कुर – विरचितम्)

संसार – दावानल – लीढ़ – लोक – त्राणाय कारुण्यघनाघनत्वम्।
प्राप्तस्य कल्याण – गुणार्णवस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।१।।

महाप्रभोः कीर्त्तन – नृत्य – गीत – वादित्रमाद्यन्मनसो रसेन।
रोमाञ्च – कम्पाश्रु – तरंग – भाजो वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।२।।

श्रीविग्रहाराधन – नित्य – नाना – शृंगार – तन्मन्दिर – मार्ज्जनादौ।
युक्तस्य भक्तांश्च नियुञ्जतोऽपि वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।३।।

चतुर्विध–श्रीभगवत्प्रसाद–स्वाद्वन्न–तृप्तान् हरिभक्त–संघान्।
कृत्वैव तृप्तिं भजतः सदैव वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।४।।

श्रीराधिका–माधवयोरपार–माधुर्य्य–लीला–गुण–रूप–नाम्नाम्।
प्रतिक्षणास्वादन–लोलुपस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।५।।

निकुञ्जयूनो–रतिकेलि–सिद्ध्यै–र्या यालिभिर्युक्तिरपेक्षणीया।
तत्रातिदाक्ष्यादतिवल्लभस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।६।।

साक्षाद्धरित्वेन समस्त–शास्त्रै–रुक्तस्तथा भाव्यत एव सद्भिः।
किन्तु प्रभोर्यः प्रिय एव तस्य वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।७।।

यस्य प्रसादाद् भगवत्–प्रसादो यस्याप्रसादान्न गतिः कुतोऽपि।
ध्यायंस्तुवंस्तस्य यशस्त्रिसन्ध्यं वन्दे गुरोः श्रीचरणारविन्दम्।।८।।

श्रीमद्गुरोरष्टकमेतदुच्चै–र्ब्राह्मे मुहूर्त्ते पठति प्रयत्नात्।
यस्तेन वृन्दावन–नाथ–साक्षात्–सेवैव लभ्या जनुषोऽन्त एव।।९।।

श्रीवामन–गोस्वामी–प्रणति–अष्टकम्

यतिकेशरि–केशव–शिष्यवरं, यतिदण्ड–विभूषित–हास्यमयम्।
वरसौम्य–सुकोमल–मूर्त्तिधरं, प्रभजे प्रभु–वामनदेव–पदम्।।१।।

परिहृत्य–गृहं–शिशु–सौख्य–मतिं, हरिगौर–परात्परधामगतम्।
प्रभुपाद–कृपाशिष–धन्यकुलं, प्रभजे प्रभु–वामनदेव–पदम्।।२।।

खलु सज्जनसेवन–धर्मपरं, सहजाद्भुत–वैष्णवताढ्य–तनुम्।
गुरुसेवक–सत्तम–दिव्यगुणं, प्रभजे प्रभु–वामनदेव–पदम्।।३।।

निगमागम–धारक–कोषतुलं, सततंच सतां शुचिमार्गचरम्।
भुवि केशव–गीत–महान्तसुरं, प्रभजे प्रभु–वामनदेव–पदम्।।४।।

पर:दुख – विमोचन – यत्नयुतं, छलधर्म – कुधर्म – तमिस्रहरम्।
प्रणतेष्वपि वत्सल – सद्वरदं, प्रभजे प्रभु – वामनदेव – पदम्।।५।।

गुरु – गौर – कथामृत – सिन्धुनिभं, गुणधर्म – विमुक्त – विरागभरम्।
प्रभुरूप – पदाम्बुज – भक्तिपुरं, प्रभजे प्रभु – वामनदेव – पदम्।।६।।

निगमान्त – सभागुण – वृद्धिकरं, गुरुगोपति – काव्य – विकाशपरम्।
परमाश्रय – विग्रह – देववरं, प्रभजे प्रभु – वामनदेव – पदम्।।७।।

भवसागर – पार – पदाब्जतरीं, ब्रज – गौर – रसाम्बुधि – दातृवरम्।
ललितालि – कुलानुग – यूथपरम्, प्रभजे प्रभु – वामनदेव – पदम्।।८।।

भवतोऽस्तु वचो मम सेव्यधनं, तदिदं हि सुधीगण कृत्यपरम्।
दिश देव! पदाश्रय – भक्तिमयं, कुरु रूपगणे गणनामधमम्।।९।।

श्रीकेशवाचार्याष्टकम् (१)

(श्रीमद्भक्तिवेदान्त – त्रिविक्रम – महाराज – विरचितम्)

नम: ॐ विष्णुपादाय आचार्य – सिंहरूपिणे।
श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान – केशव – इति – नामिने।।१।।

श्रीसरस्वत्यभीप्सितं सर्वथा सुष्ठु – पालिने।
श्रीसरस्वत्यभिन्नाय पतितोद्धार – कारिणे।।२।।

वज्रादपि कठोराय चापसिद्धान्त – नाशिने।
सत्यस्यार्थे निर्भीकाय कुसंग – परिहारिणे।।३।।

अतिमर्त्त्य – चरित्राय स्वाश्रितानाञ्च – पालिने।
जीव – दु:खे सदार्त्ताय श्रीनाम – प्रेम – दायिने।।४।।

विष्णुपाद–प्रकाशाय कृष्ण–कामैक–चारिणे।
गौर–चिन्ता–निमग्नाय श्रीगुरुं हृदि–धारिणे।।५।।

विश्वं विष्णुमयमिति स्निग्ध–दर्शन–शालिने।
नमस्ते गुरुदेवाय कृष्ण–वैभव–रूपिणे।।६।।

श्रीश्रीगौड़ीय–वेदान्त–समितेः स्थापकाय च।
श्रीश्रीमायापुर–धाम्नः सेवा–समृद्धि–कारिणे।।७।।

नवद्वीप–परिक्रमा येनैव रक्षिता सदा।
दीनं प्रति दयालवे तस्मै श्रीगुरवे नमः।।८।।

देहि मे तव शक्तिस्तु दीनेनेयं सुयाचिता।
तव पाद–सरजेभ्यो मतिरस्तु प्रधाविता।।९।।

श्रीकेशवाचार्याष्टकम् (२)

(श्रीमद्भक्तिवेदान्त–ऊर्द्धवमन्थी–महाराज–विरचितम्)

चिरमुक्तगणादृत–काम्यधनं धनदेप्सित–वन्दित–कल्पतरुम्।
तरुराजित–चिन्मय–धामचरं प्रणमामि ह केशवपूतपदम्।।(१)

कुलियैव–वराह–सुधामवरं वरदायक–देव–विकाशकृतम्।
कृतदोष–समूह–तमोहरणं प्रणमामि ह केशवपूतपदम्।।(२)

नटनप्रिय–भाव–कलाद्रुचिरं चिरधाम–विराजित–नित्यप्रभुम्।
प्रभुपाद–रसाब्धि–कृतीरतनं प्रणमामि ह केशवपूतपदम्।।(३)

रघुनाथ–निभैव–विरागपरं परमोज्ज्वल–राग–सुमूर्त्तिसुरम्।
सुरनन्दित–तर्पित–देववरं प्रणमामि ह केशवपूतपदम्।।(४)

प्रभुपाद–मनोगत–भावधरं धरणी–जड़रंग–विहीननरम्।
नररूप–विलास–विभावमयं प्रणमामि ह केशवपूतपदम्।।(५)

प्रणताभय–दायक–तीर्थपदं पदसंश्रित–दीन–समुत्तरणम्।
तरणोन्मुख–जीव–भवापगमं प्रणमामि ह केशवपूतपदम्।।(६)

पितृभाव–परायण–शिष्यगतिं गतिमुक्ति–विधायक–शान्तवरम्।
वरणागत–दुर्मति–शन्दपदं प्रणमामि ह केशवपूतपदम्।।(७)

निगमान्त–सभा–नवकीर्त्तिधरं धरणीजन–तारक–गौरपरम्।
परसेव्य–पदाब्ज–रजस्तमहं प्रणमामि ह केशवपूतपदम्।।८।।

श्रीश्रीप्रभुपादपद्म–स्तवकः

(श्रील–भक्तिरक्षक–श्रीधर–गोस्वामि–महाराज–विरचितम्)

सुजनार्बुद–राधित–पादयुगं युगधर्म–धुरन्धर–पात्रवरम्।
वरदाभय–दायक–पूज्यपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।१।।

भजनोर्जित–सज्जन–संघपतिं पतिताधिक–कारुणिकैकगतिम्।
गतिवञ्चित–वञ्चकाचिन्त्यपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।२।।

अतिकोमल–काञ्चन–दीर्घतनुं तनुनिन्दित–हेम–मृणालमदम्।
मदनार्बुद–वन्दित–चन्द्रपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।३।।

निजसेवक–तारक–रञ्जिविधुं विधुताहित–हुंकृत–सिंहवरम्।
वरणागत–बालिश–शन्दपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।४।।

विपुलीकृत – वैभव – गौरभुवं भुवनेषु विकीर्त्तित – गौरदयम्।
दयनीयगणार्पित – गौरपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।५।।

चिरगौर – जनाश्रय – विश्वगुरुं गुरु – गौरकिशोरक – दास्यपरम्।
परमादृत – भक्तिविनोदपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।६।।

रघु – रूप – सनातन – कीर्त्तिधरं धरणीतल – कीर्त्तित – जीवकविम्।
कविराज – नरोत्तम – सख्यपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।७।।

कृपया – हरिकीर्त्तन मूर्त्तिधरं धरणी – भरहारक – गौरजनम्।
जनकाधिक – वत्सल स्निग्धपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।८।।

शरणागत – किंकर – कल्पतरुं तरुधिक्कृत – धीर – वदान्यवरम्।
वरदेन्द्र – गणार्चित – दिव्यपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।९।।

परहंसवरं परमार्थ पतिं पतितोद्धरणे कृत – वेशयतिम्।
यतिराजगणैः परिसेव्यपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।१०।।

वृषभानुसुता – दयितानुचरं चरणाश्रित – रेणुधरस्तमहम्।
महदद्भुत – पावन – शक्तिपदं प्रणमामि सदा प्रभुपादपदम्।।११।।

श्रील-गौरकिशोराष्टकम्

श्रीगौरधामाश्रित - शुद्धभक्तं, रूपानुगाद्यं निरवद्यरूपम्।
वैराग्यधर्मोज्ज्वल-विग्रहं तं, वन्दे प्रभुं गौरकिशोर-संज्ञम्॥१॥

असत्-प्रसंगं परिहाय नित्यं, गौरांग-सेवाव्रत-मग्नचित्तम्।
गौड-ब्रजाभेद-विशिष्ट-प्रज्ञं, वन्दे प्रभुं गौरकिशोर-संज्ञम्॥२॥

श्रीधाम-मायापुर-दिव्य-गूढ-माहात्म्य-गीतोन्मुखरं वरेण्यम्।
धन्यं महाभागवताग्रगण्यं, वन्दे प्रभुं गौरकिशोर-संज्ञम्॥३॥

पूतावधूत-व्रज-शीर्षरत्नं, श्रीराधिकाकृष्ण-निगूढ-भक्तम्।
सदा ब्रजावेश-सराग-चेष्टं, वन्दे प्रभुं गौरकिशोर-संज्ञम्॥४॥

शोकास्पदातीत-प्रभाव-रम्यं, मूढैरवेद्यं प्रणताभिगम्यम्।
नित्यानुभूताच्युत-सद्विलासं, वन्दे प्रभुं गौरकिशोर-संज्ञम्॥५॥

कापट्य-धर्मान्वित-चण्ड-दण्डविधायकं सज्जन-संग-रंगम्।
श्रीकृष्णचैतन्यपादाब्ज-भृंगं, वन्दे प्रभुं गौरकिशोर-संज्ञम्॥६॥

दामोदरोत्थान-दिने प्रधाने, क्षेत्रे पवित्रे कुलियाभिधाने।
प्रपञ्चलीला-परिहारवन्तं, वन्दे प्रभुं गौरकिशोर-संज्ञम्॥७॥

तव हि 'दयितदासे' सत्यसूर्य-प्रकाशे
जगति दुरतिनाशे प्रोद्यते चिद्विलासे।
वयमनुगतभृत्याः पादपद्मं प्रपन्ना
अनुदिनमनुकम्पां प्रार्थयामो नगण्याः॥८॥

श्रील–भक्तिविनोद–दशकम्

अमन्द–कारुण्य–गुणाकरश्री–चैतन्यदेवस्य दयावतारः।
स गौरशक्तिर्भविता पुनः किं पदं दृशोर्भक्तिविनोददेवः।।(१)

श्रीमज्जगन्नाथ–प्रभुप्रियो य एकात्मको गौरकिशोरकेन।
श्रीगौर–कारुण्यमयो भवेत् किं नित्यं स्मृतौ भक्तिविनोददेवः।।(२)

श्रीनामचिन्तामणि–सम्प्रचारै–रादर्शमाचार–विधौ दधौ यः।
स जागरूकः स्मृतिमन्दिरे किं नित्यं भवेद् भक्तिविनोददेवः।।(३)

नामापराधै रहितस्य नाम्नो माहात्म्यजातं प्रकटं विधाय।
जीवे दयालुर्भविता स्मृतौ किं कृतासनो भक्तिविनोददेवः।।(४)

गौरस्य गूढप्रकटालयस्य सतोऽसतो हर्ष–कुनाट्ययोश्च।
प्रकाशको गौरजनो भवेत् किं स्मृत्यास्पदं भक्तिविनोददेवः।।(५)

निरस्य विघ्नानिह भक्तिगंगा–प्रवाहनेनोद्धृत – सर्वलोकः।
भगीरथो नित्यधियां पदं किं भवेदसौ भक्तिविनोददेवः।।(६)

विश्वेषु चैतन्यकथाप्रचारी माहात्म्यशंसी गुरुवैष्णवानाम्।
नामग्रहादर्श इह स्मृतः किं चित्ते भवेद् भक्तिविनोददेवः।।(७)

प्रयोजनं सन्नभिधेय–भक्ति–सिद्धान्तवाण्या सममत्र गौर–
किशोर–सम्बन्धयुतो भवेत् किं चित्तं गतो भक्तिविनोददेवः।।(८)

शिक्षामृतं सज्जनतोषनीञ्च चिन्तामणिञ्चात्र सजैवधर्म्मम्।
प्रकाश्य चैतन्यप्रदो भवेत् किं चित्ते धृतो भक्तिविनोददेवः।।(९)

आषाढ़दर्शेऽहनि गौरशक्ति–गदाधराभिन्न–तनुर्जहौ यः।
प्रपञ्चलीलामिह नो भवेत किं दृश्य पुनर्भक्तिविनोददेवः।।(१०)

श्रील – जगन्नाथाष्टकम्

रूपानुगानां प्रवरं सुदान्तं, श्रीगौरचन्द्र – प्रियभक्तराजम्।
श्रीराधिका – माधव – चित्तरामं, वन्दे जगन्नाथविभुं वरेण्यम्।।(१)

श्रीसूर्य्यकुण्डाश्रयिणः कृपालो – र्विद्वद्वरं श्रीमधुसूदनस्य।
प्रेष्ठस्वरूपेण विराजमानं, वन्दे जगन्नाथविभुं वरेण्यम्।।(२)

श्रीधाम – वृन्दावनवासि – भक्त – नक्षत्रराजिस्थित – सोमतुल्यम्।
एकान्त – नामाश्रित – संघपालं, वन्दे जगन्नाथविभुं वरेण्यम्।।(३)

वैराग्य – विद्या – हरिभक्तिदीप्तं, दौर्ज्जन्य – कापट्य – विभेदबज्रम्।
श्रद्धायुतेष्वादर – वृत्तिमन्तं, वन्दे जगन्नाथविभुं वरेण्यम्।।(४)

सम्प्रेरितो गौरसुधांशुना यश्चक्रे हि तज्जन्म – गृह – प्रकाशम्।
देवैर्नुतं वैष्णवसार्वभौमं वन्दे जगन्नाथविभुं वरेण्यम्।।(५)

सञ्चार्य्य सर्वं निजशक्तिराशिं यो भक्तिपूर्वे च विनोददेवे।
तेने जगत्यां हरिनामवन्यां वन्दे जगन्नाथविभुं वरेण्यम्।।(६)

श्रीनामधाम्नोः प्रबलप्रचारे ईहापरं प्रेमरसाब्धिमग्नम्।
श्रीयोगपीठे कृतनृत्यभंगं वन्दे जगन्नाथविभुं वरेण्यम्।।(७)

मायापुरे धामनि सक्तचित्तं गौर – प्रकाशेन च मोदयुक्तम्।
श्रीनाम – गानैर्गलदश्रुनेत्रं वन्दे जगन्नाथविभुं वरेण्यम्।।(८)

हे देव! हे वैष्णवसार्वभौम! भक्त्या पराभूत – महेन्द्रधिञ्चय!
त्वद्देगात्र – विस्तारकृतिं सुपुण्यां वन्दे मुहुर्भक्तिविनोदधाराम्।।(९)

श्रीषड्गोस्वाम्यष्टकम्

(श्रील – श्रीनिवासाचार्य – विरचितम्)

कृष्णोत्कीर्त्तन – गान – नर्त्तनपरौ प्रेमामृताम्भोनिधी
धीराधीरजन – प्रियौ प्रियकरौ निर्मत्सरौ पूजितौ।
श्रीचैतन्य – कृपाभरौ भुवि भुवो भारावहन्तारकौ
वन्दे रूप – सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव – गोपालकौ।।१।।

नानाशास्त्र – विचारणैक – निपुणौ सद्धर्म – संस्थापकौ
लोकानां हितकारिणौ त्रिभुवने मान्यौ शरण्याकरौ।
राधाकृष्ण – पदारविन्द – भजनानन्देन मत्तालिकौ
वन्दे रूप – सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव – गोपालकौ।।२।।

श्रीगौरांग – गुणानुवर्णन – विधौ श्रद्धा – समृद्धयन्वितौ
पापोत्ताप – निकृन्तनौ तनुभृतां गोविन्द – गानामृतैः।
आनन्दाम्बुधि – वर्धनैक – निपुणौ कैवल्य – निस्तारकौ
वन्दे रूप – सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव – गोपालकौ।।३।।

त्यक्त्वा तूर्णमशेष – मण्डलपति – श्रेणीं सदा तुच्छवत्
भूत्वा दीनगणेशकौ करुणया कौपीन – कन्थाश्रितौ।
गोपीभाव – रसामृताब्धि – लहरी – कल्लोल – मग्नौ मुहु –
वन्दे रूप – सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव – गोपालकौ।।४।।

कूजत् – कोकिल – हंस – सारस – गणाकीर्णे मयूराकुले
नानारत्न – निबद्ध – मूल – विटप – श्रीयुक्त – वृन्दावने।
राधाकृष्णमहर्निशं प्रभजतौ जीवार्थदौ यौ मुदा
वन्दे रूप – सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव – गोपालकौ।।५।।

संख्यापूर्वक-नाम-गान-नतिभिः कालावसानीकृतौ
निद्राहार-विहारकादि-विजितौ चात्यन्तदीनौ च यौ।
राधाकृष्ण-गुण-स्मृतेर्मधुरिमानन्देन सम्मोहितौ
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ॥६॥

राधाकुण्ड-तटे कलिन्द-तनया-तीरे च वंशीवटे
प्रेमोन्माद-वशादशेष-दशया ग्रस्तौ प्रमत्तौ सदा।
गायन्तौ च कदा हरेर्गुणवरं भावाभिभूतौ मुदा
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ॥७॥

हे राधे! ब्रजदेविके! च ललिते! हे नन्दसूनो! कुतः
श्रीगोवर्धन-कल्पपादप-तले कालिन्दी-वन्ये कुतः।
घोषन्ताविति सर्वतो ब्रजपुरे खेदैर्महाविह्वलौ
वन्दे रूप-सनातनौ रघुयुगौ श्रीजीव-गोपालकौ॥८॥

श्रीश्रीनित्यानन्दाष्टकम्

(श्रीमद्वृन्दावनदास-ठक्कुर-विरचितम्)

शरच्चन्द्र-भ्रान्तिं स्फुरदमल-कान्तिं गजगतिं
हरि-प्रेमोन्मत्तं धृत-परम-सत्त्वं स्मितमुखम्।
सदा घूर्णन्नेत्रं कर-कलित-वेत्रं कलिभिदं
भजे नित्यानन्दं भजन-तरु-कन्दं निरवधि॥१॥

रसानामागारं स्वजनगण-सर्वस्वमतुलं
तदीयैक-प्राणप्रतिम-वसुधा-जाह्नवा-पतिम्।
सदा प्रेमोन्मादं परम-विदितं मन्द-मनसां
भजे नित्यानन्दं भजन-तरु-कन्दं निरवधि॥२॥

शचीसूनु – प्रेष्ठं निखिल – जगदिष्टं सुखमयं
कलौ मज्जज्जीवोद्धरण – करणोद्दाम – करुणम्।
हरेर्व्याख्यानाद्वा भव – जलधि – गर्वोन्नति हरं
भजे नित्यानन्दं भजन – तरु – कन्दं निरवधि।।३।।

अये भ्रातर्नृणां कलि – कलुषिणां किं नु भविता
तथा प्रायश्चित्तं रचय यदनायासत इमे।
ब्रजन्ति त्वामित्थं सह भगवता मंत्रयति यो
भजे नित्यानन्दं भजन – तरु – कन्दं निरवधि।।४।।

यथेष्टं रे भ्रातः! कुरु हरि – हरि – ध्वानमनिशं
ततो वः संसाराम्बुधि – तरण – दायो मयि लगेत्।
इदं बाहु – स्फोटैरटति रटयन् यः प्रतिगृहं
भजे नित्यानन्दं भजन – तरु – कन्दं निरवधि।।५।।

बलात् संसाराम्भोनिधि – हरण – कुम्भोद्भवमहो
सतां श्रेयः – सिन्धून्नति – कुमुद – बन्धुं समुदितम्।
खलश्रेणी – स्फूर्जत्तिमिर – हर – सूर्य – प्रभमहं
भजे नित्यानन्दं भजन – तरु – कन्दं निरवधि।।६।।

नटन्तं गायन्तं हरिमनुवदन्तं पथि पथि
व्रजन्तं पश्यन्तं स्वमपि नदयन्तं जनगणम्।
प्रकुर्वन्तं सन्तं सकरुण – दृगन्तं प्रकलनाद्
भजे नित्यानन्दं भजन – तरु – कन्दं निरवधि।।७।।

सुबिभ्राणं भ्रातुः कर – सरसिजं कोमलतरं
मिथो वक्त्रालोकोच्छलित – परमानन्द – हृदयम्।

भ्रमन्तं माधुर्यैरहह! मदयन्तं पुरजनान
भजे नित्यानन्दं भजन–तरु–कन्दं निरवधि।।८।।

रसानामाधानं रसिक–वर–सद्वैष्णवधनं
रसागारं सारं पतित–तति–तारं स्मरणतः।
परं नित्यानन्दाष्टकमिदमपूर्वं पठति य–
स्तदंघ्रि–द्वन्द्वाब्जं स्फुरतु नितरां तस्य हृदये।।९।।

(भैरवी)

पश्य शची–सुतमनुपम–रूपम्।
कलितामृत–रस–निरुपम–कूपम्।।
कृष्णराग–कृत–मानस–तापम्।
लीला–प्रकटित–रुद्रप्रतापम्।।
प्रकलित–पुरुषोत्तम–सुविषादम्।
कमला–करकमलाञ्चित–पादम्।।
रोहित–वदन–तिरोहित–भाषम्।
राधामोहन–कृत–चरणाशम्।।

(विभाष)

वन्दे विश्वम्भर–पद–कमलम्।
खण्डित–कलियुग–जनमल–समलम्।।
सौरभ–कर्षित–निजजन–मधुपम्।
करुणा–खण्डित–विरह–वितापम्।।
नाशित–हृदगत–माया–तिमिरम्।
वर–निजकान्त्या जगतामचिरम्।।

सतत – विराजित – निरुपम – शोभम्।
राधामोहन – कलित – विलोभम्।।

(गुज्जरी)

मधुकर – रञ्जित – मालति – मण्डित – जितघन – कुञ्चित – केशम्।
तिलक – विनिन्दित – शशधर – रूपक – भुवन – मनोहर – वेशम।।
सखे, कलय गौरमुदारम्।
निन्दित – हाटक – कान्ति – कलेवर – गर्वितमारकमारम्।।
मधु – मधुरस्मित – लोभित – तनुभृतमनुपम – भाव – विलासम्।
निधुवन – नागरी – मोहित – मानस – विकथित – गद्गद – भाषम्।।
परमाकिञ्चन – किञ्चन – नरगण – करुणा – वितरणशीलम्।
क्षोभित – दुर्मति – **राधामोहन** – नामक – निरुपम – लीलम्।।

श्रीगोद्रुमचन्द्र – भजनोपदेशः

(ॐ विष्णुपाद – श्रील – भक्तिविनोद – ठाकुर – कृत:)

(ताटकच्छन्द:)

यदि ते हरिपादसरोजसुधा – , रसपानपरं हृदयं सततम्।
परिहृत्य गृहं कलिभावमयं, भज गोद्रुम – कानन – कुञ्जविधुम्।।(१)
धन – यौवन – जीवन – राज्यसुखं, न हि नित्यमनुक्षण – नाशपरम्।
त्यज ग्राम्यकथा सकलं विफलं, भज गोद्रुम – कानन – कुञ्जविधुम्।।(२)
रमणीजन – संग्रसुखञ्च सखे, चरमे भयदं पुरुषार्थहरम्।
हरिनाम – सुधारस – मत्तमति – , भज गोद्रुम – कानन – कुञ्जविधुम्।।(३)
जड़काव्यरसो न हि काव्यरस:, कलिपावन – गौररसो हि रस:।
अलमन्यकथाद्यनुशीलनया, भज गोद्रुम – कानन – कुञ्जविधुम्।।(४)

वृषभानु–सुतान्वित–वामतनुं, यमुनातट–नागर–नन्दसुतम्।
मुरली–कलगीत–विनोदपरं, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(५)
हरिकीर्त्तन–मध्यगतं स्वजनैः, परिवेष्टित–जाम्बुनदाभहरिम्।
निज–गौड़जनैक–कृपाजलधिं, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(६)
गिरिराजसुता–परिवीत–गृहं, नवखण्डपतिं यति–चित्तहरम्
सुरसंघनुतं प्रियया सहितं, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(७)
कलिकुक्कुर–मुद्‌गर–भावधरं, हरिनाम–महौषध–दानपरम्।
पतितार्त्त–दयार्द्र–सुमूर्त्तिधरं, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(८)
रिपुबान्धव–भेदविहीन–दया, यदभीक्ष्णमुदेति मुखाब्ज–ततौ।
तमकृष्णमिह ब्रजराजसुतं, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(९)
इह चोपनिषत्–परिगीतविभु–, द्विजराजसुतः पुरटाभ–हरिः।
निजधामनि खेलति वन्धुयुतो, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(१०)
अवतारवरं परिपूर्णकलं, परतत्त्वमिहात्म–विलासमयम्।
ब्रजधाम–रसाम्बुधि–गुप्तरसं, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(११)
श्रुति–वर्ण–धनानि न यस्य कृपा–, जनने बलबद् भजनेन विना।
तमहैतुक–भावपथा हे सखे, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(१२)
अपि नक्रगतौ ह्रदमध्यगतं, कममोचयदार्त्तजनं तमजम्।
अविचिन्त्यवलं शिवकल्पतरुं, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(१३)
सुरभीन्द्र–तपः परितुष्ट–मनो, वरवर्णधरो हरिराविरभूत्।
तमजस्र–सुखं मुनिधैर्यहरं, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(१४)
अभिलाषचयं तदभेदधिय–, मशुभञ्च शुभं त्यज सर्वमिदम्।
अनुकूलतया प्रियसेवनया, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(१५)
हरिसेवकसेवन – धर्मपरो, हरिनाम–रसामृत–पानरतः।
नति–दैन्य–दयापर–मानयुतो, भज गोद्रुम–कानन–कुञ्जविधुम्।।(१६

वद यादव माधव कृष्ण हरे, वद राम जनार्दन केशव हे।
वृषभानुसुता-प्रियनाथ सदा, भज गोद्रुम-कानन-कुञ्जविधुम्।।(१७)
वद यामुनतीर-वनाद्रिपते, वद गोकुलकानन-पुञ्जरवे।
वद रासरसायन गौरहरे, भज गोद्रुम-कानन-कुञ्जविधुम्।।(१८)
चल गौरवनं नवखण्डमयं, पठ गौरहरेश्चरितानि मुदा।
लुठ गौरपदांकित-गांगतटं, भज गोद्रुम-कानन-कुञ्जविधुम्।।(१९)
स्मर गौर-गदाधर-केलिकलां, भव गौर-गदाधर-पक्षचरः।
श्रृनु गौर-गदाधर-चारुकथां, भज गोद्रुम-कानन-कुञ्जविधुम्।।(२०)

श्रीशचीतनयाष्टकम्

उज्ज्वल-वरण-गौरवर-देहं विलसित-निरवधि-भावविदेहम्।
त्रिभुवन-पावन-कृपाया लेशं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।।१।।
गद्गद-अन्तर-भावविकारं दुर्जन-तर्जन-नाद-विशालम्।
भवभयभञ्जन-कारण-करुणं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।।२।।
अरुणाम्बरधर - चारुकपोलं इन्दु-विनिन्दित-नखचय-रुचिरम्।
जल्पित-निजगुणनाम-विनोदं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।।३।।
विगलित-नयन-कमल-जलधारं भूषण-नवरस-भावविकारम्।
गति-अतिमन्थर-नृत्यविलासं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।।४।।
चञ्चल-चारु-चरण-गति-रुचिरं मञ्जीर-रञ्जित-पदयुग-मधुरम्।
चन्द्र-विनिन्दित-शीतलवदनं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।।५।।
धृत-कोटि-डोर-कमण्डलु-दण्डं दिव्य-कलेवर-मुण्डित-मुण्डम्।
दुर्जन-कल्मष-खण्डन-दण्डं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।।६।।
भूषण-भूरज-अलका-वलितं कल्पित-बिम्बाधरवर-रुचिरम्।
मलयज-विरचित-उज्ज्वल-तिलकं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।।७।।

निन्दित – अरुण – कमल – दल – नयनं आजानुलम्बित – श्रीभुज – युगलम्।
कलेवर – कैशोर – नर्त्तक – वेशं तं प्रणमामि च श्रीशचीतनयम्।।८।।

श्रीगौरांगस्तोत्रम्

(श्रीमद्भक्तिदेशिक – आचार्य – महाराज – विरचितम्)

श्रीराधिका – रूप – गुणोर्म्मि – चौरः प्रतप्तकार्त्तस्वरकान्त – गौरः।
वेदान्त – वेदांग – पुराणसारः जीयात् स गौरः करुणावतारः।।(१)
ब्रह्मेन्द्र – रुद्रस्तत – पादपद्मः औदार्य – माधुर्य – गुणाब्धिसद्मः।
रोमाञ्च – कम्पाश्रु – प्रमोदभारः जीयात् स गौरः करुणावतारः।।(२)
स्वरूप – रूपादिक – प्राणनाथः गोपाल – गोविन्द – मुकुन्दनाथः।
दरिद्र – दुर्ज्जात्यघ – दुःखदारः जीयात् स गौरः करुणावतारः।।(३)
मायामत – ध्वान्त – निकारहारी वाराणसी – न्यासि – समूहतारी।
विशुद्ध – सद्भक्ति – प्रसारकारी जीयात् स गौरः करुणावतारी।।(४)
श्रीदिग्विजेतृ – द्विज – दर्पहारी श्रीसार्वभौमाति – प्रसादकारी।
अष्टादशाब्देश – पुरीबिहारी जीयात् स गौरः करुणावतारी।।(५)
महोज्ज्वल – प्रेमरस – प्रदाता श्रीनाम – सर्वोत्तम – भक्तिधाता।
गोलोक – वृन्दावन – सद्विहारः जीयात् स गौरः करुणावतारः।।(६)
सदा हरेकृष्ण – सुगानमत्तः योगीन्द्र – मुनीन्द्र – समाधिवित्तः।
दओब्रजप्रेम – सुधा – सुसारः जीयात् स गौरः करुणावतारः।।(७)
कवाट – वक्षो – नवपद्मनेत्रः श्रीसच्चिदानन्द – घनासुगात्रः।
स्वांग – प्रभा – निन्दित – कोटिमारः जीयात् स गौरः करुणावतारः।।(८)
नीलाद्रि – शुभ्रांशु – सुधाचकोरः रथाग्र – संगीत – सुधाविधूरः।
श्रीवैष्णव – व्रात – लसच्छरीरः जीयात् स गौरः करुणावतारः।।(९)
भक्तावली – मानस – राजहंसः संन्यासि – भूदेव – कुलावतंसः।
श्रीमज्जगन्नाथ – शचीकुमारः जीयात् स गौरः करुणावतारः।।(१०)

गौरस्तुतिं गायति भक्तिपूर्वं प्राप्नोति सुप्रेम–सुधां सः सर्वम्।
त्रिताप–दावानल–दुःख–मुक्तः प्रमोदते कृष्णपदाब्ज–भक्तः।।(११)

(भैरव)

राधे जय जय माधव–दयिते।
गोकुल–तरुणीमण्डल–मोहिते।।ध्रु।।
दामोदर–रतिवर्धन–वेशे।
हरि–निष्कुट–वृन्दाविपिनेशे।।
वृषभानूदधि–नवशशिलेखे।
ललितासखि गुणरमित–विशाखे।।
करुणां कुरु मयि करुणा–भरिते।
सनक–सनातन–वर्णित–चरिते।।

(श्रील रूप गोस्वामी)

(केदार)

कलयति नयनं दिशि दिशि वलितम्।
पंकजमिव मृदु–मारुत–चलितम्।।
केलि–विपिनं प्रविशति–राधा।
प्रतिपद–समुदित मनसिज–वाधा।।
विनिदधती मृदु–मन्थर–पादम्।
रचयति कुञ्जर–गतिमनुवादम्।।
जनयति रुद्र–गजाधिप–मुदितम्।
रामानन्दराय–कवि–गदितम्।।

वरसीमन्त – , रसामृत – सरणी – , धृत – सिन्दूर – सुरेखाम्।
श्रीवृषभानु – , कुलाम्बुधिसम्भव – , सुभग – सुधाकर – लेखाम्।।
स्मरतु मनो मम निरवधि राधाम्।
मधुपति – रूप – , गुण – , श्रवणोदित – , सहज – मनोभव – बाधाम्।।ध्रु।।
सुरुचिर – कवरी – , विराजित – कोमल – , परिमल – मल्लिसुमालाम्।
मद – चल – खञ्जन – , खेलन – गञ्जन – , लोचन – कमल – विशालाम्।।
मद – कविराज – , विराजदनुत्तम – , मलिन – ललितगति – भंगीम्।।
अतिसुकुमार – , कनक – नवचम्पक – , गौरमधुर – मधुरांगीम्।।
मणि – केयूर – , ललित – वलयावलि – , मण्डित – मृदुभुजवल्लीम्।।
प्रतिपदमद्भुत – , रूप – चमत्कृति – , मोहन – युवती – मतल्लीम्।।
मृदु – मृदुहास – , ललित – मुखमण्डल – , कृतशशि – बिम्ब – विड़म्वाम्।
किंकिणिजाल – , खचितपृथुसुन्दर – , नवरसराशि – नितम्वाम्।।
चित्रित – कञ्चुलिका – , स्थगितोद्भट – , कुच – हाटकघट – शोभाम्।
स्फुरदरुणाधर – , सीधुसुधारस – , कृतहरि – मानसलोभाम्।।
सुन्दर – चिवुक – , विराजित – मोहन – , मेचकविन्दु – विलासाम्।
सकनक – रत्न – , खचित – पृथुमौक्तिक – , रुचि – रुचिरोज्ज्वल – नासाम्।।
उज्ज्वल – राग – , रसामृत – सागर – , सारतनुं सुखरूपाम्।
निपतित – माधव – , मुग्धमनो – मृग – , नाभि – सुधारस – कूपाम्।।
नूपुर – हार – , मनोहर – कुण्डल – , कृतरुचिमरुण – दुकूलाम्।
पथि पथि मदन – , मदाकुल – गोकुल – , चन्द्रकलित – पदमूलाम्।।
रसिक – **सरस्वति** – , गीति – महाद्भुत – , राधारूप – रहस्यम्।।
वृन्दावन – रस – , लालस – मनसा – , मिदमुपगेयमवश्यम्।।

(श्रील प्रबोधानन्द सरस्वती)

श्रीश्रीराधिकाष्टकम्

(श्रील – कृष्णदास – कविराज – गोस्वामि – विरचितम्)

कुंकुमाक्त – काञ्चनाब्ज – गर्वहारि – गौरभा
पीतनाञ्चिताब्ज – गन्धकीर्त्ति – निन्दि – सौरभा।
बल्लवेश – सूनु – सर्व – वाञ्छितार्थ – साधिका
मह्यमात्म्य – पादपद्म – दास्यदास्तु राधिका।।१।।

कौरविन्द – कान्ति – निन्दि – चित्र – पट्ट – शाटिका
कृष्ण – मत्तभृंग – केलि – फुल्ल – पुष्प – वाटिका।
कृष्ण – नित्य – संगमार्थ – पद्मबन्धु – राधिका
मह्यमात्म्य – पादपद्म – दास्यदास्तु राधिका।।२।।

सौकुमार्य – सृष्ट – पल्लवालि – कीर्त्ति – निग्रहा
चन्द्र – चन्दनोत्पलेन्दु – सेव्य – शीत – विग्रहा।
स्वाभिमर्ष – बल्लवीश – काम – ताप – बाधिका
मह्यमात्म्य – पादपद्म – दास्यदास्तु राधिका।।३।।

विश्ववन्द्य – यौवताभिवन्दितापि या रमा
रूप – नव्य – यौवनादि – सम्पदा न यत्समा।
शील – हार्द – लीलया च सा यतोऽस्ति नाधिका
मह्यमात्म्य – पादपद्म – दास्यदास्तु राधिका।।४।।

रास – लास्य – गीत – नर्म – सत्कलालि – पण्डिता
प्रेम – रम्य – रूप – वेश – सद्गुणालि – मण्डिता।
विश्व – नव्य – गोप – योषिदालितोऽपि याधिका
मह्यमात्म्य – पादपद्म – दास्यदास्तु राधिका।।५।।

नित्य – नव – रूप – केलि – कृष्णभाव – सम्पदा
कृष्ण – राग – बन्ध – गोप – यौवतेषु कम्पदा।

कृष्ण – रूप – वेश – केलि – लग्न – सत्समाधिका
मह्यमात्म्य – पादपद्म – दास्यदास्तु राधिका।।६।।
स्वेद – कम्प – कण्टकाश्रु – गद्गदादि – सञ्चिता
मर्ष – हर्ष – वामतादि – भाव – भूषणाञ्चिता।
कृष्ण – नेत्र – तोषि – रत्न – मण्डनालि – दाधिका
मह्यमात्म्य – पादपद्म – दास्यदास्तु राधिका।।७।।
या क्षणार्ध – कृष्ण – विप्रयोग – सन्ततोदिता –
नेक – दैन्य – चापलादि – भाववृन्द – मोदिता।
यत्नलब्ध – कृष्णसंग्ग – निर्गताखिलाधिका
मह्यमात्म्य – पादपद्म – दास्यदास्तु राधिका।।८।।
अष्टकेन यस्त्वनेन नौति कृष्णवल्लभां
दर्शनेऽपि शैलजादि – योषिदालि – दुर्लभाम्।।
कृष्णसंग – नन्दितात्म – दास्य – सीधु – भाजनं
तं करोति नन्दितालि – सञ्चयाशु सा जनम्।।९।।

श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तोत्रम्

मुनीन्द्रवृन्द – वन्दिते त्रिलोक – शोकहारिणि
प्रसन्न – वक्त्रपङ्कजे निकुञ्ज – भू – विलासिनि।
ब्रजेन्द्र – भानु – नन्दिनि ब्रजेन्द्र – सूनु – सङ्गते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।१।।
अशोक – वृक्ष – वल्लरी – वितान – मण्डप – स्थिते
प्रवालवाल – पल्लव – प्रभाऽरुणांघ्रि – कोमले।
वराभयस्फुरत् – करे प्रभुत – सम्पदालये
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।२।।

अनंग – रंग – मंगल – प्रसंग – भंगुरभ्रुवां
सुविभ्रमं ससम्भ्रमं दृगन्त – बाण – पातनैः।
निरन्तरं वशीकृत – प्रतीति – नन्दनन्दने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।३।।

तड़ित् – सुवर्ण – चम्पक – प्रदीप्त – गौर – विग्रहे
मुखप्रभा – परास्त – कोटि – शारदेन्दुमण्डले।
विचित्र – चित्र – संचरच्चकोर – शावलोचने
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।४।।

मदोन्मदाति – यौवने प्रमोद – मान – मण्डिते
प्रियानुराग – रञ्जिते कला – विलास – पण्डिते।
अनन्य – धन्य – कुञ्ज – राज्य – कामकेलि – कोविदे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।५।।

अशेष – हाव – भाव – धीर – हीरहार – भूषिते
प्रभूत – शातकुम्भ – कुम्भ – कुम्भि – कुम्भ – सुस्तनि।
प्रशस्त – मन्द – हास्य – चूर्ण – पूर्ण – सौख्यसागरे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।६।।

मृणाल – वाल – वल्लरी – तरङ्ग – रङ्ग दोर्लते
लताग्र – लास्य – लोल – नील – लोचनावलोकने।
ललल्लुलन्मिलन्मनोज्ञ – मुग्ध – मोहनाश्रिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।७।।

सुवर्ण – मालिकाञ्चित – त्रिरेख – कम्बु – कण्ठगे
त्रिसूत्र – मङ्गलीगुण – त्रिरत्न – दीप्ति – दीधिति।
सलोल – नीलकुन्तल – प्रसून – गुच्छ – गुम्फिते
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।८।।

नितम्बबिम्ब – लम्बमान – पुष्पमेखलागुणे
प्रशस्त – रत्न – किङ्किणी – कलाप – मध्य – मञ्जुले।
करीन्द्र – शुण्ड – दण्डिका – वरोह – सौभगोरुके
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।९।।

अनेक – मन्त्रनाद – मञ्जु – नूपुरारवस्खलत्
समाज – राजहंस – वंश – निक्कणातिगौरवे।
विलोल – हेमवल्लरी – विड़म्बि – चारुचंक्रमे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।१०।।

अनन्तकोटि – विष्णुलोक – नम्रपद्मजार्चिते,
हिमाद्रिजा – पुलोमजा – विरिंचजा – वरप्रदे।
अपार – सिद्धि – ऋद्धि – दिग्ध – सत्पदांगुलीनखे
कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम्।।११।।

मखेश्वरि क्रियेश्वरि स्वधेश्वरि सुरेश्वरि
त्रिवेद – भारतीश्वरि प्रमाण – शासनेश्वरि।
रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोद – काननेश्वरि
ब्रजेश्वरि ब्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते।।१२।।

इतीममद्भुतं – स्तवं निशम्य भानुनन्दिनी
करोतु सन्ततं जनं कृपाकटाक्षभाजनम्।
भवेत्तदैव – सञ्चित – त्रिरूप – कर्मनाशनम्
भवेत्तदा – ब्रजेन्द्रसूनु – मण्डल – प्रवेशनम्।।१३।।

(धानशी)

देव! भवन्तं वन्दे।

यद्यपि समाधिषु विधिरपि पश्यति न तव नखाग्र – मरीचिम्।
इदमिच्छामि निशम्य तवाच्युत तदपि कृपाद्भुत – वीचिम्।।

मन्मानस – मधुकरमर्पय निजपद – पंकज – मकरन्दे।।
भक्तिरुदन्चति यद्यपि माधव! न त्वयि मम तिलमात्री।
परमेश्वरता तदपि तवाधिक – दुर्घटघटन – विधात्री।।
अयमविलोलतयाद्य सनातन! कलिताद्भुत – रसभारम्।
निवसतु नित्यमिहामृत – निन्दिनि – विन्दन्मधुरिमसारम्।।

(श्रीरूप गोस्वामीपाद कृत)

श्रीमंगलगीतम्

(गुर्जरी राग—निःसार ताल)

श्रित – कमलाकुचमण्डल! धृतकुण्डल! ए।
कलितललित – वनमाल! जय जय देव! हरे।।१।।
दिनमणिमण्डल – मण्डन! भव – खण्डन! ए।
मुनिजन – मानस – हंस! जय जय देव! हरे।।२।।
कालिय – विषधर – गञ्जन! जन – रञ्जन! ए।
यदुकुल – नलिन – दिनेश! जय जय देव! हरे।।३।।
मधु – मुर – नरक – विनाशन। गुरुड़ासन! ए।
सुरकुल – केलिनिदान! जय जय देव! हरे।।४।।
अमल – कमलदल – लोचन! भव – मोचन! ए।
त्रिभुवन – भवन – निधान! जय जय देव! हरे।।५।।
जनकसुता – कृतभूषण! जितदूषण! ए।
समर – शमित – दशकण्ठ! जय जय देव! हरे।।६।।
अभिनव – जलधर – सुन्दर! धृत – मन्दर! ए।
श्रीमुखचन्द्र – चकोर! जय जय देव! हरे।।७।।
तव चरणे प्रणता वय – , मिति भावय! ए।
कुरु – कुशलं प्रणतेषु! जय जय देव! हरे।।८।।

श्रीजयदेव–कवेरिदं, कुरुते मुदम्।
मंगलमुज्ज्वल–गीतम्! जय जय देव! हरे।।९।।

(श्रीजयदेव गोस्वामि कृत)

(मंगल गुर्ज्जरी राग)

जय जय प्राणसखे।।ध्रु।।

प्रणत–सकल–सुखदायक, ब्रजनायक हे, वल्लभराज–कुमार!
स्फुट–सरसिरुह–लोचन, भयमोचन हे, पालित–निज–परिवार!!
ब्रज–तरुणी–नवनागर, रस–सागर हे, रचित–महा–रतिरंग!
रसिक–युवति–परिहासक, कृत–रासक हे, ललितानंग–तरंग!!
मणिमय–वेणु–लसन्मुख, नत–सम्मुख हे, मृदु–मृदु–हास–विलास!
कुल–वणिता–व्रत–भंजन, रिपु–गंजन हे, नवरति–केलिनिवास!!
मधुर–मधुर–रस–नूतन, हत–पूतन हे, नवघन–नील–शरीर!
तपन–सुता–तट–सन्नट, रति–लम्पट हे, धृतवर–मणिगण–हीर!!
स्फुरदरुणाधर–पल्लव, ब्रज–वल्लभ हे, राधा–मानस–हंस!
श्रील–सरस्वति–गीतकं, हरि–भावदं हे, मंगलमिह विदधातु।।

(श्रील प्रबोधानन्द सरस्वती)

(विहागड़ा)

हरे हरे गोविन्द हरे।

कालियमर्द्दन कंसनिसूदन देवकीनन्दन राम हरे।।ध्रु।।
मत्स्य कच्छपवर शूकर नरहरि वामन भृगुसुत रक्षकुलारे।
श्रीबलदेव बुद्ध कल्कि नारायण देव जनार्द्दन श्रीकंसारे।।
केशव माधव यादव यदुपति दैत्यदलन दुःखभञ्जन शौरे।
गोलोकइन्दु गोकुलचन्द्र गदाधर गरुड़ध्वज गजमोचन मुरारे।।
श्रीपुरुषोत्तम परमेश्वर प्रभु परमब्रह्म परमेष्ठी अघारे।
दुःखिते दयां कुरु देव देवकीसुत दुर्मति–परमानन्द परिहारे।।

(श्रीराग)

ध्वज – ब्रजांकुश – पंकज – कलितम्।
ब्रजवनिता – कुचकुंकुम – ललितम्।।
वन्दे गिरिवरधर – पदकमलम्।
कमलाकर – कमलाञ्चितममलम्।।
मञ्जुल – मणि – नूपुर – रमणीयम्।
अचपल – कुल – रमणी – कमनीयम्।।
अतिलोहितमतिरोहित – भाषम्।
मधु – मधुपीकृत – गोविन्ददासम्।।

(बसन्त राग)

मधुरिपुरद्य बसन्ते।
खेलति गोकुल – , युवतिभिरुज्ज्वल, पुष्प – सुगन्ध – दिगन्ते।।ध्रु।।
प्रेम – करम्वित – , राधा – चुम्बित – , मुख – विधुरुत्सवशाली।
धृत – चन्द्रावलि – , चारु – करांगुलि – , रिह नव – चम्पकमाली।।
नव – शशिरेखा – , लिखित – विशाखा, तनु – रथ – ललिता – संगी।
श्यामलयाश्रित, बाहुरुदञ्चित, पद्मा – विभ्रम – रंगी।।
भद्रालम्बित – , शैव्योदीरित – , रक्त – रजोभर – धारी।
पश्य सनातन – , मूर्त्तिरयं घन – , वृन्दावन – रुचिकारी।।

(श्रील रूप गोस्वामी)

(बसन्त राग)

अभिनव – कुट्मल, गुच्छ – समुज्ज्वल – , कुञ्चित – कुन्तल – भार।
प्रणयि – जनेरित – , वन्दन – सहकृत – , चूर्णित – वर – घनसार।।
जय जय सुन्दर नन्द – कुमार।

सौरभ – संकट – , वृन्दावन – तट – , विहित – बसन्त – विहार।।ध्रु।।
चटुल – दृगञ्चल, रचित – रसोच्चल – , राधा – मदन – विकार।
भुवन – विमोहन – , मञ्जुल – नर्त्तन – , गति – वल्गित – मणिहार।।
अधर – विराजित – , मन्दतर – स्मित – , लोभित – निज – परिवार।
निज – बल्लवजन – , सुहृत् सनातन – , चित्तविहरदवतार।।

(श्रील रूप गोस्वामी)

(भैरव राग)

अपघन – घटित – घुसृण – घनसार।
पिञ्छ – खचित – कुञ्चित – कचभार।।
जय जय बल्लबराज – कुमार।
राधा – वक्षसि हरि – मणिहार।।ध्रु।।
राधा – धृतिहर – मुरली – तार।
नयनाञ्चलकृत – मदन – विकार।।
रस – रञ्जित – राधा – परिवार।
कलित – सनातन – चित्तविहार।।

(श्रील रूप गोस्वामी)

श्रीदामोदराष्टकम्

नमामीश्वरं सच्चिदानन्द – रूपं, लसत् – कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम्।
यशोदा - भियोलुखलाद्धावमानं परामृष्टमत्यं ततोद्रुत्य गोप्या।।१।।
रुदन्तं मुहुर्नेत्र – युग्मं मृजन्तं, कराम्भोज – युग्मेन सातंक – नेत्रम्।
मुहुःश्वास – कम्पत्त्रिरेखांक – कण्ठ – स्थित – ग्रैव – दामोदरं भक्तिबद्धम्।।२।।
इतीदृक् स्व – लीलाभिरानन्द – कुण्डे, स्व – घोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम्।
तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं, पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे।।३।।

वरं देव! मोक्षं न मोक्षावधिं वा, न चान्यं वृणेऽहं वरेशादपीह।
इदन्ते वपुर्नाथ! गोपाल – बालं, सदा मे मनस्याविरास्तां किमन्यैः।।४।।
इदन्ते मुखाम्भोजमव्यक्तनीलै – र्वृतं कुन्तलैः स्निग्ध – रक्तैश्च गोप्या।
मुहुश्चुम्बितं बिम्ब – रक्ताधरं मे, मनस्याविरास्तामलं लक्ष – लाभैः।।५।।
नमो देव! दामोदरानन्त! विष्णो! प्रसीद प्रभो! दुःख – जालाब्धि – मग्नम्।
कृपादृष्टि – वृष्ट्यातिदीनं बतानु – गृहाणेश! मामज्ञमेध्यक्षि – दृश्यः।।६।।
कुबेरात्मजौ बद्ध – मूर्त्यैव यद्वत् त्वया मोचितौ भक्ति – भाजौ कृतौ च।
तथा प्रेम – भक्तिं स्वकां मे प्रयच्छ न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह।।७।।
नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फुरदीप्ति – धाम्ने, त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने।
नमो राधिकायै त्वदीय प्रियायै नमोऽनन्त – लीलाय देवाय तुभ्यम्।।८।।

(श्रीसत्यव्रत मुनि प्रोक्तं)

श्रीचौराग्रगण्यपुरुषाष्टकम्

व्रजे प्रसिद्धं नवनीतचौरं, गोपांगनानां च दुकुलचौरम्।
अनेक – जन्मार्जित – पापचौरं, चौराग्रगण्यं पुरुषं नमामि।।१।।
श्रीराधिकाया हृदयस्य चौरं, नवांबुदश्यामलकान्तिचौरम्।
पदाश्रितानां च समस्तचौरं, चौराग्रगण्यं पुरुषं नमामि।।२।।
अकिञ्चनीकृत्य पदाश्रितं यः, करोति भिक्षुं पथि गेहहीनम्।
केनाप्यहो भीषणचौर ईदृग्, दृष्टःश्रुतो वा न जगत्त्रयेऽपि।।३।।
यदीय नामापि हरत्यशेषं, गिरि प्रसारानपि पापराशीन्।
आश्चर्यरूपो ननु चौर ईदृग्, दृष्टः श्रुतो वा न मया कदापि।।४।।
धनं च मानं च तथेन्द्रियाणि, प्राणांश्च हृत्वा मम सर्वमेव।
पलायसे कुत्र धृतोऽद्य चौर, त्वं भक्तिदाम्नासि मया निरुद्धः।।५।।
छिनत्सि घोरं यमपाशबन्धं, भिनत्सि भीमं भवपाशबन्धम्।
छिनत्सि सर्वस्य समस्तबन्धं, नैवात्मनो भक्तकृतं तु बन्धम्।।६।।

मन्मानसे तामसराशिघोरे, कारागृहे, दुःखमये निबद्धः।
लभस्व हे चौर! हरे! चिराय, स्वचौर्यदोषोचितमेव दण्डम्॥७॥
कारागृहे वस सदा हृदये मदीये
मद्भक्तिपाशदृढबन्धननिश्चलः सन्।
त्वां कृष्ण हे! प्रलयकोटिशतान्तरेऽपि
सर्वस्वचौर! हृदयान्नहि मोचयामि॥८॥

इति श्रीचौराग्रगण्यपुरुषाष्टकं समाप्तम्।

श्रीव्रजराजसुताष्टकम्

नवनीरद-निन्दित-कान्तिधरं, रससागर-नागरभूप-वरम्।
शुभ-बंकिम-चारु-शिखण्डशिखं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतम्॥१॥
भ्रु-विशंकित-बंकिम-शक्रधनुं, मुखचन्द्र-विनिन्दित-कोटिविधुम्।
मृदुमन्द-सुहास्य-सुभाष्य-युतं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतम्॥२॥
सुविकम्पदनंग - सदंगधरं, ब्रजवासि-मनोहर-वेशकरम्।
भृश-लाञ्छित-नीलसरोज-दृशं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतम्॥३॥
अलकावलि-मण्डित-भालतटं, श्रुति-दोलित-माकर, कुण्डलकम्।
कटि-वेष्टित-पीतपटं सुधटं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतम्॥४॥
कल-नूपुर-राजित-चारु-पदं, मणि-रञ्जित-गञ्जित-भृंगमदम्।
ध्वज-वज्र-झषांकित-पादयुगं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतम्॥५॥
भृश-चन्दन-चर्चित-चारु तनुं, मणि-कौस्तुभ-गर्हित-भानुतनुम्।
ब्रज-बाल-शिरोमणि-रूप-धृतं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतम्॥६॥
सुरवृन्द-सुवन्द्य-मुकुन्द-हरिं, सुरनाथ-शिरोमणि-सर्वगुरुम्।
गिरिधारि-मुरारि-पुरारि-परं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतम्॥७॥
वृषभानुसुता-वर-केलि-परं, रसराज-शिरोमणि-वेशधरम्।
जगदीश्वरमीश्वरमीड्यवरं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतम्॥८॥

श्रीश्रीमधुराष्टकम्

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरम्।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।१।।
वचनं मधुरं चरितं मधुरं वसनं मधुरं वलितं मधुरम्।
चलितं मधुरं भ्रमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।२।।
वेणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ।
नृत्यं मधुरं सख्यं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।३।।
गीतं मधुरं पीतं मधुरं भुक्तं मधुरं सुप्तं मधुरम्।
रूपं मधुरं तिलकं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।४।।
करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रमणं मधुरम्।
वमितं मधुरं शमितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।५।।
गुञ्जा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीची मधुरा।
सलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।६।।
गोपी मधुरा लीला मधुरा युक्तं मधुरं भुक्तं मधुरम्।
हृष्टं मधुरं श्लिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।७।।
गोपा मधुरा गावो मधुरा यष्टिर्मधुरा सृष्टिर्मधुरा।
दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरखिलं मधुरम्।।८।।

(श्रीमद्वल्लभाचार्य विरचित)

श्रीनन्दनन्दनाष्टकम्

सुचारु–वक्त्रमण्डलं सुकर्ण–रत्नकुण्डलम्।
सुचर्चितांग–चन्दनं नमामि नन्दनन्दनम्।।१।।
सुदीर्घ–नेत्रपंकजं शिखि–शिखण्ड–मूर्धजम्।
अनंगकोटि–मोहनं नमामि नन्दनन्दनम्।।२।।

सुनासिकाग्र – मौक्तिकं स्वच्छन्द – दन्त – पंक्तिकम्।
नवाम्बुदांग – चिक्कणं नमामि नन्दनन्दनम्।।३।।
करेण वेणुरञ्जितं गति – करीन्द्रगञ्जितम्।
दुकूल – पीत – शोभनं नमामि नन्दनन्दनम्।।४।।
त्रिभंग – देह – सुन्दरं नखद्युति – सुधाकरम्।
अमूल्य – रत्न – भूषणं नमामि नन्दनन्दनम्।।५।।
सुगन्ध – अंगसौरभमुरोविराजि – कौस्तुभम्।
स्फुरच्छ्रीवत्स – लाञ्छनं नमामि नन्दनन्दनम्।।६।।
वृन्दावन – सुनागरं विलासानुग – वाससम्।
सुरेन्द्रगर्व – मोचनं नमामि नन्दनन्दनम्।।७।।
व्रजांगना – सुनायकं सदा सुख – प्रदायकम्।
जगन्मनः – प्रलोभनं नमामि नन्दनन्दनम्।।८।।
श्रीनन्दनन्दनाष्टकं पठेद् यः श्रद्धयान्वितः।
तरेद्भवाब्धिं दुस्तरं लभेत्तदंघ्रि – युग्मकम्।।९।।

श्रीश्रीराधा – विनोदबिहारी – तत्त्वाष्टकम्

(श्रीकृष्णस्य गौर – कान्ति – प्राप्ति – हेतुः)

(परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्येणाष्टोत्तरशतश्री – श्रीमता भक्तिप्रज्ञान – केशव – गोस्वामि – महाराजेन विरचितम्)

राधा – चिन्ता – निवेशेन यस्य कान्तिर्विलोपिता।
श्रीकृष्णचरणं वन्दे राधालिंगित – विग्रहम्।।१।।
सेव्य – सेवक – सम्भोगे द्वयोर्भेदः कुतो भवेत्।
विप्रलंभे तु सर्वस्य भेदः सदा विवर्द्धते।।२।।

चिल्लीला – मिथुनं तत्त्वं भेदाभेदमचिन्त्यकम्।
शक्ति – शक्तिमतोरैक्यं युगपद्वर्त्तते सदा।।३।।
तत्त्वमेकं परं विद्याल्लीलया तद्द्विधा – स्थितम्।
गौरः कृष्णः स्वयं ह्येतदुभावुभयमाप्नुतः।।४।।
सर्वे वर्णा यत्राविष्टा गौर – कान्तिर्विकाशते।
सर्व – वर्णेनः हीनस्तु कृष्ण – वर्णः प्रकाशते।।५।।
सगुणं निर्गुणं तत्त्वमेकमेवाद्वितीयकम्।
सर्व – नित्य – गुणैर्गौरः कृष्ण – रसस्तु निर्गुणैः।।६।।
श्रीकृष्णं मिथुनं ब्रह्म त्यक्त्वा तु निर्गुणं हि तत्।
उपासते मृषा विज्ञा यथा तुषावघातिनः।।७।।
श्रीविनोदबिहारी यो राधया मिलितो यदा।
तदाहं वन्दनं कुर्यां सरस्वती – प्रसादतः।।८।।
इति तत्त्वाष्टकं नित्यं यः पठेत् श्रद्धयान्वितः।
कृष्ण – तत्त्वमभिज्ञाय गौरपदे भवेन्मतिः।।९।।

श्रीश्रीजगन्नाथाष्टकम्

[श्रीगौरचन्द्रमुखपद्म – विनिर्गतम्]

कदाचित् कालिन्दीतट – विपिन – संगीत – तरलो
मुदाभीरी – नारी – वदन – कमलास्वाद – मधुपः।
रमा – शम्भु – ब्रह्मा – मरपति – गणेशार्चितपदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथ – गामी भवतु मे।।१।।

भुजे सव्ये वेणुं शिरसि शिखिपिच्छं कटितटे
दुकूलं नेत्रान्ते सहचरि – कटाक्षं विदधते।
सदा श्रीमद्वृन्दावन – वसति – लीला – परिचयो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथ – गामी भवतु मे।।२।।

महाम्भोधेस्तीरे कनकरुचिरे नीलशिखरे
वसन् प्रासादान्तः सहज – बलभद्रेन बलिना।
सुभद्रा – मध्यस्थः सकल – सुर – सेवावसरदो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथ – गामी भवतु मे।।३।।

कृपा – पारावारः सजल – जलद – श्रेणि – रुचिरो
रमा – वाणी – रामः स्फुरदमल – पंकेरुह – मुखः।
सुरेन्द्रैराराध्यः श्रुतिगणशिखा गीतचरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथ – गामी भवतु मे।।४।।

रथारूढ़ो गच्छन् पथि मिलित – भूदेव – पटलैः
स्तुति – प्रादुर्भावं प्रतिपदमुपाकर्ण्य सदयः।
दयासिन्धुर्बन्धुः सकल जगतां सिन्धु – सुतया
जगन्नाथः स्वामी नयनपथ – गामी भवतु मे।।५।।

परंब्रह्मापीडः कुवलय – दलोत्फुल्ल – नयनो
निवासी निलाद्रौ निहित – चरणोऽनन्त – शिरसि।
रसानन्दी राधा – सरस – वपुरालिंगन – सुखो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथ – गामी भवतु मे।।६।।

न वै याचे राज्यं न च कनक – माणिक्य – विभवं
न याचेऽहं रम्यां सकल – जन – काम्यां वरवधूम्।
सदा काले काले प्रमथ – पतिना गीत – चरितो
जगन्नाथः स्वामी नयनपथ – गामी भवतु मे।।७।।

हर त्वं संसारं द्रुततरमसारं सुरपते!
हर त्वं पापानां विततिमपरां यादवपते!
अहो दीनेऽनाथे निहित–चरणो निश्चितमिदं
जगन्नाथः स्वामी नयनपथ–गामी भवतु मे॥८॥
जगन्नाथाष्टकं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः शुचिः।
सर्वपाप–विशुद्धात्मा विष्णुलोकं स गच्छति॥९॥

श्रीदशावतार–स्तोत्रम्

प्रलयपयोधि–जले धृतवानसि वेदं
विहित – वहित्र – चरित्रमखेदम्।
केशव–धृत–मीनशरीर जय जगदीश हरे॥१॥
क्षितिरिह विपुलतरे तिष्ठति तव पृष्ठे
धरणि–धरण–किणचक्र–गरिष्ठे।
केशव–धृत–कूर्म्मशरीर जय जगदीश हरे॥२॥
वसति दशन–शिखरे धरणी तव लग्ना
शशिनि कलंककलेव निमग्ना।
केशव–धृत–शूकररूप जय जगदीश हरे॥३॥
तव कर–कमलवरे नखमद्भुतभृंगं
दलित–हिरण्यकशिपु–तनुभृंगम्।
केशव–धृत–नरहरिरूप जय जगदीश हरे॥४॥
छलयसि विक्रमणे बलिमद्भुत–वामन
पद–नख–नीर–जनित–जनपावन।
केशव–धृत–वामनरूप जय जगदीश हरे॥५॥

क्षत्रिय – रुधिरमये जगदपगत – पापं
स्नपयसि पयसि शमित – भवतापम्।
केशव – धृत – भृगुपतिरूप जय जगदीश हरे।।६।।

वितरसि दिक्षु रणे दिक्पतिकमनीयं
दशमुख – मौलि – बलिं रमणीयम्।
केशव – धृत – रामशरीर जय जगदीश हरे।।७।।

वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं
हलहति – भीति – मिलित – यमुनाभम्।
केशव – धृत – हलधररूप जय जगदीश हरे।।८।।

निन्दसि – यज्ञ – विधेरहह श्रुतिजातं
सदय – हृदय – दर्शित – पशुघातम्।
केशव – धृत – बुद्धशरीर जय जगदीश हरे।।९।।

म्लेच्छ – निवह – निधने कलयसि करवालं
धूमकेतुमिव किमपि करालम्।
केशव – धृत – कल्किशरीर जय जगदीश हरे।।१०।।

श्रीजयदेव – कवेरिदमुदितमुदारं
शृणु शुभदं सुखदं भवसारम्।
केशव – धृत – दशविधरूप जय जगदीश हरे।।११।।

वेदानुद्धरते जगन्ति वहते भूगोलमुद्बिभ्रते
दैत्यान् दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते।
पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते
म्लेच्छान् मूर्च्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः।।

श्रीनरसिंह – कवचम्

नृसिंहकवचं वक्ष्ये प्रह्लादेनोदितं पुरा।।
सर्वरक्षकरं पुण्यं सर्वोपद्रव – नाशनम्।।१।।
सर्व सम्पत्करं चैव स्वर्गमोक्ष – प्रदायकम्।
ध्यात्वा नृसिंहं देवेशं हेम – सिंहासन – स्थितम्।।२।।
विवृतास्यं त्रिनयनं शरदिन्दु – समप्रभम्।
लक्ष्म्यालिंगित – वामांगम् विभूतिभिरुपाश्रितम्।।३।।
चतुर्भुजं कोमलांगं स्वर्णकुण्डल – शोभितम्।
सरोज – शोभितोरस्कं रत्न – केयूर – मुद्रितम्।।४।।
तप्त कांचन – संकाशं पीत – निर्मल – वाससम्।
इन्द्रादि – सुरमौलिष्ठः स्फुरन्माणिक्य – दीप्तिभिः।।५।।
विरजित – पदद्वन्द्वम् च शंखचक्रादिहेतिभिः।
गरुत्मत्मा च विनयात् स्तूयमानम् मुदान्वितम्।।६।।
स्व हृत्कमल – संवासं कृत्वा तु कवचं पठेत्।
नृसिंहो मे शिरः पातु लोकरक्षार्थसम्भवः।।७।।
सर्वगेऽपि स्तम्भवासः फलं मे रक्षतु ध्वनिम्।
नृसिंहो मे दृशौ पातु सोम – सूर्याग्नि – लोचनः।।८।।
स्मृतं मे पातु नृहरिः मुनिवार्यस्तुतिप्रियः।
नासं मे सिहंनाशस्तु मुखं लक्ष्मीमुखप्रियः।।९।।
सर्व विद्याधिपः पातु नृसिंहो रसनं मम।
वक्त्रं पात्विन्दुवदनं सदा पह्लादवन्दितः।।१०।।
नृसिंहः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ भूभृदनन्तकृत्।
दिव्यास्त्र – शोभितभुजः नृसिंह पातु मे भुजौ।।११।।
करौ मे देववरदो नृसिंहः पातु सर्वतः।
हृदयं योगि साधयश्च निवासं पातु मे हरिः।।१२।।
मध्यं पातु हिरण्याक्ष वक्षःकुक्षिविदारणः।

नाभिं मे पातु नृहरिः स्वनाभिब्रह्मसंस्तुतः।।१३।।
ब्रह्माण्ड कोटयः कट्यां यस्यासौ पातु मे कटिम्।
गुह्यं मे पातु गुह्यानां मन्त्राणां गुह्यरूपदृक्।।१४।।
ऊरू मनोभवः पातु जानुनी नररूपदृक्।
जंघे पातु धाराभर हर्ता योऽसौ नृकेशरी।।१५।।
सुर राज्यप्रदः पातु पादौ मे नृहरीश्वरः।
सहस्रशीर्षापुरुषः पातु मे सर्वशस्तनुम्।।१६।।
महोग्रः पूर्वतः पातु महावीराग्रजोऽग्नितः।
महाविष्णुर्दक्षिणे तु महाज्वलस्तु नैर्ऋतः।।१७।।
पश्चिमे पातु सर्वेशे दिशि मे सर्वतोमुखः।
नृसिंहः पातु वायव्यां सौम्यां भूषणविग्रहः।।१८।।
ईशान्यां पातु भद्रो मे सर्वमंगलदायकः।
संसारभयतः पातु मृत्योर्मृत्युर्नृकेशरी।।१९।।
इदं नृसिंहकवचं प्रह्लादमुखमण्डितम्।
भक्तिमान् यः पठेन्नित्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते।।२०।।
पुत्रवान् धनवान् लोके दीर्घायुरुपजायते।
कामयते यं यं कामं तं तं प्राप्नोत्यसंशयम्।।२१।।
सर्वत्र जयमाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्।
भूम्यन्तरीक्षदिव्यानां ग्रहाणां विनिवारणम्।।२२।।
वृश्चिकोरगसम्भूत विषापहरणं परम्।
ब्रह्म – राक्षस – यक्षाणां दूरोत्सारण – कारणम्।।२३।।
भुजे वा तलपात्रे वा कवचं लिखितं शुभम्।
करमूले धृतं येन सिध्येयुः कर्मसिद्धयः।।२४।।
देवासुर – मनुष्येषु स्वं स्वमेव जयं लभेत्।
एकसन्ध्यं त्रिसन्ध्यं वा यः पठेन्नियतो नरः।।२५।।
सर्व मंगलमांगल्यं भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति।
द्वात्रिंशतिसहस्राणि पठेत् शुद्धात्मनां नृणाम्।।२६।।

कवचस्यास्य मन्त्रस्य मन्त्रसिद्धिः प्रजायते।
अनेन मन्त्रराजेन कृत्वा भस्माभिर्मन्त्रानाम्।।२७।।
तिलकं विन्यसेद्यस्तु तस्य ग्रहभयं हरेत्।
त्रिवारं जपमानस्तु दत्तं वार्याभिमन्त्र्य च।।२८।।
प्रसयेद् यो नरो मन्त्रं नृसिंह–ध्यानमाचरेत्।
तस्य रोगः प्रणशयन्ति ये च स्युः कुक्षिसम्भवाः।।२९।।
गर्जन्तं गार्जयन्तं निजभुजपतलं स्फोटयन्तं हतन्तं
रूप्यन्तं तापयन्तं दिवि भुवि दितिजं क्षेपयन्तं क्षिपन्तम्।
क्रन्दन्तं रोषयन्तं दिशि दिशि सततं संहरन्तं भरन्तं
वीक्षन्तं पूर्णयन्तं करनिकर–शतैर्दिव्यसिंहं नमामि।।३०।।

।।इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे प्रह्लादोक्तं श्रीनृसिंहकवचं सम्पूर्णम्।।

श्रीकृष्णनामामृतम्

श्रीकृष्ण विष्णो मधुकैटभारे, भक्तानुकम्पित भगवन् मुरारे।
त्रायस्व मां केशव लोकनाथ, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
गोपाल वंशीधर रूपसिंधो, लोकेश नारायण दीनबन्धो।
उच्चस्वरैस्त्वं वद सर्वदैव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
जिह्वे रसज्ञे मधुरप्रिया त्वं, सत्यं हितं त्वां परमं वदामि।
आवर्णयेथा मधुराक्षराणि, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे, गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण।
गोविन्द गोविन्द रथांगपाणे, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
श्रीकृष्ण राधावर गोकुलेश, गोपाल गोवर्धन–नाथ विष्णो।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
श्रीनाथ विश्वेश्वर विश्वमूर्त्ते, श्रीदेवकीनन्दन दैत्यशत्रो।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**

गोपीपते कंसरिपो मुकुन्द, लक्ष्मीपते केशव वासुदेव।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
गोपीजनाह्लादकर ब्रजेश, गोचारणारण्य–कृतप्रवेश।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
प्राणेश विश्वम्भर कैटभारे, वैकुण्ठ नारायण चक्रपाणे।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
हरे मुरारे मधुसूदनाद्य, श्रीराम सीतावर रावणारे।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
श्रीयादवेन्द्राद्रिधराम्बुजाक्ष, गो–गोप–गोपी–सुखदानदक्ष।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
धराभरोत्तारण गोपवेष, विहारलीला–कृतबन्धु–शेष।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
वकी–वकाघासुर–धेनुकारे, केशी–तृणावर्त्त–विघातदक्ष।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
श्रीजानकीजीवन रामचन्द्र, निशाचरारे भरताग्रजेश।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
नारायणानन्त हरे नृसिंह, प्रह्लाद–बाधाहर हे कृपालो।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
लीला–मनुष्याकृति–रामरूप, प्रताप–दासीकृत–सर्वभूप।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव।
जिह्वे पिवस्वामृतमेतदेव, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि, नामानि कृष्णस्य मनोहराणि।
समस्त भक्तार्त्ति–विनाशनानि, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**

त्वामेव याचे मम देहि जिह्वे, समागते दण्डधरे कृतान्ते।
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभक्त्या, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**
सुखावसाने त्विदमेव सारं, दुःखावसाने त्विदमेव गेयम्।
देहावसाने त्विदमेव जाप्यं, **गोविन्द दामोदर माधवेति।।**

श्रीगोवर्धनवासप्रार्थनादशकम्

(श्रीमद् रघुनाथदास गोस्वामी विरचित)

निजपतिभुजदण्डच्छत्रभावं प्रपद्य
प्रतिहतमदधृष्टोद्दण्डदेवेन्द्रगर्व।
अतुलपृथुलशैलश्रेणिभूप प्रियं मे
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन! त्वम् ।।१।।
प्रमदमदनलीलाः कन्दरे कन्दरे ते
रचयति नवयूनोर्द्वन्द्वमस्मिन्नमन्दम्।
इति किल कलनार्थं लग्नकस्तद्द्वयोर्मे
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन! त्वम्।।२।।
अनुपम – मणिवेदी – रत्नसिंहासनोर्वी –
रुहझर – दरसानुद्रोणि – संघेषु रंगैः।
सह बल – सखिभिः संखेलयन् स्वप्रियं मे
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन! त्वम्।।३।।
रसनिधि – नवयूनोः साक्षिणीं दानकेले –
र्द्युतिपरिमलविद्धां श्यामवेदीं प्रकाश्य।
रसिकवरकुलानां मोदमास्फालयन्मे
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन त्वम्।।४।।

हरिदयितमपूर्वं राधिका – कुण्डमात्म –
प्रियसखमिह कण्ठे नर्मणाऽऽलिंग्य गुप्तः।
नवयुवयुग – खेलास्तत्र पश्यन् रहो मे
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन! त्वम्।।५।।

स्थल – जल – तल – शष्पैर्भूरुहच्छायया च
प्रतिपदमनुकालं हन्त संवर्धयन् गाः।
त्रिजगति निजगोत्रं सार्थकं ख्यापयन्मे
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन! त्वम् ।।६।।

सुरपतिकृत – दीर्घद्रोहतो गोष्ठरक्षां
तव नव – गृहरूपस्यान्तरे कुर्वतैव।
अघ – बक – रिपुणोच्चैर्दत्तमान! द्रुतं मे
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन! त्वम्।।७।।

गिरिनृप! हरिदासश्रेणीवर्येति – नामा –
मृतमिदमुदितं श्रीराधिकावक्त्रचन्द्रात्।
व्रजजन – तिलकत्वे क्लृप्त! वेदैः स्फुटं मे
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन! त्वम्।।८।।

निज – जनयुत – राधाकृष्णमैत्रीरसाक्त –
व्रजनर – पशु – पक्षि – व्रात – सौख्यैकदातः।
अगणित – करुणत्वान्मामुरीकृत्य तान्तं
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन! त्वम्।।९।।

निरुपधि – करुणेन श्रीशचीनन्दनेन
त्वयि कपटि – शठोऽपि त्वत्प्रियेणार्पितोऽस्मि।
इति खलु मम योग्यायोग्यतां तामगृह्णन्
निज – निकट – निवासं देहि गोवर्धन! त्वम्।।१०।।

रसद – दशकमस्य श्रील – गोवर्धनस्य
क्षितिधर – कुलभर्तुर्यः प्रयत्नादधीते।
स सपदि सुखदेऽस्मिन् वासमासाद्य साक्षा –
च्छुभद – युगलसेवारत्नमाप्नोति तूर्णम् ।।११।।

श्रीवृन्दादेव्यष्टकम्

गांगेय – चांपेय – तडिद्विनिन्दि, – रोचिः – प्रवाह – स्नपितात्मवृन्दे!।
बन्धूक – बन्धू – द्युति – दिव्यवासो, वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्।।
बिंबाधरोदित्वर – मन्दहास्य, – नासाग्र – मुक्ताद्युति – दीपितास्ये!।
विचित्र – रत्नाभरणश्रियाढ्ये!, वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्।।
समस्त – वैकुण्ठ – शिरोमणौ श्री, – कृष्णस्य वृन्दावन – धन्य – धाम्नि।
दत्ताधिकारे! वृषभानु – पुत्रया, वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्।।
त्वदाज्ञा पल्लव – पुष्प – भृंग, – मृगादिभिर्माधव – केलिकुञ्जाः।
मध्यादिभिर्भान्ति विभूष्यमाणा, वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्।।
त्वदीय – दूत्येन निकुञ्ज – यूनो, – रत्युत्कयोःकेलि – विलास – सिद्धिः।
त्वत् – सौभगं केन निरुच्यतां तद्, वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्।।
रासाभिलाषो वसतिश्च वृन्दा, – वने त्वदीशांघ्रि – सरोज – सेवा।
लभ्या च पुंसां कृपाया तवैव, वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्।।
त्वं कीर्त्यसे सात्वत – तंत्रविद्भि, – र्लीलाभिधाना किल कृष्ण – शक्तिः।
तवैव मूर्तिस्तुलसी नृलोके, वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्।।
भक्त्या विहीना अपराध – लक्षैः, क्षिप्ताश्च कामादि – तरंग – मध्ये।
कृपामयि! त्वां शरणं प्रपन्ना, वृन्दे! नुमस्ते चरणारविन्दम्।।
वृन्दाष्टकं यः भृणुयात् पठेद् वा, वृन्दावनाधीश – पदाब्ज – भृगः।
स प्राप्य वृन्दावन – नित्यवासं, तत् प्रेमसेवां लभते कृतार्थः।।

इति श्रीमद्विश्वनाथचक्रवर्तिठक्कुरविरचित – स्तवामृतलहर्या
श्रीवृन्दादेव्यष्टकं संपूर्णम्।

श्रीकृष्णनामाष्टकम्

निखिलश्रुतिमौलिरत्नमाला – द्युतिनीराजितपादपङ्कजान्त।
अयि मुक्तकुलैरुपास्यमानं, परितस्त्वां हरिनाम! संश्रयामि।।१।।
जय नामेधय! मुनिवृन्दगेय! जनरञ्जनाय परमक्षराकृते!।
त्वमनादरादपि मनागुदीरितं, निखिलोग्रतापपटलीं विलुम्पसि।।२।।
यदाभासोऽप्युद्यन्कवलितल्भवध्वान्त – विभवो
दृशं तत्त्वान्धानामपि दिशति भक्तिप्रणयिनीम्।
जनस्तस्योदात्तं जगति भगवन्नामतरणे!
कृती ते निर्वक्तुं क इह महिमानं प्रभवति?।।३।।
यद्ब्रह्मसाक्षात्कृतिनिष्ठयापि, विनाशमायाति विना न भोगैः।
अपैति नाम! स्फुरणेन तत्ते, प्रारब्धकर्मेति विरौति वेदः।।4।।
अघदमनयशोदानन्दनौ! नन्दसूनो!
कमलनयन – गोपीचन्द्र – वृन्दावनेन्द्राः!।
प्रणतकरुण – कृष्णावित्यनेकस्वरूपे
त्वयि मम रतिरुच्चैर्वर्धतां नामधेय।।5।।
वाच्यं वाचकमित्युदेति भवतो नाम! स्वरूपद्वयं
पूर्वस्मात् परमेव हन्त करुणं तत्रापि जानीमहे।
यस्तस्मिन् विहितापराधनिवहः प्राणी समन्ताद्भवे –
दास्येनेदमुपास्य सोऽपि हि सदानन्दाम्बुधौ मज्जति।।6।।
सूदिताश्रितजनार्तिराशये, रम्यचिद्घन – सुखस्वरूपिणे।
नाम! गोकुलमहोत्सवाय ते, कृष्ण! पूर्णवपुषे नमो नमः।।7।।
नारदवीणोज्जीवन!, सुधोर्मि – निर्यास – माधुरीपूर!।
त्वं कृष्णनाम! कामं, स्फुर मे रसने रसेन सदा।।8।।

(इति श्रीमद् रूप गोस्वामी विरचित)

श्रीगुरु–परम्परा

कृष्ण हैते चतुर्मुख, हय कृष्ण–सेवोन्मुख,
ब्रह्मा हैते नारदेर मति।
नारद हइते व्यास, मध्व कहे व्यासदास,
पूर्णप्रज्ञ पद्मनाभ–गति।।१।।

नृहरि–माधव–वंशे, अक्षोभ्य–परमहंसे,
शिष्य बलि' अंगीकार करे।
अक्षोभ्येर शिष्य 'जय– तीर्थ नामे परिचय,
ताँ'र दास्ये ज्ञानसिन्धु तरे।।२।।

ताँहा हैते दयानिधि, ताँ'र दास विद्यानिधि,
राजेन्द्र हइल ताँहा ह'ते।
ताँहार किंकर 'जय– धर्म' नामे परिचय,
परम्परा जान भालमते।।३।।

जयधर्म–दास्ये ख्याति, श्रीपुरुषोत्तम–यति,
ताँ' ह'ते ब्रह्मण्यतीर्थ–सूरि।
व्यासतीर्थ ताँ'र दास, लक्ष्मीपति व्यासदास,
ताँहा ह'ते माधवेन्द्रपुरी।।४।।

माधवेन्द्रपुरीवर– शिष्यवर श्रीईश्वर,
नित्यानन्द, श्रीअद्वैत विभु।
ईश्वरपुरीके धन्य, करिलेन श्रीचैतन्य,
जगद्‌गुरु गौर–महाप्रभु।।५।।

महाप्रभु श्रीचैतन्य, राधाकृष्ण नहे अन्य,
रूपानुग–जनेर जीवन।
विश्वम्भर–प्रियंकर, श्रीस्वरूपदामोदर,
श्रीगोस्वामी रूप–सनातन।।६।।

रूपप्रिय महाजन, जीव, रघुनाथ हन,
ताँ'र प्रिय कवि कृष्णदास।
कृष्णदास प्रियवर, नरोत्तम सेवापर,
याँ'र पद विश्वनाथ – आश।।७।।
विश्वनाथ भक्तसाथ, बलदेव, जगन्नाथ,
ताँ'र प्रिय **श्रीभक्तिविनोद**।
महाभागवतवर, **श्रीगौरकिशोर** – वर,
हरि – भजनेते याँ'र मोद।।८।।
'श्रीवार्षभानवी' – वरा, सदा सेव्य – सेवापरा,
ताँहार **'दयितदास'** नाम।
प्रभुपाद – अन्तरंग, श्रीस्वरूप – रूपानुग,
श्रीकेशव भकति – प्रज्ञान।।९।।
गौड़ीय – वेदान्तवेत्ता, मायावाद – तमोहन्ता,
गौरवाणी – प्रचाराचार – धाम।।
ताँ'र शिष्य अगणन, ता'र मध्ये प्रियतम,
श्रीभक्तिवेदान्त वामन।
एइ सब हरिजन, गौरांगेर निजजन,
ताँ'देर उच्छिष्टे मोर काम।।१०।।

श्रीगुरु – वन्दना

**वन्दे गुरुनीशभक्तानीशमीशावतारकान्।
तत्प्रकाशांश्च तच्छक्तीः कृष्णचैतन्यसंज्ञकम्।।**

मन्त्रगुरु आर यत शिक्षागुरुगण।
ताँहार चरण आगे करिये वन्दन।।

श्रीरूप सनातन भट्ट–रघुनाथ।
श्रीजीव गोपालभट्ट दास–रघुनाथ।।
एइ छयगुरु शिक्षागुरु ये आमार।
ताँ'सबार पादपद्मे कोटि नमस्कार।।
भगवानेर भक्त यत श्रीवास प्रधान।
ताँहार चरणपद्मे सहस्र प्रणाम।।
अद्वैत–आचार्य प्रभुर अंश अवतार।
ताँ'र पादपद्मे कोटि प्रणति आमार।।
नित्यानन्दराय प्रभुर स्वरूपप्रकाश।
ताँ'र पादपद्म वन्दो याँ'र मुञि दास।।
गदाधर पण्डितादि प्रभुर निजशक्ति।
ताँ'सबार चरणे मोर सहस्र प्रणति।।
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु स्वयं भगवान्।
ताँहार पदारविन्दे अनन्त प्रणाम।।

(श्रीचैतन्यचरितामृत)

श्रीगुर्वष्टक

[मूल—श्रीविश्वनाथ चक्रवर्त्ति–ठाकुर,
अनुवादक—श्रीमद्भक्तिविवेक भारती गोस्वामी महाराज]

दावानल–सम संसार–दहने
दग्ध–जीवकुल–उद्धार कारणे,
करुणा–वारिद कृपावारि–दाने
(वन्दि) गुणसिन्धु गुरुर चरण–कमल।।१।।
नृत्य–गीत–वाद्य–श्रीहरिकीर्त्तने
रहेन मगन महामत्त मने,

रोमाञ्च कम्पाश्रु हय गौरप्रेमे
वन्दि सेइ गुरुर चरण-कमल।।२।।
सदा रत यिनि विग्रह-सेवने
श्रृंगारादि आर मन्दिर-मार्ज्जने,
करेन नियुक्त अनुगतजने
वन्दि सेइ गुरुर चरण-कमल।।३।।
चर्व्व्य-चुष्य-लेह्य-पेय-रसमय
प्रसादान्न कृष्णेर अति स्वादु हय,
भक्त-आस्वादने निज तृप्त रय
वन्दि सेइ गुरुर चरण-कमल।।४।।
श्रीराधामाधव-नाम-रूप-गुणे
अनन्त माधुर्य-लीला-आस्वादने,
लुब्ध चित्त यिनि हन प्रतिक्षणे
वन्दि सेइ गुरुर चरण-कमल।।५।।
ब्रजयुवद्वन्द्व-रति-सम्वर्द्धने
युक्ति करे सखीगणे वृन्दावने,
अति दक्ष ताहे, प्रियतमगणे
वन्दि सेइ गुरुर चरण-कमल।।६।।
सर्वशास्त्रे गाय श्री हरिर स्वरूप
भक्तगण भावे सेइ अनुरूप,
किन्तु यिनि प्रभु-प्रियतम-रूप
वन्दि सेइ गुरुर चरण-कमल।।७।।
याँहार प्रसादे कृष्णकृपा पाइ
याँ'र अप्रसादे अन्य गति नाइ,
त्रि-सन्ध्या कीर्त्तिर स्तव ध्याने भाइ
वन्दि सेइ गुरुर चरण-कमल।।८।।

गुरुदेवाष्टक अति यत्नकरि'
ब्राह्म – मुहूर्त्ते पड़े उच्च करि'
वृन्दावन – नाथ साक्षात् श्रीहरि
सेवा पाय सेइ वस्तुसिद्धि – काले।।९।।

श्रीगुरु – महिमा

(1)

श्रीगुरु – चरण – पद्म, केवल भकति – सद्म,
वन्दो मुञि सावधान – मते।
याँहार प्रसादे भाइ, ए भव तरिया याइ,
कृष्ण – प्राप्ति हय याँहा ह'ते।।
गुरु – मुखपद्म – वाक्य, चित्तेते करिया ऐक्य,
आर ना करिह मने आशा।
श्रीगुरु – चरणे रति, एइ से उत्तमा गति,
ये – प्रसादे पूरे सर्व आशा।।
चक्षु – दान दिला येइ, जन्मे जन्मे प्रभु सेइ,
दिव्यज्ञान हृदे प्रकाशित।
प्रेम – भक्ति याँहा हैते, अविद्या विनाश याते,
वेदे गाय याँहार चरित।।
श्रीगुरु करुणा – सिन्धु, अधम जनार बन्धु,
'लोकनाथ' लोकेर जीवन।
हा हा प्रभो! कर दया, देह' मोरे पद – छाया,
तुया पदे लइनु शरण।।

(श्रील नरोत्तम ठाकुर)

(2)

आश्रय करिया वन्दों श्रीगुरु-चरण।
याहा हैते मिले भाइ कृष्ण-प्रेमधन।।
जीवेर निस्तार लागि' नन्द-सुत हरि।
भुवने प्रकाश पान गुरु-रूप धरि'।।
महिमाय 'गुरु' 'कृष्ण' एक करि' जान।
गुरु-आज्ञा हृदे सब सत्य करि' मान।।
सत्यज्ञाने गुरुवाक्ये याहार विश्वास।
अवश्य ताहार हय ब्रजभूमे वास।।
यार प्रति गुरुदेव हन प्रसन्न।
कोन विघ्ने सेइ नाहि हय अवसन्न।।
कृष्ण रुष्ट ह'ले गुरु राखिवारे पारे।
गुरु रुष्ट ह'ले कृष्ण राखिवारे नारे।।
गुरु-माता, गुरु-पिता, गुरु ह'न पति।
गुरु बिना ए संसारे नाहि आर गति।।
गुरुके 'मनुष्य'-ज्ञान ना कर कखन।
गुरु-निन्दा कभु कर्णे ना कर श्रवण।।
गुरु-निन्दुकेर मुख कभु ना हेरिवे।
यथा हय गुरुनिन्दा, तथा ना याइवे।।
गुरुर विक्रिया यदि देखह कखन।
तथापि अवज्ञा नाहि कर कदाचन।।
गुरुपादपद्मे रहे यार निष्ठा-भक्ति।
जगत् तारिते सेइ धरे महाशक्ति।।
हेन गुरुपादपद्म करह वन्दना
याहा हैते घुचे भाइ सकल यन्त्रणा।।

गुरुपादपद्म नित्य ये करे वन्दन।
शिरे धरि' वन्दि आमि ताँहार चरण।।
श्रीगुरु – चरणपद्म हृदे करि' आश।
श्रीगुरु–वन्दना करे सनातन दास।।

श्रीगुरु–कृपा–प्रार्थना

गुरुदेव!
कृपाबिन्दु दिया, कर एइ दासे,
तृणापेक्षा अति हीन।
सकल–सहने, बल दिया कर,
निज–माने स्पृहाहीन।।
सकले सम्मान, करिते शकति,
देह नाथ! यथायथ।
तबे त'गाइब, हरिनाम–सुखे,
अपराध ह'बे हत।।
कबे हेन कृपा, लभिया ए जन,
कृतार्थ हइबे नाथ!
शक्ति–बुद्धिहीन, आमि अति दीन,
कर मोरे आत्मसाथ।।
योग्यता–विचारे, किछु नाहि पाइ,
तोमार करुणा सार।
करुणा ना हैले, काँदिया काँदिया,
प्राण ना राखिब आर।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(2)

गुरुदेव!

बड़ कृपा करि', गौड़–वन–माझे, गोद्रुमे दियाछ स्थान।
आज्ञा दिला मोरे, एइ व्रजे बसि', हरिनाम कर गान।।
किन्तु कबे प्रभु, योग्यता अर्पिवे, ए दासेरे दया करि'।
चित्त स्थिर ह'बे, सकल सहिब, एकान्ते भजिव हरि।।
शैशवे–यौवने, जड़सुख–संगे, अभ्यास हइल मन्द।
निज कर्मदोषे, ए देह हइल, भजनेर प्रतिबन्ध।।
वार्द्धक्ये एखन, पंचरोगे हत, केमने भजिब बल।
काँदिया काँदिया, तोमार चरणे, पड़ियाछि सुविह्वल।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(3)

गुरुदेव!

कबे मोर सेइ दिन हबे?

मन स्थिर करि', निर्जने बसिया, कृष्णनाम गा'ब यबे।
संसार–फुकार, काणे ना पशिबे, देह–रोग दूरे र'बे।।
'हरे कृष्ण' बलि', गाहिते गाहिते, नयने बहिवे लोर।
देहेते पुलक, उदित हइबे, प्रेमेते करिबे भोर।।
गद–गद वाणी, मुखे बाहिरिबे, काँपिबे शरीर मम।
घर्म मुहुर्मुहुः, विवर्ण हइबे, स्तम्भित प्रलय सम।।
निष्कपटे हेन, दशा कबे ह'बे, निरन्तर नाम गा'ब।
आवेशे रहिया, देहयात्रा करि', तोमार करुणा पा'ब।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(4)

गुरुदेव!

कबे तव करुणा प्रकाशे।

श्रीगौरांग – लीला, हय नित्यतत्त्व, एइ सुदृढ़ विश्वासे।
'हरि हरि' बलि', गोद्रुम – कानने, भ्रमिव दर्शन – आशे।।
निताइ, गौरांग, अद्वैत, श्रीवास, गदाधर — पंचजन।
कृष्णनाम – रसे, भासा'बे जगत् करि' महासंकीर्तन।।
नर्त्तन – विलास, मृदंग – वादन, शुनिब आपन – काणे।
देखिया देखिया, से – लीला – माधुरी, भासिव प्रेमेर वाणे।।
ना देखि आबार, से – लीला – रतन, काँदि 'हा गौरांग' बलि'।
आमारे विषयी, पागल बलिया, अंगेते दिवेक धूलि।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(5)

जय जय श्रीगुरु, प्रेम – कल्पतरु, अद्भुत याँको परकाश।
हिया अगेयान, तिमिरवर ज्ञान – , सुचन्द्र किरणे करु नाश।।

इह लोचन आनन्द – धाम।

अयाचित मो – हेन, पतित हेरि यो पहुँ, याचि देयल हरिनाम।।
दुरमति अगति, सतत असते मति, नाहि सुकृति लव लेश।
श्रीवृन्दावन, युगल – भजन – धन, ताहे करल उपदेश।।
निरमल – गौर – , प्रेमरस सिञ्चने, पूरल जगजन आश।
सो चरणाम्बुजे, रति नाहि होयल, रोयत वैष्णव – दास।।

(6)

हा हा प्रभु लोकनाथ! राख पदद्वन्द्वे।
कृपादृष्टये चाह यदि हइया आनन्दे।।
मनोवाञ्छा सिद्धि तवे हओ पूर्णतृष्ण।
हेथाय चैतन्य मिले, सेथा राधाकृष्ण।।
तुमि ना करिले दया के करिवे आर।
मनेर वासना पूर्ण कर एइवार।।
ए तिन संसारे मोर आर केह नाइ
कृपा करि' निज–पदतले देह ठाञि।।
राधाकृष्ण–लीलागुण गाओ रात्रिदिने।
नरोत्तम–वाञ्छापूर्ण नहे तुया विने।।

(7)

लोकनाथ प्रभु, तुमि दया कर मोरे।
राधाकृष्ण–चरण येन सदा चित्ते स्फुरे।।
तोमार सहित थाकि सखीर सहिते।
एइत वासना मोर सदा उठे चिते।।
सखीगण–ज्येष्ठ येंहो, ताँहार चरणे।
मोरे समर्पिवे कबे सेवार कारणे।।
तवे से हइवे मोर वाञ्छित–पूरण।
आनन्दे सेविव दोंहार युगल–चरण।।
श्रीरूपमञ्जरी सखि! कृपादृष्टये चाञा।
तापी नरोत्तमे सिञ्च सेवामृत दिञा।।

(8)

कबे मोर शुभदिन हइवे उदय।
वृन्दावन-धाम मम हइवे आश्रय।।
घुचिवे संसार-ज्वाला, विषय-वासना।।
वैष्णव - संसर्गे मोर पूरिवे कामना।।
धूलाय धूसर ह'ये हरिसंकीर्त्तने।
मत्त ह'ये प'ड़े र'व वैष्णव-चरणे।।
कबे श्रीयमुनातीरे कदम्ब-कानने।
हेरिब युगलरूप हृदय-नयने।।
कबे सखी कृपा करि', युगल-सेवाय।
नियुक्त करिवे मोरे राखि' निजपाय।।
कबे वा युगल-लीला करि' दरशन।
प्रेमानन्दभरे आमि ह'व अचेतन।।
कतक्षण अचेतने पड़िया रहिव।
आपन शरीर आमि कवे पाशरिव।।
उठिया स्मखि पुनः अचेतन-काले।
या' देखिनु कृष्णलीला भासि' आँखिजले।।
काकुति मिनति करि' वैष्णव-सदने।
वलिव भकति-बिन्दु देह' ए दुर्जने।।
श्रीअनंग-मञ्जरीर चरण शरण।
ए **भक्तिविनोद** आशा करे अनुक्षण।।

श्रील-केशव-गोस्वामि-वन्दना

जय प्रभुवर, श्रीकेशव ठाकुर, श्रीराधार निजजन।
कृष्ण-इच्छावशे, उदि' गौड़देशे, पूराले सज्जन-मन।।

तृतीय तत्वधन— प्रेम प्रयोजन, जाना'ते ए मुख्यधन।
गोविन्द–मासेते, कृष्ण–तृतीयाते, हेथा' तव आगमन॥
ए तिथि–वन्दने, भकतेर मने, वहे भक्ति–प्रस्त्रवण।
भक्त ये तोमार, तुमि त' ताहार, चाहे ना से अन्य धन॥
तव गुरुदेव, श्रील प्रभुपाद, तुमि ताँ'र प्रेष्ठजन।
मठ–सेवाभाव, तोमार उपर, न्यस्त छिल सर्वक्षण॥
सकले कहित, 'गुरुर विनोद', तुमि हेन गुणीजन।
गुरु–कार्य यत, साधिते सतत, जीवन करिया पण॥
अतुल–सेवाधी, प्रभुपाद देखि', बुझिलेन निजजण।
हेन गुणधामे, 'कृतिरत्न'–नामे, करिलेन विभूषण॥
दुर्वृत्तरा मिले, कीर्त्तनेर दले, करे यवे आक्रमण।
तुमि सेइ काले, गुरु–दाय निले, सहि' निजे निपीड़न॥
'कुरेशे'र मत, तोमार चरित, घोषे' वाणी चिरन्तन–
सर्व–श्रेयोमय, गुरुसेवा हय, अतिशय–प्रयोजन॥
प्रभुपाद यवे, राधा–अनुरागे, करे लीला–संगोपन।
लभि' तदादेश, धरि' न्यासि–वेश, ह'ले गुरु महात्मन॥
तव ए सम्माने, खुशी ह'ल मने, गौड़ीय भकतगण।
सरस्वती–धारा, पुनः वहे त्वरा, नवरूपे अनुक्षण॥
'वेदान्त–समिति', भू–भारते स्थापि',विला'ले श्रीरूप–धन।
न्यासि–नामे युक्त, 'भकति वेदान्त', कैले तुमि प्रचलन॥
राधा–चिन्तावेशे, हरिर विशेषे, कृष्णकान्ति–विलोपन।
राधा–आलिंगित, से–रूप अमृत, कैले मर्त्त्ये प्रकटन॥
तव समितिर, आकर–मन्दिर, कोलद्वीप–आकर्षण।
नव–चूड़ायुक्त,'देवानन्द मठ', (चारि) सम्प्रदाय–सञ्जीवन॥
नव–चूड़ा हय, नव' भक्तिमय, श्रृंगे आत्मनिवेदन।

भक्ति–कीर्त्तनांग, सर्वश्रेष्ठ अंग, ए तव प्रचार–धन।।
वैभव तोमार, अनन्त अपार, जाने तव निजजन।
आमि अर्वाचीन, शक्ति बुद्धिहीन, बुझि नाइ एक कण।।
मायावाद–मत, अज्ञाने आवृत, भकतिर प्रवञ्चन।
विश्वेर विस्मय, 'वैष्णव–विजय', तव निज सम्पादन।।
शुद्धोदन–सुत, ज्ञानी अवधूत, नहे तिनि नारायण।
अञ्जना–नन्दन, बुद्ध–नारायण, जानाले ए तथ्य धन।।
'अचिन्त्य भेदाभेद', वैष्णव–सम्पद, तव कृपा–निदर्शन।
से' लेखनी–द्वारे, घुचे चिरतरे, असुरेर आस्फालन।।
'वेदान्त दर्शन— भकति–दर्शन', कहे सब महाजन।
शब्दब्रह्म–नाम, सूत्रे अविराम, करियाछे सुकीर्त्तन।।
गौर भगवान्, शास्त्रे परमाण, भज ताँ'र श्रीचरण।
गौरेर आचार, गौरेर विचार, मिलाय श्रीकृष्णधन।।
बद्ध अवस्थाते, गोष्ठी भजनेते, (हओ) नामसेवा–परायण।
निर्जन–भजन, अनर्थ–कारण, नहे युक्त आचरण।।
अर्चन–मार्गेते, सूक्ष्म–विचारेते, दीक्षागुरु श्रेष्ठजन।
प्रथम प्रणति, राख ताँ'र प्रति, तवे शिक्षा–गुरुगण।।
ओहे गुरुवर! सिद्धान्त–सागर, दिले शिक्षा अगणन।
भकतिविनोद, तोमार सम्पद, करिवे के ता' वर्णन??
वैराग्य अद्भुत, येन बलदेव, नामे रत सर्वक्षण।
गीता–भागवते, वेदे ओ वेदान्ते, तुमि महाज्ञानी जन।।
मुखे 'प्रभुपाद', शिरे 'प्रभुपाद', 'प्रभुपाद'–प्राणधन।
आचारे–प्रचारे, जानाले मोदेरे, 'गुरुकृपा हि केवलम्'।।
शारद–सन्ध्याते, रास–पूर्णिमाते, ग्रहणेर शुभक्षण।
सवे घरे घरे, हरिनाम करे, डाके कृष्णे घनघन।।

छिले प्रेमे निमगन।
तुमि सेइक्षणे, श्रीराधा – चिन्तने, गेले चलि' ब्रजवन।।
कृष्णेर प्रसादे, राधार इंगिते, कर राधा – विनोदन।
से रास – मञ्चेते, थाकि' रूप – यूथे, तुमि नित्य ब्रजजन।।
राधा – अनुचरी, 'विनोद – मञ्जरी', कर कृपा वरिषण।
हे भक्तवत्सल! जीवन – सम्बल! देह' कृष्ण – सेवाधन।।
दास्य – योग दिया, मोरे उद्धारिया,

श्रील – प्रभुपाद – वन्दना

जयरे जयरे जय, परमहंस महाशय,
श्रीभक्तिसिद्धान्त सरस्वती।
गोस्वामी ठाकुर जय, परम करुणामय,
दीन – हीन अगतिर गति।।
नीलाचले हइया उदय।
श्रीगौड़मण्डले आसि', प्रेमभक्ति परकाशि',
जीवेर नाशिला भव – भय।।
तोमार महिमा गाइ, हेन साध्य मोर नाइ,
तवे पारि, यदि देह' शक्ति।
विश्वहिते अविरत, आचार – प्रचारे रत,
विशुद्धा श्रीरूपानुगा भक्ति।।
श्रीपाट खेतरि धाम, ठाकुर श्रीनरोत्तम,
तोमाते ताँहार गुण देखि।
शास्त्रेर सिद्धान्त – सार, शुनि' लागे चमत्कार,
कुतार्किक दिते नारे फाँकि।।
शुद्धभक्ति – मत यत, उपधर्म – कवलित,
हेरिया लोकेर मने त्रास।

हानि' सुसिद्धान्त–वाण, उपधर्म खान खान,
सज्जनेर वाड़ा'ले उल्लास।।
स्मार्त्तमत–जलधर, शुद्धभक्ति–रवि–कर,
आच्छादिल भाविया अन्तरे।
शास्त्रसिन्धु–मन्थनेते, सुसिद्धान्त–झञ्झावाते,
उड़ाइला दिग्‌दिगन्तरे।।
स्थाने स्थाने कत मठ, स्थापियाछ निष्कपट,
प्रेमसेवा शिखाइते जीवे।
मठेर वैष्णवगण, करे सदा वितरण,
हरिगुण–कथामृत भवे।।
शुद्धभक्ति–मन्दाकिनी, विमल प्रवाह आनि',
शीतल करिल तप्तप्राण।
देशे देशे निष्किञ्चन, प्रेरिला वैष्णवगण,
विस्तारिते हरिगुणगान।।
पूर्वे यथा गौरहरि, मायावाद छेद करि',
वैष्णव करिला काशीवासी।
वैष्णवदर्शन–सूक्ष्म, विचारे तुमि हे दक्ष,
तेमति तोषिला वाराणसी।।
दैववर्णाश्रम–धर्म, हरिभक्ति यार मर्म,
शास्त्रयुक्त्ये करिला निश्चय।
ज्ञान–योग–कर्मचय, मूल्य तार किछु नय,
भक्तिर विरोधी यदि हय।।
श्री गौड़मण्डल भूमि, भक्तसंगे परिक्रमि',
सुकीर्त्ति स्थापिला महाशय।

अभिन्न ब्रजमण्डल, गौड़भूमि प्रेमोज्ज्वल,
प्रचार हइल विश्वमय।।
कुलियाते पाषण्डीरा, अत्याचार कैल या'रा,
ता–सबार दोष क्षमा करि'।
जगते कैले घोषणा, 'तरोरिव सहिष्णुना',
हन 'कीर्त्तनीयः सदा हरिः'।।
श्रीविश्ववैष्णव–राज, सभामध्ये ''पात्रराज'',
उपाधि–भूषणे विभूषित।
विश्वेर मंगल लागि', हइयाछ सर्वत्यागी,
विश्ववासिजन–हिते रत।।
करितेछ उपकार, या'ते पर–उपकार,
लभे जीव श्रीकृष्ण–सेवाय।
दूरे याय भव–रोग, खण्डे याहे कर्मभोग,
हरिपादपद्म या'ते पाय।।
जीव मोह–निद्रागत, जागा'ते बैकुण्ठदूत,
'गौड़ीय' पाठाओ घरे घरे।
उठरे उठरे भाइ, आर त' समय नाइ,
'कृष्ण भज' वल उच्चैःस्वरे।।
तोमार मुखारविन्द–, विगलित मकरन्द,
सिञ्चित अच्युत–गुणगाथा।
शुनिले जुड़ाय प्राण, तमो–मोह अन्तर्द्धान,
दूरे याय हृदयेर व्यथा।।
जानि आमि महाशय, यशोवाञ्छा नाहि हय,
बिन्दुमात्र तोमार अन्तरे।
तव गुण वीणाधारी, मोर कण्ठ–वीणा धरि',

अवशेषे वलाय आमारे।।
वैष्णवेर गुण–गान, करिले जीवेर त्राण,
शुनियाछि साधु–गुरु–मुखे।
कृष्णभक्ति समुदय, जनम सफल हय,
ए भव–सागर तरे सुखे।
ते कारणे ए प्रयास, यथा वामनेर आश,
गगनेर चाँद धरिवारे।।
अदोष–दरशी तुमि, अधम पतित आमि,
निजगुणे क्षमिवा आमारे।
श्रीगौरांग–पारिषद, ठाकुर–भक्तिविनोद,
दीन–हीन पतितेर बन्धु।।
कलितम–विनाशिते, आनिलेन अवनीते,
तोमा' अकलंक पूर्ण इन्दु।।
कर कृपा वितरण, प्रेमसुधा अनुक्षण,
मातिया उठुक जीवगण।
हरिनाम–संर्कीत्तने, नाचुक जगत–जने,
वैष्णव दासेर निवेदन।।

श्रील–गौरकिशोर–वन्दना

हा प्रभो! गौरकिशोर, वैष्णवाचार्य ठाकुर,
साक्षात् वैराग्य मूर्त्तिमन्त।
तव उरु–कृपा विने, साधन–भजनहीने,
कैछे गाय से गुण–अनन्त।।
श्रीगौरांग–भक्त यत, ताँ'र मध्ये (श्री) रघुनाथ,
वैराग्य येन पाषाण–रेखा।

तुमि त' बरिले ताय, देखि' गौर सुख पाय,
हरिप्रीति लागि' यत चेष्टा।।
जगते विराग याहा, केवल-कैतव ताहा,
भुक्ति-मुक्ति स्पृहामय यत।
अप्राकृत रससिन्धु, ताँहि ये 'विरह'-सीधु,
से-विरागे ह'ले अनुरक्त।।
जगन्नाथ-उपदेशे, ब्रजाभिन्न उद्‌देशे,
ब्रज ह'ते एले नव-वन।
भकतिविनोद-संगे, गौरकेलि-कथारंगे,
कर विप्रलम्भ-आस्वादन।।
विप्रलम्भ शुद्धभाव, जीवेर सहज-भाव,
या'र आकर राधा-पदद्वन्द्व।
ताँहार दास्य-आशे, 'हा गौर! हा गौर!' आस्ये,
दिवानिशि काँदि हैले अन्ध।।
कृष्णतत्त्व-ज्ञानधने, देखाइले विश्वजने—
जड़विद्या नहे कार्यकरी।
शुद्ध-वैष्णवानुगत्ये, अकपट हैया चित्ते,
तवे ताहा लभिवारे पारि।।
'साधुत्वेर अभिमान, त्यज साधु! अविराम'—,
अमूल्य तोमार उपदेश।
'पूजा-प्रतिष्ठार आश, हयो नाको ता'र दास,
यदि चाह कृष्णकृपालेश।।'
'ऐकान्तिक नामाश्रय, इथे सर्वसिद्धि हय,—
इह गौर-श्रीमुख-वचन।
इहाते विश्वास धर, नामे शुद्धसत्व कर,

ह'बे सिद्धि, लीलार स्फुरण।।'
भण्ड ओ पाषण्ड यत, जड़भोगे उन्मत्त,
ताहा देखि' छाड़ दीर्घश्वास।
अमल गौरांग – शिक्षा, जीवे दिवे चिन्तिया,
आनियाछ 'श्रीदयितदास'।।
दामोदर – मासवरे, हरि – जागर – वासरे,
परिहरि' प्रपंचेर लीला।
'प्रमोद – मंजरी' तुमि, रूपगणे हैले गणि,
श्रीराधार उल्लास बाड़िला।।
प्रभो! तुमि गंगा – तीर, आर राधाकुण्ड – नीड़,
आछ यथा नित्य – चिद्विलास।
एइ कृपा कर अति, जागे गौर – कृष्णे रति,
शून्य हउ' अन्य – अभिलाष।।

श्रीभकतिविनोद – जय – गुण – गान

(क)

जय गदाधराभिन्न भकितविनोद।
चिदानन्दमय तनु भक्तप्राणामोद।।
उद्धार करिले लुप्त तीर्थ – मायापुर।
जय – नामाचार्य भक्तिविनोद ठाकुर।।
स्वानन्द – सुखद – कुञ्ज, राधाकुण्ड – तीर।
विशुद्ध भजन – स्थान—समाधि – मन्दिर।।
जय जय नीलाचल, श्रीभक्ति – कुटीर।
श्रीभक्तिविनोद – स्थान समुद्रेर तीर।।
जय जय श्रीकल्याण – कल्पतरुराज।

ठाकुर आनिल याँहा धरणीर माझ।।
श्रीभक्ति–भवन जय गिरिधर–स्थान।
जय तिरोभाव–तिथि भक्तगण–प्राण।।
जय गौर–पादपद्म–रस–मधुकर।
नाम रसे भासाइला जीवेर अन्तर।।
जय उपदेशामृत मधुर मूरति।
जानाइला जीवगणे नामेर शकति।।
भकतिविनोद प्रभु गौर–निज–जन।
हरिनाम–महामन्त्र याँहार साधन।।
सेइ से–विनोद–पद भरसा याँहार।
जय गुणगान गाहे अधम से छार।।
दया करि' श्रीचरण–सेवा अधिकार।
दिओ देव! इहा छाड़ा आशा नाहि आर।।

(ख)

(कोथा) भकतिविनोद श्रीगौर–स्वजन!
कृष्णप्रेम दिते, एसेले मर्त्ये,
मानवेर साजे करुणा–कारण।।
(यवे) धर्म–विप्लवेर, अमानिशा–घोरे,
सुसुप्त मानव व्यभिचार करे।
अन्तर्यामी प्रभुर, हृदय विदरे,
जीवेर दुःखेते करिया क्रन्दन।।
(तखन) गौड़–गगनेर, उदय–गिरिते,
उदिले आचार्य मंगल–उषाते।
गौर–मनोऽभीष्ट, स्थापिया विश्वेते,

अज्ञानान्धकार करिले मोचन।।

प्रेम–प्रयोजन, विग्रह तुमि त',
महान् पुमर्थ प्रेम–मूलमन्त्र।

शत ग्रन्थे, पत्रे— करिले विवृत,
नामइ साध्यसार, नामइ साधन।।

शुद्धनाम आर, नाम–अपराध,
विश्लेषिते आछे तव ग्रन्थ–माझ।

देखि' स्तब्धीभूत, सज्जन–समाज,
कोटिकण्ठे करे तव गुणगान।।

सहज–सरल, 'अमृतवर्षिणी',
भाव–भाषा भरा तोमार लेखनी।

प्रति पत्रे छत्रे, सिद्धान्त–सम्मणि,
शास्त्र–सिन्धु छानि' करेछ चयन।।

'श्रीकृष्ण–संहिता', 'सज्जन–तोषणी',
'शिक्षामृत', 'हरिनाम–चिन्तामणि'।

'श्रीशरणागति',— श्रीकृष्णाकर्षिणी,
'जैवधर्मे' जीवेर स्वरूप–स्थापन।।

'महाप्रभुर शिक्षा', 'गीतावली'–गान,
'गीतमाला', 'प्रेम प्रदीप' आख्यान।

'कल्पतरु'–राजे, विराजे कल्याण,
अपार अनन्त तव भूरिदान।।

श्रीविश्ववैष्णव–, राजसभा आर,
धाम–प्रचारिणी–संसत् तोमार।

उन्नत श्रीरषे, धाम–मायापुर,
(तव) अपार्थिव कीर्त्ति करे विघोषण।।

आपेक्षिक हय, पतिव्रता–धर्म,
निरपेक्षा ह'ले वेश्याते गणन।
पातिव्रत्य–सार, कृष्णैकसेवन,
(एइ) वेदगोप्य–वाणी दियेछ सन्धान।।
तव स्नेह–धारा, सम्बर्द्धित याँ'रा,
भूलोके गोलोक–निवासी ताँहारा।
वितरि' श्रीनाम–, सुधार–सुधारा,
भव–दावानल करे निर्वापण।।
(तुमि) कालातीत नित्य, चिद्विलास–तत्त्व,
बद्धजीव–पक्षे अगम्य नितान्त।
केमने वर्णिव, ओ विरह–तत्त्व,
(येन) ऐ वाञ्छा पंगुर पर्वत–लंघन।।
नाहि कर्म–बल, नाहि ज्ञान–बल,
ना जानि भकति, मोरा सुदुर्बल।
तव पद–रेणु, तव पद–जल,
(होक्) साधन–सम्बल भुवन–पावन।।
के बुझिवे तोमार, गम्भीर स्वभाव,
श्रीराधार कृष्णे गाढ़ अनुराग।
कोटी कोटी जन्मे, क'रो दायभाक्,
तव पदयुगे एइ निवेदन।।
भकतिविनोद, कृष्ण–विनोदिते,
एनेछे प्रपञ्चे 'श्रीराधा–दयिते'।
साध विश्ववासि! ऐ पद–प्रान्ते,
अनुकूल–कृष्ण–भजन–विज्ञान।।
(आज) बंगे ओ भारते, पाश्चात्य नगरे,

पूजारी पूजिछे योग्य उपचारे।
आत्म–पुष्पाञ्जलि— संकीर्त्तन–द्वारे,
(ओ) पादपूजा करि' याचे कृपाकण।।

श्रील जगन्नाथ–वन्दना

[श्रील भक्तिविवेक भारती महाराज–विरचित
'भक्तिविवेक कुसुमाञ्जलि' से उद्धृत]

अनाथ जीवेरे, करिते सनाथ, जगन्नाथ प्रभो तुमि।
प्रभुर आज्ञाते, अवनीते आसि', वसिला नदीया–भूमि।।
गौर–कृष्ण येन, राधाकुण्ड आदि, प्रकाशिला कृपा करि'।
तुमि गौरजन, गौरांग–आदेशे, जानाइला 'मायापुरी'।।
'मधुर–आलोक', करि' दरशन, अमर तुलसी–वने।
आपनार जन, भकतिविनोदे, स्मरण करिला मने।।
मरमेर कथा, बुझिल मरमी, छुटिया आसिला तथा।
तोमार निर्देशे, करिल मन्दिर, गौर–जन्मस्थान यथा।।
हृदय–देवता, प्रकाशि' मन्दिरे, कृष्णदाता दयामय।
गौर–धाम–नाम, गौर–काम–सेवा, प्रचारिले विश्वमय।।
प्रकटाप्रकट, तिथि वैष्णवेर, अविदित छिल याहा।
'तदीय' सेवार, महिमा–प्रचारे, कृपाय जानाले ताहा।।
कृष्णेतर शब्द–, श्रवण–कथने, निरत–मानवे जानि'।
तिथि–वार–मास, नक्षत्रादि नामे, कृष्णसंज्ञा दिला आनि'।।
भकतिर द्वारे, कृष्ण–विनोदन, जानाते सिद्धान्तसार।
भक्तिर स्वरूपे, आनिले जगते, करुणार पारावार।।
धर्म, अर्थ, काम, आर मोक्ष–आशा, छाड़िया सौभाग्यवान्।
वसि' भक्त–संगे, भक्ति–अनुष्ठाने, सेवे सदा भगवान्।।

जगतेर नाथ, भक्त, भगवान्, जानिया कृपाय तव।
तोमार चरणे, ओहे जगन्नाथ! चिरदास हञा रव।।

श्रीवैष्णव–वन्दना

१ (क)

वृन्दावनवासी यत वैष्णवेर गण।
प्रथमे वन्दना करि सबार चरण।।
नीलाचलवासी यत महाप्रभुर गण।
भूमिते पड़िया वन्दों सभार चरण।।
नवद्वीपवासी यत महाप्रभुर भक्त।
सभार चरण वन्दों हञा अनुरक्त।।
महाप्रभुर भक्त यत गौड़देशे स्थिति।
सभार चरण वन्दों करिया प्रणति।।
ये–देशे ये–देशे वैसे गौरांगेर गण।
ऊर्ध्वबाहु करि' वन्दों सबार चरण।।
हञाछेन हइबेन प्रभुर यत दास।
सभार चरण वन्दों दन्ते करि' घास।।
ब्रह्माण्ड तारिते शक्ति धरे जने जने।
ए वेद–पुराणे गुण गाय येबा शुने।।
महाप्रभुर गण सब पतितपावन।
ताइ लोभे मुञि पापी लइनु शरण।।
वन्दना करिते मुञि कत शक्ति धरि।
तमो–बुद्धि–दोषे मुञि दम्भ मात्र करि।।
तथापि मूकेर भाग्य मनेर उल्लास।
दोष क्षमि' मो–अधमे कर निज दास।।

सर्ववाञ्छा सिद्धि हय, यम – बन्ध – छुटे।
जगते दुर्लभ हञा प्रेमधन लुटे।।
मनेर वासना पूर्ण अचिराते हय।
देवकीनन्दन दास एइ लोभे कय।।

(ख)

प्राण गोराचाँद मोर, धन गोराचाँद।
जगत बाँधिल गोरा पाति' प्रेमफाँद।।ध्रु।।
मिनति करिया तृण धरिया दशने।
निवेदन करों गुरु – वैष्णव – चरणे।।
श्रीकृष्णचैतन्य – नित्यानन्द – अवतारे।
यतेक वैष्णव ताहा के कहिते पारे।।
वैष्णव चिनिते नारे देवेर शकति।
मुञि कोन् जन हओ शिशु अल्पमति।।
जिह्वार आरति आर मनेर वासना।
तेञि से करिते चाहों वैष्णव – वन्दना।।
ये किछु कहिये गुरु – वैष्णव – प्रसादे।
क्रमभंग ना लइवे मोर अपराधे।।
वन्दों **शची जगन्नाथ** मिश्रपुरन्दर।
याँहार नन्दन विश्वरूप **विश्वम्भर**।।
वन्दना करिब **विश्वरूप** धन्य धन्य।
चैतन्य – अग्रज नाम श्रीशंकरारण्य।।
वन्दिव से महाप्रभु **श्रीकृष्णचैतन्य**।
पतितपावन – अवतार धन्य धन्य।।
वन्दों **लक्ष्मीठाकुराणी** आर **विष्णुप्रिया**।

गदाधर पण्डित गोसाञि वन्दना करिया।।
वन्दों **पद्मावती देवी, हाड़ाइ पण्डित**।
याँ'र पुत्र नित्यानन्द अद्भुत – चरित।।
दयार ठाकुर वन्दों **श्रीनित्यानन्द**।
याँहा हैते नाटे गीते सभार आनन्द।।
वसुधा – जाह्नवा वन्दों दुइ ठाकुराणी।
याँ'र पुत्र वीरभद्र जगते बाखानि।।
श्रीवीरभद्र गोसाञि वन्दिव सावधाने।
सकल भुवन वश याँ'र आचरणे।।

(ग)

(भाट्यालि राग)

धन्य अवतार गोरा न्यासि – शिरोमणि।
एमन सुन्दर नाम कोथाओ ना शुनि।।धु।।
सावधाने वन्दों आगे **माधवेन्द्रपुरी**।
विष्णुभक्ति – पथेर प्रथम अवतरि।।
आचार्य गोसाञि वन्दों **अद्वैत ईश्वर**।
ये आनिल महाप्रभु भुवन – भितर।।
सीता – ठाकुराणी वन्दों हञा एकमन।
अच्युतानन्दादि वन्दों ताँहार नन्दन।।
पुण्डरीक विद्यानिधि भक्त – चूड़ामणि।
याँ'र नाम ल'ये प्रभु काँदिला आपनि।।
वन्दिव **श्रीश्रीनिवास** ठाकुर पण्डित।
नारद – खेयाति याँ'र भुवन – विदित।।
भक्ति करि' वन्दिव **मालिनी** – ठाकुराणी।
श्रीमुखे गौरांग याँ'रे बलिला जननी।।

श्रीनारायणी देवी वन्दिव सावधाने।
आलवाटी प्रभु याँ'रे करिला आपने।।
हरिदास – ठाकुर वन्दों विरक्त – प्रधान।
द्रव्य दिया शिशुरे लओयाइला हरिनाम।।
गोपीनाथ ठाकुर वन्दों जगत – विख्यात।
प्रभुर स्तुतिपाठे येंह ब्रह्मा साक्षात।।
वन्दिव **मुरारिगुप्त** भक्ति – शक्तिमन्त।
पूर्व – अवतारे याँ'र नाम हनुमन्त।।
श्रीचन्द्रशेखर वन्दों चन्द्र – सुशीतल।
आचार्यरत्न बलि' याँ'र ख्याति निरमल।।
गोविन्द गरुड़ वन्दों महिमा – अपार।
गौरपदे भक्तिद्वारे याँ'र अधिकार।।
वन्दिव अम्बष्ठ नाम **श्रीमुकुन्द दत्त**।
गन्धर्व जिनिया याँ'र गानेर महत्त्व।।
श्रीगोविन्ददास वन्दों बड़ शुद्धभावे।
उत्कले याँहारे प्रभु राखिला समीपे।।
वन्दों महानिरीह **पण्डित दामोदर**।
पीताम्बर वन्दों ताँ'र ज्येष्ठ सहोदर।।
वन्दिव **श्रीजगन्नाथ, शंकर, नारायण**।
बड़ उदासीन एइ भाइ पंचजन।।
वन्दों महाशय **चक्रवर्ती नीलाम्बर**।
प्रभुर भविष्य येह कहिला सत्वर।।
श्रीराम पण्डित वन्दों **गुप्त नारायण**।
वन्दों गुरु **विष्णु, गंगादास, सुदर्शन**।।
वन्दों **सदाशिव** आर **श्रीगर्भ, श्रीनिधि**।

बुद्धिमन्त-खान वन्दों आर विद्यानिधि।।
वन्दिव धार्मिक ब्रह्मचारी **शुक्लाम्बर**।
प्रभु याँ'रे दिल निज प्रेमभक्ति वर।।
नन्दन आचार्य वन्दों लेखक **विजय**।
वन्दों **रामदास, कविचन्द्र** महाशय।।
वन्दों खोलाबेचा-ख्याति **पण्डित श्रीधर**।
प्रभु-संगे याँ'र नित्य कौतुक कोन्दल।।
वन्दों भिक्षु **वनमाली** पुत्रेर सहिते।
प्रभुर प्रकाश ये देखिला आचम्बिते।।
हलायुध ठाकुर वन्दों करिया आदर।
वन्दना करिव **श्रीवासुदेव** भादर।।
वन्दिव **ईशानदास** करजोड़ करि'।
शची ठाकुराणी याँ'रे स्नेह कैल बड़ि।।
वन्दों **जगदीश** आर **श्रीमान् सञ्जय**।
गरुड़, काशीश्वर वन्दों करिया विनय।।
वन्दना करिव **गंगादास, कृष्णानन्द**।
श्रीराम मुकुन्द वन्दों करिया आनन्द।।
वल्लभ आचार्य वन्दों जगजने जानि।
याँ'र कन्या आपनि श्रीलक्ष्मी-ठाकुराणी।।
सनातन मिश्र वन्दों आनन्दित हैया।
याँ'र कन्या धन्या ठाकुराणी विष्णुप्रिया।।
आचार्य वनमाली वन्दों **द्विज काशीनाथ**।
महाप्रभुर विवाहेर घटना याँ'र साथ।।
प्रभुर विवाहोत्सवे छिल यत जन।
ताँ'सभार पादपद्म वन्दि सर्वक्षण।।

(घ)

(सुहइ राग)

भाल अवतार श्रीगौरांग अवतार।
एमन करुणानिधि कभु नाहि आर।।ध्रु।।
गोसाञि ईश्वरपुरी वन्दों सावधाने।
लोक–शिक्षा–दीक्षा प्रभु कैला याँ'र स्थाने।।
केशव भारती वन्दों सान्दीपनि–मुनि।
प्रभु याँ'रे निजगुरु करिला आपनि।।
वन्दिव श्रीमाधवेन्द्र पुरीर चरण।
प्रभु याँ'रे कहिलेन श्रीराधार गण।।
परमानन्दपुरी वन्दों उद्धव–स्वभाव।
दामोदरस्वरूप वन्दों ललितार भाव।।
नरसिंहतीर्थ वन्दों पुरी–सुखानन्द।
श्रीगोविन्दपुरी वन्दों पुरी–ब्रह्मानन्द।।
नृसिंहपुरी वन्दों सत्यानन्द भारती।
वन्दिव गरुड़ अवधूत महामति।।
विष्णुपुरी गोसाञि वन्दों करिया यतन।
'विष्णुभक्तिरत्नावली' याँहार ग्रन्थन।।
ब्रह्मानन्दस्वरूप वन्दों बड़ भक्ति करि'।
कृष्णानन्दपुरी वन्दों श्रीराघवपुरी।।
विश्वेश्वरानन्द वन्दों विश्व परकाश।
महाप्रभुर पदे याँ'र विशेष–विश्वास।।
श्रीकेशवपुरी वन्दों अनुभवानन्द।
वन्दिव भारती–शिष्य नाम चिदानन्द।।
वन्दों रूप–सनातन दुइ महाशय।

वृन्दावन–भूमि दुँहे करिला निर्णय।।
श्रीजीव गोसाञि वन्दों सभार सम्मत।
सिद्धान्त करिया ये राखिल भक्तितत्त्व।।
रघुनाथदास वन्दों राधाकुण्डवासी।
राघव–गोसाञि वन्दों गोवर्धन–विलासी।।
वन्दिव **गोपालभट्ट** वृन्दावन माझे।
सनातन–रूप संगे सतत विराजे।।
रघुनाथभट्ट गोसाञि वन्दिव एकचिते।
वृन्दावने अध्यापक–श्रीभागवते।।
लोकनाथ ठाकुर वन्दों **भूगर्भ** ठाकुर।
जीव निस्तारिते याँ'र करुणा प्रचुर।।
काशीश्वर गोसाञि वन्दों हञा एकमति।
मथुरामण्डले याँ'र विशेष खेयाति।।
शुद्धा **सरस्वती** वन्दों बड़ शुद्धमति।
प्रभुर चरणे याँ'र विशुद्ध भकति।।
प्रबोधानन्द गोसाञि वन्दों करिया यतन।
ये करिला महाप्रभुर गुणेर वर्णन।।
जगदानन्द पण्डित वन्दों साक्षात् सत्यभामा।
महाप्रभु कैल याँ'रे पीरिति परमा।।
महा–अनुभव वन्दों **पण्डित राघव**।
पानिहाटी–ग्रामे याँ'र प्रकाश वैभव।।
पुरन्दर–पण्डित वन्दों अंगदविक्रम।
सपरिवारे लांगुल याँ'र देखिला ब्राह्मण।।
काशीमिश्र वन्दों—प्रभु याँहार आश्रमे।
वाणीनाथ पट्टनायक वन्दिव सावधाने।।

श्रीप्रद्युम्नमिश्र वन्दों, **राय भवानन्द**।
कलानिधि, **सुधानिधि**, **गोपीनाथ**, वन्दों।।
राय रामानन्द वन्दों बड़ अधिकारी।
प्रभु याँ'रे लभिला दुर्लभ ज्ञान करि'।।
वक्रेश्वर – पण्डित वन्दों दिव्यशरीर।
अभ्यन्तरे कृष्णतेज, गौरांग बाहिर।।
वन्दिव **सुग्रीवमिश्र**, **श्रीगोविन्दानन्द**।
प्रभु लागि' मानसिक याँ'र सेतुबन्ध।।
सम्भ्रमे वन्दिव आर **गदाधर दास**।
वृन्दावने अतिशय याँहार प्रकाश।।
सदाशिव कविराज वन्दों एकमने।
निरन्तर प्रेमोन्माद—बाह्य नाहि जाने।।
प्रेममय तनु वन्दों **सेन शिवानन्द**।
जाति – प्राण – धन याँ'र गोरा – पदद्वन्द्व।।
चैतन्यदास, **रामदास** आर **कर्णपूर**।
शिवानन्देर तिनपुत्र वन्दिव प्रचुर।।
वन्दिव **मुकुन्ददास** भावे शुद्धचित्त।
मयूरेर पाखा देखि' हइला मूर्च्छित।।
प्रेमेर आलय वन्दों **नरहरिदास**।
निरन्तर याँ'र चित्ते गौरांग – विलास।।
मधुर चरित्र वन्दों **श्रीरघुनन्दन**।
आकृति प्रकृति याँ'र भुवनमोहन।।
रघुनाथदास वन्दों प्रेमसुधामय।
याँहार चरित्रे सब लोक वश हय।।

आचार्य पुरन्दर वन्दों **पण्डित देवानन्द।**
गौरप्रेममय वन्दों **श्रीआचार्यचन्द्र।।**
आकाइहाटेर वन्दों **कृष्णदास ठाकुर।**
परमानन्दपुरी वन्दों सतीर्थ प्रभुर।।
श्रीगोविन्द–घोष वन्दिव सावधाने।
याँ'र नाम सार्थक प्रभु करिला आपने।।
वन्दिव **माधव–घोष** प्रभुर प्रीतिस्थान।
प्रभु याँ'रे करिला अभ्यंग–स्वरदान।।
श्रीवासुदेव–घोष वन्दिव सावधाने।
गौरगुण बिनु याँ'र अन्य नाहि ज्ञाने।।
ठाकुर **श्रीअभिराम** वन्दिव सादरे।
षोलसांगेर काष्ठ येंहो वंशी करि'धरे।।
सुन्दरानन्द ठाकुर वन्दिव बड़ आशे।
फुटाल कदम्बफुल जम्बीरेर गाछे।।
परमेश्वर दास ठाकुर वन्दिव सावधाने।
शृगाले लओयान नाम संकीर्तन–स्थाने।।
वंशीवदन ठाकुर वन्दिव सादरे।
गदाधर दास करिला वंशी–अवतारे।।
इष्टदेव वन्दों **श्रीपुरुषोत्तम** नाम।
के कहिते पारे ताँ'र गुण अनुपम।।
सर्वगुणहीन ये ताहारे दया करे।
आपनार सहज–करुणाशक्ति–बले।।
सप्तम वत्सरे याँ'र श्रीकृष्ण–उन्माद।
भुवनमोहन–नृत्य शकति अगाध।।

गौरीदास–कीर्त्तनीयार केशेते धरिया।
नित्यानन्दस्तव कराइला निज शक्ति दिया।।
गदाधर दास आर श्रीगोविन्द घोष।
याँहार प्रकाशे प्रभु पाइला सन्तोष।।
याँ'र अष्टोत्तरशतघट गंगा–जले।
अभिषेक सर्वज्ञता याँ'र शिशुकाले।।
करबीर मञ्जरी आछिल याँ'र काने।
पद्मगन्ध हैल ताहा सभा–विद्यमाने।।
याँ'र नामे स्निग्ध हय वैष्णव सकल।
मूर्तिमन्त प्रेमसुख याँ'र कलेवर।।
कालिया–कृष्णदास वन्दों बड़ भक्ति करि'।
दिव्य उपवीत वस्त्र कृष्णतेजोधारी।।
कमलाकर पिप्पलाइ वन्दों भावविलासी।
ये प्रभुरे बलिल—लह वेत्र, देह' वाँशी।।
रत्नाकरसुत वन्दों पुरुषोत्तम नाम।
नदीया–वसति याँ'र दिव्य तेजोधाम।।
उद्धारण दत्त वन्दों हञा सावहित।
नित्यानन्द–संगे बेड़ाइल सर्वतीर्थ।।
गौरीदास पण्डित वन्दों प्रभुर आज्ञाकारी।
आचार्य–गोसाञिरे निल उत्कलनगरी।।
पुरुषोत्तम पण्डित वन्दों विलासी सुजन।
प्रभु याँ'रे दिला आचार्य–गोसाञिर स्थान।।
वन्दिव सारंगदास हञा एकमन।
मकरध्वज कर वन्दों प्रभुर गायन।।

(ङ)

(वड़ारी राग)

गोरा गोसाञि पतितपावन अवतार।
तोमार करुणाय सर्वजीवेर उद्धार।।ध्रु।।
कविराज – मिश्र वन्दों भागवताचार्य।
श्रीमधु – पण्डित वन्दों **अनन्त – आचार्य**।।
गोविन्द – आचार्य वन्दों सर्वगुणशाली।
ये करिल राधाकृष्णेर विचित्र धामाली।।
सार्वभौम वन्दों बृहस्पतिर चरित्र।
प्रभुर प्रकाशे याँ'र अद्भुत कवित्व।।
प्रतापरुद्र राय वन्दों इन्द्रद्युम्न – ख्याति।
प्रकाशिला प्रभु याँ'रे षड्भुज – आकृति।।
द्विज रघुनाथ वन्दों उड़िया **विप्रदास**।
द्विज हरिदास वन्दों वैद्य **विष्णुदास**।।
याँ'र गान शुनि' प्रभुर अधिक उल्लास।
ताँ'र भाइ वन्दों **श्रीवनमाली** दास।।
सखीभेक त्यजि' कैल गोपीपद आश।
कहने ना याय ताँ'र प्रेमेर प्रकाश।।
कानाइ खुटिया वन्दों विश्व – परचार।
जगन्नाथ – बलराम दुइ पुत्र याँ'र।।
वन्दों उड़िया **बलराम दास** महाशय।
जगन्नाथ – बलराम याँ'र वश हय।।
जगन्नाथ दास वन्दों संगीत – पण्डित।
याँ'र गानरसे जगन्नाथ विमोहित।।

वन्दिव शिवानन्द, पण्डित काशीश्वर।
वन्दिव चन्दनेश्वर आर सिंहेश्वर।।
वन्दिव सुबुद्धिमिश्र, मिश्र–श्रीश्रीनाथ।
तुलसी मिश्र वन्दों माहाती काशीनाथ।।
श्रीहरिभट्ट वन्दों माहाती बलराम।
वन्दों पट्टनायक माधव याँ'र नाम।।
बसुवंश रामानन्द वन्दिव यतने।
याँ'र वंशे गौर बिना अन्य नाहि जाने।।
वन्दिव श्रीपुरुषोत्तम नाम ब्रह्मचारी।
श्रीमधु पण्डित वन्दों बड़ भक्ति करि'।।
श्रीकर पण्डित वन्दों द्विज रामचन्द्र।
सर्वसुखमय वन्दों यदु कविचन्द्र।।
विलासी वैरागी वन्दों पण्डित धनञ्जय।
सर्वस्व प्रभुरे दिया भाण्ड हाते लय।।
जगन्नाथ–पण्डित वन्दों आचार्य–लक्षण।
कृष्णदास–पण्डित वन्दों बड़ शुद्ध मन।।
सूर्यदास–पण्डित वन्दों विदित संसार।
वसुधा–जाह्नवा वन्दों दुइ कन्या याँ'र।।
मुरारि–चैतन्यदास वन्दों सावधाने।
आश्चर्य चरित्र याँ'र प्रह्लाद समाने।।
परमानन्द गुप्त वन्दों सेन जगन्नाथ।
कविचन्द्र मुकुन्द बालक–राम–साथ।।
श्रीकंसारि सेन वन्दों सेन श्रीवल्लभ।
भास्कर ठाकुर वन्दों विश्वकर्मा–अनुभव।।

संगीतकारक वन्दों **बलराम दास।**
नित्यानन्द – चन्द्रे याँ'र एकान्त विश्वास।।
महेश पण्डित वन्दों बड़इ उन्मादी।
जगदीश पण्डित वन्दों नृत्यविनोदी।।
नारायणीसुत वन्दों **वृन्दावन दास।**
'चैतन्यमंगल' येंह करिला प्रकाश।।
बड़गाछिर वन्दिव **ठाकुर कृष्णदास।**
प्रेमानन्दे नित्यानन्दे याँहार विश्वास।।
परमानन्द अवधूत वन्दों एकमने।
निरन्तर उन्मत्त बाह्य नाहि जाने।।
वन्दिव से अनादि **गंगादास पण्डित।**
यदुनाथ दास वन्दों मधुर – चरित।।
पुरुषोत्तम पुरी वन्दों **तीर्थ जगन्नाथ।**
श्रीरामतीर्थ वन्दों **पुरी – रघुनाथ।।**
वासुदेवतीर्थ वन्दों आश्रम **उपेन्द्र।**
वन्दिव **अनन्तपुरी, हरिहरानन्द।।**
मुकुन्द कविराज वन्दों निर्मल चरित।
वन्दिव आनन्दमय **श्रीजीव पण्डित।।**
वन्दना करिव शिशु – **कृष्णदास** – नाम।
प्रभुर पालने याँ'र दिव्य तेजोधाम।।
माधव आचार्य वन्दों कवित्व – शीतल।
याँहार रचित भाष्य 'पुरुषमंगल'।।
गौरीदास – पण्डितेर अनुज **कृष्णदास।**
वन्दिव **नृसिंह** आर **श्रीचैतन्यदास।।**

रघुनाथ भट्ट वन्दों करिया विश्वास।
वन्दों दिव्यलोचन **श्रीरामचन्द्र दास**।।
श्रीशंकर घोष वन्दों अकिञ्चन–रीति।
डंकेर वाद्ये ये प्रभुरे करिल पीरिति।।
परम आनन्दे वन्दों **आचार्य माधव**।
भक्तिफले हैला गंगादेवीर बल्लभ।।
नारायण पैड़ारि वन्दों **चक्रवर्ती शिवानन्द**।
वन्दना करिते वैष्णवेर नाहि अन्त।।
एइ अवतारे यत अशेष वैष्णव।
कहने ना याय सभार अनन्त वैभव।।
अनन्त वैष्णवगण अनन्त महिमा।
हेन जन नाहि ये करिते पारे सीमा।।
वन्दना करिते मोर कत आछे बुद्धि।
देवेह करिते नारे वैष्णवेर शुद्धि।।
सभाकार उपदेष्टा वैष्णवठाकुर।
श्रवण–नयन–मन–वचने मधुर।।
शरण लइलुँ गुरु–वैष्णव–चरणे।
संक्षेपे कहिलुँ किछु वैष्णव–वन्दने।
वैष्णव–वन्दना पड़े शुने येइ जन।
अन्तरेर मल घुचे, शुद्ध हय मन।।
प्रभाते उठिया पड़े वैष्णव–वन्दना।
कोन–काले नाहि पाय कोनइ यन्त्रणा।।
देवेर दुर्लभ सेइ प्रेमभक्ति लभे।
देवकीनन्दन दास कहे एइ लोभे।।

श्रीवैष्णवकृपा – प्रार्थना

2 (क)

ओहे!
वैष्णव ठाकुर, दयार सागर,
ए दासे करुणा करि'।
दिया पदछाया, शोध हे आमारे,
तोमार चरण धरि।।
छय वेग दमि', छय दोष शोधि',
छय गुण देह दासे।
छय सत्संग, देह' हे आमारे,
बसेछि संगेर आशे।।
एकाकी आमार, नाहि पाय बल,
हरिनाम – संकीर्त्तने।
तुमि कृपा करि', श्रद्धाबिन्दु दिया,
देह' कृष्णनाम – धने।।
कृष्ण से तोमार, कृष्ण दिते पार,
तोमार शकति आछे।
आमि त' कांगाल, 'कृष्ण कृष्ण' बलि',
धाइ तव पाछे पाछे।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

कृपा कर वैष्णव ठाकुर!
सम्बन्ध जानिया, भजिते भजिते,
अभिमान हउ दूर।।

'आमि त' वैष्णव', ए बुद्धि हइले,
अमानी ना ह'ब आमि।
प्रतिष्ठाशा आसि', हृदय दूषिबे,
हइब निरयगामी।।
तोमार किंकर, आपने जानिव,
'गुरु' – अभिमान त्यजि'।
तोमार उच्छिष्ट, पद – जल – रेणु,
सदा निष्कपटे भजि।।
'निजे श्रेष्ठ' जानि, उच्छिष्टादि – दाने,
ह'बे अभिमान – भार।
ताइ शिष्य तव, थाकिया सर्वदा,
ना लइब पूजा कार।।
अमानी मानद, हइले कीर्त्तने,
अधिकार दिबे तुमि।
तोमार चरणे, निष्कपटे आमि,
काँदिया लुटिब भूमि।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ग)

कबे मुइ वैष्णव चिनिव हरि हरि।
वैष्णव – चरण, कल्याणेर खनि, मातिव हृदये धरि'।।
वैष्णव – ठाकुर, अप्राकृत सदा, निर्दोष, आनन्दमय।
कृष्णनामे प्रीत, जड़े उदासीन, जीवेते दयार्द्र हय।।
अभिमान – हीन, भजने प्रवीण, विषयेते अनासक्त।
अन्तर – बाहिरे, निष्कपट सदा, नित्यलीला – अनुरक्त।।

कनिष्ठ, मध्यम, उत्तम प्रभेदे, वैष्णव त्रिविध गणि।
कनिष्ठे आदर, मध्यमे प्रणति, उत्तमे शुश्रुषा शुनि।।
ये येन वैष्णव, चिनिया लइया, आदर करिव यवे।
वैष्णवेर कृपा, याहे सर्वसिद्धि, अवश्य पाइव तवे।।
वैष्णव–चरित्र, सर्वदा पवित्र, येइ निन्दे हिंसा करि'।
भकतिविनोद, ना सम्भाषे ता'रे, थाके सदा मौन धरि।।

(घ)

हरि हरि कबे मोर हबे हेन दिन।
विमल वैष्णवे, रति उपजिबे, वासना हइबे क्षीण।।
अन्तर–बाहिरे, सम व्यवहार, अमानी मानद ह'ब।
कृष्ण–संकीर्तने, श्रीकृष्ण–स्मरणे, सतत मजिया र'ब।।
ए देहेर क्रिया, अभ्यासे करिब, जीवन यापन लागि'।
श्रीकृष्ण–भजने, अनुकूल याहा, ताहे ह'ब अनुरागी।।
भजनेर याहा, प्रतिकूल ताहा, दृढ़भावे तेयागिब।
भजिते भजिते, समय आसिले, ए देह छाड़िया दिब।।
भकतिविनोद, एइ आशा करि', वसिया गोद्रुम–वने।
प्रभु–कृपा लागि', व्याकुल अन्तरे, सदा काँदि संगोपने।।

श्रीवैष्णव से विज्ञप्ति

3 (क)

ठाकुर वैष्णवगण, करि एइ निवेदन,
मो बड़ अधम दुराचार।
दारुण–संसार–निधि, ताहे डुबाइल विधि,
केशे धरि' मोरे कर पार।।

विधि बड़ बलवान्, ना शुने धरम – ज्ञान,
सदाइ करम – पाशे बान्धे।
ना देखि तारण लेश, यत देखि सब क्लेश,
अनाथ, कातरे तेञि कान्दे।।
काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, अभिमान सह,
आपन आपन स्थाने टाने।
ऐछन आमार मन, फिरे येन अन्धजन,
सुपथ – विपथ नाहि जाने।।
ना लइनु सत् मत, असते मजिल चित,
तुया पाये ना करिनु आश।
नरोत्तमदासे कय, देखि' शुनि' लागे भय,
तराइया लह निज – पाश।।

(ख)

एइबार करुणा कर वैष्णव – गोसांञि।
पतितपावन तोमा बिने केह नाइ।।
काहार निकटे गेले पाप दूरे याय।
एमन दयाल प्रभु केबा कोथा पाय??
गंगार परश हइले पश्चाते पावन।
दर्शने पवित्र कर—एइ तोमार गुण।।
हरि – स्थाने अपराधे तारे' हरिनाम।
तोमा' – स्थाने अपराधे नाहिक एड़ान।।
तोमार हृदये सदा गोविन्द विश्राम।
गोविन्द कहेन, मम वैष्णव पराण।।
प्रतिजन्मे करि आशा चरणेर धूलि।
नरोत्तमे कर दया आपनार बलि'।।

(ग)

किरूपे पाइब सेवा मुइ दुराचार।
श्रीगुरु – वैष्णवे रति ना हैल आमार।।
अशेष मायाते मन मगन हइल।
वैष्णवेते लेशमात्र रति ना जन्मिल।।
विषये भुलिया अन्ध हैनु दिवानिशि।
गले फाँस दिते फिरे माया से पिशाची।।
इहारे करिया जय, छाड़ान ना याय।
साधुकृपा बिना आर नाहिक उपाय।।
अदोषदरशि प्रभो, पतित उद्धार'।
एइबार **नरोत्तमे** करह निस्तार।।

(घ)

सकल वैष्णव गोसाञि दया कर मोरे।
दन्ते तृण धरि' कहे ए दीन पामरे।।
श्रीगुरु – चरण आर श्रीकृष्णचैतन्य।
पादपद्म पाओयाइया मोरे कर धन्य।।
तोमा' सबार करुणा बिने इहा प्राप्ति नय।
विशेषे अयोग्य मुञि कहिल निश्चय।।
वाञ्छा – कल्पतरु हओ करुणा – सागर।
एइ त' भरसा मुञि धरिये अन्तर।।
गुण – लेश नाहि मोर अपराधेर सीमा।
आमा' उद्धारिया लोके देखाओ महिमा।।
नाम – संकीर्तन – रुचि आर प्रेम – धन।
ए **राधामोहने** देह' हैया सकरुण।।

(ङ)

श्रीकृष्ण–भजन लागि' संसारे आइनु।
मायाजाले वन्दी हैया वृक्षसम हैनु।।
स्नेहलता वेडि' वेडि' तनु कैल शेषे।
कीड़ारूपे नारी ताहे हृदये प्रवेशे।।
फलरूपे पुत्र–कन्या डाल भांगि' पड़े।
कालरूपी विहंग उपरे वास करे।।
बाड़िते ना पाइल गाछ शुकाइया गेल।
संसारेर दावानल ताहाते लागिल।।
दुराशा, दुर्वासना—दुइ उठे धूमाइया।
फुकार करये लोचन मरिलाम पुड़िया।।
एगाओ एगाओ मोर वैष्णव–गोंसाइ।
करुणार जल सिञ्च तवे रक्षा पाइ।।

श्रीवैष्णव–पादोदक–महिमा

(4)

ठाकुर वैष्णव–पद, अवनीर सुसम्पद, सुन भाई, हइया एकमन।
आश्रय लइया भजे, तारे कृष्ण नाहि त्यजे, आर सब मरे अकारण।।
वैष्णव–चरण–जल, प्रेम–भक्ति दिते बल, आर केह नहे बलवन्त।
वैष्णव–चरण–रेणु, मस्तके भूषण बिनु, आर नाहि भूषणेर अन्त।।
तीर्थजल पवित्र गुणे, लिखियाछे पुराणे, से–सब भक्तिर प्रवञ्चन।
वैष्णवेर पादोदक– सम नहे एइ सब, याते हय वाञ्छित–पूरण।।
वैष्णव–संगेते मन, आनन्दित अनुक्षण, सदा हय कृष्ण–परसंग।
दीन **नरोत्तम** कान्दे, हिया धैर्य नाहि बान्धे, मोर दशा केन हैल भंग।।

श्रीगुरु – वैष्णवों से विज्ञप्ति

(5)

श्रीगुरु – वैष्णव, तोमार चरण, स्मरण ना कैनु आमि।
विषय विषम, विष भाल मानि, खाइछु हइया कामी।।
सेइ विषे मोरे, जारिया मारिल, वड़इ विषम हैल।
जनमे जनमे, एमन कतइ, आत्मघाती पाप कैल।।
सेइ अपराधे, ए भव – संसारे, बाँधिले ए मायाजाले।
तोमा' न भजिया, आपना खाइया, आपनि डुबेछि हेले।।
आर कत काल, ए दुःख भुञ्जिब, भोग – देह नाहि याय।
सहिते नारिया, कातर हइया, निवेदिछि तुया पाय।।
ओ रांगा चरण, परश केवल, विचारिया एइ दाय।
उद्धार करिया, लह दीनबन्धु, आपन चरण – नाय।।
तोमार सेवन–, अमृत भोजन, कराइया मोरे राख।
ए **राधामोहन**, खते विकाइल, दाम गगने लेख।।

श्रीगुरु – वैष्णवों से लालसामयी प्रार्थना

6 (क)

श्रीगुरु – वैष्णव – कृपा कत दिने ह'वे।
उपाधि – रहित – रति चित्ते उपजिवे।।
कबे सिद्धदेह मोर हइवे प्रकाश।
सखी देखाइवे मोरे युगल – विलास।।
देखिते दखिते रूप, हइव वातुल।
कदम्ब – कानने या'व त्यजि' जाति – कुल।।
'स्वेद' 'कम्प' 'पुलकाश्रु' 'वैवर्ण्य' 'प्रलय'।
'स्तम्भ' 'स्वरभेद' कबे हइवे उदय।।

भावमय वृन्दावन हेरिव नयने।
सखीर किंकरी ह'ये सेविव दु'जने।।
कबे नरोत्तम–सह साक्षात् हइवे।
कबे वा 'प्रार्थना'–रस चित्ते प्रवेशिबे।।
चैतन्यदासेर दास छाड़ि' अन्य रति।
करयुड़ि' मागे आज श्रीचैतन्ये मति।।

(श्रील भक्तिविनोद ठोकुर)

(ख)

आमार एमन भाग्य कत दिने ह'बे।
आमारे आपन बलि' जानिवे वैष्णवे।।
श्रीगुरुचरणामृत – माध्विक – सेवने।
मत्त ह'ये कृष्णगुण गा'व वृन्दावने।।
कर्मी, ज्ञानी, कृष्णद्वेषी बर्हिमुख–जन।
घृणा करि' अकिञ्चने करिवे वर्जन।।
कर्मजड़–स्मार्त्तगण करिवे सिद्धान्त।
आचार–रहित एइ नितान्त अशान्त।।
बातुल वलिया मोरे पण्डिताभिमानी।
त्यजिवे आमार संग मायावादी ज्ञानी।।
कुसंग–रहित देखि' वैष्णव–सुजन।
कृपा करि' आमारे दिवेन आलिंगन।।
स्पर्शिया वैष्णव–देह ए दुर्जन छार।
आनन्दे लभिवे कबे सात्त्विक विकार।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ग)

कबे मोर मूढ़ मन छाड़ि’ अन्य ध्यान।
श्रीकृष्ण-चरणे पा’वे विश्रामेर स्थान।।
कबे आमि जानिव आपने अकिञ्चन।
आमार अपेक्षा क्षुद्र नाहि अन्य जन।।
कबे आमि आचण्डाले करिव प्रणति।
कृष्णभक्ति मागि’ ल’व करिया मिनति।।
सर्वजीवे दया मोर कतदिने ह’वे।
जीवेर दुर्गति देखि’ लोतक पड़िवे।।
काँदिते काँदिते आमि या’व वृन्दावन।
ब्रजधामे वैष्णवेर लइव शरण।।
ब्रजवासि-सन्निधाने युड़ि’ दुइ कर।
जिज्ञासिव लीला-स्थान हइया कातर।।
ओहे ब्रजवासि! मोरे अनुग्रह करि’।
देखाओ कोथाय लीला करिलेन हरि।।
तवे कोन ब्रजजन सकृप-अन्तरे।
आमारे या’वेन ल’ये विपिन-भितरे।।
बलिवेन, देख एइ कदम्ब-कानन।
यथा रासलीला कैला ब्रजेन्द्रनन्दन।।
ऐ देख नन्दग्राम नन्देर आवास।
ऐ देख बलदेव यथा कैला रास।।
ऐ देख यथा हैल दुकूल हरण।
ऐ स्थाने बकासुर हइल निधन।।
एइरूप ब्रज-जनसह वृन्दावने।
देखिव लीलार स्थान सतृष्ण-नयने।।

कभु वा यमुना तीरे शुनि' वंशीध्वनि।
अवश हइया लाभ करिव धरणी।।
कृपामय व्रजजन 'कृष्ण' 'कृष्ण' बलि'।
पान कराइवे जल पूरिया अञ्जलि।।
हरिनाम शुने पुन: पाइया चेतन।
व्रजजन – सह आमि करिव भ्रमण।।
कबे हेन शुभदिन हइवे आमार।
माधुकरी करि' वेड़ाइव द्वार द्वार।।
यमुना – सलिल पिव अञ्जलि भरिया।
देवद्वारे रात्रिकाले रहिव शुइया।।
यखन आसिवे काल ए भौतिक पुर।
जलजन्तु – महोत्सव हइवे प्रचुर।।
सिद्धदेहे निज कुञ्जे सखीर चरणे।
नित्यकाल थाकिया सेविव कृष्णधने।।
एइ से प्रार्थना करे ए पामर छार।
श्रीजाह्नवा मोरे दया कर' एइवार।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

श्रीरूपानुगत्य – माहात्म्य

(7)

शुनियाछि साधुमुखे बले सर्वजन।
श्रीरूप – कृपाय मिले युगल – चरण।।
हा! हा! प्रभु सनातन – गौर – परिवार।
सबे मिलि' वाञ्छापूर्ण करह आमार।।
श्रीरूपेर कृपा येन आमा प्रति हय।

से–पद आश्रय या'र, सेइ महाशय।।
प्रभु लोकनाथ कबे संगे लइया याबे।
श्रीरूपेर पादपद्मे मोरे समर्पिबे।।
हेन कि हइबे मोर—नर्म्मसखीगणे।
अनुगत नरोत्तमे करिबे शासने।।

श्रीरूप–सनातन से दैन्यमयी प्रार्थना

(४)

विषय–वासनारूप चित्तेर विकार।
आमार हृदये भोग करे अनिवार।।
कत ये यतन आमि करिलाम हाय।
ना गेल विकार बुझि शेषे प्राण याय।।
ए घोर विकार मोरे करिल अस्थिर।
शान्ति ना पाइल स्थान, अन्तर अधीर।।
श्रीरूप गोस्वामी मोरे कृपा वितरिया।
उद्धारिबे कबे युक्तवैराग्य अर्पिया।
कबे सनातन मोरे छाड़ाये विषय।
नित्यानन्दे समर्पिबे हइया सदय।।
श्रीजीव गोस्वामी कबे सिद्धान्त–सलिले।
निभाइबे तर्कानल, चित्त याहे ज्वले।।
श्रीचैतन्य–नाम शुने उदिबे पुलक।
राधाकृष्णामृत–पाने हइब अशोक।।
कांगालेर सुकांगाल दुर्जन ए–जन।
वैष्णव–चरणाश्रय याचे अकिञ्चन।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

पञ्चतत्त्व–महिमा

श्रीश्रीवास–पण्डित

1 (क)

जय जय श्रीश्रीवास ठाकुर पण्डित।
नारद–खेयाति या'र भुवन विदित।।
''कि कहिव श्रीवासेर उदार चरित्र।
त्रिभुवन हय यार स्मरणे पवित्र।।
सत्य सेविलेन चैतन्येरे श्रीनिवास।
याँर घरे चैतन्येर सकल विलास।।
कृष्ण–अवतार येन वसुदेव–घरे।
यतेक विहार सब—नन्देर मन्दिरे।।
जगन्नाथ–घरे हैल गौर–अवतार।
श्रीवास–पण्डित–गृहे यतेक विहार।।
सर्ववैष्णवेर प्रिय पण्डित श्रीवास।
तान बाड़ी गेले मात्र सबार उल्लास।।
कि कहिब श्रीवासेर भाग्येर महिमा।
याँर दासदासीर भाग्येर नाहि सीमा।।
चारि वेदे याँरे देखिवारे अभिलाष।
ताहा देखे श्रीवासेर यत दासी–दास।।
पुत्रशोक ना जानिल ये गौरांग–प्रेमे।
भासे आरो श्रीकृष्णेर संकीर्तन–वाणे।।
ए सब संसार–दुःख ताँहार कि दाय।
ये ताँहारे स्मरे सेह कभु नाहि पाय।।
श्रीवासेर चरणे रहुक नमस्कार।
गौरचन्द्र–नित्यानन्द—नन्दन याँहार।।''

(श्रीचैतन्यभागवत)

(ख)

सप्तद्वीप दीप्त करि', शोभे नवद्वीप-पुरी,
याहे विश्वम्भर देवराज।
ताहे ताँ'र भक्त यत, ताहाते श्रीवास ख्यात,
श्रीकृष्ण-कीर्त्तन याँ'र काज।।
जय जय ठाकुर पण्डित।
याँ'र कृपालेश मात्र, हैया गौर-प्रेमपात्र,
अनुपम सकल चरित।।
गौरांगेर सेवा बिने, देव-देवी नाहि जाने,
चारि भाइ दास-दासी लैया।
सतत कीर्त्तन-रंगे, गौर-गौरभक्त-संगे,
अहर्निशि प्रेममत्त हैया।।
याँ'र भार्या श्रीमालिनी, पतिव्रता-शिरोमणि,
याँ'रे प्रभु कहये जननी।
नित्यानन्द रहे घरे, पुत्र-सम स्नेह करे,
स्तन झरे, नेत्रे बहे पानी।।
कभु वा ईश्वर-ज्ञाने, नति करे श्रीचरणे,
कभु कोले करये लालन।
प्रभुर नृत्यभंग लागि, मृत पुत्रशोक-त्यागी,
शुनि' प्रभु करये रोदन।।
भ्रातृसुता नारायणी, वैष्णवमण्डले ध्वनि,
याँ'र पुत्र वृन्दावनदास।
वर्णिया चैतन्यलीला, त्रिभुवन उद्धारिला,
प्रेमदास करे याँ'र आश।।

श्रीगदाधर पण्डित

1(क)

जय जय गदाधर प्रेमेर सागर।
गौरांगेर प्रियोत्तम पण्डित प्रवर।।
"माधव मिश्रेर पुत्र—श्रीगदाधर नाम।
शिशु हैते संसारे विरक्त भाग्यवान्।।
विष्णु – भक्ति – तेजोमय दिव्य कलेवर।
आकृति, प्रकृति—दुइ परम सुन्दर।।
आपनै चैतन्य बलियाछे बार बार।
'गदाधर मोर वैकुण्ठेर परिवार।।'
निरवधि गदाधर थाकेन संहति।
प्रभु – गदाधरेर विच्छेद नाहि कति।।
कि भोजने, कि शयने, कि पर्यटने।
गदाधर प्रभुरे सेवेन अनुक्षणे।।
गदाधर सम्मुखे पड़ेन भागवत।
शुनि प्रभु हन प्रेमरसे महामत्त।।
गदाधर – वाक्ये मात्र प्रभु सुखी हय।
भ्रमे गदाधर – संगे वैष्णव – आलय।।
पण्डिते प्रभुर प्रसाद कहन ना याय।
'गदाधर – प्राणनाथ' नाम हैल याय।।
गदाधर – पादपद्मे मोर नमस्कार।
गौरचन्द्र – संगे याँर कीर्तन विहार।।"

(श्रीचैतन्यभागवत)

(2)

जय जय गदाधर पण्डित गोसाञि।
याँ'र कृपाबले से चैतन्य – गुण गाइ।।
हेन से गौरांगचन्द्रे याँहार पिरीति।
'गदाधर – प्राणनाथ' याहे लागे ख्याति।।
गौरगत – प्राण, प्रेम के बुझिते पारे।
क्षेत्रवास, कृष्णसेवा याँ'र लागि' छाड़े।।
गदाइर गौरांग, गौरांगेर गदाधर।
श्रीराम – जानकी येन एक कलेवर।।
येन एकप्राण राधा – वृन्दावनचन्द्र।
तेन गौर – गदाधर प्रेमेर तरंग।।
कहे **शिवानन्द** पँहु याँ'र अनुरागे।
श्यामतनु गौरांग हइया प्रेम मागे।।

श्रीअद्वैताचार्य

3 (क)

(श्रीअद्वैताविर्भाव – लीला)

माघे शुक्लातिथि, सप्तमीते अति, उथलाय महा आनन्द – सिन्धु।
नाभागर्भ धन्य, करि' अवतीर्ण, हैल शुभक्षणे अद्वैत – इन्दु।।
कुबेर पण्डित, हैया हरषित, नाना दान द्विज – दरिद्रे दिया।
सूतिका – मन्दिरे, गिया धीरे धीरे, देखि' पुत्रमुख जुड़ाय हिया।।
नवग्रामवासी, लोक धा'या आसि', परस्पर कहे—ना देखि हेन।
किवा पुण्यफले, मिश्र वृद्धकाले, पाइलेन पुत्ररतन येन।।
पुष्प वरिषण, करे सुरगण, अलक्षित रीति उपमा नहु।
जय जय ध्वनि, भरल अवनी, भणे **घनश्याम** मंगल वहु।।

(भक्तिरत्नाकर)

(ख)

अद्वैत – आचार्य गोसाञि साक्षात् ईश्वर।
याँहार महिमा नहे जीवेर गोचर।।
महाविष्णु सृष्टि करेन जगदादि – कार्य।
ताँर अवतार साक्षात् अद्वैत आचार्य।।
जगत् – मंगल अद्वैत, मंगल – गुणधाम।
मंगल – चरित्र सदा, 'मंगल' याँर नाम।।
कमल – नयनेर तेंहो, याते 'अंग', 'अंश'।
'कमलाक्ष' बलि' धरे नाम अवतंस।।
महाविष्णुर अंश—अद्वैत गुणधाम।
ईश्वरे अभेद, तेञि 'अद्वैत' पूर्णनाम।।
भक्ति – उपदेश बिनु ताँर नाहि कार्य।
अतएव नाम हैल 'अद्वैत आचार्य'।।
अद्वैत आचार्य—ईश्वरेर अंशवर्य।
ताँर तत्त्व – नाम – गुण, सकलि आश्चर्य।।
याँहार तुलसीदले, याँहार हुंकारे।
स्वगण सहिते चैतन्येर अवतारे।।
याँर द्वारा कैल प्रभु कीर्तन प्रचार।
याँर द्वारा कैल प्रभु जगत् निस्तार।।
आचार्य गोसाञिर गुण – महिमा अपार।
ताँहार चरणे मोर कोटि नमस्कार।।
जय जयाद्वैताचार्य चैतन्येर आर्य।
स्वचरणे भक्ति देह' जयाद्वैताचार्य।।

(श्रीचैतन्यचरितामृत)

(ग)

"जय जय श्रीअद्वैत पतितपावन।
मुइ सब पतितेरे करह मोचन।।
कृष्ण ना करेन याँर संकल्प अन्यथा।
ये करिते पारे कृष्ण–साक्षात् सर्वथा।।
कृष्णचन्द्र याँर वाक्य करेन पालन।
से तोमा–स्मरणे सर्वबन्ध–विमोचन।।
यम, काल, मृत्यु याँर आज्ञा शिरे धरे।
याँर पद वांछे योगेश्वरे मुनीश्वरे।।
सेइ तोमा हेन जने के जाने संसारे।
तुमि कृपा करिले से भक्तिफल धरे।।
भक्तिर भाण्डारी तुमि, विने भक्ति दिले।
कृष्णभक्ति, कृष्णभक्त, कृष्ण कारे मिले?
अमायाय कृष्णभक्ति देह हे–आमारे।
जन्म जन्म आर येन कृष्ण ना पासरे।।
अद्वैत–चरणे मोर एइ नमस्कार।
तान प्रिय, ताँहे मति रहुक आमार।।"

(श्रीचैतन्यभागवत)

(घ)

विषये सकले मत्त, नाहि कृष्णनाम–तत्त्व,
भक्तिशून्य हइल अवनी।
कलिकाल–सर्पविषे, दग्ध जीव मिथ्या–रसे,
ना जानये केवा से आपनि।।

निज कन्या–पुत्रोत्सवे, मातिया आछये सबे,
नाहि अन्य शुभ कर्मलेश।
यक्ष पूजे मद्य–मांसे, नानारूप जीव हिंसे,
एइ मत हैल सर्वदेश।।
देखिया करुणा करि', 'कमलाक्ष' नाम धरि',
अवतीर्ण हैला गौड़देशे।
ब्रजराज–कुमार, सांगोपांग अवतार,
कराइव एइ अभिलाषे।।
सर्व आगे आगुयान, जीवेरे करिया त्राण,
शान्तिपुरे हइला प्रकाश।
सकल दुष्कृति या'वे, सबे कृष्ण नाम पा'वे,
कहे दीन वैष्णवेर दास।।

(ङ)

नास्तिकता अपधर्म जूड़िल संसार।
कृष्णपूजा कृष्णभक्ति नाहि कोथा आर।।
देखिया अद्वैत–प्रभु विषादित हैला।
केमने तरिवे जीव भाविते लागिला।।
नेत्र बुजि' तुलसी प्रदानि' विष्णुपदे।
हुंकारि' दिलेन लम्फ आचार्य आह्लादे।।
जितिलुँ जितिलुँ, मुखे बले बार बार।
जीव–निस्तारिते हवे गौर–अवतार।।
ए कथा शुनिया नाचे साधु हरिदास।
लोचन बले खसिल जीवेर मोह–पाश।।

(च)

जय जय अद्वैत आचार्य दयामय।
याँ'र हुहुंकारे गौर–अवतार हय।।
प्रेमदाता सीतानाथ करुणा–सागर।
याँ'र प्रेमरसे आइला ब्रजेर नागर।।
याहारे करुणा करि' कृपा दिते चाय।
प्रेम–रसे से–जन चैतन्य–गुण गाय।।
ताँहार पदेते येवा लइल शरण।
से–जन पाइल गौरप्रेम–महाधन।।
एमन दयार निधि केने ना भजिलुँ।
लोचन बले निज–माथे बजर पाड़िलुँ।।

(छ)

जय जय अद्भुत, सो पहुँ अद्वैत, सुरधुनी सन्निधाने।
आँखि मुदि' रहे, प्रेम–नदी बहे, वसन तितिल घामे।।
निज पहुँ मने, घन गरजने, उठे जोड़े जोड़े लम्फ।
डाके बाहु तुलि', काँदे फुलि' फुलि', देहे विपरीत कम्प।।
अद्वैत हुँकारे, सुरधुनी–तीरे, आइला नागर–राज।
ताँहार पीरिते, आइला त्वरिते, उदय नदीया–माझ।।
जय सीतानाथ, करल वेकत, नन्देर नन्दन हरि।
कहे वृन्दावन, अद्वैत–चरण, हियार माझारे धरि।।

श्रीमन्नित्यानन्द

4 (क)

(श्रीनित्यानन्द – आविर्भाव – लीला)

राढ़देश नाम, एकचक्रा – ग्राम, हाड़ाइ पण्डित घर।
शुभ माघ – मासि, शुक्ला – त्रयोदशी, जनमिला हलधर।।
हाड़ाइ पण्डित, अति हर्षित, पुत्र – महोत्सव करे।
धरणी – मण्डल, करे टलमल, आनन्द नाहिक धरे।।
शान्तिपुर – नाथ, मने हर्षित, करि' किछु अनुमान।
अन्तरे जानिला, बुझि जनमिला, कृष्णेर अग्रज राम।।
वैष्णवेर मन, हैल परसन्न, आनन्द – सागरे भासे।
ए दीन पामर, हइवे उद्धार, कहे दुःखी कृष्णदासे।।

(ख)

नित्यानन्द – तत्त्व

जय जय नित्यानन्द गोकुल – भूषण।
जय जय अनन्त प्रकट संकर्षण।।
''सर्व – अवतारी कृष्ण स्वयं भगवान्।
ताँहार द्वितीय देह श्रीबलराम।।
एकइ स्वरूप दोंहे भिन्नमात्र काय।
आद्य कायव्यूह, कृष्णलीलार सहाय।।
सृष्ट्यादिक सेवा, ताँर आज्ञार पालन।
'शेष' – रूपे करे कृष्णेर विविध सेवन।।
सहस्र – वदने करे कृष्णगुण – गान।
निरवधि गुण – गान, अन्त नाहि पान।।
छत्र, पादुका, शय्या, उपाधान, वसन।

आराम, आवास, यज्ञसूत्र, सिंहासन।।
एत मूर्त्ति–भेद करि कृष्णसेवा करे।
कृष्णेर शेषता पाञा 'शेष' नाम धरे।।
सेइ त' अनन्त, याँर कहि एक कला।
हेन प्रभु नित्यानन्द के जाने ताँ'र खेला।।
भक्त–अभिमान मूल श्रीबलरामे।
सेइभावे अनुगत ताँर अंशगणे।।
नित्यानन्द–स्वरूप पूर्वे हञा लक्ष्मण।
लघुभ्राता हैया करे रामेर सेवन।।
कृष्ण–अवतारे ज्येष्ठ हैला सेवार कारण।
कृष्णके कराइला नाना सुख–आस्वादन।।
श्रीचैतन्य—सेइ कृष्ण, नित्यानन्द—राम।
नित्यानन्द पूर्ण करे चैतन्येर काम।।
प्रेमप्रचारण आर पाषण्डीदलन।
दुइ कार्ये नित्यानन्द करेन भ्रमण।।
नित्यानन्द–प्रभुर गुण–महिमा अपार।
सहस्रवदने शेष नाहि पाय याँर।।"

(श्रीचैतन्यचरितामृत)

श्रीनित्यानन्द–स्तुति

(ग)

(महाप्रभु के द्वारा श्रीनित्यानन्द–स्तुति)

"नामरूपे तुमि नित्यानन्द मूर्त्तिमन्त।
श्रीवैष्णवधाम तुमि—ईश्वर अनन्त।।

यत किछु तोमार श्रीअंगेर अलंकार।
सत्य सत्य सत्य भक्तियोग-अवतार।।
स्वर्ण, मुक्ता, हीरा, काँसा, रुद्राक्षादि-रूपे।
नवविधा भक्ति धरियाछ निज सुखे।।
ये भक्ति दियाछ तुमि जगते सबारे।
ताहा वांछे सुर-सिद्ध-मुनि-योगेश्वरे।।
'स्वतन्त्र' करिया वेदे ये कृष्णेरे कय।
हेन कृष्णे पार तुमि करिते विक्रय।।
तोमार महिमा जानिवार शक्ति कार।
मूर्त्तिमन्त तुमि कृष्णरस-अवतार।।
कृष्णचन्द्र तोमार हृदये निरन्तर।
तोमार विग्रह कृष्ण-विलासेर घर।।
अतएव तोमारे ये जन प्रीति करे।
सत्य सत्य कृष्ण कभु ना छाड़िबे तारे।।''
भज भाइ हेन नित्यानन्देर चरण।
याँहार प्रसादे पाइ चैतन्य-शरण।।

(श्रीचैतन्यभागवत)

(घ)

(श्रीअद्वैत-प्रभु-द्वारा श्रीनित्यानन्द-स्तुति)

''तुमि नित्यानन्द-मूर्त्ति नित्यानन्द-नाम।
मूर्त्तिमन्त तुमि चैतन्येर गुणधाम।।
सर्वजीव-परित्राण तुमि महा-हेतु।
महा प्रलयेते तुमि सत्य-धर्मसेतु।।

तुमि से – चैतन्यवृक्षे धर पूर्णशक्ति।
तुमि से बुझाओ चैतन्येर प्रेमभक्ति।।
ब्रह्मा – शिव – नारदादि 'भक्त' नाम यॉँर।
तुमि से परम उपदेष्टा सबाकार।।
सर्वयज्ञमय एइ विग्रह तोमार।
अविद्या – बन्धन खण्डे स्मरणे यॉँहार।।
अक्रोध परमानन्द तुमि महेश्वर।
सहस्र – वदन – आदि देव महीधर।।
रक्षकुल – हन्ता तुमि श्रीलक्ष्मणचन्द्र।
तुमि गोपपुत्र हलधर मूर्त्तिमन्त।।
मूर्ख नीच अधम पतित उद्धारिते।
तुमि अवतीर्ण हइयाछ पृथिवीते।
ये – भक्ति वांछये योगेश्वरे मुनिगणे।
तोमा हइते ताहा पाइवेक ये ते जने।।''
भज भज भाइ हेन प्रभु नित्यानन्द।
यॉँहार प्रसादे पाइ प्रभु गौरचन्द्र।।

(श्रीचैतन्यभागवत)

(ङ)

('माधाइ' – द्वारा श्रीनित्यानन्द – स्तुति)

जय जय जय पद्मावतीर नन्दन।
जय नित्यानन्द सर्व वैष्णवेर धन।।
विष्णुरूपे तुमि प्रभु करह पालन।
तुमि से फणाय धर अनन्त भुवन।।

भक्तिर स्वरूप प्रभु तोर कलेवर।
तोमारे चिन्तये मने पार्वती शंकर।।
तोमार से–प्रसादे गरुड़ महावली।
लीलाय वहये कृष्ण हइ कुतूहली।।
तुमि ये अनन्तमुखे कृष्णगुण गाओ।
सर्वधर्म श्रेष्ठ 'भक्ति', तुमि से बुझाओ।।
तोमार से गुण गाय ठाकुर नारद।
तोमार से यत किछु चैतन्य–सम्पद।।
तोमार से कालिन्दी–भेदनकारी नाम।
तोमा सेवि जनक पाइल दिव्यज्ञान।।
सर्वधर्ममय तुमि पुरुष पुराण।
तोमारे से वेदे बले 'आदिदेव' नाम।।
तुमि से जगतपिता, महा–योगेश्वर।
तुमि से लक्ष्मणचन्द्र, महाधनुर्द्धर।।
तुमि से पाषण्डक्षय, रसिक, आचार्य।
तुमि से जानह चैतन्येर सब कार्य।।
तमि शय्या, तुमि खट्टा, तुमि से शयन।
तुमि चैतन्येर छत्र, तुमि प्राणधन।।
तोमा बहि कृष्णेर द्वितीय नाहि आर।
तुमि गौरचन्द्रेर सकल अवतार।।
जय जय अक्रोध परमानन्द राय।
शरणागतेर दोष क्षमिते युयाय।।''
जय जय जगतमंगल नित्यानन्द।
दान देह हृदये तोमार पदद्वन्द्व।।

(श्रीचैतन्यभागवत)

श्रीनित्यानन्द – प्रति निष्ठा

(च)

इष्टदेव वन्दों मोर नित्यानन्द राय।
चैतन्येर कीर्त्ति – स्फुरे याँहार कृपाय।।
नित्यानन्द – प्रसादे से हय विष्णुभक्ति।
जानिह—कृष्णेर नित्यानन्द पूर्णशक्ति।।
भागवत रस—नित्यानन्द मूर्त्तिमन्त।
इहा जाने ये, हय परम भाग्यवन्त।।
ये भक्ति गोपिकागणेर कहे भागवते।
नित्यानन्द हैते ताहा पाइल जगते।।
वेदेर अगम्य नित्यानन्द – चरित्र।
सर्वजीव – जनक, रक्षक, सर्वमित्र।।
सर्वभावे स्वामी येन हय नित्यानन्द।
ताँर हैया भजि येन प्रभु गौरचन्द्र।।
धरणीधरेन्द्र नित्यानन्देर चरण।
देह प्रभु गौरचन्द्र आमारे शरण।।
वैष्णवेर पाये मोर एइ मनस्काम।
मोर प्रभु नित्यानन्द हओ बलराम।।
आमार प्रभुर प्रभु श्रीगौरसुन्दर।
ए बड़ भरसा मोर चित्ते निरन्तर।।
संसारेर पार हञा भक्तिर सागरे।
ये डुबिबे, से भजुक निताइचाँदेरे।।
जय जय नित्यानन्द अगतिर बन्धु।
त्रिभुवने अद्वितीय कारुण्येर सिन्धु।।

जय जय श्रीसेवाविग्रह नित्यानन्द।
दान देह हृदये तोमार पदद्वन्द्व।।
श्रीचैतन्य–नित्यानन्द–चाँद पहुँ जान।
वृन्दावन–दास तछु पदयुगे गाण।।

(श्रीचैतन्यभागवत)

(छ)

निताइ–पद–कमल, कोटीचन्द्र–सुशीतल,
ये छायाय जगत् जुड़ाय।
हेन निताइ बिने भाइ, राधाकृष्ण पाइते नाइ,
दृढ़ करि' धर निताइेर पाय।।
से–सम्बन्ध नाहि या'र, वृथा जन्म गेल ता'र,
सेइ पशु बड़ दुराचार।
निताइ ना बलिल मुखे, मजिल संसार–सुखे,
विद्याकुले कि करिबे ता'र।।
अहंकारे मत्त हैआ, निताइ–पद पासरिया,
असत्यरे सत्य करि' मानि।
निताइयेर करुणा ह'बे, ब्रजे राधाकृष्ण पा'बे,
धर निताइयेर चरण दु'खानि।।
निताइयेर चरण सत्य, ताँहार सेवक नित्य,
निताइ–पद सदा कर आश।
नरोत्तम बड़ दुःखी, निताइ मोरे कर सुखी,
राखव रांगा चरणेर पाश।।

(ज)

निताइ मोर जीवन – धन, निताइ मोर जाति।
निताइ विहने मोर आर नाहि गति।।
संसार – सुखेर मुखे तुले दिव छाइ।
नगरे मागिया खा'ब गाइया निताइ।।
ये – देशे निताइ नाइ, से – देशे ना या'ब।
निताइ – विमुख – जनार मुख ना हेरिब।।
गंगा याँ'र पदजल, हर शिरे धरे।
हेन निताइ ना भजिया दुःख पेये मरे।।
लोचन बले मोर निताइ येबा नाहि माने।
अनल भेजाइ ताँ'र माझ – मुखखाने।।

(झ)

अक्रोध परमानन्द नित्यानन्द – राय।
अभिमान – शून्य निताइ नगरे बेड़ाय।।
अधम पतित जीवेर द्वारे द्वारे गिया।
हरिनाम – महामंत्र दिच्छेन बिलाइया।।
या'रे देखे ता'रे कहे दन्ते तृण धरि'।
'आमारे किनिया लह, बल गौरहरि'।।
एत बलि' नित्यानन्द भूमे गड़ि' याय।
सोनार पर्वत्त येन धूलाते लोटाय।।
हेन अवतारे या'र रति ना जन्मिल।
लोचन बले सेइ पापी एल आर गेल।।

रूप – वर्णन

(ञ)

देख निताइचाँदेर माधुरी।

पुलके पूरल तनु, कदम्ब केशर जनु,
बाहु तुलि' बले हरि हरि।।

श्रीमुखमण्डल – धाम, जिनि कत कोटीकाम,
से ना विधि किसे निरमिल।

मथिया लावण्य – सिन्धु, ताहे निंगाड़िया इन्दु,
सुधा दिया मु'खानि गड़िल।।

नव कञ्जदल आँखि, तारक भ्रमर पाखी,
डुबि रहु प्रेम – मकरन्दे।

से – रूप देखिल येह, से जानिल रसमेह,
अवनी भासल प्रेमानन्दे।।

पुरवे ये ब्रजपुरे, विहरे नन्देर घरे,
रोहिणी – नन्दन बलराम।

एवे पद्मावती – सुत, नित्यानन्द अवधूत,
भुवन – पावन हैल नाम।।

से पहुँ पतित हेरि', करुणाय अवतरि',
जीवेरे बोलाय गौरहरि।

पड़िया से भवबन्धे, काँदये लोचन अन्धे,
ना देखिया से रूप – माधुरी।।

(ट)

आरे भाइ! निताइ आमार दयार अवधि।

जीवेरे करुणा करि', देशे देशे फिरि' फिरि',

प्रेम–धन याचे निरवधि।।

अद्वैतेर संगे रंग, धरणे ना याय अंग,
गोरा–प्रेमे गड़ा तनुखानि।

ढुलिया ढुलिया चले, बाहु तुलि' हरि बले,
दु'नयने बहे निताइ–एर पानि।।

कपाले तिलक शोभे, कुटिल–कुन्तल–लोले,
गुञ्जाहार आँटुनि चूड़ा ताय।

केशरी जिनिया कटि, कटितटे नीलधटी,
बाजन नूपुर रांगा पाय।।

भुवनमोहन वेश, मजाइल सब देश,
रसावेशे अट्ट अट्ट हास।

प्रभु मोर नित्यानन्द, केवल आनन्द–कन्द,
गुण गाय वृन्दावनदास।।

(ठ)

जय जय नित्यानन्द, नित्यानन्द–राम।
जय जय कृष्णभक्त–धन–मन–प्राण।।
श्याम–चिक्कण कान्ति, प्रकाण्ड शरीर।
साक्षात् कन्दर्प, यैछे महामल्ल–वीर।।
सुवलित हस्त, पद, कमल–लोचन।
पट्टवस्त्र शिरे, पट्टवस्त्र परिधान।।
सुवर्ण–कुण्डल कर्णे, स्वर्णांगद–बाला।
पायेते नूपुर बाजे, कण्ठे पुष्पमाला।।
चन्दन लेपित अंगे, तिलक सुठाम।
मत्तोगज जिनि' मद–मन्थर पयान।।

कोटिचन्द्र – जिनि' मुख उज्ज्वल – वरण।
दाड़िम्ब – बीज – सम दन्ते ताम्बूल – चर्वण।।
प्रेमे मत्त अंग डाहिने वामे दोले।
'कृष्ण' 'कृष्ण' बलिया गंभीर बोल बोले।।
रांगा – यष्टि – हस्ते दोले येन मत्त सिंह।
चारि पाशे बेड़ि आछे चरणेते भृंग।।
पारिषदगण मत्त सब गोप – वेशे।
'कृष्ण कृष्ण' कहे सबे सप्रेम – आवेशे।।
शिंगा बाँशी बाजाय केह, केह नाचे गाय।
सेवक योगाय ताम्बूल, चामर ढुलाय।।
नित्यानन्द – स्वरूपेर अपूर्व वैभव।
किवा रूप, गुण, लीला—अलौकिक सब।।
नित्यानन्दचन्द्र जय चैतन्येर प्राण।
तोमार चरणारविन्दे भक्ति देह दान।।

गुण – वर्णन

(ड)

जय जय नित्यानन्द रोहिणी – कुमार।
पतित उद्धार लागि' दु'बाहु पसार।।
गद गद मधुर मधुर आधो बोल।
या'रे देखे ता'रे प्रेमे धरि' देय कोल।।
डगमग लोचन घुरये निरन्तर।
सोनार कमले येन फिरये भ्रमर।।
दयार ठाकुर निताइ पर – दुःख जाने।
हरिनामेर माला गाँथि दिल जगजने।।

पापी–पाषण्डी यत करिल दलन।
दीन–हीन–जने कैला प्रेम वितरण।।
'आहा रे गौरांग'—बलि' पड़े भूमितले।
शरीर भिजिल निताइर नयनेर जले।।
वृन्दावनदास मने एइ विचारिल।
धरणी उपरे किवा सुमेरु पड़िल।।

(ढ़)

निताइ गुणमणि आमार निताइ गुणमणि।
आनिया प्रेमेर वन्या भासाइल अवनी।।
प्रेमेर वन्या लइया निताइ आइल गौड़देशे।
डुबिल भकतगण दीन हीन भासे।।
दीन हीन पतित पामर नाहि बाछे।
ब्रह्मार दुर्लभ प्रेम सबाकारे याचे।।
आबद्ध करुणा–सिन्धु काटिया मुहान।
घरे घरे बुले प्रेम–अमियार वान।।
लोचन बले मोर निताइ येवा ना भजिल।
जानिया शुनिया सेइ आत्मघाती हैल।।

(ण)

गजेन्द्रगमने निताइ चलये मन्थरे।
या'रे देखे ता'रे भासाय प्रेमेर पाथारे।।
पतित दुर्गत पापीर घरे घरे गिया।
ब्रह्मार दुर्लभ प्रेम दिच्छेन याचिया।।
ये ना लय, ता'रे कय दन्ते तृण धरि'।

'आमारे किनिया लओ, बल गौरहरि।।
तो' सबार लागिया कृष्णेर अवतार।
शुन भाइ, गौरांगसुन्दर नदीयार।।
ये पहुँ गोकुलपुरे नन्देर कुमार।
तो' सवार लागि' एवे कैल अवतार।।'
शुनिया काँदये पापी चरणे धरिया।
पुलके पूरल अंग गर गर हिया।।
ता'रे कोले करि' निताइ याइ आनठाम।
हेनमते प्रेमे भासाओल पुर-ग्राम।।
देवकीनन्दने बोले मुइ अभागिया।
डुबिलुँ विषय-कूपे निताइ ना भजिया।।

(त)

पूरवे गोवर्धन, धरल अनुज याँ'र, जगजने कहे बलराम।
एवे से चैतन्य-संगे, आइला कीर्त्तन-रंगे, धरि पहुँ नित्यानन्द नाम।।
परम उदार, करुणामय विग्रह, भुवनमंगल गुणधाम।
गौर-पीरिति-रसे, कटिर वसन खसे, अवतार अति अनुपम।।
नाचत गाओत, हरि हरि बोलत, अविरत गौर-गोपाल।
हास-प्रकाश, मिलित मधुराधरे, बोलत परम रसाल।।
रामदासेर पहुँ, सुन्दर विग्रह, गौरीदासेर धन-प्राणे।
अखिल जीव यत, इह रसे उनमत, ज्ञानदास निताइ गुणगाने।।

(थ)

प्रेमे मत्त नित्यानन्द, सहजे आनन्द कन्द, दुलिया दुलिया चलि' याय।
भाइयार भावेते मत्त, जानेन सकल तत्त्व, हरि बलि' अवनी लोटाय।।

निताइर गोराप्रेमे गड़ा तनुखानि।
गदाधर–मुख हेरे, लोलिया लोलिया पड़े, धारा बहे सिन्चित धरणी।।
अद्वैत आनन्द कन्द, हेरि' निताइर मुखचन्द, हुंकार पुलक शोभा पाय।
हरि हरि बोल बले, पुनः 'गौर' 'गौर' बले, प्रिय पारिषदगण धाय।।
गोलोकेर प्रेमवन्या, जगत् करिल धन्या, अतुल अपार रससिन्धु।
मातिल जगत् भरि', निताइ चैतन्य करि', **अनन्तदास** मागे एक बिन्दु।।

(द)

आनन्द कन्द, निताइ–चन्द, अरुण नयन करुण छन्द।
करुण–पूर, सघने झुर, हरि हरि ध्वनि बोल रे।।
नटक–रंग, भकत–संग, विविध–भास रस–तरंग।
ईषत–हास, मधुर–भाष, सघने गीमदोल रे।।
पतित कोर, जपत गौर, दिन–रजनी आनन्द भोर।
प्रेम–रतन, करिया यतन, जगजने करु दान रे।।
कीर्त्तन–माझ, रसिक–राज, यैछन कनया–गिरि विराज।
ब्रजविहार, रस–विथार, मधुर मधुर गान रे।
धूलि–धूसर, धरणी–उपर, करहुँ लुठत प्रेमे गरगर।
कबहुँ चलत, कबहुँ खेलत, कबहुँ अट्टहास रे।।
कबहुँ स्वेद, कबहुँ खेद, कबहुँ पुलक, स्वर–विभेद।
कबहुँ लम्फ, कबहुँ झम्फ, करहुँ दीर्घश्वास रे।।
करुणा–सिन्धु, अखिल बन्धु, कलियुग–तम–पूरण–इन्दु।
जगत–लोचन, पटल–मोचन, निताइ पूरल आश रे।।
अन्ध–अधम, दीन–दुरजन, प्रेमदाने करल मोचन।
पाओल जगत, केवल वन्चित, ए **राधाबल्लभदास** रे।।

(ध)

गजेन्द्रगमने याय, सकरुण दिठे चाय, पदभरे मही टलमल।
मत्त सिंह जिनि', कम्पमान मेदिनी, पाषण्डिगण शुनिया विकल।।
आओत अवधूत करुणार सिन्धु।
प्रेमे गरगर मन, करे हरि–संकीर्त्तन, पतित पावन दीनबन्धु।।
हुंकार करिया चले, अचल सचल नड़े, प्रेमे भासे अमर–समाज।
सहचरगण संगे, विविध–खेलन रंगे, अलखिते करे सब काज।।
शेषशायी–संकर्षण, अवतारी–नारायण, याँ'र अंश कलाते गणन।
कृपासिन्धु भक्तिदाता, जगतेर हितकर्त्ता, सेइ राम रोहिणीनन्दन।।
याँ'र लीला लावण्यधाम, आगमे निगमे गान, याँ'र रूप मदनमोहन।
एवे अकिञ्चन वेशे, फिरे पहुँ देशे देशे, उद्धार करये त्रिभुवन।।
ब्रजेर वैदग्धी सार, यत यत लीला आर, पाइवारे यदि थाके मन।
बलरामदासे कय, मनोरथ सिद्धि हय, भज भज श्रीपादचरण।।

श्रीगौर–जन्मलीला

5 (1 क)

नदीया–उदयगिरि, पूर्णचन्द्र गौरहरि,
कृपा करि' हइल उदय।
पाप–तमो हैल नाश, त्रिजगतेर उल्लास,
जगभरि' हरिध्वनि हय।।
सेइकाले निजालय, उठिया अद्वैत राय,
नृत्य करे आनन्दित–मने।
हरिदासे लञा संगे, हुंकार–कीर्त्तन–रंगे,
केने नाचे केह नाहि जाने।।
देखि' उपराग हासि, शीघ्र गंगाघाटे आसि',

आनन्दे करिल गंगास्नान।
पाञा उपराग-छले, आपनार मनोबले,
ब्राह्मणेरे दिल नाना दान।।
जगत् आनन्दमय, देखि' मने सविस्मय,
ठारे-ठोरे कहे हरिदास।
'तोमार ऐछन रंग, मोर मन परसन्न,
देखि—किछु कार्ये आछे भास।।'
आचार्य-रत्न, श्रीवास, हैल मने सुखोल्लास,
याइ' स्नान कैल गंगाजले।
आनन्दे विह्वल मन, करे हरिसंकीर्त्तन,
नाना दान कैल मनोबले।।
एइ मत भक्त-यति, याँ'र येइ देशे स्थिति,
ताहाँ ताहाँ पाञा मनोबले।
नाचे करे संकीर्त्तन, आनन्दे विह्वल मन,
दान करे ग्रहणेर छले।।
ब्राह्मण-सज्जन-नारी, नाना द्रव्ये थालि भरि',
आइला सबे यौतुक लइया।
येन काञ्चासोना द्युति, देखि' बालकेर मूर्त्ति,
आशीर्वाद करे सुख पाञा।।
सावित्री, गौरी, सरस्वती, शची, रम्भा, अरुन्धती,
आर यत देव-नारीगण।
नाना द्रव्ये पात्र भरि', ब्राह्मणीर वेश धरि',
आसि' सबे करे दरशन।।
अन्तरीक्षे देवगण, गन्धर्व, सिद्ध, चारण,
स्तुति-नृत्य करे वाद्य-गीत।

नर्त्तक, वादक, भाट, नवद्वीपे या'र नाट,
सबे आसि' नाचे पाञा प्रीत।।
केवा आसे केवा याय, केवा नाचे केवा गाय,
सम्भालिते नारे कार बोल।
खण्डिलेक दुःखशोक, प्रमोदपूरित लोक,
मिश्र हैला आनन्दे विहवल।।
आचार्यरत्न, श्रीवास, जगन्नाथमिश्र–पाश,
आसि' ताँरे करे सावधान।
कराइल जातकर्म, ये आछिल विधि–धर्म,
तबे मिश्र करे नाना दान।।
यौतुक पाइल यत, घरे वा आछिल कत,
सब धन विप्रे दिल दान।
यत नर्त्तक, गायन, भाट, अकिञ्चन जन,
धन दिया कैला सबार मान।।
श्रीवासेर ब्राह्मणी, नाम ताँ'र 'मालिनी',
आचार्यरत्नेर पत्नी–संगे।
सिन्दुर, हरिद्रा, तैल,खइ, कला, नाना फल,
दिया पूजे नारीगण रंगे।।
अद्वैत आचार्य–भार्या, जगत्–पूजिता आर्या,
नाम ताँ'र 'सीता ठाकुराणी'।
आचार्येर आज्ञा पाञा, गेला उपहार लञा,
देखिते बालक–शिरोमणि।।
सुवर्णेर कड़ि–वउलि, रजतमुद्रा–पाशुलि,
सुवर्णेर अंगद, कंकण।
दु–बाहुते दिव्य शंख, रजतेर मलवंक,

स्वर्णमुद्रार नाना हारगण।।

व्याघ्रनख हेमजड़ि, कटि – पट्टसूत्र – डोरी,

हस्त – पदेर यत आभरण।

चित्रवर्ण पट्टशाड़ी, बुनि फोतो पट्टपाड़ी,

स्वर्ण – रौप्य – मुद्रा बहुधन।।

दुर्वा, धान्य, गोरोचन, हरिद्रा, कुंकुम, चन्दन,

मंगल – द्रव्य पात्र भरिया।

वस्त्र – गुप्त दोला चड़ि', संगे लञा दासी चेड़ी,

वस्त्रालंकार पेटारि भरिया।।

भक्ष्य, भोज्य, उपहार, संगे लइल बहु भार,

शचीगृहे हैल उपनीत।

देखिया बालक – ठाम, साक्षात् गोकुल – कान,

वर्णमात्र देखि विपरीत।।

सर्व अंग—सुनिर्म्माण, सुवर्ण – प्रतिमा – भान,

सर्व अंग—सुलक्षणमय।

बालकेर दिव्य – ज्योति, देखि' पाइल बहुप्रीति,

वात्सल्येते द्रविल हृदय।।

दुर्वा, धान्य, दिल शीर्षे, कैल बहु आशीषे,

चिरजीवी हओ दुइ भाइ।

डाकिनी – शाँखिनी हैते, शंका उपजिल चिते,

डरे नाम थुइल 'निमाइ'।।

पुत्रमाता – स्नान – दिने, दिल वस्त्र – विभूषणे,

पुत्र – सह मिश्रेरे सम्मानि'।

शची – मिश्रेर पूजा लञा, मनेते हरिष हञा,

घरे आइला सीताठाकुराणी।।

ऐछे शची–जगन्नाथ, पुत्र पाञा लक्ष्मीनाथ,
पूर्ण हइल सकल वाञ्छित।
धन–धान्ये भरे घर, लोकमान्य कलेवर,
दिने दिने हय आनन्दित।।
मिश्र–वैष्णव, शान्त, अलम्पट, शुद्ध, दान्त,
धनभोगे नाहि अभिमान।
पुत्रेर प्रभावे यत, धन आसि' मिले तत,
विष्णुप्रीते द्विजे देन दान।।
लग्न गणि' हर्षमति, नीलाम्बर चक्रवर्ती,
गुप्ते किछु कहिल मिश्रेरे।
'महापुरुषेर चिन्ह, लग्ने अंगे भिन्न भिन्न,
देखि,'—एइ तारिवे संसारे।।'
ऐछे प्रभु शचीघरे, कृपाय कैल अवतारे,
येइ इहा करये श्रवण।
गौरप्रभु दयामय, ताँ'रे हयेन सदय,
सेइ पाय ताँहार चरण।।
पाइया मानुष–जन्म, ये ना शुने गौरगुण,
हेन जन्म ता'र व्यर्थ हैल।
पाइया अमृतधुनी, पिये विषगर्त्त–पानि,
जन्मिया से केने नाहि मैल।।
श्रीचैतन्य–नित्यानन्द, आचार्य–अद्वैतचन्द्र,
स्वरूप–रूप–रघुनाथदास।
इहाँ सबार श्रीचरण, शिरे वन्दि निजधन,
जन्मलीला गाइल कृष्णदास।।

(ख)

राहु–कवले इन्दु, परकाश नाम–सिन्धु, कलिमर्द्दन बाजे वाणा।
पहुँ भेल परकाश, भुवन चतुर्दश, जय जय पड़िल घोषणा।।
देखिते गौरांगचन्द्र।
नदीयार लोक–, शोक सब नाशल, दिने दिने बाड़ल आनन्द।।ध्रु।।
दुन्दुभि बाजे, शत शंख गाजे, बाजे वेणु–विषाण।
श्रीचैतन्य–ठाकुर, नित्यानन्द–प्रभु, **वृन्दावनदास** गान।।

(ग)

जिनिया रविकर, श्रीअंग–सुन्दर, नयने हेरइ ना पारि।
आयत लोचन, ईषत् बंकिम, उपमा नाहिक विचारि।।ध्रु।।
(आजु) विजये गौरांग, अवनी–मण्डले, चौदिके शुनिया उल्लास।
एक हरिध्वनि, आब्रह्म भरि' शुनि, गौरांग–चाँदेर परकाश।।
चन्दने उज्ज्वल, वक्ष परिसर, दोलये तथि वनमाल।
चाँद–सुशीतल, श्रीमुखमण्डल, आ–जानु बाहु विशाल।।
देखिया चैतन्य, भुवने धन्य धन्य, उठये जय–जय–नाद।
कोइ नाचत, कोइ गायत, कलि हैल हरिषे विषाद।।
चारि वेद–शिर–, मुकुट चैतन्य, पामर मूढ़ नाहि जाने।
श्रीचैतन्यचन्द्र, निताइ–ठाकुर, **वृन्दावनदास** गाने।।

(घ)

प्रकाश हइला गौरचन्द्र। दश–दिके उठिल आनन्द।।
रूप कोटिमदन जिनिञा। हासे निज–कीर्त्तन शुनिञा।।
अति सुमधुर मुख–आँखि। महाराज–चिन्ह सब देखि।।
श्रीचरणे ध्वज–बज्र शोभे। सब अंगे जग–मन लोभे।।

दूरे गेल सकल आपद। व्यक्त हइल सकल सम्पद।।
श्रीचैतन्य–नित्यानन्द जान। वृन्दावनदास गुण गान।।

(ङ)

चैतन्य–अवतार, शुनिया देवगण, उठिल परम–मंगल रे।
सकल–ताप–हर, श्रीमुखचन्द्र देखि', आनन्दे हइला विह्वल रे।।
अनन्त–ब्रह्मा–शिव–,आदि करि' यत देव, सवेइ नररूप धरि' रे।
गायेन 'हरि' 'हरि', ग्रहण–छल करि', लखिते केह नाहि पारे रे।।
दश–दिके धाय, लोक नदीयाय, बलिया उच्च 'हरि' 'हरि' रे।
मानुषे देवे मिलि', एकत्र हञा केलि, आनन्दे नवद्वीप पुरि रे।।
शचीर अंगने, सकल देवगणे, प्रणाम हइया पड़िला रे।
ग्रहण–अन्धकारे, लखिते केह नारे, दुर्ज्ञेय चैतन्येर खेला रे।।
केह पड़े स्तुति, काहारो हाते छाति, केह चामर ढुलाय रे।
परम–हरिषे, केह पुष्प वरिषे, केह नाचे, गाय, बा'य रे।।
सब भक्त संगे करि', आइला श्रीगौरहरि, पाषण्डी किछुइ ना जाने रे।
श्रीकृष्णचैतन्य, प्रभु–नित्यानन्द, वृन्दावनदास रस गान रे।।

(च)

दुन्दुभि–डिन्डिम, मंगल–जयध्वनि, गाय मधुर रसाल रे।
वेदेर अगोचर, आजि भेटव, विलम्बे नाहि आर काल रे।।
आनन्दे इन्द्रपुर, मंगल–कोलाहल, साज' साज' बलि' साज' रे।
बहुत पुण्य–भाग्ये, चैतन्य–परकाश, पाओल नवद्वीप–माझे रे।।
अन्योन्ये आलिंगन, चुम्बन घन–घन, लाज केह नाहि माने रे।
नदीया–पुरन्दर, जन्म–उल्लासे, आपन–पर नाहि जाने रे।
ऐछन कौतुके, आइला नवद्वीपे, चौदिके शुनि हरिनाम रे।।

पाइया गौर – रस, विह्वल परवश, चैतन्य – जय जय गान रे।।
देखिल शची – गृहे, गौरांग – सुन्दरे, एकत्र यैछे कोटिचान्द रे।
मानुष – रूप धरि', ग्रहण – छल करि', बोलये उच्च हरिनाम रे।।
सकल – शक्ति – संगे, आइला गौरचन्द्र, पाषण्डी किछुइ ना जाने रे।
श्रीचैतन्य – नित्यानन्द – ,चाँद – प्रभु जान, वृन्दावनदास रस गान रे।।

श्रीश्रीगौरचन्द्र – स्तुति

(2 क)

जय जय कृपासिन्धु श्रीगौरसुन्दर।
जय शची – जगन्नाथ – गृह – शशधर।।
गौरचन्द्र जय धर्मसेतु महाधीर।
जय संकीर्तनमय सुन्दर शरीर।।
जय नित्यानन्देर बान्धव धनप्राण।
जय गदाधर – अद्वैतेर प्रेमधाम।।
जय जय श्रीवासादि – भक्तेर अधीन।
भक्तिदान देह प्रभु उद्धारह दीन।।
जय जय लक्ष्मीकान्त, विष्णुप्रिया – नाथ।
जीवगण प्रति कर शुभ दृष्टिपात।।
जय श्रीजगदानन्द – प्रिय अतिशय।
जय बक्रेश्वर – हरिदासेर हृदय।।
जय जय मुरारि – वाहन विश्वम्भर।
जय सार्वभौम – रामानन्देर ईश्वर।।
जय श्रीपरमानन्द – पुरीर जीवन।
जय दामोदर – स्वरूपेर प्राणधन।।
जय रूप – सनातन – प्रिय महाशय।

जय रघुनाथ–दास–गोविन्द–हृदय।।
भक्तगोष्ठी सहित गौरांग जय जय।
कृपा कर प्रभु येन तोहे मन रय।।

(श्रीचैतन्यभागवत)

(ख)

(श्रीअद्वैतप्रभु–द्वारा स्तुति)

जय जय सर्व–प्राणनाथ विश्वम्भर।
जय जय गौरचन्द्र करुणासागर।।
जय जय भकतवचन–सत्यकारी।
जय जय महाप्रभु महा–अवतारी।।
जय जय सिन्धुसुता–रूप–मनोरम।
जय जय श्रीवत्स–कौस्तुभ–विभूषण।।
जय जय 'हरे कृष्ण'–मन्त्रेर प्रकाश।
जय जय निजभक्ति–ग्रहण–विलास।।
जय जय महाप्रभु अनन्त शयन।
जय जय जय सर्वजीवेर शरण।।
तुमि विष्णु, तुमि कृष्ण, तुमि नारायण।
तुमि कर युगे युगे वेदेर पालन।।
सर्वदेव–चूड़ामणि तुमि द्विजराज।
तुमि से भोजन कर नीलाचल–माझ।।
एइ तोर दुइखानि चरण–कमल।
इहार से रसे गौरी–शंकर विह्वल।।
एइ से चरण रमा सेवे एक मने।
इहार से यश गाय सहस्र–वदने।।

एइ से चरण ब्रह्मा पूजये सदाय।
श्रुति–स्मृति–पुराणे इहार यश गाय।।
एइ से–चरण हैते गंगा अवतार।
शंकर धरिला शिरे महावेग यार।।''
एतेक वरिल तोर चरणयुगल।
मन, प्राण, बुद्धि तोंहे अर्पिल सकल।।

(श्रीचैतन्यभागवत)

(ग)

(श्रीश्रीवास–पण्डित–द्वारा स्तुति)

विश्वम्भर–चरणे आमार नमस्कार।
नवघन–वर्ण, पीत वसन याँहार।।
शचीर नन्दन–पाये मोर नमस्कार।
नवगुंजा शिखिपुच्छ भूषण याँहार।।
गंगादास–शिष्य–पाये मोर नमस्कार।
वनमाला, करे दधी–ओदन याँहार।।
जगन्नाथ–पुत्र–पाये मोर नमस्कार।
कोटिचन्द्र जिनि रूप वदन याँहार।।
श्रृंग, वेत्र, वेणु—चिह्न भूषण याँहार।
सेइ तुमि, तोमार चरणे नमस्कार।।
तुमि विष्णु, तुमि कृष्ण, तुमि यज्ञेश्वर।
तोमार चरणोदक—गंगा तीर्थवर।।
जानकीजीवन तुमि, तुमि नरसिंह।
अज–भव–आदि—तव चरणेर भृंग।।
तुमि से वेदान्तवेद्य, तुमि नारायण।

तुमि से छलिला बलि हइया वामन।।
तुमि हयग्रीव, तुमि जगत्‌जीवन।
तुमि नीलाचल – चन्द्र—सबार कारण।।
चारि वेदे याँरे घोषे 'नन्देर कुमार'।
सेइ तुमि, तोमार चरणे नमस्कार।।''

(श्रीचैतन्यभागवत)

(घ)

(श्रीसार्वभौम – द्वारा स्तुति)

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य प्राणनाथ।
जय जय शची पुण्यवती – गर्भजात।।
जय जय श्रीकृष्णचैतन्य सर्वप्राण।
जय जय वेद – विप्र – साधु – धर्म – त्राण।।
जय जय वैकुण्ठादि लोकेर ईश्वर।
जय जय शुद्धसत्त्व – रूप न्यासिवर।।
कालवशे भक्ति लुकाइला दिने दिने।
पुनर्वार निजभक्ति प्रकाश – कारणे।।
श्रीकृष्णचैतन्य – नाम – प्रभु अवतार।
ताँर पादपद्मे चित्त रहुक आमार।।
वैराग्य सहित निज भक्ति बुझाइते।
ये प्रभु कृपाय अवतीर्ण पृथिवीते।।
श्रीकृष्णचैतन्य तनु—पुरुष पुराण।
त्रिभुवने नाहि याँर अधिक समान।।
हेन कृपासिन्धुर चरण – गुण – नाम।
स्फुरुक् आमार हृदयेते अविराम।।

पतित तारिते से तोमार अवतार।
मुञि पतितेरे प्रभु करह उद्धार।।

(श्रीचैतन्यभागवत)

श्रीगौर – तत्त्व

(3 क)

(प्रभु हे!)
एमन दुर्मति, संसार – भितरे, पड़िया आछिनु आमि।
तव निज जन, कोन महाजने, पाठाइया दिले तुमि।।
दया करि' मोरे, पतित देखिया, कहिल आमारे गिया।
'ओहे दीनजन, शुन भाल कथा, उल्लसित हबे हिया।।
तोमारे तारिते, श्रीकृष्णचैतन्य, नवद्वीपे अवतार।
तोमा' हेन कत, दीन हीन जने, करिलेन भवपार।।
वेदेर प्रतिज्ञा, राखिवार तरे, रुक्मवर्ण विप्रसुत।
महाप्रभु नामे, नदीया माताय, संगे भाइ अवधूत।।
नन्दसुत यिनि, चैतन्य – गोंसाई, निज – नाम करि' दान।
तारिल जगत्, तुमिओ याइया, लह निज परित्राण।।'
से – कथा शुनिया, आसियाछि, नाथ! तोमार चरणतले।
भकतिविनोद, काँदिया काँदिया, आपन काहिनी बले।।

(ख)

चैतन्य – चन्द्रेर लीला – समुद्र अपार।
बुझिते शकति नाहि, एइ कथा सार।।

शास्त्रेर अगम्य तत्त्व श्रीकृष्ण आमार।
ताँ'र लीला – अन्त बुझे शकति काहार।
तवे मूर्ख जन केन शास्त्र विचारिया।
गौर – लीला नाहि माने अन्त ना पाइया??
अनन्तेर अन्त आछे, कोन् शास्त्रे गाय?
शास्त्राधीन कृष्ण, इहा शुनि' हासि पाय।।
कृष्ण हइवेन गोरा, इच्छा ह'ल ताँ'र।
सवैकुण्ठ नवद्वीपे हैला अवतार।।
यखन आसेन कृष्ण जीव उद्धारिते।
संगे सब सहचर आसे पृथिवीते।।
गोरा – अवतारे ताँर श्रीजय – विजय।
नवद्वीपे शत्रुभावे हइल उदय।।
पूर्व पूर्व अवतारे असुर आछिल।
शास्त्रे बले पण्डित हइया जनमिल।।
स्मृति – तर्क – शास्त्रबले बैरी प्रकाशिया।
गोराचाँद – सह रण करिल मातिया।।
अतएव नवद्वीपवासी यत जन।
श्रीचैतन्य – लीला – पुष्टि करे अनुक्षण।।
एखन ये ब्रह्मकुले चैतन्येर अरि।
ता'के जानि चैतन्येर लीला – पुष्टिकारी।।
श्रीचैतन्य – अनुचर शत्रु मित्र यत।
सकलेर श्रीचरणे हइलाम नत।।
तोमरा करह कृपा ए दासेर प्रति।
चैतन्ये सुदृढ़ कर' विनोदेर मति।।

(ग)

जय नन्दनन्दन, गोपीजन–बल्लभ, राधानायक नागर–श्याम।
सो शचीनन्दन, नदीया–पुरन्दर, सुर–मुनिगण–मनोमोहन धाम।।
जय निजकान्ता–, कान्ति कलेवर, जय जय प्रेयसी–भाव–विनोद।
जय व्रज–सहचरी–, लोचन–मंगल, जय नदीयावासि–नयन–आमोद।।
जय जय श्रीदाम, सुदाम–सुबलार्ज्जुन, प्रेमवर्द्धन नवघन रूप।
जय रामादि सुन्दर, प्रिय सहचर, जय जगमोहन गौर अनुप।।
जय अतिबल बल–, राम–प्रियानुज, जय जय श्रीनित्यानन्द–आनन्द।
जय जय सज्जन–, गण–भय–भञ्जन, **गोविन्ददास** आश अनुबन्ध।।

(घ)

जय जय जगन्नाथ शचीर नन्दन।
त्रिभुवन करे याँ'र चरण वन्दन।।
नीलाचले शंख–चक्र–गदा–पद्मधर।
नदीया नगरे दण्ड–कमण्डलु कर।।
केह बले,—'पूरवेते रावण बधिला'।
गोलोकेर वैभव लीला प्रकाश करिला।।
श्रीराधार भावे एवे गोरा अवतार।
'हरे कृष्ण'–नाम गौर करिला प्रचार।।
वासुदेव घोष बले करि' योड़ हात।
येइ गौर, सेइ कृष्ण, सेइ जगन्नाथ।।

(ङ)

श्रीकृष्णचैतन्य गोरा शचीर दुलाल।
एइ से पूरवे छिल गोकुलेर गोपाल।।

केह बले,—'जानकी–वल्लभ छिल राम।'
केह बले,—'नन्दलाल नवघन–श्याम।।'
पूरवे कालिया छिल गोपीप्रेमे भोरा।
भाविया राधार वरण एवे हइल गोरा।।
छल छल अरुण नयान अनुरागी।
ना पाइया भावेर ओर हइल वैरागी।।
सन्यासी वैरागी हैया भ्रमे देशे देशे।
तमु ना पाइल राधार प्रेमेर उद्‌देशे।।
गोविन्द दासिया कय किशोरी किशोरा।
स्वरूप–रामेर सने सेइ रसे भोरा।।

श्रीगौर–रूप–गुण–वर्णन

4 (क)

गौरांग सुन्दरवेश मदनमोहन।
षोड़शवत्सर प्रभु प्रथम–यौवन।।
कामदेव जिनिया प्रभु से रूपवान्।
प्रति अंगे अंगे से लावण्य अनुपम।।
ज्योतिर्मय कनक–विग्रह वेदसार।
चन्दने भूषित येन चन्द्रेर आकार।।
चाँचर चिकुरे शोभे मालतीर माला।
मधुर मधुर हासे जिनि' सर्व कला।।
श्रीललाटे ऊर्द्ध्व सुतिलक मनोहर।
आजानुलम्बित दुइ श्रीभुज सुन्दर।।
सुरंग अधर अति, सुन्दर दशन।
श्रुतिमूले शोभा करे भ्रूयुग–पत्तन।।

गजेन्द्र जिनिया स्कन्ध, हृदय सुपीन।
ताँहि शोभे शुक्ल–यज्ञसूत्र अति क्षीण।।
चरणारविन्दे रमा–तुलसीर स्थान।
परम निर्मल सूक्ष्म–वास परिधान।।
उन्नत नासिका, सिंह–ग्रीव–मनोहर।
सवा हैते सुपीत सुदीर्घ कलेवर।।
येइ देखे, सेइ एक दृष्ट्ये रूप चाय।
हेन नाहि धन्य धन्य बलि ये ना याय।।''
हेन से अतुल रूपमय गौरधाम।
स्फुरुक आमार हृदयेते अविराम।।

(श्रीचैतन्यभागवत)

(ख)

नाचे विश्वम्भर, जगत ईश्वर, भागीरथी तीरे तीरे।
यार पदधूलि, हइ कुतूहली, सबेइ धरिल शिरे।।
मदन सुन्दर, गौर कलेवर, दिव्य–वास–परिधान।
चाँचर चिकुरे, माला मनोहरे, येन देखि पाँचबाण।।
चन्दन–चर्चित, श्रीअंग–शोभित, गले दोले वनमाला।
ढुलिया पड़ये, प्रेमे थिर नहे, आनन्दे शचीर बाला।।
काम–शरासन, भ्रूयुग–पत्तन, भाले मलयज–बिन्दु।
मुकुता–दशन, श्रीयुत वदन, प्रकृति करुणासिन्धु।।
अति मनोहर, यज्ञसूत्र–वर, सदय–हृदये शोभे।
ए बुझि अनन्त, हइ गुणवन्त, रहिला परश लोभे।।
क्षणे शत शत, विकार अद्भुत, कत करिव निश्चय।
अश्रु–कम्प–घर्म, पुलक–वैवर्ण्य, ना जानि कतेक हय।।

नित्यानन्द-चाँद, माधव-नन्दन, शोभा करे दुइ पाशे।
यत प्रियगण, करये कीर्त्तन, सवा चाहि चाहि हासे।।
याँहार कीर्त्तन, करि अनुक्षण, शिव दिगम्बर भोला।
से प्रभु विहरे, नगरे नगरे, करिया कीर्त्तन खेला।।
मन्दिरा-मृदंग, करताल-शंख, ना जानि कतेक बाजे।
महा हरिध्वनि, चतुर्दिक शुनि, माझे शोभे द्विजराजे।।
येइ दिके चाये, विश्वम्भर राय, सेइ दिक् प्रेमे भासे।
श्रीकृष्णचैतन्य, ठाकुर नित्यानन्द, गाय वृन्दावन-दासे।।

(श्रीचैतन्यभागवत)

(ग)

विमल-हेम-जिनि', तनु अनुपम रे! ताहे शोभे नाना फुल-दाम।
कदम्ब केशर जिनि', एकटी पुलक रे! ता'र माझे बिन्दु बिन्दु घाम।।
जिनि' मदमत्त हाती, गमन मन्थर अति, भावावेशे ढुलि' ढुलि' याय।
अरुण-वसन छवि, जिनि' प्रभातेर रवि, गोरा-अंगे लहरी खेलाय।।
चलिते ना पारे गोरा-, चाँद गोसाञि रे, बलिते ना पारे आध-बोल।
भावेते आवेश हैया, हरि हरि बोलाइया, आचण्डाले धरि' देइ कोल।।
ए सुखसम्पद्-काले, गोरा ना भजिनु हेले, हेन पदे ना करिनु आश।
श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र, ठाकुर श्रीनित्यानन्द, गुण गाय वृन्दावनदास।।

(घ)

आरे मोर नाचत गौरकिशोर।
हिरण किरण जिनि, ओ तनु सुन्दर, दश दिश सकल उजोर।।
शरद चाँद जिनि, झलमल वदन हि, गोरोचन-तिलक सुभाल।
कुञ्चित चारु, चिकुर तँहि लोलत, कमले किये अलि-जाल।।

नासा तिलफुल, बिम्ब अधर तुल, चुयत बिन्दु बिन्दु घाम।
तरुण अरुण सर-, सिज जिनि लोचन, धारा बहे अविराम।।
गाँथिया आपन गुण, परकाशे कीर्त्तन, गाओत सहचरवृन्दे।
खोल-करताल, यतन करि' सिरजिल, पाषण्ड दलन-अनुबन्धे।।
अवनीते अद्‌भुत, प्रभु शचीनन्दन, पतित-पावन अवतार।
दीन-हीन मूढ़मति, **रामानन्ददास** अति, पहुँ मोरे कर भवपार।।

(ङ)

नवद्वीपे उदय करिला द्विजराज।
कलि-तिमिर-घोर, गोराचाँद उजोर, पारिषद-तारागण-माझ।।
कीर्त्तने ढर ढर, अंग धूलि-धूसर, हासत भाव-तरंगे।
करे करताल धरि', बोलत हरि हरि, क्षणे क्षणे रहइ त्रिभंगे।।
वामे प्रिय गदाधर, काँधेर उपरे ता'र, सुवलित बाहु आजाने।
सोङरि वृन्दावन, आकुल अनुक्षण, धारा बहे अरुण नयाने।।
आँखियुग झर झर, येन नव जलधर, दशन विजुरी जिनि छटा।
वासुदेव घोष गीते, कलिजीव उद्धारिते, वरिखल हरिनाम-घटा।।

(च)

कलियुगे श्रीचैतन्य, अवनी करिला धन्य, पतितपावन याँ'र वाणा।
पूरवे राधार भावे, गौरांग हइला एवे, निजरूप धरि' काँचा सोना।।
गौरांग, पतितपावन अवतारि!
कलि-भुजंगम देखि', हरिनामे जीव राखि', आपनि हइला धन्वन्तरि।।
गदाधर आदि यत, महा महा-भागवत, ताँ'रा सब गोरागुण गाय।
अखिल भुवनपति, गोलोके याँहार स्थिति, हरि बलि' अवनी लोटाय।।

सोङरि पूरव गुण, मुरछय पुनः पुनः, परशे धरणी उलसित।
चरण कमल किवा, नखर उजोर शोभा, **गोविन्ददास** से वञ्चित।।

(छ)

देवादिदेव गौरचन्द्र गौरीदास – मन्दिरे।
नित्यानन्द – संगे गौर अम्बिकाते विहरे।।
चारु – अरुण – गुञ्जाहार हृत्कमले ये धरे।
विरिञ्चि – सेव्य – पादपद्म लक्ष्मी – सेव्य सादरे।।
तप्तहेम – अंगकान्ति प्रातः – अरुण – अम्बरे।
राधिकानुराग प्रेम – भक्ति वाञ्छा ये करे।।
शचीसुत गौरचन्द्र आनन्दित अन्तरे।
पाषण्ड – खण्ड नित्यानन्द संगे रंगे विहरे।।
नित्यानन्द गौरचन्द्र गौरीदास – मन्दिरे।
गौरीदास करत आश सर्वजीव उद्धारे।।

श्रीगौर – गुण – वर्णन

(5 क)

जय जगन्नाथ – शची – , नन्दन गौरांग पहुँ, जय नित्यानन्द प्रेमधाम।
जगत् दुःखित देखि', हैया सकरुण आँखि, उद्धारिला दिया हरिनाम।।
बैकुण्ठ – नायक हरि, द्विजकुले अवतरि', संकीर्त्तन करिला प्रचार।
धन्य सुरधुनी – तीरे, धन्य नवद्वीप – पुरे, सांगोपांगे करिला विहार।।
एमन करुणासिन्धु, श्रीचैतन्य प्राणबन्धु, पापी पाषण्डी नाहि जाने।
श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र, ठाकुर श्रीनित्यानन्द, **वृन्दावनदास** गुणगाने।।

(ख)

कि कहिब शत शत तुया अवतार।
एकला गौरांगचाँद पराण आमार।।
विष्णु–अवतारे तुमि प्रेमेर भिखारी।
शिव, शुक, नारद लइया जना–चारि।।
सिन्धु–बन्ध कैला तुमि राम–अवतारे।
एवे से तोमार यश घुषिबे संसारे।।
कलियुगे 'कीर्त्तन' करिला सेतुबन्ध।
सुखे पार हउक पंगु–जड़–अन्ध।।
किवा गुणे पुरुष नाचे, किवा गुणे नारी।
गोरागुणे मातिल भुवन दश चारि।।
ना जानिये जप–तप, वेद–विचार।
कहे वासु—गौरांग! मोरे कर पार।।

(ग)

शचीसुत गौरहरि, नवद्वीपे अवतरि, करिलेन विविध विलास।
संगे लैया प्रियगण, प्रकाशिया संकीर्त्तन, बाढ़ाइला सवार उल्लास।।
किवा से सन्यासवेशे, भ्रमि प्रभु देशे देशे, नीलाचले आसिया रहिला।
राधिकार प्रेमे माति', ना जानि दिवाराति, से प्रेमे जगत् माताइला।।
नित्यानन्द—बलराम, अद्वैत—गुणेर धाम, गदाधर श्रीवासादि यत।
देखि से अद्भुत रीति, केह ना धरये धृति, प्रेमाय विह्वल अविरत।।
देवेर दुर्लभ रत्न, मिलाइला करि' यत्न, कृपार बालाइ लइया मरि।
कैला कलियुग धन्य, प्रभु श्रीकृष्णचैतन्य, यश गाय दास नरहरि।।

(घ)

एमन गौरांग बिना नाहि आर।

हेन अवतार, ह'वे कि हयेछे, हेन प्रेम परचार।।
दुरमति अति, पतित पाषण्डी, प्राणे ना मारिल का'रे।
हरिनाम दिया, हृदय शोधिल, याचि' गिया घरे घरे।।
भव–विरिञ्चिर, वाञ्छित ये–प्रेम, जगते फेलिल ढालि'।
कांगाले पाइया, खाइल नाचिया, बाजाइया करतालि।।
हासिया काँदिया, प्रेमे गड़ागड़ि, पुलके व्यापिल अंग।
चण्डाले ब्राह्मणे, करे कोलाकुलि, कबे वा छिल ए रंग।।
डाकिया हाँकिया, खोल–करताले, गाइया–धाइया फिरे।
देखिया शमन, तरास पाइया, कपाट हानिल द्वारे।।
ए तिन भुवन, आनन्दे भरिल, उठिल मंगल सोर।
कहे प्रेमानन्द, एमन गौरांगे, रति ना जन्मिल मोर।।

(ङ)

(यदि) गौरांग नहित, तबे कि हइत, केमने धरित दे?
राधार महिमा, प्रेमरस–सीमा, जगते जानात के??
मधुर वृन्दा–, विपिन–माधुरी–, प्रवेश चातुरी–सार।
बरज–युवती–, भावेर भकति, शकति हइत का'र??
गाओ पुनः पुनः, गौराँगेर गुण, सरल हइया मन।
ए भव–सागरे, एमन दयाल, ना देखि ये एकजन।।
गौरांग बलिया, ना गेनु गलिया, केमने धरिनु दे।
नरहरि–हिया, पाषाण दिया, केमने गड़ियाछे।।

(च)

प्रेमा नामाद्भुतार्थः श्रवणपथगतः कस्य नाम्नां महिम्नः
को वेत्ता कस्य वृन्दावनविपिन–महामाधुरीषु प्रवेशः।
को वा जानाति राधां परमरस–चमत्कार–माधुर्यसीमा-
मेकश्चैतन्यचन्द्रः परमकरुणया सर्वमाविश्चकार।।

(श्रीश्रीचैतन्यचन्द्रामृतम्)

एमन शचीर नन्दन बिने।
'प्रेम' बलि' नाम, अति अद्भुत, श्रुत हइत का'र काणे??
श्रीकृष्णनामेर, स्वगुण महिमा, केवा जानाइत आर?
वृन्दा-विपिनेर, महा मधुरिमा, प्रवेश हइत का'र??
केवा जानाइत, राधार माधुर्य्य, रस–यश चमत्कार?
ता'र अनुभव, सात्त्विक विकार, गोचर छिल वा का'र??
ब्रजे ये–विलास, रास–महारास, प्रेम परकीय तत्त्व।
गोपीर महिमा, व्यभिचारी सीमा, का'र अवगति छिल एत??
धन्य कलि धन्य, निताइ चैतन्य, परम करुणा करि'।
विधि–अगोचर, ये प्रेम–विकार, प्रकाशे जगत–भरि'।।
उत्तम अधम, किछु ना बाछिल, याचिया दिलेक कोल।
कहे प्रेमानन्दे, एमन गौरांगे, अन्तरे धरिया दोल।।

श्रीगौर–महिमा

(6 क)

के जावि के जावि भाइ भवसिन्धु–पार।
धन्य कलियुगेर चैतन्य–अवतार।।
आमार गौरांगेर घाटे अदान–खेया वय।
जड़, अन्ध, आतुर अवधि पार हय।।

हरिनामेर नौकाखानि श्रीगुरु–काण्डारी।
संकीर्त्तन–केरोयाल दु'बाहु पसारि।।
सब जीव हैल पार प्रेमेर बातासे।
पड़िया रहिल **लोचन** आपनार दोषे।।

(ख)

अवतार सार, गोरा–अवतार, केन ना भजिलि ताँरे।
करि' नीरे वास, गेल ना पियास, आपन करम फेरे।।
कन्टकेर तरु, सदाइ सेविलि (मन), अमृत पाइवार आशे।
प्रेम–कल्पतरु, श्रीगौरांग आमार, ताँहारे भाविलि विषे।।
सौरभेर आशे, पलाश शुँकिलि (मन), नाशाते पशिल कीट।
इक्षुदण्ड भावि', काठ चुषिलि (मन), केमने पाइबि मिठ।।
हार बलिया, गलाय परिलि (मन), शमन–किंकर–साप।
शीतल बलिया, आगुन पोहालि (मन), पाइलि बजर ताप।।
संसार भजिलि, श्रीगौरांग भुलिलि, ना शुनिलि साधुर कथा।
इह–परकाल, दु'काल खोयालि (मन), खाइलि आपन माथा।।

(श्रील लोचनदास ठाकुर)

(ग)

गौरांगेर दु'टी पद, जा'र धन सम्पद,
से जाने भकति–रससार।
गौरांगेर मधुर लीला, जा'र कर्णे प्रवेशिला,
हृदय निर्म्मल भेल ता'र।
ये गौरांगेर नाम लय, ता'र हय प्रेमोदय,
ता'रे मुञि जाइ बलिहारि।

गौरांग – गुणेते झुरे, नित्यलीला ता'रे स्फुरे,
से – जन भकति – अधिकारी।।
गौरांगेर संगिगणे, नित्यसिद्ध करि' माने,
से जाय ब्रजेन्द्रसुत – पाश।
श्रीगौड़मण्डल – भूमि, येवा जाने चिन्तामणि,
ता'र हय व्रजभूमे वास।।
गौरप्रेम – रसार्णवे, से तरंगे येवा डुबे,
से राधामाधव – अन्तरंग।
गृहे वा बनेते थाके, 'हा गौरांग' ब'ले डाके,
नरोत्तम मागे ता'र संग।।

वर्णमाला द्वारा श्रीगौर – महिमा

(7 क)

अ, अशेष गुणेर निधि गौरांगसुन्दर।
आ, आनन्दे विभोर सदा प्रेमेर सागर।।
इ, इन्दु जिनि' वदनेर शोभा मनोहर।
ई, ईश्वर, ब्रह्मादि याँ'रे भावे निरन्तर।।
उ, उद्धारिला जग – जने दिया प्रेमधन।
ऊ, ऊन पापी – तापी नाहि कैला विचारण।।
ऋ, ऋण शुधिवारे प्रभु श्रीमती राधार।
ॠ, रीतिमत नदीयाय हैला अवतार।।
लि, लिप्त श्रीगौरांग – तनु श्रीहरिचन्दने।
ली, लीलावली सबे हेरि' हय अचेतने।।
ए, एमन दयालु प्रभु नाहि ह'वे आर।
ऐ, ऐकान्तिक कृष्णभक्ति करिल प्रचार।।

ओ, ओट्रदेशे याइया प्रभु बहु लीला कैल।
औ, औदार्य–गुणेते सार्वभौमे निस्तारिल।।
चतुर्दश स्वरावली ये करे कीर्त्तन।
अचिरे लभये सेइ गौरांग–चरण।।
श्रीजाह्नवा–रामचन्द्र–पद करि' आश।
चतुर्दश स्वरावली गाय प्रेमदास।।

(ख)

क, कलियुगे श्रीकृष्ण–चैतन्य अवतार।
ख, खेलिवार प्रबन्धे कैल खोल–करताल।।
ग, गड़ागड़ि यान प्रभु निज संकीर्त्तने।
घ, घरे घरे हरिनाम देन सर्वजने।।
ङ, उच्चैःस्वरे काँदे प्रभु जीवेर लागिया।
च, चेतन करान जीवे कृष्णनाम दिया।।
छ, छल छल करे आँखि नयनेर जले।
ज, जगत् पवित्र कैल गौर–कलेवरे।।
झ, झल झल मुख येन पूर्ण शशधर।
ञ, एमत त' देखि नाइ दयार सागर।।
ट, टलमल करे अंग भावेते विभोल।
ठ, ठमके ठमके चले बले हरिबोल।।
ड, डोरहि कौपीन क्षीण कटिर उपरे।
ढ, ढलिया ढलिया पड़े गदाधरेर क्रोड़े।।
ण, आन परसंग गोरा ना शुने श्रवणे।
त, तान मान गान रसे मजाइल मने।।
थ, थिर नाहि हय प्रभुर नयनेर जल।

द, दीन हीन जनेरे धरिया देय कोल।।
ध, धोयाइया पूरव पिरीति परसंग।
न, ना जानि काहार भावे हइल त्रिभंग।।
प, प्रेमरसे भासाइल अखिल-संसार।
फ, फुटल श्रीवृन्दावन सुरधुनी-धार।।
ब, ब्रह्मा महेश्वर याँ'रे करे अन्वेषण।
भ, भाविया ना पा'न याँ'रे सहस्त्रलोचन।।
म, मत्त-मातंग-गति मधुर मृदु हास।
य, यशोमती माता याँ'र भुवने प्रकाश।।
र, रतिपति जिनि रूप अति मनोरम।
ल, लीला लावण्य याँ'र अति अनुपम।।
व, वसुदेव-सुत सेइ श्रीनन्दनन्दन।
श, शचीर नन्दन एवे बले सर्वजन।
ष, षड्भुज रूप हैला अत्याश्चर्यमय।
स, सावधान, प्राणनाथ गोरा—रसमय।।
ह, हरि हरि बल भाइ, कर महायज्ञ।
क्ष, क्षितितले जन्मि' केह ना हैय अविज्ञ।।
ए' चौत्रिश पदावली ये करे कीर्त्तन।
दास नरोत्तम मागे ताँहार चरण।।

श्रीगौरसुन्दर के प्रति विज्ञप्ति

(8 क)

गौरांग तुमि मोरे दया ना छाड़िह।
आपन करिया, रांगा चरणे राखिह।।

तोमार चरण लागि सब तेयागिनु।
शीतल चरण पाञा शरण लइनु।।
एकुले ओकुले मुञि, दिनु तिलांजली।
राखिह चरणे मोरे, आपनार बलि।।
वासुदेव घोष कहे चरणे धरिया।
कृपा करि राख मोरे पदछाया दिया।।

(ख)

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य दयासिन्धु।
पतित उद्धार हेतु जय दीनबन्धु।।
जय प्रेमभक्तिदाता, दया कर मोरे।
दन्ते तृण धरि' डाके ए-दास पामरे।।
पूर्वेते साक्षात् यत पातकी तारिला।
से विचित्र नहे याते अवतार कैला।।
मो-हेन पापिष्ठे एबे करह उद्धार।
आश्चर्य दयाल-गुण घुषुक संसार।।
विचार करिले मुञि नहे दयापात्र।
आपन स्वभाव-गुणे करह कृतार्थ।।
विशेष प्रतिज्ञा शुनि' एइ कलियुगे।
एइ भरसाय **राधामोहन** दया मागे।।

(ग)

ओहे, प्रेमेर ठाकुर गोरा।।धु।।
प्राणेर यातना किवा कब, नाथ!
हयेछि आपन-हारा।

कि आर बलिब, ये-काजेर तरे,
एनेछिले नाथ! जगते आमारे,
एतदिन परे कहिते से-कथा
खेदे दुःखे हइ सारा।

तोमार भजने ना जन्मिल रति,
जड़मोहे मत्त सदा दुरमति—
विषयीर काछे थेके थेके आमि
हइनु विषयीपारा।

के आमि, केन ये एसेछि एखाने,
से-कथा कखनो नाहि भावि मने,
कखनो भोगेर, कखनो त्यागेर
छलनाय मन नाचे।

कि गति हइबे कखनो भावि ना,
हरि-भकतेर काछेओ याइ ना,
हरि-विमुखेर कुलक्षण यत
आमातेइ सब आछे।

श्रीगुरु-कृपाय भेंगेछे स्वपन,
बुझेछि एखन तुमिइ आपन,
तव निज-जन परम-बान्धव
संसार कारागारे।

आन ना भजिब भक्त-पद
बिनु, रातुल चरणे शरण लइनु,
उद्धारह नाथ! मायाजाल ह'ते
ए दासेर केशे ध'रे।

पातकीरे तुमि कृपा कर नाकि?
जगाइ – माधाइ छिल ये पातकी,
ताहाते जेनेछि, —प्रेमेर ठाकुर!
पातकीरेओ तार तुमि।
आमि भक्तिहीन, दीन, अकिञ्चन—
अपराधी – शिरे दाओ दु'चरण,
तोमार अभय श्रीचरणे चिर –
शरण लइनु आमि।

(श्रीसज्जनतोषणी)

(घ)

पहुँ मोर गौरांग गोसाञी।
एइ कृपा कर येन तोमार गुण गाइ।।
ये से कुले जन्म हौक, ये से देह पाञा।
तोमार भक्तसंगे फिरि तोमार गुण गाइया।।
चिरकाल आशा प्रभु आछये हियाय।
तोमार निगूढ़ लीला स्फुरये आमाय।।
तोमार नामे सदा रुचि हौक मोर।
तोमार गुणगाने येन सदाइ हइ भोर।।
तोमार गुण गाइते शुनिते भक्त – संगे।
सात्विक विकार कि हइवे मोर अंगे??
अश्रु – कम्प – पुलके पूरिबे सब तनु।
भूमिते पड़िबे प्रेमे अगेयान जनु।।
ये से कर प्रभु, तुमि एकमात्र गति।
कहये **वैष्णवदास** तोमाय रहुक मति।।

(ङ)

कबे श्रीचैतन्य मोरे करिबेन दया।
कबे आमि पाइब वैष्णव पद–छाया।।
कबे आमि छाड़िब ए विषयाभिमान।
कबे विष्णुजने आमि करिब सम्मान।।
गलवस्त्र कृताञ्जलि वैष्णव–निकटे।
दन्ते तृण करि' दाँड़ाइब निष्कपटे।।
काँदिया काँदिया जानाइब दुःखग्राम।
संसार–अनल हैते मागिब विश्राम।।
शुनिया आमार दुःख वैष्णव ठाकुर।
आमा' लागि' कृष्णे आवेदिबेन प्रचुर।।
वैष्णवेर आवेदने कृष्ण दयामय।
ए हेन पामर–प्रति ह'बेन सदय।।
विनोदेर निवेदन वैष्णव–चरणे।
कृपा करि' संगे लह एइ अकिञ्चने।।

(च)

आमि त' दुर्जन अति सदा दुराचार।
कोटि कोटि जन्मे मोर नाहिक उद्धार।।
ए हेन दयालु केवा ए जगते आछे।
एमत पामरे उद्धारिया ल'वे काछे।।
शुनियाछि, श्रीचैतन्य पतितपावन।
अनन्त–पातकी जने करिला मोचन।।
एमत दयार सिन्धु कृपा वितरिया।
कबे उद्धारिबे मोरे श्रीचरण दिया??

एइबार बुझा या'वे करुणा तोमार।
यदि ए पामर–जने करिवे उद्धार।।
कर्म नाइ, ज्ञान नाइ, कृष्णभक्ति नाइ।
तबे बल' किरूपे ओ श्रीचरण पाइ।।
भरसा आमार मात्र करुणा तोमार।
अहैतुकी से करुणा वेदेर विचार।।
तुमि त' पवित्र–पद, आमि दुराशय।
केमने तोमार पदे पाइव आश्रय??
काँदिया काँदिया बले ए पतित छार।
'पतितपावन' नाम प्रसिद्ध तोमार।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

श्रीगौरचन्द्र से लालसामयी प्रार्थना

(8 क)

हा हा मोर गौरकिशोर।
कबे दया करि', श्रीगोद्रुमवने, देखा दिवे मनःचोर।।
आनन्द–सुखद–, कुञ्जेर भितरे, गदाधरे वामे करि'।
काञ्चन–वरण, चाँचर चिकुर, नटन सुवेश धरि'।।
देखिते देखिते, श्रीराधा–माधव, रूपेते करिवे आला।
सखीगण–संगे, करिवे नटन, गलेते मोहनमाला।।
अनंग–मञ्जरी, सदय हइया, ए दासी–करेते धरि'।
दुँहे निवेदिवे, दुँहार माधुरी, हेरिब नयन भरि'।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

कबे आहा गौरांग बलिया।

भोजन-शयने, देहेर यतन, छाड़िब विरक्त हञा।।
नवद्वीप-धामे, नगरे नगरे, अभिमान परिहरि'।
धामवासी-घरे, माधुकरी ल'व, खाइब उदर भरि'।।
नदीतटे गिया, अञ्जली अञ्जली, पिव प्रभु-पदजल।
तरुतले पड़ि', आलस्य त्यजिव, पाइब शरीरे बल।।
काकुति करिया, 'गौर-गदाधर', 'श्रीराधामाधव'-नाम।
काँदिया काँदिया, डाकि' उच्चरवे, भ्रमिव सकल धाम।।
वैष्णव देखिया, पड़िव चरणे, हृदयेर बन्धु जानि'।
वैष्णव ठाकुर 'प्रभुर कीर्त्तन', देखाइवे दास मानि'।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

श्रीगौरांग-निष्ठा

(1 क)

आरे भाइ! भज मोर गौरांग-चरण।

ना भजिया मैनु दुखे, डुबि' गृह-विषकूपे, दग्ध कैल ए पाँच पराण।।
तापत्रय-विषानले, अहर्निशि हिया ज्वले, देह सदा हय अचेतन।
रिपुवश इन्द्रिय हैल, गोरापद पाशरिल, विमुख हइल हेन धन।।
हेन गौर दयामय, छाड़ि' सब लाज-भय, कायमने लह रे शरण।
परम दुर्मति छिल, तारे गोरा उद्धारिल, ताँ'रा हइल पतितपावन।।
गोरा द्विज-नटराजे, बान्धह हृदय-माझे, कि करिबे संसार-शमन।
नरोत्तमदासे कहे, गोरा-सम केह नहे, ना भजिते देय प्रेमधन।।

(ख)

भाइरे! भज गोराचाँदेर चरण।

ए तिन भुवने आर, दयार ठाकुर नाइ, गोरा बड़ पतितपावन।।
हेन अवतारे या'र, नहिल भकति लेश, बल ता'र कि हबे उपाय।
रविर किरणे या'र, आँखि परसन्न नैल, विधाता वञ्चित कैल ताय।।
हेन–जलद काय, प्रेमधारा वरिषय, करुणामय अवतार।
गोरा हेन प्रभु पेये, ये–जन शीतल नैल, कि जानि केमन मन ता'र।।
कलि–भव–सागरे, निज–नाम भेला करि', आपने गौरांग करे पार।
तबे ये डुबिया मरे, के ता'रे उद्धार करे, ए **प्रेमानन्देर** परिहार।।

(ग)

कलिघोर तिमिरे, गरासल जगजन, धरम करम रहु दूर।
असाधने चिन्तामणि, विधि मिलाओल आनि', गोरा बड़ दयार ठाकुर।।
भाइरे भाइ, गोरा–गुण कहन ना याय।
कत शत आनन, कत चतुरानन, वरणिया ओर नाहि पाय।।
चारिवेद षड्–, दरशन पड़ि', से यदि गौरांग नाहि भजे।
वृथा ता'र अध्ययन, लोचनविहीनजन, दरपणे अन्धे किवा काजे??
वेद विद्या दुइ, किछुइ ना जानत, से यदि गौरांग जाने सार।
नयनानन्द भणे, सेइ त' सकलि जाने, सर्वसिद्धि करतले ता'र।।

आक्षेप

(10 क)

गौरा पँहु ना भजिया मैनु।
प्रेम–रतन–धन हेलाय हाराइनु।।
अधने यतन करि' धन तेयागिनु।

आपन करम–दोषे आपनि डुबिनु।।
सत्संग छाड़ि' कैनु असते विलास।
ते–कारणे लागिल ये कर्मबन्ध–फाँस।।
विषय विषम विष सतत खाइनु।
गौरकीर्तन–रसे मगन ना हैनु।।
केन वा आछये प्राण कि सुख पाइया।
नरोत्तमदास केन ना गेल मरिया।।

(ख)

आरे मोर आरे मोर गौरांग गोसाञी।
दीने दया तोमा बिना करे केह नाइ।।
एइ त' ब्रह्माण्ड–माझे यत रेणु–प्राय।
के गणिवे पाप मोर गणन ना याय।।
मनुष्य दुर्लभ जन्म ना हइवे आर।
तोमा ना भजिया कैनु भाँडेर आचार।।
हेन प्रभु ना भजिनु कि गति आमार।
आपनार मुखे दिलाम जव्लन्त अंगार।।
केन वा आछये प्राण कि सुख लागिया।
वल्लभदासिया केन ना याय मरिया।।

(ग)

श्रीकृष्णचैतन्य, बलराम नित्यानन्द, पारिषद–संगे अवतार।
गोलोकेर प्रेमधन, सबारे याचिञा दिल, ना लइनु मुञि दुराचार।।
आरे पामर मन, मरमे रहल बड़ शेल।
संकीर्त्तन–प्रेम–बादले, सब हिया डुबल, मोहे विधि वञ्चित कैल।।

श्रीगुरु – वैष्णवपद, कल्पतरु – छाया – पाञा, सब जीव ताप पासरिल।
मुञि अभागिया विष – , विषये मातिया रइनु, हेन युगे निस्तार ना हैल।।
आगुने पुड़िया मरों, जले परवेश करों, विष खाञा मरों मो पापिया।
एइ मत करि' यदि, मरण ना करे विधि, प्राण रहे कि सुख लागिया।।
ए हेन गौरांग – गुण, ना करिनु श्रवण, हाय हाय, करि हा हुताश।
'हरे कृष्ण' – महामन्त्र, मुख भरि' ना लइलाम, जीवन्मृत **गोविन्ददास**।।

श्रीगौर – नित्यानन्द से विज्ञप्ति

(11 क)

श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द दुइ प्रभु।
एइ कृपा कर येन ना पासर कभु।।
हइल पापिष्ठ – जन्म ना हइल तखने।
वञ्चित हइनु सेइ सुख – दरशने।।
तथापिह एइ कृपा कर महाशय।
ए सब विहार मोर रहुक हृदय।।
जय जय श्रीचैतन्य, नित्यानन्द राय।
तोमार चरण – धन रहुक हियाय।।
सपार्षदे तुमि नित्यानन्द यथा यथा।
कृपा कर मुञि येन भृत्य हइ तथा।।
संसारेर पार हञा भक्तिर सागरे।
ये डुबिबे, से भजुक निताइचाँदेरे।।
हेन दिन हइवे चैतन्य – नित्यानन्द।
देखिव वेष्टित कि सकल भक्तवृन्द।।
श्रीचैतन्य – नित्यानन्दचाँद पहुँ जान।
वृन्दावनदास तछु पदयुगे गान।।

(ख)

परम करुण, पँहु दुइजन, निताइ गौरचन्द्र।
सब अवतार–, सार शिरोमणि, केवल आनन्द – कन्द।।
भज भज भाई, चैतन्य – निताइ, सुदृढ़ विश्वास करि'।
विषय छाड़िया, से – रसे मजिया, मुखे बल हरि हरि।।
देख ओरे भाई, त्रिभुवने नाइ, एमन दयाल दाता।
पशु पाखी झुरे, पाषाण विदरे, शुनि' याँ'र गुणगाथा।।
संसारे मजिया, रहिले पड़िया, से – पदे नहिल आश।
आपन करम, भुञ्जाय शमन, कहये लोचनदास।।

(ग)

निताइ चैतन्य दोंहे बड़ अवतार।
एमन दयाल दाता ना हइवे आर।।
म्लेच्छ – चण्डाल – निन्दुक – पाषण्डादि यत।
करुणामय उद्धार करिला शत शत।।
हेन अवतारे मोर किछुइ ना हैल।
हायरे दारुण प्राण कि सुखे रहिल।।
यत यत अवतार हइल भुवने।
हेन अवतार भाइ ना हय कखने।।
हेन प्रभुर पादपद्म ना करि भजन।
हाते तुलि' मुखे विष करिनु भक्षण।।
गौर – कीर्त्तन – रसे जगत डुबिल।
हायरे अभागार बिन्दु परश नहिल।।
काँदे कृष्णदास केश छिँड़ि' निज करे।
धिक् धिक् अभागिया केन नाहि मरे।।

(घ)

जीवेर भाग्ये अवनी विहरे दोन भाइ।
भुवनमोहन गोराचाँद आर निताइ।।
कलियुगे जीव यत छिल अचेतन।
हरिनामामृत दिया करिला चेतन।।
हेन अवतार भाइ, कभु शुनि नाइ।
पातकी उद्धार कैला घरे घरे याइ।।
हेन अवतार भाइ नाहि कोन युगे।
कोन् अवतारे बल पापीर पाप मागे??
रुधिर पड़िल अंगे खाइया प्रहार।
याचि प्रेम दिया ता'रे करिला उद्धार।।
नाम–प्रेम–सुधाते भरिल त्रिभुवन।
एकेला वञ्चित भेल ए दास लोचन।।

(ङ)

एइबार करुणा कर चैतन्य–निताइ।
मो–सम पातकी आर त्रिभुवने नाइ।।
मुञि अति मूढ़मति मायार नफर।
एइ सब पापे मोर तनु जर जर।।
म्लेच्छ अधम यत छिल अनाचारी।
ता–सबा' हइते मोर पाप अति भारी।।
अशेष पापेर पापी जगाइ–माधाइ।
ता–दोंहारे उद्धारिले तोमरा दु'टी भाइ।।
लोचन बले मो–अधमे दया नैल केने।
तुमि ना करिले दया के करिबे आने।।

(च)

कबे ह'बे बल से-दिन आमार।
(आमार) अपराध घुचि', शुद्ध नामे रुचि,
कृपा-बले ह'बे हृदये सञ्चार।।
तृणाधिक हीन, कबे निज मानि',
सहिष्णुता-गुण हृदयेते आनि'।
सकले मानद, आपनि अमानी,
ह'ये आस्वादिव नाम-रस-सार।।
धन जन आर, कविता सुन्दरी,
बलिब ना चाहि देह सुखकरी।
जन्मे जन्मे दाओ, ओहे गौरहरि,
अहैतुकी भक्ति चरणे तोमार।।
(कबे) करिते श्रीकृष्ण-, नाम उच्चारण,
पुलकित देह गद्गद वचन।
वैवर्ण्य-वेपथु, ह'बे संघटन,
निरन्तर नेत्रे ब'वे अश्रुधार।।
कबे नवद्वीपे, सुरधुनी-तटे,
गौर-नित्यानन्द बलि' निष्कपटे।
नाचिया गाहिया, बेड़ाइब छुटे,
बातुलेर प्राय छाड़िया विचार।।
कबे नित्यानन्द, मोरे करि' दया,
छाड़ाइबे मोर विषयेर माया।
दिया मोरे निज- चरणेर छाया,
नामेर हाटेते दिबे अधिकार।।

किनिब, लुटिब, हरि–नाम–रस,
नामरसे माति' हइब विवश।
रसेर रसिक– चरण परश,
करिया मजिब रसे अनिवार।।
कबे जीवे दया, हइबे उदय,
निजसुख भुलि' सुदीन–हृदय।
भकतिविनोद, करिया विनय,
श्रीआज्ञा टहल करिबे प्रचार।।

(छ)

ए घोर–संसारे, पड़िया मानव, ना पाय दुःखेर शेष।
साधुसंग करि', हरि–भजे यदि, तबे अन्त हय क्लेश।।
संसार–अनले, ज्वलिछे हृदय, अनले वाड़ये अनल।
अपराध छाड़ि', लय कृष्णनाम, अनले पड़ये जल।।
निताइ–चैतन्य, चरण–कमले, आश्रय लइल येइ।
कृष्णदास बले, जीवन–मरणे, आमार आश्रय सेइ।।

श्रीगौर–नित्यानन्द से लालसामयी प्रार्थना

(12 क)

'गौरांग' बलिते हबे पुलक शरीर।
'हरि हरि' बलिते नयने ब'वे नीर।।
आर कबे निताइचाँदेर करुणा हइबे।
संसार–वासना मोर कबे तुच्छ ह'बे।।
विषय छाड़िया कबे शुद्ध ह'बे मन।
कबे हाम हेरब श्रीवृन्दावन।।

रूप-रघुनाथ-पदे हइबे आकुति।
कबे हाम बुझव से युगल-पीरिति।।
रूप-रघुनाथ-पदे रहु मोर आश।
प्रार्थना करये सदा **नरोत्तमदास**।।

(ख)

कबे ह'बे हेन दशा मोर।
त्यजि' जड़-आशा, विविध बन्धन, छाड़िब संसार घोर।।
वृन्दावनाभेदे, नवद्वीप-धामे, बाँधिब कुटीरखानि।
शचीर नन्दन-, चरण आश्रय, करिब सम्बन्ध मानि'।।
जाह्नवी-पुलिने, चिन्मय-कानने, बसिया विजन-स्थले।
कृष्णनामामृत, निरन्तर पिब, डाकिब 'गौरांग' ब'ले।।
हा-गौर-निताइ, तोरा दु'टी भाइ, पतितजनेर बन्धु।
अधम पतित, आमि हे दुर्जन, हओ मोरे कृपासिन्धु।।
काँदिते काँदिते, षोलक्रोश-धाम, जाह्नवी उभय-कूले।
भ्रमिते भ्रमिते, कभु भाग्यफले, देखि किछु तरुमूले।।
हा हा मनोहर, कि देखिनु आमि, बलिया मूर्च्छित ह'ब।
सम्वित् पाइया, काँदिब गोपने, स्मरि' दुँहु कृपा-लव।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ग)

हा हा कबे गौर-निताइ।
ए पतित जने, उरु कृपा करि', देखा दिवे दु'टी भाइ।।
दुहुँ कृपा-बले, नवद्वीप-धामे, देखिव ब्रजेर शोभा।
आनन्द-सुखद-, कुञ्ज मनोहर, हेरिव नयन-लोभा।।

ताहार निकटे, श्रीललिता-कुण्ड, रत्नवेदी कत शत।
यथा राधाकृष्ण, लीला विस्तारिया, विहरेन अविरत।।
सखीगण यथा, लीलार सहाय, नाना-सेवा-सुख पाय।
ए दासी तथाय, सखीर आज्ञाते, कार्ये इति-उति धाय।।
मालतीर माला, गाँथिया आनिव, दिव तबे सखी-करे।
राधाकृष्ण-गले, सखी पराइवे नाचिव आनन्दभरे।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

श्रीगौर-नित्यानन्द निष्ठा

(13 क)

धन मोर नित्यानन्द, पति मोर गौरचन्द्र, प्राण मोर युगलकिशोर।
अद्वैत-आचार्य बल, गदाधर मोर कुल, नरहरि विलसइ मोर।।
वैष्णवेर पदधूलि, ताहे मोर स्नानकेलि, तर्पण मोर वैष्णवेर नाम।
विचार करिया मने, भक्तिरस आस्वादने, मध्यस्थ श्रीभागवत-पुराण।।
वैष्णवेर उच्छिष्ट, ताहे मोर मनोनिष्ठ, वैष्णवेर नामेते उल्लास।
वृन्दावने चौतारा, ताहे मोर मनोघेरा, कहे दीन **नरोत्तमदास**।।

(ख)

निताइ-गौर-नाम, आनन्देर धाम, येइ जन नाहि लय।
ता'रे यमराय, ध'रे ल'ये याय, नरके डुबाय ताय।।
तुलसीर हार, ना परे ये छार, यमालये वास ता'र।
तिलक धारण, ना करे ये जन, वृथाय जनम ता'र।।
ना लय हरिनाम, विधि ता'रे वाम, पामर पाषण्डमति।
वैष्णव-सेवन, ना करे ये-जन, कि ह'बे ताहार गति।।

गुरुमन्त्र सार, कर एइबार, ब्रजेते हइबे वास।
तमोगुण या'बे, सत्त्व-गुण पा'बे, हइबे कृष्णेर दास।।
ए दास **लोचन**, बले अनुक्षण, (निताइ) गौरगुण गाओ सुखे।
एइ रसे या'र, रति ना हइल, चूण-कालि ता'र मुखे।।

सगण श्रीगौर-महिमा

(14 क)

ए'लो गौर-रस-नदी कादम्बिनी ह'ये।
भासाइल गौड़देश प्रेमवृष्टि दिये।।
नित्यानन्द-राय ताहे मारुत सहाय।
याँहा नाहि प्रेमवृष्टि, ताँहा ल'ये याय।
हुड़ हुड़-शब्दे आइल श्रीअद्वैतचन्द्र।
जल-रसधारा ताहे राय-रामानन्द।।
चौषट्टि महान्त आइल मेघे शोभा करि'।
श्रीरूप-सनातन ताहे हइल बिजुरि।।
कृष्णदास कविराज रसेर भाण्डारी।
यतने राखिल प्रेम हेमकुम्भ भरि'।।
एवे सेइ प्रेम ल'ये जगजने दिल।
ए-दास **लोचन**-भाग्ये बिन्दु ना मिलिल।।

(ख)

नदीयार घाटे भाइ कि अद्भुत तरी।
निताइ—गलुइया ता'ते चैतन्य—काण्डारी।।
दुइ रघुनाथ, श्रीजीव, गोपाल, श्रीरूप, सनातन।
पारेर नौकाय एँरा दाँड़ि छयजन।।

'के यावि भाइ भवपारे'—बलि' निताइ डाके।
खेयार कड़ि बिना पार करे या'के ता'के।।
आतुरे कातर बिना के पार करे भाइ?
किन्तु पार करे सभे चैतन्य–निताइ।।
कृष्णदास बले—भाइ बल' 'हरि हरि'।
निताइ–चैतन्येर घाटे नाहि लागे कड़ि।।

सगण श्रीगौरचरणों में प्रार्थना

(15 क)

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य–नित्यानन्द।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौरभक्तवृन्द।।
कृपा करि' सबे मिलि करह करुणा।
अधम पतितजने ना करिह घृणा।।
ए–तिन संसार–माझे तुया–पद सार।
भाविया देखिनु मने—गति नाहि आर।।
से पद पा'वार आशे खेद उठे मने।
व्याकुल हृदये सदा करिये क्रन्दने।।
किरूपे पाइव, किछु ना पाइ सन्धान।
प्रभु लोकनाथ–पद नाहिक स्मरण।।
तुमि त' दयाल प्रभु, चाह एकबार।
नरोत्तम–हृदयेर घुचाओ अन्धकार।।

(ख)

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु दया कर मोरे।
तोमा' बिना के दयालु जगत्–संसारे।।

पतितपावन-हेतु तव अवतार।
मो सम पतित प्रभु ना पाइबे आर।।
हा हा प्रभु नित्यानन्द प्रेमानन्दसुखी।
कृपावलोकन कर आमि बड़ दुःखी।।
दया कर सीतापति अद्वैत गोसाञि।
तव कृपाबले पाइ चैतन्य-निताइ।।
हा हा स्वरूप, सनातन, रूप, रघुनाथ।
भट्टयुग, श्रीजीव, हा प्रभु लोकनाथ।।
दया कर श्रीआचार्य प्रभु श्रीनिवास।
रामचन्द्र-संग मागे **नरोत्तमदास**।।

(ग)

जयरे जयरे मोर गौरांग राय।
जय नित्यानन्दचन्द्र, जय गौर-भक्तवृन्द, सीतानाथ देह' पदछाय।।
जय जय मोर, आचार्य ठाकुर, अगति-पतित-गति।
करुणा करिया, स्वचरणे राख, ए मोर पापिष्ठ-मति।।
तोमार चरण, भरसा केवल, ना देखि आर उपाय।
मोर दुष्ट मने, राख श्रीचरणे, एइ मागो तुया पाय।।
सदा मनोरथ, ये किछु आमार, सकल जानह तुमि।
कहे **वंशीदास**, पूर सब आश, कि आर कहिब आमि।।

(घ)

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य सर्वाश्रय।
जय श्रीस्वरूप-दामोदर प्रेममय।।

जय श्रील सनातन कृपालु–हृदय।
जय श्रील रूप रस–सम्पद–निलय।।
जय श्रीगोपालभट्ट करुणा–सागर।
जय रघुनाथ–युग कृपा–पूर्णान्तर।।
जय श्रीजीव गोसाञि दया कर मोरे।
दन्ते तृण धरि' कहे ए दीन पामरे।।
प्रतिज्ञा आछये एइ घोर कलिकाले।
उद्धार करिवे महापातकी सकले।।
विचार करह यदि मोर अपराध।
ए **राधामोहनेर** तवे वड़ परमाद।।

(ङ)

जय जय नित्यानन्दाद्वैत गौरांग।
निताइ गौरांग जय, जय निताइ गौरांग।।
(जय) यशोदानन्दन शचीसुत गौरचन्द्र।
(जय) रोहिणीनन्दन बलराम नित्यानन्द।।
(जय) महाविष्णुर अवतार श्रीअद्वैतचन्द्र।
(जय) गदाधर, श्रीवासादि गौरभक्तवृन्द।।
(जय) स्वरूप, रूप, सनातन, राय–रामानन्द।
(जय) खण्डवासी नरहरि, मुरारि, मुकुन्द।।
(जय) पंचपुत्र संगे नाचे राय–भवानन्द।
(जय) तिन पुत्र संगे नाचे सेन–शिवानन्द।।
(जय) द्वादश गोपाल आर चौषट्टि महान्त।
(तोमरा) कृपा करि' देह गौर–चरणारविन्द।।

सपार्षद श्रीगौर-विरह-विलाप

(16 क)

ये आनिल प्रेमधन करुणा प्रचुर।
हेन प्रभु कोथा' गेला आचार्य ठाकुर।।
काँहा मोर स्वरूप-रूप, काँहा सनातन।
काँहा दास-रघुनाथ पतित-पावन।।
काँहा मोर भट्टयुग, काँहा कविराज।
एककाले कोथा' गेला गोरा नटराज।।
पाषाणे कुटिब माथा, अनले पशिब।
गौरांग गुणेर निधि कोथा' गेले पाब।।
से-सब संगीर संगे ये कैल विलास।
से-संग ना पाइया काँदे नरोत्तमदास।।

(ख)

गौरांगेर सहचर, श्रीवासादि गदाधर,
नरहरि मुकुन्द मुरारि।
संगे स्वरूप रामानन्द, हरिदास प्रेम-कन्द,
दामोदर परमानन्द पुरी।।
ये-सब करये लीला, शुनिते गलये शिला,
ताहा मुञि ना पाइनु देखिते।
तखन नहिल जन्म, एवे भेल भवबन्ध,
से ना शेल रहि' गेल चिते।।
प्रभु सनातन रूप, रघुनाथ भट्टयुग,
भूगर्भ श्रीजीव लोकनाथ।

ए सकल प्रभु मिलि', ये–सब करिला केलि,
वृन्दावने भक्तगण–साथ।।
सबे हैला अदर्शन, शून्य भेल त्रिभुवन,
अन्ध हैल सवाकार आँखि।
काहारे कहिब दुःख, ना देखाओ छार मुख,
आछि येन मरा पशु–पाखी।।
श्रीआचार्य श्रीनिवास, आछिनु याँहार पाश,
कथा शुनि' जुड़ाइत प्राण।
तेंहो मोरे छाड़ि' गेला, रामचन्द्र ना आइला,
दुःखे जिउ करे आनचान।।
ये मोर मनेर व्यथा, काहारे कहिब कथा,
ए छार जीवने नाहि आश।
अन्न–जल विष खाइ, मरिया नाहिक याइ,
धिक् धिक् नरोत्तमदास।।

स्वाभीष्ट–लालसात्मक–प्रार्थना

(17 क)

श्रीरूपमञ्जरी–पद, सेइ मोर सम्पद,
सेइ मोर भजन–पूजन।
सेइ मोर प्राणधन, सेइ मोर आभरण,
सेइ मोर जीवनेर जीवन।।
सेइ मोर रसनिधि, सेइ मोर वांछासिद्धि,
सेइ मोर वेदेर धरम।
सेइ व्रत, सेइ तपः, सेइ मोर मन्त्र–जप,
सेइ मोर धरम–करम।।

अनुकूल ह'बे विधि, से–पदे हइबे सिद्धि,
निरखिब ए–दुइ नयने।
से–रूप–माधुरीराशि, प्राणकुवलय–शशी,
प्रफुल्लित ह'बे निशिदिने।।
तुया अदर्शन–अहि, गरले जारल देही,
चिरदिन तापित जीवन।
हा हा प्रभु कर दया, देह मोरे पदछाया,
नरोत्तम लइल शरण।।

(ख)

हरि हरि, कबे मोर हइबे सुदिन।
भजिब श्रीराधाकृष्ण हइया प्रेमाधीन।।
सुयन्त्रे मिशाइया गा'ब सुमधुर तान।
आनन्दे करिब दुँहार रूप–गुण–गान।।
'राधिका–गोविन्द' बलि' कांदिब उच्चैःस्वरे।
भिजिबे सकल अंग नयनेर नीरे।।
एइबार करुणा कर रूप–सनातन।
रघुनाथदास मोर श्रीजीव जीवन।।
एइबार करुणा कर, ललिता–विशाखा।
सख्यभावे श्रीदाम–सुबल–आदि सखा।।
सबे मिलि' कर दया पूरुक मोर आश।
प्रार्थना करये सदा **नरोत्तमदास**।।

सगण श्रीगौर – कृष्ण के प्रति दैन्यबोधिका प्रार्थना

(18 क)

हरि हरि! विफले जनम गोङाइनु।
मनुष्यजनम पाइया, राधाकृष्ण ना भजिया,
जानिया सुनिया विष खाइनु।।
गोलोकेर प्रेमधन, हरिनाम – संकीर्तन,
रति ना जन्मिल केने ताय।
संसार – विषानले, दिवानिशि हिया ज्वले,
जुड़ाइते ना कैनु उपाय।।
ब्रजेन्द्रनन्दन येइ, शचीसुत हैल सेइ,
बलराम हइल निताइ।
दीन हीन यत छिल, हरिनामे उद्धारिल,
ता'र साक्षी जगाइ – माधाइ।।
हा हा प्रभु नन्दसुत, वृषभानु – सुतायुत,
करुणा करह एइबार।
नरोत्तमदास कय, ना ठेलिओ रांगापाय,
तोमा बिना के आछे आमार।।

(ख)

हरि हरि! बड़ शेल मरमे रहिल।
पाइया दुर्लभ तनु, श्रीकृष्णभजन बिनु,
जन्म मोर विफल हइल।।
ब्रजेन्द्रनन्दन हरि, नवद्वीपे अवतरि',
जगत् भरिया प्रेम दिल।
मुञि से पामर – मति, विशेषे कठिन अति,

तेंइ मोरे करुणा नहिल।।

स्वरूप, सनातन, रूप, रघुनाथ भट्टयुग,

ताहाते ना हैल मोर मति।

दिव्य–चिन्तामणि–धाम, वृन्दावन हेन स्थान,

सेइ धामे ना कैनु वसति।।

विशेष विषये मति, नहिल वैष्णवे रति,

निरन्तर खेद उठे मने।

नरोत्तमदास कहे, जीवार उचित नहे,

श्रीगुरुवैष्णव–सेवा विने।।

(ग)

हरि हरि! कि मोर करमगति मन्द।

ब्रजे राधाकृष्णपद, ना भजिनु तिल–आध,

ना बुझिनु रागेर सम्बन्ध।।

स्वरूप, सनातन, रूप, रघुनाथ भट्टयुग,

भूगर्भ, श्रीजीव, लोकनाथ।

इहाँ सबार पादपद्म, ना सेविनु तिल–आध,

आर किसे पूरिवेक साध।।

कृष्णदास कविराज, रसिक–भकत–माझ,

येहों कैल चैतन्य–चरित।

गौर–गोविन्द–लीला, शुनिते गलये शिला,

ताहाते ना हैल मोर चित।।

से–सब भकत–संग, ये करिल ता'र संग,

ता'र संगे केने नहिल वास।

कि मोर दुःखेर कथा, जनम गोङानु वृथा,

धिक् धिक् नरोत्तमदास।।

(घ)

हरि हरि! कि मोर करम अनुरत।
विषये कुटिलमति, सत्संगे ना हैल रति,
किसे आर तरिवार पथ।।
स्वरूप, सनातन रूप, रघुनाथ, भट्टयुग,
लोकनाथ सिद्धांतसागर।
शुनिताम से-सब कथा, घुचित मनेर व्यथा,
तवे भाल हइत अन्तर।।
यखन गौर-नित्यानन्द, अद्वैतादि भक्तवृन्द,
नदीया-नगरे अवतार।
तखन ना हइल जन्म, एवे देहे किवा कर्म,
मिछामात्र वहि' फिरि भार।।
हरिदास-आदि बुले, महोत्सव आदि करे,
ना हेरिनु से सुख-विलास।
कि मोर दुःखेर कथा, जनम गोङानु वृथा,
धिक् धिक् **नरोत्तमदास**।।

सिद्धि-लालसा

(19)

कबे गौर-वने, सुरधुनी-तटे, 'हा राधे, हा कृष्ण' बले।
काँदिया बेड़ा'व, देह-सुख छाड़ि', नाना लता-तरुतले।।
श्वपच-गृहेते, मागिया खाइब, पिब सरस्वती-जल।
पुलिने पुलिने, गड़ागड़ि दिब, करि' कृष्ण-कोलाहल।।
धामवासी-जने, प्रणति करिया, मागिब कृपार लेश।
वैष्णव-चरण, रेणु गाय माखि', धरि' अवधूत-वेश।।

गौड़ – ब्रज – जने, भेद ना देखिब, हइब बरजवासी।
धामेर स्वरूप, स्फुरिबे नयने, हइब राधार दासी।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

श्रीराधिका – रूप – गुण – वर्णन

ए तोर बालिका, चाँदेर कलिका, देखिया जुड़ाय आँखि।
हेन मने लये, सदाइ हृदये, पसरा करिया राखि।।
शुन वृषभानु प्रिये!
किहेन करिया, कोलेते रेखेछ, ए हेन सोनार झिये।।
कमल जिनिया, वदन सुन्दर, मुखे हाँसि आछे आधा।
गणके ये – नाम, से – नाम राखुक, आमरा राखिलाम राधा।।
स्वरूप लक्षण, अति विलक्षण, तुलना दिव ये किये।
महापुरुषेर, प्रेयसी हइवे, सोङरिवे यदि जिये।।
दुहिता बलिया, दुःख ना भाविह, एहो उद्धारिवे वंश।
ज्ञानदास कहे, शुनेछि कमला, इहार अंशेर अंश।।

श्रीराधाष्टक

1 (क)

(श्रीराधातत्त्व)

"अनाराध्य राधा – पदाम्भोज – रेणु –
मनाश्रित्य वृन्दाटवीं तत्पदांकाम्।
असम्भाष्य तद्भाव – गम्भीरचित्तान्
कुतः श्यामसिन्धु – रसस्यावगाहः।।"

(श्रीरघुनाथ दास गोस्वामी)

राधिकाचरण-पद्म, सकल श्रेयेर सद्म,
यतने ये नाहि आराधिल।
राधा-पदांकित-धाम, वृन्दावन या'र नाम,
ताहा ये ना आश्रय करिल।।
राधिकाभाव-गंभीर- चित्त येवा महाधीर,
गण-संग ना कैल जीवने।
केमने से श्यामानन्द, रससिन्धु-स्नानानन्द,
लभिबे बुझह एकमने।।

राधिका उज्ज्वल-रसेर आचार्य
राधामाधव - शुद्धप्रेम विचार्य।।
ये धरिल राधापद परम यतने।
से पाइल कृष्णपद अमूल्यरतने।।
राधापद बिना कभु कृष्ण नाहि मिले।
राधार दासीर कृष्ण, सर्ववेदे बले।।

छोड़त धन-जन, कलत्र-सुत-मित, छोड़त करम-गेयान।
राधा पदपंकज-, मधुरत-सेवन, **भकतिविनोद** परमाण।।

(ख)

विरजार पारे, शुद्धपरव्योम-धाम।
तदुपरि श्रीगोकुल-'वृन्दारण्य'-नाम।।

वृन्दावन चिन्तामणि, चिदानन्द-रत्नखनि,
चिन्मय अपूर्व-दरशन।
ताँहि माझे चमत्कार, कृष्ण वनस्पति-सार,
नीलमणि तमाल येमन।।
ताँहि एक स्वर्णमयी, लता सर्वधाम-जयी,
उठियाछे परमपावनी।

ह्लादिनी-शक्तिर सार, 'महाभाव' नाम या'र,
त्रिभुवनमोहन-मोहिनी।।
'राधा'-नामे परिचित, तुषिया गोविन्द-चित,
विराजये परम-आनन्दे।
सेइ लता-पत्र-फुल, ललितादि सखीकुल,
सबे मिलि' वृक्षे दृढ़ बान्धे।।
लतार परशे प्रफुल्ल तमाल।
लता छाड़ि' नाहि रहे कोनकाल।।
तमाल छाड़िया लता नाहि बाँचे।
से लता-मिलन सदाकाल याचे।।
भकतिविनोद मिलन दोंहार।
ना चाहे कखन विना किछु आर।।

(ग)

(रूप-गुण-वर्णन)

रमणी-शिरोमणि, वृषभानु-नन्दिनी, नीलवसन-परिधाना।
छिन्न-पुरट जिनि', वर्ण-विकाशिनी बद्धकवरी हरिप्राणा।।
आभरण-मण्डिता, हरिरस-पण्डिता, तिलक-सुशोभित-भाला।
कञ्चुलिकाच्छादिता, स्तनमणि-मण्डिता, कज्ज्वल-नयनी रसाला।।
सकल त्यजिया से-राधा-चरणे।
दासी ह'ये भज परम-यतने।।
सौन्दर्य-किरण देखिया याँहार।
रति-गौरी-लीला-गर्व-परिहार।।
शची-लक्ष्मी-सत्या सौभाग्य-वलने।
पराजित हय याँहार चरणे।।

कृष्ण – वशीकारे चन्द्रावली – आदि।
पराजय माने हइया विवादी।।
हरिदयित – राधा – चरण – प्रयासी।
भकतिविनोद श्रीगोद्रुमवासी।।

(घ)

(रूप – गुण – लीला – वर्णन)

रसिक – नागरी – , गण – शिरोमणि, कृष्णप्रेम – सरहंसी।
वृषभानुराज – , शुद्धकल्पवल्ली, सर्वलक्ष्मीगण – अंशी।।
रक्त पट्टवस्त्र, नितम्ब – उपरि, क्षुद्र घण्टि दुले ता'य।
कुचयुगोपरि, दुलि' मुक्तामाला, चित्तहारी शोभा पाय।।
सरसिजवर – , कर्णिका – समान, अतिशय कान्तिमती।
कैशोर – अमृत – , तारुण्य – कर्पूर – , मिश्रस्मिताधरा सती।।
बनान्ते आगत, ब्रजपति – सुत, परम चञ्चलवरे।
हेरि' शंकाकुल, नयन – भंगिते, आदरेते स्तव करे।।
ब्रजेर महिला – , गणेर पराण, यशोमती – प्रियपात्री।
ललित – ललिता – , स्नेहेते प्रफुल्ल – , शरीरा ललितगात्री।।
विशाखार सने, बनफुल तुलि' गाँथे वैजयन्ती माला।
सकल – श्रेयसी, कृष्ण – वक्षःस्थिता, परम प्रेयसी बाला।।
स्निग्ध वेणुरवे, द्रुतगति याइ', कुञ्जे पे'ये नटवरे।
हसित – नयनी, नम्रमुखी सती कर्ण कण्डूयन करे।।
स्पर्शिया कमल, वायु सुशीतल, करे यवे कुण्डनीर।
निदाघे तथाय, निजगण – सह, तुषय गोकुल – वीर।।
भकतिविनोद, रूप – रघुनाथे, कहये चरण धरि'।
हेन राधा – दास्य, सुधीर – सम्पद्, कवे दिवे कृपा करि'।।

(ङ)

(भूषणरूप भावादि वर्णन)

महाभाव – चिन्तामणि, उद्भावित तनुखानि,
सखीपति – सज्ज – प्रभावती।
कारुण्य – तारुण्य आर, लावण्य – अमृतधार,
ताहे स्नाता लक्ष्मीजयी सती।।
लज्जा पट्टवस्त्र या'र, सौन्दर्य कुंकुम – सार,
कस्तुरी – चित्रित कलेवर।
कम्पाश्रु – पुलक – रंग, स्तम्भ – स्वेद – स्वरभंग,
जाड्योन्माद – नवरत्नधर।।
पञ्चविंशतिक – गुण – , फुलमाला सुशोभन,
धीराधीरा – भाव – पट्टवासा।
पिहित – मान—धम्मिल्ला, सौभाग्य – तिलकोज्ज्वला,
कृष्णनाम – यशः – कर्णोल्लासा।।
रागताम्बूलित – ओष्ठ, कौटिल्य – कज्ज्वल स्पष्ट,
स्मितकर्पूरित – नर्मशीला।
कीर्त्तियश – अन्तःपुरे, गर्व – खट्टोपरि स्फुरे,
दुलित – प्रेमवैचित्त्य – माला।।
प्रणयरोष – कञ्चुली – , पिहित – स्तनयुग्मका,
चन्द्राजयी कच्छपी – रविणी।
सखीद्वयस्कन्धे लीला – , कराम्बुजार्पणशीला,
श्यामा श्यामामृत – वितरणी।।
ए हेन राधिका – पद, तोमादेर सुसम्पद,
दन्ते तृण याचे तव पाय।
ए **भक्तिविनोद** दीन, राधा – दास्यामृत – कण,
रूप रघुनाथ! देह ताय।।

(च)

(कृष्णाकर्षकत्व और सर्वश्रेष्ठत्व – वर्णन)

बरज – विपिने यमुना – कूले।
मञ्च मनोहर शोभित फुले।।
वनस्पति लता तुषये आँखि।
तदुपरि कत डाकये पाखी।।
मलय अनिल वहये धीरे।
अलिकुल मधु – लोभेते फिरे।।
वासन्तीर राका – उडुप तदा।
कौमुदी वितरे आदरे सदा।।
एमत समये रसिकवर।
आरम्भिल रास मुरलीधर।।
शतकोटी गोपी—माझेते हरि।
राधा – सह नाचे आनन्द करि’।।
माधव – मोहिनी गाइया गीत।
हरिल सकल जगत चित।।
स्थावर – जंगम मोहिला सती।
हाराओल चन्द्रा – वलीर मती।।
मथिया बरज – किशोर मन।
अन्तरित हय राधा तखन।।
भकतिविनोद परमाद गणे।
रास भांगल (आजि) राधा विहने।।

(छ)

शतकोटी गोपी माधव – मन।
राखिते नारिल करि' यतन।।
वेणुगीते डाके राधिका – नाम।
'एस एस राधे!' डाकये श्याम।।
भाँगिया श्रीरास – मण्डल तवे।
राधा अन्वेषणे चलये यवे।।
'देखा दिया राधे! राखह प्राण!'
बलिया काँदये कानने कान।।
निर्जन – कानने राधारे धरि'।
मिलिया पराण जुड़ाय हरि।।
बले, 'तुँहु विना काहार रास?
तुहुँ लागि' मोर बरज वास।।
एहेन राधिका – चरण – तले।
भकतिविनोद काँदिया बले।।
''तुया गण – माझे आमारे गणि'।
किंकरी करिया राख आपनि।।''

(ज)

(श्रीराधा – भजन महिमा – वर्णन)

राधा – भजने यदि मति नाहि भेला।
कृष्णभजन तब अकारणे गेला।।
आतप – रहित सूरय नाहि जानि।
राधा – विरहित माधव नाहि मानि।।

केवल माधव पूजये, सो अज्ञानी।
राधा–अनादर करइ अभिमानी।।
कबहिं नाहि करबि ताँकर संग।
चित्ते इच्छसि यदि ब्रजरस–रंग।
राधिका–दासी यदि होय अभिमान।
शीघ्रइ मिलइ तब गोकुल–कान।।
ब्रह्मा, शिव, नारद, श्रुति, नारायणी।
राधिका–पदरज पूजये मानि।।
उमा, रमा, सत्या, शची, चन्द्रा, रुक्मिणी।
राधा–अवतार सबे,—आम्नाय–वाणी।।
हेन राधा–परिचर्या याँकर धन।
भकतिविनोद ताँ'र मागये चरण।।

श्रीराधा–निष्ठा

2(क)

वृषभानुसुता–, चरण–सेवने, हइव ये पाल्यदासी।
श्रीराधार सुख, सतत साधने, रहिब आमि प्रयासी।।
श्रीराधार सुखे, कृष्णेर ये सुख, जानिब मनेते आमि।
राधापद छाड़ि', श्रीकृष्ण–संगमे, कभु ना हइब कामी।।
सखीगण मम, परम सुहृत्, युगल–प्रेमेर गुरु।
तदनुगा हये, सेविव राधार, चरण–कल्पतरु।।
राधापक्ष छाड़ि', ये–जन से–जन, येभावे सेभावे थाके।
आमि त'राधिका'–, पक्षपाती सदा, कभु नाहि हेरि ताँ'के।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

श्रीकृष्णविरहे, राधिकार दशा, आमि त' सहिते नारि।
युगल-मिलन, सुखेर कारण, जीवन छाड़िते पारि।।
राधिका-चरण, त्यजिया आमार, क्षणेके प्रलय हय।
राधिकार तरे, शतवार मरि, से-दुःख आमार सय।।
ए हेन राधार, चरण-युगले, परिचर्या पा'ब कबे।
हा हा ब्रज-जन, मोरे दया करि', कबे ब्रजवने ल'बे।।
विलासमञ्जरी, अनंगमञ्जरी, श्रीरूपमञ्जरी आर।
आमाके तुलिया, लह निजपदे, देह मोर सिद्धि-सार।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ग)

राधिका-चरणरेणु, भूषण करिया तनु,
अनायासे पाबे गिरिधारी।
राधिका-चरणाश्रय, ये करे से महाशय,
ताँ'रे मुञि याँओ बलिहारी।।
जय जय 'राधा' नाम, वृन्दावन याँ'र धाम,
कृष्णसुख-विलासेर निधि।
हेन राधा-गुणगान, ना सुनिल मोर काण,
वञ्चित करिल मोरे विधि।।
ताँ'र भक्त-संगे सदा, रसलीला प्रेमकथा,
ये करे से पाय घनश्याम।
इहाते विमुख येइ, ता'र कभु सिद्धि नाइ,
नाहि येन सुनि ता'र नाम।।
कृष्णनाम-गाने भाइ, राधिका-चरण पाइ,
राधानाम-गाने कृष्णचन्द्र।

संक्षेपे कहिनु कथा, घुचाओ मनेर व्यथा,
दुःखमय अन्य कथा – द्वन्द्व।।

(श्रील नरोत्तम ठाकुर)

श्रील रघुनाथदास गोस्वामी के उद्देश्य से रचित प्रचलित गीत

(श्रील गौरकिशोरदास बाबाजी महाराज द्वारा कीर्त्तित)

(3)

कोथाय गो प्रेममयि राधे राधे।
राधे राधे गो, जय राधे राधे।।
देखा दिये प्राण राख राधे राधे।
तोमार कांगाल तोमाय डाके राधे राधे।।
राधे वृन्दावन – विलासिनी राधे राधे।
राधे कानुमनोमोहिनी राधे राधे।।
राधे अष्टसखीर शिरोमणि राधे राधे।
राधे वृषभानु – नन्दिनि राधे राधे।।
(गोसाञी) नियम क'रे सदाइ डाके, राधे राधे।
(गोसाञी) एकबार डाके केशीघाटे,
आबार डाके वंशीवटे, राधे राधे।।
(गोसाञी) एकबार डाके निधुवने,
आबार डाके कुञ्जवने, राधे राधे।
(गोसाञी) एकबार डाके राधाकुण्डे,
आबार डाके श्यामकुण्डे, राधे राधे।।
(गोसाञी) एकबार डाके कुसुमवने,
आबार डाके गोवर्धने, राधे राधे।

(गोसाञी) एकबार डाके तालवने,
आबार डाके तमालवने, राधे राधे।।
(गोसाञी) मलिन वसन दिये गाय,
ब्रजेर धूलाय गड़ागड़ि याय, राधे राधे।
(गोसाञी) मुखे राधा राधा बले,
भासे नयनेर जले, राधे राधे।।
(गोसाञी) वृन्दावने कुलि कुलि,
केंदे बेड़ाय राधा बलि', राधे राधे।
(गोसाञी) छापान्न दण्ड रात्रि दिने।
जाने ना राधा – गोविन्द बिने, राधे राधे।।
तारपर चारिदण्ड शुति' थाके।
स्वपने राधा – गोविन्द देखे, राधे राधे।।

सिद्धि – लालसा

4 (क)

देखिते देखिते, भुलिब वा कबे, निज – स्थूल – परिचय।
नयने हेरिब, ब्रजपुर – शोभा, नित्य चिदानन्दमय।।
वृषभानुपुरे, जनम लइब, यावटे विवाह ह'बे।
व्रजगोपी – भाव, हइबे स्वभाव, आन – भाव ना रहिबे।।
निज सिद्धदेह, निज सिद्धनाम, निज – रूप – स्ववसन।
राधाकृपा – बले, लभिब वा कबे, कृष्णप्रेम – प्रकरण।।
यामुन – सलिल, आहरणे गिया, बुझिब युगल – रस।
प्रेममुग्ध ह'ये, पागलिनी – प्राय, गाइब राधार यश।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

राधाकृष्ण प्राण मोर युगल-किशोर।
जीवने मरणे गति आर नाहि मोर।।
कालिन्दीर कूले केलि-कदम्बेर वन।
रतन वेदीर उपर बसाब दु'जन।।
श्यामगौरी अंगे दिब (चुया) चन्दनेर गन्ध।
चामर ढुलाब कबे हेरिब मुखचन्द्र।।
गाँथिया मालतीर माला दिब दोंहार गले।
अधरे तुलिया दिब कर्पूर ताम्बूले।।
ललिता विशाखा आदि यत सखीवृन्द।
आज्ञाय करिब सेवा चरणारविन्द।।
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभुर दासेर अनुदास।
सेवा अभिलाष करे नरोत्तमदास।।

श्रीराधा-कृष्ण से विज्ञप्ति

(5 क)

श्रीराधाकृष्ण-पदकमले मन।
केमने लभिबे चरम शरण।।
चिरदिन करिया ओ-चरण-आश।
आछे हे बसिया ए अधम दास।।
हे राधे, हे कृष्णचन्द्र भक्तप्राण।
पामरे युगल-भक्ति कर' दान।।
भक्तिहीन बलि' ना कर' उपेक्षा।
मूर्खजने देह' ज्ञान-सुशिक्षा।।

विषय-पिपासा-प्रपीड़ित दासे।
देह' अधिकार युगल-विलासे।।
चञ्चल जीवन-, स्रोत प्रवाहिया, कालेर सागरे धाय।
गेल ये दिवस, ना आसिबे आर, एबे कृष्ण कि उपाय।।
तुमि पतितजनेर बन्धु।
जानि हे तोमारे नाथ, तुमि त' करुणा-जलसिन्धु।।
आमि भाग्यहीन, अति अर्वाचीन, ना जानि भकति-लेश।
निज-गुणे नाथ, कर' आत्मसात्, घुचाइया भव-क्लेश।।
सिद्ध-देह दिया, वृन्दावन-माझे, सेवामृत कर' दान।
पियाइया प्रेम, मत्त करि' मोरे, सुन निज गुणगान।।
युगल-सेवाय, श्रीरासमण्डले, नियुक्त कर आमाय।
ललिता सखीर, अयोग्या किंकरी, विनोद धरिछे पाय।।

(ख)

प्रभु हे, एइबार करह करुणा।
युगलचरण देखि', सफल करिब आँखि,
एइ मोर मनेर कामना।।
निज-पदसेवा दिवा, नाहि मोरे उपेखिवा,
दुहुँ पहुँ करुणासागर।
दुहुँ बिनु नाहि जानों, एइ बड़ भाग्य मानो,
मुञि बड़ पतित पामर।।
ललिता-आदेश पाञा, चरण सेविव याञा,
प्रियसखी-संगे हय मने।

दुहुँ दाता शिरोमणि, अति दीन मोरे जानि',
निकटे चरण दिवे दाने।।
पाव राधाकृष्ण-पा, घुचिवे मनेर घा,
दूरे यावे एसब विकल।
नरोत्तमदासे कय, एइ वांच्छा सिद्धि हय,
देह-प्राण—सकल सफल।।

श्रीराधाकृष्ण के चरणों में संप्रार्थना

(6 क)

राधाकृष्ण! निवेदन एइ जन करे।
दोंहे अति रसमय, सकरुण-हृदय,
अवधान कर नाथ मोरे।।
हे कृष्ण गोकुलचन्द्र, गोपीजन-बल्लभ,
हे कृष्णप्रेयसी-शिरोमणि।
हेमगौरी श्याम-गाय, श्रवणे परश पाय,
गुण शुनि' जुड़ाय पराणी।।
अधम दुर्गत जने, केवल करुणा मने,
त्रिभुवने ए यशःखेयाति।
शुनिया साधुर मुखे, शरण लइनु सुखे,
उपेखिले नाहि मोर गति।।
जय राधे जय कृष्ण, जय जय राधे कृष्ण,
कृष्ण कृष्ण जय जय राधे।
अंजलि मस्तके करि', नरोत्तम भूमे पड़ि',
कहे दोंहे पुराओ मनःसाधे।।

(ख)

आन कथा आन व्यथा, नाहि येन याइ तथा,
तोमार चरण-स्मृति-माझे।
अविरत अविकल, तुया गुण कल कल,
गाइ येन सतेर समाजे।।
अन्य व्रत अन्य दान, नाहि करों वस्तु-ज्ञान,
अन्य सेवा अन्य देवपूजा।
हा हा कृष्ण बलि' बलि', बेड़ाव आनन्द करि',
मने आर नहे येन दुजा।।
जीवने मरणे गति, राधाकृष्ण प्राणपति,
दोंहार पिरीति रससुखे।
युगल भजये याँ'रा, प्रेमानन्दे भासे ताँ'रा,
एइ कथा रहु मोर बुके।।
युगल-चरण-सेवा, एइ धन मोरे दिवा,
युगलेते मनेर पिरीति।
युगल-किशोर-रूप, काम-रति-गुण-भूप,
मने रहु ओ-लीला-पिरीति।।
दशनेते तृण धरि', हा हा किशोर-किशोरी,
चरणाब्जे निवेदन करि।
ब्रजराज-सुत श्याम, वृषभानु-सुता नाम,
'श्रीराधिका' नाम मनोहारी।।
कनक-केतकी राइ, श्याम मरकत ताय,
कन्दर्प दरप करु चूर।
नटवर-शिरोमणि, नटिनीर शिखरिणी,

दुहुँ गुणे दुहुँ मन झुर।।

श्रीमुख सुन्दरवर, हेम–नीलकान्तिधर,

भाव–भूषण करु शोभा।

नील पीत वासधर, गौरी श्याम मनोहर,

अन्तरेर भावे दुँहे लोभा।।

आभरण मणिमय, प्रति अंगे अभिनय,

तछु पाये **नरोत्तम** कहे।

दिवानिशि गुण गाओ, परम आनन्द पाओ,

मने एइ अभिलाष हये।।

श्रीराधाकृष्ण रूप–महिमा

वृन्दावन रम्यस्थान, दिव्यचिन्तामणि धाम,

रतन मन्दिर मनोहर।

आनन्द कालिन्दीनीरे, राजहंस केलि करे,

ताहे शोभे कनककमल।।

तार मध्ये हेम–पीठ, अष्टदले सुवेष्टित

अष्टदले प्रधाना नायिका।

तार मध्ये रत्नासने, वसि आछेन दुइ जने,

श्याम–संगे सुन्दरी राधिका।।

ओ'रूप लावण्यराशि, अमिया पड़िछे खसि,

हास्य परिहास सम्भाषणे।

नरोत्तम दास कय, नित्यलीला सुखमय,

सदाइ स्फुरुक मोर मने।।

श्रीकृष्ण – स्तुति

(क)

जय जय नन्दसुत व्रजकुलपति।
जय जय यदुनाथ त्रिभुवन – गति।।
जय जय जगत्‌निवास हृषीकेश।
जय जय भक्तकुल – नलिनी – दिनेश।।
जय जय कमला – लालित – पदद्वन्द्व।
जय जय मुनीन्द्र – मानस – सुखानन्द।।
जय जय गुणनिधि, जय दयामय।
जय जय भकतवत्सल रसमय।।
जय जय महाभय – दुरित – भंजन।
जय जय परचण्ड, पाषण्ड – मर्द्दन।।
जय जय असुर – कुंजर – महासिंह।
जय जय व्रजवधू – मुखपद्म – भृंग।।
जय जय योगेन्द्र – मानस – परमहंस।
जय भक्त – भवपथ – परिक्रम – ध्वंस।।
जय जय जगतमंगल गुणधाम।
जय जय श्रुतिवाणी – अगोचर नाम।।
जय पूर्णब्रह्म कृष्ण विचित्र – विहार।
जय जगन्नाथ नीलाचल – अवतार।।
जय जय श्रीगौरांग चैतन्य – मूरति।
प्रेमभक्तिदाता प्रभु भकतेर गति।।

(श्रीकृष्णप्रेम – तरंगिणी)

(ख)

(ब्रह्मा–द्वारा–स्तुति)

स्तुतियोग्य तुमि प्रभु, नवघन श्याम।
विजूरी उज्ज्वल–पीतवस्त्र–परिधान।।
नवगुंजा–अवतंस श्रवण–भूषण।
शिखण्ड–मण्डित केश प्रसन्न–वदन।।
आजानुलम्बित वनमाला विलोलित।
वेणु, वेत्र, विषाण, कवल विराजित।।
अमल–कमल जिनि' चरणसुन्दर।
नमो नमो नन्दगोप–सुत मनोहर।।
कृष्ण, कृष्ण वृष्णिकुल–पुष्कर–भाष्कर।
पृथ्वी–देव–द्विज–पशु–सिन्धु–शशधर।।
उद्धर्म–शार्वर–हर असुर–संहारी।
अर्क–आदि–सर्वसुर–पूज्य अधिकारी।।
आकल्पर्यन्त मोर रहु नमस्कार।
एइ वर मागों, नाथ, चरणे तोमार।।
तोमार पदारविन्द सेवों निरन्तर।
एइ आज्ञा कर मोरे करुणासागर।।

(श्रीकृष्णप्रेम–तरंगिणी)

श्रीकृष्ण–रूप–वर्णन

(क)

जनम सफल ता'र, कृष्ण दरशन या'र,
भाग्ये हइयाछे एकबार।

विकशिया हृन्नयन, करि' कृष्ण-दरशन,
छाड़े जीव चित्तेर विकार।।
वृन्दावन-केलिचतुर वनमाली।
त्रिभंग-भंगिम रूप, वंशीधारी अपरूप,
रसमयनिधि गुणशाली।।
वर्ण नवजलधर, शिरे शिखिपिच्छवर,
अलका तिलक शोभा पाय।
परिधाने पीतवास, बदने मधुर हास,
हेन रूप जगत माताय।।
इन्द्रनील जिनि', कृष्णरूपखानि, हेरिया कदम्बमूले।
मन उचाटन, ना चले चरण, संसार गेलाम भुले।।
(सखि हे) सुधामय, से रूपमाधुरी।
देखिले नयन, हय अचेतन, झरे प्रेममय वारि।।
किवा चूड़ा शिरे, किवा वंशी करे, किवा से त्रिभंग-ठाम।
चरणकमले, अमिया उछले, ताहाते नूपुरदाम।।
सदा आशा करि', भृंगरूप धरि', चरणकमले स्थान।
अनायासे पाइ, कृष्णगुण गाइ, आर ना भजिब आन।।
(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

स्मेरां भंगीत्रयपरिचितां साचिविस्तीर्णदृष्टिं
वंशीन्यस्ताधर-किशलयामुज्ज्वलां चन्द्रकेण।
गोविन्दाख्यां हरितनुमितः केशितीर्थोपकण्ठे
मा प्रेक्षिष्ठास्तव यदि सखे! बन्धुसंगेऽस्ति रंग।।
(भः रः सिः पूः विः 2/239)

बन्धुसंगे यदि तव रंग परिहास, थाके अभिलाष।
(थाके अभिलाष)

तबे मोर कथा राख, जेयो नाको जेयो नाको,
मथुराय केशीतीर्थ-घाटेर सकाश।।

गोविन्दविग्रह धरि', तथाय आछेन हरि,
नयने बंकिम-दृष्टि, मुखे मन्दहास।

किवा त्रिभंगम ठाम, वर्ण समुज्ज्वल श्याम,
नवकिशलय शोभा श्रीअंगे प्रकाश।।

अधरे वंशीटी ता'र, अनर्थेर मूलाधार,
शिखिचूड़ाकेओ भाइ करो ना विश्वास।।

से मूर्त्ति नयने हेरे, केह नाहि घरे फिरे,
संसारी गृहीर ये गो हय सर्वनाश।
(ताइ मोर मने बड़ त्रास)

घटिबे विपद भारी, जेयो नाको हे संसारि,
मथुराय केशीतीर्थ घाटेर सकाश।।

श्रीकृष्ण-गुण-वर्णन

बहिर्मुख ह'ये, मायारे भजिये, संसारे हइनु रागी।
कृष्ण दयामय, प्रपञ्चे उदय, हइला आमार लागि'।।
(सखी हे) कृष्णचन्द्र गुणेर सागर।
अपराधी जने, कृपा-वितरणे शोधिते नहे कातर।।
संसारे आसिया, प्रकृति भजिया, पुरुषाभिमाने मरि।
कृष्ण दया करि', निजे अवतरि', वंशीखे निला हरि'।।
एमन रतने, विशेष यतने, भज सखि अविरत।
विनोद एखने, श्रीकृष्णचरणे, गुणे बाँधा, सदा नत।।

श्रीकृष्ण – लीला – वर्णन

(क)

(धानशी)

जीवे कृपा करि', गोलोकेर हरि, ब्रजभाव प्रकाशिल।
से भाव – रसज्ञ, वृन्दावनयोग्य, जड़बुद्धि ना हइल।।
कृष्णलीला – समुद्र – अपार।
बैकुण्ठ – विहार, समान इँहार, कभु नहे जान' सार।।
कृष्ण – नराकार, सर्व – रसाधार, श्रृंगारेर विशेषतः।
बैकुण्ठ – साधक, सख्ये अपारक, मधुरे ना हय रत।।
ब्रजे कृष्णधन, नवीन – मदन, अप्राकृत रसमय।
जीवेर सहित, नित्य – लीलोचित, कृष्ण – गुणगण हय।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

(धानशी)

यमुना – पुलिने, कदम्ब – कानने, कि हेरिनु सखि! आज।
श्याम वंशीधारी, मणिमञ्चोपरि, करे लीला रसराज।।
कृष्णकेलि सुधा – प्रस्रवण।
अष्टदलोपरि, श्रीराधा श्रीहरि, अष्टसखी परिजन।।
सुगीत – नर्त्तने, सब सखीगणे, तुषिछे युगलधने।
कृष्णलीला हेरि', प्रकृति सुन्दरी, विस्तारिछे शोभा बने।।
घरे ना याइव, वने प्रवेशिव, ओ लीला – रसेर तरे।
त्यजि' कुललाज, भज ब्रजराज, विनोद मिनति करे'।।

श्रीकृष्ण से विज्ञप्ति

(क)

तुमि त' दयार सिन्धु, अधम जनार बन्धु,
मोरे प्रभु कर अवधान।
पड़िनु असत् भोले, काम-तिमिंगिले गिले,
ओहे नाथ कर परित्राण।।

यावत् जनम मोर, अपराधे हैनु भोर,
निष्कपटे ना भजिनु तोमा।
तथापि ये तुमि गति, ना छाड़िह प्राणपति,
मोर सम नाहिक अधमा।।

पतित-पावन नाम, घोषणा तोमार श्याम,
उपेखिले नाहि मोर गति।
यदि हइ अपराधी, तथापिह तुमि गति,
सत्य सत्य येन सतीर पति।।

तुमि त' परम देवा, नाहि मोरे उपेखिवा,
शुन शुन प्राणेर ईश्वर।
यदि करि अपराध, तथापिह तुमि नाथ,
सेवा दिया कर अनुचर।।

कामे मोर हत चित, नाहि शुने निज हित,
मनेर ना घुचे दुर्वासना।
मोरे नाथ अंगीकुरु, तुमि वाञ्छा-कल्पतरु,
करुणा देखुक सर्वजना।।

मो-सम पतित नाइ, त्रिभुवने देख चाइ,
'नरोत्तम-पावन' नाम धर।

घुषुक संसारे नाम, पतित उद्धार' श्याम,
निजदास कर गिरिधर।।
नरोत्तम बड़ दुःखी, नाथ मोरे कर सुखी,
तोमार भजन-संकीर्तने।
अन्तराय नाहि याय, एइ से परम-भय,
निवेदन करि अनुक्षणे।।

(ख)

मोर प्रभु मदनगोपाल, गोविन्द गोपीनाथ,
दया कर मुञि अधमेरे।
संसार-सागर-माझे, पड़िया रैयाछि नाथ,
कृपाडोरे वान्धि लह मोरे।।
अधम चण्डाल आमि, दयार ठाकुर तुमि,
शुनियाछि वैष्णवेर मुखे।
ए बड़ भरसा मने, लैया फेल वृन्दावने,
वंशीवट येन देखि सुखे।।
कृपा कर आगुगुरि, लह मोरे केशे धरि',
श्रीयमुना देह' पदछाया।
अनेक दिनेर आश, नहे येन नैराश,
दया कर, ना करह माया।।
अनित्य ए देह धरि, आपन आपन करि,
पाछे पाछे शमनेर भय।
नरोत्तमदास भणे, प्राण कान्दे रात्रिदिने,
पाछे ब्रजप्राप्ति नाहि हय।।

(ग)

प्राणनाथ! मोरे तुमि कृपादृष्टि कर।

मुइ पापी दुराचार, मोरे करु अंगीकार,

ए भव–सागर हैते तार'।।

मध्ये मध्ये वाञ्छा हय, सेह मोर स्थायी नय,

मनयोगे ओ रांगा चरणे।

सेह बुद्धि मोर नय, विचारिले एइ हय,

आकर्षे से तोमार निजगुणे।।

तुमि करुणार सिन्धु, ए दीनजनार बन्धु,

उद्धारिया देह' पदसेवा।

एइ अधमेर त्राता, तोमा विना प्रेमदाता,

भुवने आछये अन्य केवा।।

मोर कर्म ना विचारि', पूर्वरूप दया करि',

मोरे देह' सेइ प्रेमसेवा।

ए राधामोहन कय, मोर परित्राण हय,

तबे गुण नाहि गाय केवा।।

(घ)

गोपीनाथ, मम निवेदन सुन।

विषयी दुर्ज्जन, सदा कामरत, किछु नाहि मोर गुण।।

गोपीनाथ, आमार भरसा तुमि।

तोमार चरणे, लइनु शरण, तोमार किंकर आमि।।

गोपीनाथ, केमने शोधिबे मोरे।

ना जानि भकति, कर्मे जड़मति, पड़ेछि संसार–घोरे।।

गोपीनाथ, सकलि तोमार माया।

नाहि मम बल, ज्ञान सुनिर्मल, स्वाधीन नहे ए काया।।
गोपीनाथ, नियत चरणे स्थान।
मागे ए पामर, काँदिया काँदिया, करहे करुणा दान।।
गोपीनाथ, तुमि त' सकलि पार।
दुर्ज्जने तारिते, तोमार शकति, के आछे पापीर आर।।
गोपीनाथ, तुमि कृपा-पारावार।
जीवेर कारणे, आसिया प्रपंचे, लीला कैले सुविस्तार।।
गोपीनाथ, आमि कि दोषे दोषी।
असुर-सकल, पाइल-चरण, विनोद थाकिल बसि'।।

(ङ)

गोपीनाथ, घुचाओ संसार-ज्वाला।
अविद्या-यातना, आर नाहि सहे, जनम-मरण माला।।
गोपीनाथ, आमि त' कामेर दास।
विषय-वासना, जागिछे हृदये, फाँदिछे करम फाँस।।
गोपीनाथ, कबे वा जागिव आमि।
कामरूप अरि, दूरे तेयागिव, हृदये स्फुरिवे तुमि।।
गोपीनाथ, आमि त' तोमार जन।।
तोमारे छाड़िया, संसार भजिनु, भुलिया आपन धन।
गोपीनाथ, तुमि त' सकलि जान।
आपनार जने, दण्डिया एखन, श्रीचरणे देह स्थान।।
गोपीनाथ, एइ कि विचार तव।
विमुख देखिया, छाड़ निज-जने, ना कर' करुणा-लव।।
गोपीनाथ, आमि त' मूरख अति।
किसे भाल हय, कभु ना बुझिनु, ताइ हेन मम गति।।

गोपीनाथ, तुमि त' पण्डितवर।
मूढ़ेर मंगल, तुमि अन्वेषिवे, ए दासे ना भाव' पर।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(च)

गोपीनाथ, आमार उपाय नाइ।
तुमि कृपा करि', आमारे लइले, संसारे उद्धार पाइ।।
गोपीनाथ, पड़ेछि मायार फेरे।
धन-दारा सुत, घिरेछे आमारे, कामेते रेखेछे जेरे।।
गोपीनाथ, मन ये पागल मोर।
ना माने शासन, सदा अचेतन, विषये र'येछे घोर।।
गोपीनाथ, हार ये मेनेछि आमि।
अनेक यतन, हइल विफल, एखन भरसा तुमि।।
गोपीनाथ, केमने हइवे गति।
प्रबल इन्द्रिय-, वशीभूत मन, ना छाड़े विषय-रति।।
गोपीनाथ, हृदये बसिया मोर।
मनके शमिया, लह निज-पाने, घुचिवे विपद घोर।।
गोपीनाथ, अनाथ देखिया मोरे।
तुमि हृषीकेश, हृषीक दमिया, तार'हे संसृति-घोरे।।
गोपीनाथ, गलाय लेगेछे फाँस।
कृपा-असि धरि', बन्धन छेदिया, विनोदे करह दास।।

श्रीकृष्ण-प्रीति-प्रार्थना

ब्रह्माण्ड व्यापिया, आछये ये-जन, केह ना देखये ता'रे।
प्रेमेर पिरीति, ये-जन जानये, सेइ से पाइते पारे।।

'पिरीति' 'पिरीति' तिनटी आखर, जानिवे भजन–सार।
राग–मार्गे येइ, भजन करये, प्राप्ति हइवे ता'र।।
मृत्तिकार उपरे, जलेर वसति, ताहार उपरे ढेउ।
ताहार उपरे, पिरीति–वसति, ताहा कि जानये केउ।।
रसेर पिरीति, रसिक जानये, रस उद्गारिल के?
सकल त्यजिया, युगल हइया, गोलोके रहिल से।
पुत्र–परिजन, संसार आपन, सकल त्यजिया लेख।।
पिरीति करिले, ताहारे पाइवे, मनेते भाविया देख।
'पिरीति' 'पिरीति', तिनटी आखर, पिरीति त्रिविध मत।।
भजिते भजिते, निगूढ़ हइले, हइवे एकइ मत।
परकीया धन, सकल–प्रधान, यतन करिया लइ।
नैष्ठिक हइया, भजन करिले, पद्धति–साधक हइ।।
पद्धति हइया, रस आस्वादिया, नैष्ठिके प्रवृत्त हय।
ताँहार चरण, हृदये धरिया, द्विज चण्डीदासे कय।।

श्रीकृष्ण–प्रीतिसूचक–निर्वेद

वंशीगानामृत–धाम, लावण्यामृत–जन्मस्थान,
ये ना देखे से चाँदवदन।
ये नयने किवा काज, पड़ूक् ता'र मुण्डे वाज,
से नयन रहे कि कारण।।
सखि हे, शुण मोर हत बिधिबल।
मोर वपु–चित्त–मन, सकल इन्द्रियगण,
कृष्ण बिना सकल विफल।।

कृष्णेर मधुर वाणी, अमृतेर तरंगिणी,
ता'र प्रवेश नाहि ये श्रवणे।
काणाकड़ि–छिद्र–सम, जानिह से श्रवण,
ता'र जन्म हइल अकारणे।।

कृष्णेर अधरामृत, कृष्ण–गुण–चरित,
सुधासार–स्वादु–विनिन्दन।
ताँ'र स्वाद ये ना जाने, जन्मिया ना मैल केने,
से रसना भेक–जिह्वा सम।।

मृगमद–नीलोत्पल, मिलने ये परिमल,
येइ हरे ता'र गर्व–मान।
हेन कृष्ण–अंग–गन्ध, या'र नाहि से–सम्बन्ध,
सेइ नासा भस्त्रार समान।।

कृष्ण–कर–पदतल, कोटिचन्द्र–सुशीतल,
ता'र स्पर्श येन स्पर्शमणि।
ता'र स्पर्श नाइ या'र, से याउक् छारखार,
सेइ वपु लोहासम जानि।।

शुन मोर प्राणेर बान्धव।
नाहि कृष्ण–प्रेमधन, दरिद्र मोर जीवन,
देहेन्द्रिय वृथा मोर सव।।

करि' एत विलापन, प्रभु श्रीशचीनन्दन,
उघाड़िया हृदयेर शोक।
दैन्य निर्वेद–विषादे, हृदयेर अवसादे,
पुनरपि पड़े आर श्लोक।

(श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी)

श्रीकृष्ण-भजन-निष्ठा

ब्रजेन्द्रनन्दन, भजे येइ जन, सफल जीवन ता'र।
ताहार उपमा, वेदे नाहि सीमा, त्रिभुवने नाहि आर॥
एमन माधव, ना भजे मानव, कखन मरिया यावे।
सेइ से अधम, प्रहारिया यम, रौरवे कृमिते खावे॥
तारपर आर, पापी नाहि छार, संसार जगत्-माझे।
कोनकाले ता'र, गति नाहि आर, मिछाइ भ्रमिछे काजे॥
श्रीलोचनदास, भकतिर आश, हरिगुण कहि लिखि।
हेन रस-सार, मति नाहि या'र, ता'र मुख नाहि देखि॥

श्रीकृष्ण से दैन्यबोधिका प्रार्थना

(क)

प्राणेश्वर! निवेदन एइजन करे।
गोविन्द गोकुलचन्द्र, परम आनन्दकन्द,
गोपीकुल-प्रिय देख मोरे॥
तुया पादपद्म-सेवा, एइ धन मोरे दिवा,
तुमि नाथ करुणार निधि।
परममंगल-यश, श्रवणे परम रस,
का'र किवा कार्य नहे सिद्धि॥
दारुण संसार-गति, विषम विषय-मति,
तुया विस्मरण-शेल बुके।
जर जर तनु मन, अचेतन अनुक्षण,
जीयन्ते मरण भेल दुःखे॥
मो हेन अधम जने, कर कृपा निरीक्षणे,
दास करि' राख वृन्दावने।

श्री कृष्णचैतन्य – नाम, प्रभु मोर गौरधाम,
नरोत्तम लइल शरणे।।

(ख)

हरि हरि! कृपा करि' राख निज पदे।
काम – क्रोध छय जने, लञा फिरे नानास्थाने,
विषय – भुंजाय नानामते।।
हइया मायार दास, करि' नाना अभिलाष,
तोमार स्मरण गेल दूरे।
अर्थलाभ एइ आशे, कपट वैष्णव – वेशे,
भ्रमिया बुलये घरे घरे।।
अनेक दुःखेर परे, लयेछिले व्रजपुरे,
कृपाडोर गलाय बांधिया।
दैवमाया बलात्कारे, खसाइया सेइ डोरे,
भवकूपे दिलेक डारिया।।
पुनः यदि कृपा करि', ए जनार केशे धरि',
टानिया तुलह ब्रजधामे।
तवे से देखिये भाल, नतुवा पराण गेल,
कहे दीन **दास नरोत्तमे**।।

(ग)

हरि हरि! कि मोर करम अभाग।
विफले जीवन गेल, हृदये रहिल शेल,
नाहि भेल हरि – अनुराग।
यज्ञ, दान, तीर्थ – स्नान, पुण्यकर्म, जप, ध्यान,
अकारणे सब गेल मोहे।

बुझिलाम मने हेन, उपहास हय येन,
वस्त्रहीन अलंकार देहे।।
साधुमुखे कथामृत, शुनिया विमल चित,
नाहि भेल अपराध–कारण।
सतत असत्संग, सकलि हइल भंग,
कि करिब आइले शमन।।
श्रुति–स्मृति सदा रवे, शुनियाछि एइ सबे,
हरिपद अभय शरण।
जनम लइया सुखे, कृष्ण ना बलिनु मुखे,
ना करिनु से–रूप भावन।।
राधाकृष्ण दुँहु पाय, तनु मन रहु ताय,
आर दूरे याउक वासना।
नरोत्तम दासे कय, आर मोर नाहि भय,
तनु–मन सँपिनु आपना।।

श्रीकृष्ण से
स्वाभीष्ट–लालसात्मक प्रार्थना

(क)

हरि हरि! आर कबे पालटिबे दशा।
ए–दशा करिया वामे, या'व वृन्दावन–धामे,
एइ मने करियाछि आशा।।
धन–जन पुत्र–दारे, एसब करिया दूरे,
एकान्त हइया कबे याव।
सब दुःख परिहरि', वृन्दावने वास करि',
माधुकरी मागिया खाइब।।

यमुनार जल येन, अमृत समान हेन,
कबे पिव उदर पूरिया।
कबे राधाकुण्ड–जले, स्नान करि' कुतूहले,
श्यामकुण्डे रहिव पड़िया।।
भ्रमिव द्वादश वने, रसकेलि ये ये स्थाने,
प्रेमावेशे गड़ागड़ि दिया।
शुधाइव जने जने, ब्रजवासिगण–स्थाने,
निवेदिव चरण धरिया।।
भजनेर स्थान कबे, नयनगोचर हबे,
आर यत आछे उपवन।
ता'र मध्ये वृन्दावन, नरोत्तम दासेर मन,
आशा करे युगल–चरण।।

(ख)

हरि हरि! आर कि एमन दशा हव।
ए–भव–संसार त्यजि', परम–आनन्दे मजि',
आर कवे ब्रजभूमे या'व।।
सुखमय वृन्दावन, कबे ह'वे दरशन,
से–धूलि लागिबे क'बे गाय।
प्रेमे गदगद हैञा, राधाकृष्ण–नाम लैया,
काँदिया बेड़ाव उभराय।।
निभृते निकुंजे याञा, अष्टांगे प्रणाम हैया,
डाकिब 'हा राधानाथ' बलि'।
कबे यमुनार तीरे, परश करिव नीरे,
कबे पिब करपुटे तुलि'।।

आर कबे एमन हब, श्रीरासमण्डले या'व,
कबे गडागड़ि दिव ताय।
वंशीवट-छाया पाञा, परम-आनन्द हञा,
पड़िया रहिब ता'र छाय।।
कबे गोवर्द्धन गिरि, देखिब नयन भरि',
कबे हबे राधाकुण्डे वास।
भ्रमिते भ्रमिते कबे, ए-देह पतन हबे,
कहे दीन **नरोत्तमदास**।।

(ग)

करंग कौपीन लञा, छेंड़ा कांथा गाये दिया,
तेयागिब सकल विषय।
कृष्णे अनुराग ह'बे, ब्रजेर निकुन्जे कबे,
याइया करिब निजालय।।
हरि हरि, कबे मोर हइबे सुदिन।
फलमूल वृन्दावने, खाञा दिवा-अवसाने,
भ्रमिव हइया उदासीन।।
शीतल यमुना-जले, स्नान करि' कुतूहले,
प्रेमावेशे आनन्दित हञा।
बाहुर उपर बाहु तुलि', वृन्दावने कुलि-कुलि,
कृष्ण बलि' बेड़ाव काँदिया।।
देखिब संकेत-स्थान, जुड़ावे तापित प्राण,
प्रेमावेशे गड़ागड़ि दिव।

काँहा राधा प्राणेश्वरि, काँहा गिरिवरधारि,
काँहा नाथ बलिया डाकिब।।

माधवीकुन्जेर' परि, सुखे बसि' शुकशारी,
गाइवेक राधाकृष्ण रस।।

तरुमूले वसि' ताहा, शुनि' जुड़ाइव हिया,
कबे सुखे गोङाव दिवस।।

श्रीगोविन्द–गोपीनाथ, श्रीमती–राधिका–साथ,
देखिब रतन–सिंहासने।

दीन नरोत्तमदास, करये दुर्लभ आश,
एइ मति हैबे कतदिने।

(घ)

हरि हरि! कबे हव वृन्दावनवासी।
निरखिब नयने युगल–रूपराशि।।
त्यजिया शयनसुख विचित्र पालंक।
कबे ब्रजेर धूलाय धूसर ह'बे अंग।।
षड्रस भोजन दूरे परिहरि।
कबे व्रजे मागिया खाइब माधुकरी।।
परिक्रमा करिया बेड़ाव वने वने।।
विश्राम करिब याइ यमुना–पुलिने।।
ताप दूर करिब शीतल वंशीवटे।
(कबे) कुँजे बैठब हाम वैष्णव–निकटे।।
नरोत्तमदास कहे करि' परिहार।
कबे वा एमन दशा हइबे आमार।।

(ङ)

श्रीकृष्ण से लालसात्मक प्रार्थना

(अधिकार भेदे कीर्त्तनीय)

कबे कृष्ण धन पाव, हियार माझारे मम,
जुड़ाइव तापित-पराण।
साजाइव दिव हिया, बसाइव प्राणप्रिया,
निरखिब से चन्द्रवयान।।
हे सजनी! कबे मोर हइवे सुदिन।
से प्राणनाथेर संगे, कबे वा फिरिब रंगे,
सुखमय यमुना पुलिने।।
ललिता विशाखा लञा, ताँहारे भेटिव गिया,
साजाइया नाना उपहार।
सदय हइया विधि, मिलाइवे गुणनिधि,
हेन भाग्य कि हइवे आमार??
दारुण विधिर नाट, भांगिल प्रेमेर हाट,
तिलमात्र ना रखिल तार।
कहे नरोत्तम दास, कि मोरे जीवने आश,
छाड़ि गेल ब्रजेन्द्रकुमार।।

श्रीकृष्ण के प्रति आत्मनिवेदन

(क)

तातल सैकते, वारिबिन्दु-सम, सुत-मित-रमणी-समाजे।
तोहे विसरि मन, ताहे समर्पिनु, अब् मझु हव कोन् काजे।।
माधव, हाम परिणाम निराशा।
तुहुँ जगतारण, दीन-दयामय, अतये तोहारि विशोयासा।।

आध जनम हाम, निदें गोङायनु, जरा शिशु कतदिन गेला।
निधुवने रमणी-, रसरंगे मातनु, तोहे भजव कोन् बेला।।
कत चतुरानन, मरि मरि याओत, न तुया आदि अवसाना।
तोहे जनमि पुनः, तोहे समाओत सागर-लहरी समाना।।
भणये **विद्यापति**, शेष शमन-भये, तुया विना गति नाहि आरा।
आदि अनादिक, नाथ कहाओसि, अव तारण-भार तोहारा।।

(ख)

यतने यतेक धन, पापे वटारलो, मेलि मेलि परिजन खाय।
मरणक बेरि, कोइ ना पुछइ, करम संगे चलि याय।।
ए हरि वन्दो तुया पद-नाय।
तुया पद परिहरि, पाप-पयोनिधि, पार हव कोन् उपाय।।
यावत जनम हाम, तुया पद ना सेविनु, युवती मतिमय मेलि।
अमृत त्येजि किये, हलाहल पियनु, सम्पदे विपदहि भेलि।।
भणहुँ **विद्यापति**, लेह मने गणि, कहिले कि वाढ़व काजे।
साँझक बेरि, सेब कोइ मागइ, हेरइते तुया पद लाजे।।

(ग)

माधव, बहुत मिनति करि तोय।
देइ तुलसी तिल, देह समर्पिनु, दया जानि ना छोड़बि मोय।।
गणइते दोष, गुणलेश ना पाओबि, यब तुहुँ करबि विचार।
तुहुँ जगन्नाथ, जगते कहाओसि, जग-बाहिर नहि मुत्रि छार।।
किये मानुष पशु-, पाखी ये जनमिये, अथवा कीट-पतंगे।
करम-विपाके, गतागति पुनः पुनः, मति रहु तुया परसंगे।।

भनये विद्यापति, अतिशय कातर, तरइते इह भवसिन्धु।
तुया पदपल्लव, करि अवलम्बन, तिल एक देह दीनबन्धु।।

(घ)

हरि हे दयाल मोर जय राधानाथ।
बारबार एइ बार लह निज साथ।।
बहु योनि भ्रमि' नाथ, लइनु शरण।
निजगुणे कृपा कर अधमतारण।।
जगत-कारण तुमि जगत-जीवन।
तोमा छाड़ा का'र नहि, हे राधारमण।।
भुवनमंगल तुमि भुवनेर पति।
तुमि उपेक्षिले नाथ कि हइबे गति।।
भाविया देखिनु एइ जगत-माझारे।
तोमा बिना केह नाहि ए दासे उद्धारे।।

श्रीकृष्ण-महिमा

शुन, हे रसिक जन, कृष्णगुण अगणन,
अनन्त कहिते नाहि पारे।
कृष्ण जगतेर गुरु, कृष्ण वाञ्छाकल्पतरु,
नाविक से भव-पारावारे।।
हृदय पीड़ित या'र, कृष्ण चिकित्सक ता'र,
भव-रोग नाशिते चतुर।
कृष्ण बहिर्मुख-जने, प्रेमामृत-वितरणे,
क्रमे लय निज अन्तःपुर।।

कर्मबन्ध – ज्ञानबन्ध – , आवेशे मानव अन्ध,
ता'रे कृष्ण करुणा – सागर।
पादपद्म – मधु दिया, अन्धभाव घुचाइया,
चरणे करेन अनुचर।।
विधिमार्गरत – जने, स्वाधीनता रत्नदाने,
रागमार्गे करान प्रवेश।
राग – वशवर्त्ती ह'ये, पारकीय – भावाश्रये,
लभे जीव कृष्णप्रेमावेश।।
प्रेमामृत वारिधारा, सदा पानरत ताँ'रा,
कृष्ण ताँहादेर बन्धु, पति।
सेइसब ब्रजजन, सुकल्याण – निकेतन,
दीन हीन **विनोदेर** गति।।

श्रीनाम – कीर्त्तन

(क)

(हरि) हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
यादवाय माधवाय केशवाय नमः।।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन।
गिरिधारी गोपीनाथ मदनमोहन।।
श्रीचैतन्य नित्यानन्द श्रीअद्वैत गोप्ता।
हरि, गुरु, वैष्णव, भागवत, गीता।।
श्रीरूप, श्रीसनातन, भट्ट – रघुनाथ।
श्रीजीव, गोपालभट्ट, दास – रघुनाथ।।
एइ छय गोसाईर करि चरण वन्दन।
याहा हैते विघ्ननाश अभीष्टपूरण।।

एइ छय गोसाईं याँ'र, मुइ ताँ'र दास।
ताँ' सबार पदरेणु मोर पंचग्रास।।
ताँ'देर चरण सेवि भक्तसने वास।
जनमे जनमे हय, एइ अभिलाष।।
एइ छय गोसाई यबे ब्रजे कैला वास।
राधाकृष्ण-नित्यलीला करिला प्रकाश।।
आनन्दे बल हरि, भज वृन्दावन।
श्रीगुरु-वैष्णव-पदे मजाइया मन।।
श्रीगुरु-वैष्णव-पादपद्म करि' आश।
नाम-संकीर्तन कहे **नरोत्तमदास**।।

(ख)

जय राधे, जय कृष्ण, जय वृन्दावन।
श्रीगोविन्द गोपीनाथ मदनमोहन।।
श्यामकुण्ड राधाकुण्ड गिरि-गोवर्द्धन।
कालिन्दी यमुना जय, जय महावन।।
केशीघाट वंशीवट द्वादश-कानन।
याँहा सब लीला कैल श्रीनन्दनन्दन।।
श्रीनन्द-यशोदा जय, जय गोपगण।
श्रीदामादि जय, जय धेनु-वत्सगण।।
जय वृषभानु, जय कीर्त्तिदा-सुन्दरी।
जय पौर्णमासी, जय आभीरनागरी।।
जय जय गोपीश्वर वृन्दावन-माझ।
जय जय कृष्णसखा बटु द्विजराज।।

जय रामघाट, जय रोहिणीनन्दन।
जय जय वृन्दावनवासी यत जन।।
जय द्विजपत्नी, जय नागकन्यागण।
भक्तिते याँहारा पाइल गोविन्दचरण।।
श्रीरासमण्डल जय, जय राधाश्याम।
जय जय रासलीला सर्वमनोरम।।
जय जयोज्ज्वलरस सर्वरस सार।
पारकीयभावे याहा ब्रजेते प्रचार।।
श्रीजाह्नवा–पादपद्म करिया स्मरण।
दीन कृष्णदास कहे नाम–संकीर्त्तन।।

(ग)

जय जय राधे कृष्ण गोविन्द।
राधे गोविन्द राधे गोविन्द।।
जय जय श्यामसुन्दर मदनमोहन वृन्दावनचन्द्र।
जय जय राधारमण रासबिहारी श्रीगोकुलानन्द।।
जय जय रासेश्वरी विनोदिनी भानुकूलचन्द्र।
जय जय ललिता–विशाखा आदि यत सखीवृन्द।।
जय जय श्रीरूपमञ्जरी रति–मञ्जरी–अनंग।
जय जय पौर्णमासी योगमाया जय वीरावृन्द।।
सबे मिलि' कर कृपा आमि अति मन्द।
(तोमरा) कृपा करि' देह' युगल–चरणारविन्द।।

(घ)

जय जय राधा–माधव राधा–माधव राधे।

(जयदेवेर प्राणधन हे)

जय जय राधा–मदनगोपाल राधा–मदनगोपाल राधे।

(सीतानाथेर प्राणधन हे)

जय जय राधा–गोविन्द राधा–गोविन्द राधे।

(रूप गोस्वामीर प्राणधन हे)

जय जय राधा–मदनमोहन राधा–मदनमोहन राधे।

(सनातनेर प्राणधन हे)

जय जय राधा–गोपीनाथ राधा–गोपीनाथ राधे।

(मधु पण्डितेर प्राणधन हे)

जय जय राधा–दामोदर राधा–दामोदर राधे।

(जीव गोस्वामीर प्राणधन हे)

जय जय राधारमण राधारमण राधे।

(गोपालभट्टेर प्राणधन हे)

जय जय राधाविनोद राधाविनोद राधे।

(लोकनाथेर प्राणधन हे)

जय जय राधा–गिरिधारी राधा–गिरिधारी राधे।

(दास गोस्वामीर प्राणधन हे)

जय जय राधा–श्यामसुन्दर राधा–श्यामसुन्दर राधे।

(श्यामानन्देर प्राणधन हे)

जय जय राधाकान्त राधाकान्त राधे।

(वक्रेश्वरेर प्राणधन हे)

(ङ)

कलिकुक्कुर–कदन यदि चाओ (हे)।
कलियुग–पावन, कलिभय–नाशन, श्रीशचीनन्दन गाओ (हे)।।
गदाधर–मादन, निता'येर प्राणधन, अद्वैतेर प्रपूजित गोरा।
निमाईं विश्वम्भर, श्रीनिवास–ईश्वर, भक्तसमूह–चित–चोरा।।
नदीया–शशधर, मायापुर–ईश्वर, नाम–प्रवर्तन सुर।
गृहि–जन–शिक्षक, न्यासिकुल–नायक, माधव राधाभावपुर।।
सार्वभौमशोधन, गजपति–तारण, रामानन्द–पोषण वीर।
रूपानन्द–वर्धन, सनातन–पालन, हरिदास–मोदन धीर।।
व्रजरस–भावन, दुष्टमत–शातन, कपटि–विघातन काम।
शुद्धभक्त–पालन, शुष्कज्ञान–ताड़न, छलभक्ति–दूषण राम।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(च)

'दयाल निताइ चैतन्य' ब'ले नाच् रे आमार मन।
नाच् रे आमार मन, नाच् रे आमार मन।।
(एमन दयाल तो नाइ हे, मार खे'ये प्रेम देय)
(ओरे) अपराध दूरे या'वे, पा'वे, प्रेमधन।
(ओ नामे अपराध–विचार तो नाइ हे)
(तखन) कृष्णनामे रुचि ह'वे, घुचिवे बन्धन।।
(कृष्णनामे अनुराग तो ह'वे हे)
(तखन) अनायासे सफल ह'वे जीवेर जीवन।
(कृष्णरति बिना जीवन तो मिछे हे)
(शेषे) वृन्दावने राधाश्यामेर पा'वे दरशन।।
(गौर–कृपा ह'ले हे)

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(छ)

'हरि' बल, 'हरि' बल, 'हरि' बल, भाइ रे।
हरिनाम आनियाछे गौरांग निताइ रे।।
(मोदेर दुःख दे'खे रे)

हरिनाम बिना जीवेर अन्य धन नाइ रे।
हरिनामे शुद्ध ह'ल जगाइ–माधाइ रे।।
(बड़ पापी छिल रे)

मिछे मायाबद्ध हये जीवन काटाइ रे।
(आमि आमार बले रे)

आशावशे घुरे' घुरे' आर कोथा याइ रे।।
(आशार शेष नाइ रे)

'हरि' ब'ले देओ भाइ आशार मुखे छाइ रे।
(निराश तो सुख रे)

भोग–मोक्ष–वाञ्छा छाड़ि' हरिनाम गाइ रे।।
(शुद्धसत्त्व हये रे)

ना चे'येओ नामेर गुणे ओ सब फल पाइ रे।
(तुच्छ फले प्रयास छे'ड़े रे)

विनोद बले, याइ ल'ये नामेर बालाइ रे।।
(नामेर बालाइ छे'ड़े रे)

(ज)

विभावरी–शेष, आलोक प्रवेश, निद्रा छाड़ि' उठ जीव।
बल' हरि हरि, मुकुन्द मुरारि, राम कृष्ण हयग्रीव।।
नृसिंह वामन, श्रीमधुसूदन, ब्रजेन्द्रनन्दन श्याम।

पूतना – घातन, कैटभ – शातन, जय दाशरथि – राम।।
यशोदा – दुलाल, गोविन्द – गोपाल, वृन्दावन – पुरन्दर।
गोपीप्रिय – जन, राधिका – रमण, भुवन – सुन्दरवर।।
रावणान्तकर, माखन – तस्कर, गोपीजन – वस्त्रहारी।
ब्रजेर राखाल, गोपवृन्दपाल, चित्तहारी वंशीधारी।।
योगीन्द्र – वन्दन, श्रीनन्द – नन्दन, ब्रजजन – भयहारी।
नवीन नीरद, रूप मनोहर, मोहन – वंशीबिहारी।।
यशोदा – नन्दन, कंस – निसूदन, निकुञ्जरास – विलासी।
कदम्ब – कानन, रासपरायण, वृन्दाविपिन – निवासी।।
आनन्द – वर्द्धन, प्रेम – निकेतन, फुलशर – योजक काम।
गोपांगनागण – , चित्त – विनोदन, समस्त – गुणगण – धाम।।
यामुन – जीवन, केलि – परायण, मानसचन्द्र – चकोर।
नाम – सुधारस, गाओ कृष्ण – यश, राख वचन मन मोर।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(झ)

यशोमती – नन्दन, ब्रजवर – नागर, गोकुल – रञ्जन कान।
गोपी – पराणधन, मदन – मनोहर, कालीय – दमन – विधान।।
अमल हरिनाम अमिय – विलासा।।
विपिन – पुरन्दर, नवीन – नागरवर, वंशीवदन, सुवासा।।
ब्रजजन – पालन, असुरकुल – नाशन, नन्द – गोधन – राखओयाला।
गोविन्द, माधव, नवनीत – तस्कर, सुन्दर नन्दगोपाला।।
यामुन – तटचर, गोपी – वसनहर, रास – रसिक कृपामय।
श्रीराधाबल्लभ, वृन्दावन – नटवर, भकतिविनोद – आश्रय।।

(ञ)

बोल हरि बोल (3 बार)
मनेर आनन्दे, भाइ, बोल हरि बोल।
बोल हरि बोल (3 बार)
जनमे जनमे सुखे बोल हरि बोल।।
बोल हरि बोल (3 बार)
मानव-जन्म पे'ये, भाइ, बोल हरि बोल।
बोल हरि बोल (3 बार)
सुखे थाक, दुःखे थाक, बोल हरि बोल।।
बोल हरि बोल (3 बार)
सम्पदे विपदे, भाइ, बोल हरि बोल।
बोल हरि बोल (3 बार)
कृष्णेर संसारे थाकि', बोल हरि बोल।।
बोल हरि बोल (3 बार)
असत्संग छाड़ि', भाइ, बोल हरि बोल।
बोल हरि बोल (3 बार)
वैष्णव-चरणे पड़ि', बोल हरि बोल।।
बोल हरि बोल (3 बार)
गौर-नित्यानन्द बोल (3 बार)
गौर-गदाधर बोल (3 बार)
गौर-अद्वैत बोल (3 बार)

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ट)

श्रीकृष्ण गोपाल हरे मुकुन्द
गोविन्द हे नन्द किशोरकृष्ण।
हा श्रीयशोदातनय प्रसीद
श्रीवल्लवीजीवन राधिकेश।।

(श्रीबृहद्भागवतामृत)

(ठ)

जय गोद्रुमपति गोरा।
निताइ – जीवन, अद्वैतेर धन, वृन्दावन – भाव – विभोरा।
गदाधर – प्राण, श्रीवास – शरण, कृष्णभक्त – मानस – चोरा।।

(ड)

कलियुगपावन विश्वम्भर।
गौड़चित्तगगन – शशधर।।
कीर्तन – विधाता, परप्रेमदाता,
शचीसुत पुरटसुन्दर।।

(ढ)

कृष्णचैतन्य अद्वैत प्रभु नित्यानन्द।
गदाधर श्रीनिवास मुरारि मुकुन्द।
स्वरूप – रूप – सनातन – पुरी – रामानन्द।।

(ण)

कृष्ण गोविन्द हरे।
गोपीवल्लभ शौरे।।
श्रीनिवास दामोदर श्रीराम मुरारे।
नन्दनन्दन माधव नृसिंह कंसारे।।

(त)

राधावल्लभ माधव श्रीपति मुकुन्द।
गोपीनाथ मदनमोहन रास – रसानन्द।
अनंग – सुखद – कुञ्जबिहारी गोविन्द।।

(थ)

राधामाधव कुञ्जबिहारी,
गोपीजनवल्लभ गिरिवरधारी।
यशोदानन्दन, ब्रजजनरंजन,
यामुनतीर – वनचारी।।

(द)

राधावल्लभ, राधाविनोद।
राधामाधव राधाप्रमोद।।
राधारमण, राधानाथ, राधावरणामोद।
राधारसिक, राधाकान्त, राधामिलन – मोद।।

(ध)

जय यशोदानन्दन कृष्ण गोपाल गोविन्द।
जय मदनमोहन हरे अनन्त मुकुन्द।।
जय अच्युत माधव राम वृन्दावनचन्द्र।
जय मुरलीवदन श्याम गोपीजनानन्द।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(न)

जय जय श्रीकृष्णचैतन्य नित्यानन्द।
जयाद्वैतचन्द्र जय गौरभक्तवृन्द।।
जय जय शचीसुत गौरांगसुन्दर।
जय नित्यानन्द पद्मावतीर कोङर।।
जय जय सीतानाथ अद्वैत–गोसाञी।
याँहार कृपाते पाइ चैतन्य–निताइ।।
जय जय गदाधर प्रेमेर सागर।
गौरांगेर प्रियोत्तम पण्डित–प्रवर।।
श्रीवंशीवदन जय गौरप्रियोत्तम।
श्रीवासपण्डित जय, जय भक्तगण।।
सभाकार पदरेणु शिरे रहु मोर।
याहार प्रभावे नाशे कलि महाघोर।।
जय जय गुरुगोसाञि शरण तोहाँर।
याँहार कृपाते तरि ए–भव–संसार।।
जय जय रसिकेन्द्र स्वरूपगोसाञी।
प्रभुर निकटे याँ'र अत्यन्त बड़ाइ।।

जय रूप-सनातन भट्ट-रघुनाथ।
श्रीजीव गोपालभट्ट दास-रघुनाथ।।
जय जय नीलाचलचन्द्र जगन्नाथ।
मो-पापीरे कृपा करि'कर आत्मसात्।।
जय श्रीगोपालदेव भकतवत्सल।
नवघन जिनि' तनु परम उज्ज्वल।।
जय जय गोपीनाथ प्रभु प्राण मोर।
पुरी गोसाञी लागि' याँ'र नाम 'क्षीरचोर'।।
जय राधे जय कृष्ण जय वृन्दावन।
जय जय श्रीरासमण्डल सर्वोत्तम।।
श्रीरास-नागरी जय जय नन्दलाल।
जय जय मोहन श्रीमदनगोपाल।।
जय जय वंशीवट जय श्रीपुलिना।
जय जय श्रीकालिन्दी जय श्रीयमुना।।
जय रे द्वादशवन कृष्ण-लीलास्थान।
ताल-वन, खेजुर-वन, भाण्डीर-वन नाम।।
जय जय बेल-वन, खदिर-बहुला।
जय जय कुमुद-काम्य-वने कृष्णलीला।।
जय जय निभृत-निकुञ्ज रम्यस्थान।
जय जय श्रीवनादि भद्र-वन नाम।।
जय जय श्यामकुण्ड जय ललिताकुण्ड।
जय जय राधाकुण्ड प्रताप-प्रचण्ड।।
जय जय मानसगंगा जय गोवर्धन।
जय जय दानघाट-लीला सर्वोत्तम।।
जय जय वृषभानुपुर नामे ग्राम।

यथाय संकेत—राधाकृष्ण–लीलास्थान।।
जय जय विमलाकुण्ड जय नन्दीश्वर।
जय जय कृष्णकेलि पावनसरोवर।।
जय जय रोहिणीनन्दन बलराम।
जय जय राधाकृष्ण स्वयं रसधाम।।
जय जय मधुवन मधुपान–स्थान।
याँहा मधुपाने मत्त हैला बलराम।।
जय जय रामघाट परम निर्जन।
याँहा रासलीला कैला रोहिणीनन्दन।।
जय जय नन्दघाट जयाक्षयवट।
जय जय चीरघाट यमुना–निकट।।
जय जय वृषभानु अभिमन्यु जय।
कृष्णप्राणतुल्य श्रीदामादि जय जय।।
जय जय पौर्णमासी बलि' योगमाया।
राधाकृष्णलीला कैला काया आच्छादिया।।
जय श्रीसरला वंशी त्रिलोकाकर्षिणी।
कृष्णाधरे स्थिता नित्य–आनन्दरूपिणी।।
जय जय ललितादि सर्वसखीगण।
याँ' सभार प्रेमाधीन श्रीनन्दनन्दन।।
जय जय ब्रजगोपश्रेष्ठ नन्दराज।
जय जय ब्रजेश्वरी—श्रेष्ठा गोपीमाझ।।
जय जय सर्वश्रेष्ठ श्रीवृन्दावन।
वेद–अगोचर स्थान कन्दर्पमोहन।।
जय जय रत्नवेदी रत्न–सिंहासन।
जय जय राधाकृष्ण संगे सखीगण।।

शुन शुन ओरे भाइ! करिये प्रार्थना।
ब्रजे राधाकृष्णलीला करह भावना।।
एइ सब रसलीला ये करे स्मरण।
शिरे धरि' वन्दि आमि ताँहार चरण।।
आनन्दे बलह हरि भज वृन्दावन।
श्रीगुरु-वैष्णव-पदे मजाइया मन।।
श्रीगुरु-वैष्णव-पादपद्म करि' आश।
नामसंकीर्तन कहे **नरोत्तमदास**।।

श्रीमन्महाप्रभु-शतनाम

नदीया नगरे निताइ नेचे नेचे गाय रे।।ध्रु।।
जगन्नाथसुत महाप्रभु विश्वम्भर।
मायापुरशशी नवद्वीप-सुधाकर।।
शचीसुत गौरहरि निमाइ-सुन्दर।
राधा-भावकान्ति-आच्छादित-नटवर।।
नामानन्द-चपल-बालक मातृभक्त।
ब्रह्माण्डवदन तर्की कौतुकानुरक्त।।
विद्यार्थी-उडुप चौरद्वयेर मोहन।
तैर्थिक-सर्वस्व ग्राम्यबालिका-क्रीड़न।।
लक्ष्मी-प्रति वरदाता उद्धत-बालक।
श्रीशचीर पति-पुत्र-शोक-निवारक।।
लक्ष्मीपति पूर्वदेश-सर्वक्लेशहर।
दिग्विजयी-दर्पहारी विष्णुप्रियेश्वर।।
आर्यधर्म-पाल पितृ-गयापिण्डदाता।

पुरीशिष्य मध्वाचार्य – सम्प्रदाय – पाता।।
कृष्णनामोन्मत्त कृष्णतत्त्व – अध्यापक।
नाम – संकीर्तन – युगधर्म – प्रवर्त्तक।।
अद्वैत – बान्धव श्रीनिवास – गृहधन।
नित्यानन्दप्राण गदाधरेर जीवन।।

अन्तर्द्वीप – शशधर सीमन्त – विजय।
गोद्रुम – बिहारी मध्यद्वीप – लीलाश्रय।।
कोलद्वीप – पति ऋतुद्वीप – महेश्वर।
जह्नु – मोदद्रुम – रुद्रद्वीपेर ईश्वर।।
नवखण्ड – रंगनाथ जाह्नवी – जीवन।
जगाइ – माधाइ आदि दुर्वृत्ततारण।।

नगरकीर्त्तन – सिंह काजी – उद्धारण।
शुद्धनाम – प्रचारक भक्तार्त्तिहरण।
नारायणी – कृपासिन्धु जीवेर नियन्ता।
अधमपडुया – दण्डी भक्त – दोष – हन्ता।।
श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्र भारती – तारण।
परिब्राज – शिरोमणि उत्कल – पावन।।

अम्बुलिंग – भुवनेश – कपोतेश – पति।
क्षीरचोर – गोपाल – दर्शन – सुखी यति।।
निर्दण्डि – सन्यासी सार्वभौम – कृपामय।
स्वानन्द – आस्वादानन्दी सर्वसुखाश्रय।।
पुरट – सुन्दर वासुदेव – त्राणकर्त्ता
रामानन्दसखा भट्टकुल – क्लेशहर्त्ता।।

बौद्ध – जैन – मायावादि – कुतर्क – खण्डन।

दक्षिण – पावन भक्तिग्रन्थ – उद्धारण।।
आलाल – दर्शनानन्दी रथाग्र – नर्त्तक।
गजपति – त्राण देवानन्द – उद्धारक।।
कुलिया – प्रकाशे दुष्ट पड़ुयार त्राण।
रूप – सनातन – बन्धु सर्वजीव – प्राण।।
वृन्दावनानन्दमूर्ति बलभद्र – संगी।
यवन – उद्धारी भट्ट – बलभेर – रंगी।।
काशीवासि – सन्यासि – उद्धारी प्रेमदाता।
मर्कटबैरागि – दण्डी आचण्डाल – त्राता।।
भक्तेर गौरवकारी भक्तप्राणधन।
हरिदास – रघुनाथ – स्वरूप – जीवन।।
नदीया नगरे निताइ नेचे नेचे गाय रे।
भकतिविनोद ताँ'र पड़े रांगा पाय रे।।

श्रीकृष्ण – विःशोत्तर – शतनाम

नगरे नगरे गोरा गाय।।ध्रु।।
यशोमती – स्तन्यपायी श्रीनन्द – नन्दन।
इन्द्रनीलमणि ब्रज – जनेर जीवन।।
श्रीगोकुल – निशाचरी – पूतना – घातन।
दुष्ट – तृणावर्त्तहन्ता शकट – भञ्जन।।
नवनीत – चोर दधिहरण – कुशल।
यमल – अर्जुन – भञ्जी गोविन्द गोपाल।।
दामोदर वृन्दावन – गोवत्स – राखाल।
वत्सासुरान्तक हरि निजजनपाल।।
वकशत्रु अघहन्ता ब्रह्मविमोहन।

धेनुकनाशन कृष्ण कालीयदमन।।
पीताम्बर शिखिपिच्छधारी वेणुधर।
भाण्डीरकाननलील दावानल – हर।।
नटवर गुहाचर शरतविहारी।
बल्लवीबल्लभ देव गोपीवस्त्रहारी।।
यज्ञपत्नीगण – प्रति करुणार सिन्धु।
गोवर्धनधृक् माधव ब्रजवासिबन्धु।।
इन्द्रदर्पहारी नन्दरक्षिता मुकुन्द।
श्रीगोपीवल्लभ रासक्रीड़ – पूर्णानन्द।।
श्रीराधावल्लभ राधामाधव सुन्दर।
ललिता – विशाखा – आदि – सखी – प्राणेश्वर।।
नव – जलधरकान्ति मदनमोहन।
वनमाली स्मेरमुख गोपीप्राणधन।।
त्रिभंगी मुरलीधर यामुन – नागर।
राधाकुण्ड – रंगनेता रसेर सागर।।
चन्द्रावली – प्राणनाथ कौतुकाभिलाषी।
राधामान – सुलम्पट मिलन – प्रयासी।।
मानस – गंगार दानी प्रसून – तस्कर।
गोपीसह हठकारी ब्रजवनेश्वर।।
गोकुल – सम्पद् गोपदुःख – निवारण।
दुर्मद – दमन भक्तसन्ताप – हरण।।
सुदर्शन – मोचन श्रीशङ्खचूड़ान्तक।
रामानुज श्यामचाँद मुरलीवादक।।
गोपीगीत – श्रोता मधुसूदन मुरारि।

अरिष्टघातक राधाकुण्डादि-बिहारी।।
ब्योमान्तक पद्मनेत्र केशिनिसूदन।
रंगक्रीड़ कंसहन्ता मल्लप्रहरण।।
वसुदेव-सुत वृष्णिवंश-कीर्त्तिध्वज।
दीननाथ मथुरेश देवकीगर्भज।।
कुब्जा-कृपामय विष्णु शौरि नारायण।
द्वारकेश नरकघ्न श्रीयदुनन्दन।।
श्रीरुक्मिणीकान्त सत्यापति सुरपाल।
पाण्डव-बान्धव शिशुपालादिर काल।।
जगदीश जनार्दन केशवार्त्तत्राण।
सर्व-अवतार-बीज विश्वेर निदान।।
मायेश्वर योगेश्वर ब्रह्मतेजाधार।
सर्वात्मार आत्मा प्रभु प्रकृतिर पार।।
पतितपावन जगन्नाथ सर्वेश्वर।
वृन्दावनचन्द्र सर्वरसेर आकर।।
नगरे नगरे गोरा गाय।
भकतिविनोद तछु पाय।।

श्रीकृष्ण-अष्टोत्तरशतनाम

जय जय गोविन्द गोपाल गदाधर।
कृष्णचन्द्र कर कृपा करुणासागर।।
जय जय गोविन्द गोपाल वनमाली।
श्रीराधार प्राणधन मुकुन्द मुरारि।।
हरिनाम बिने रे गोविन्दनाम बिने।
विफले मनुष्यजन्म याय दिने दिने।।

दिन गेल मिछे काजे रात्रि गेल निद्रे।
ना भजिनु राधाकृष्ण-चरणारविन्दे।।
कृष्ण-भजिवार तरे संसारे आइनु।
मिछे-मायाय बद्ध ह'ये वृक्षसम हैनु।।
फलरूपे पुत्र-कन्या डाल भांगि' पड़े।
कालरूपे संसारेते पक्षी वासा करे।।
यखन कृष्ण जन्म निल देवकी-उदरे।
मथुराते देवगण पुष्पवृष्टि करे।।
वसुदवे राखि' आइला नन्देर मन्दिरे।
नन्देर आलये कृष्ण दिने दिने बाड़े।।
श्रीनन्द राखिल नाम 'नन्देर नन्दन'।
यशोदा राखिल नाम 'यादु वाछाधन'।।
उपानन्द नाम राखे 'सुन्दर-गोपाल'।
ब्रजबालक नाम राखे 'ठाकुर राखाल'।।
सुबल राखिल नाम 'ठाकुर कानाइ'।
श्रीदाम राखिल नाम 'राखालराजा भाइ'।।
'ननीचोरा' नाम राखे यतेक गोपिनी।
'कालसोना' नाम राखे राधाविनोदिनी।।
चन्द्रावली नाम राखे 'मोहन-वंशीधारी'।
कुब्जा राखिल नाम 'पतितपावन हरि'।।
'अनन्त' राखिल नाम अन्त ना पाइया।
'कृष्ण'-नाम राखे गर्ग ध्यानेते जानिया।।
कण्वमुनि राखे नाम 'देव चक्रपाणि'।
'वनमाली' नाम राखे वनेर हरिणी।।
गजराज नाम राखे 'श्रीमधुसूदन'।

अजामिल नाम राखे 'देव नारायण'।।
पुरन्दर नाम राखे 'देव श्रीगोविन्द'।
द्रौपदी राखिल नाम 'देव दीनबन्धु'।।
सुदामा राखिल नाम 'दारिद्र्यभञ्जन'।
ब्रजवासी नाम राखे 'ब्रजेर जीवन'।।
'दर्पहारी'–नाम राखे अर्जुन सुधीर।
'पशुपति' नाम राखे गरुड़ महावीर।।
युधिष्ठिर राखे नाम 'देव–यदुवर'।
विदुर राखिल नाम 'कांगालेर ठाकुर'।।
वासुकी राखिल नाम 'देव–सृष्टि–स्थिति'।
ध्रुवलोके नाम राखे 'ध्रुवेर सारथि'।।
नारद राखिल नाम 'भक्तप्राणधन'।
भीष्मदेव नाम राखे 'लक्ष्मीनारायण'।।
सत्यभामा नाम राखे 'सत्येर सारथि'।
जाम्बवती नाम राखे 'देव–योद्धापति'।।
विश्वामित्र नाम राखे 'संसारेर सार'।
अहल्या राखिल नाम 'पाषाणी–उद्धार'।।
भृगुमुनि नाम राखे 'जगतेर हरि'।
पञ्चमुखे 'राम'–नाम गान त्रिपुरारि।।
'कुञ्जकेशी' नाम राखे बली सदाचारी।
प्रह्लाद राखिल नाम 'नृसिंह मुरारि'।।
दैत्यारि द्वारकानाथ द्रारिद्र्यभञ्जन।
दयामय द्रौपदीर लज्जा–निवारण।।
स्वरूपे सबार हय गोलोकेते स्थिति।
बैकुण्ठे बैकुण्ठनाथ कमलार पति।।

वासुदेव – प्रद्युम्नादि – चतुर्व्यूह – सह।
महैश्वर्यपूर्ण ह'ये विहार करह।।
अनिरुद्ध संकर्षण नृसिंह वामन।
मत्स्य – कूर्म – वराहादि अवतारगण।।
क्षीरोदकशायी हरि गर्भोदविहारी।
कारणसागरे शक्ति मायाते सञ्चारी।।
वृन्दावने कर लीला धरि' गोपवेश।
से – लीलार अन्त प्रभु नाहि पाय 'शेष'।।
पूतना – विनाशकारी शकटभञ्जन।
तृणावर्त्त – वक – केशी – धेनुक – मर्दन।।
अघारि गोवत्सहारि – ब्रह्मार मोहन।
गिरिगोवर्धनधारी अर्जुनभञ्जन।।
कालीयदमनकारी यमुनाविहारी।।
गोपीकुल – वस्त्रहारी श्रीरासबिहारी।।
इन्द्रदर्प – नाशकारी कुब्जामनोहारी।
चानुर – कंसादि – नाशी अक्रूरनिस्तारी।।
नवीन – नीरद – कान्ति शिशुगोपवेश।
शिखिपुच्छविभूषित ब्रह्म परमेश।।
पीताम्बर वेणुधर श्रीवत्स – लाञ्छन।
गोप – गोपी – परिवृत कमल – नयन।।
वृन्दावन – वनचारी मदनमोहन।
मथुरामण्डलचारी श्रीयदुनन्दन।।
सत्यभामा – प्राणपति रुक्मिणीरमण।
प्रद्युम्न – जनक शिशुपालादि – दमन।।
उद्धवेर गतिदाता द्वारकार पति।

त्रिभुवन-परित्राता अखिलेर गति।।
शाल्व-दन्तवक्र-नाशी महिषीविलासी।
साधुजन-त्राणकर्त्ता भूभार-विनाशी।।
पाण्डवेर सखा कृष्ण विदुरेर प्रभु।
भीष्मेर उपास्यदेव भुवनेर विभु।।
देवेर आराध्यदेव मुनिजनगति।
योगिध्येय-पादपद्म राधिकार पति।।
रसमय रसिक नागर अनुपम।
निकुञ्जबिहारी हरि नवघनश्याम।।
शालग्राम दामोदर श्रीपति श्रीधर।
तारक-ब्रह्म सनातन परम-ईश्वर।।
कल्पतरु कमललोचन हृषीकेश।
पतितपावन गुरु ज्ञान-उपदेश।।
चिन्तामणि चतुर्भूज देव चक्रपाणि।
दीनबन्धु देवकीनन्दन यदुमणि।।
अनन्त कृष्णेर नाम अनन्त महिमा।
नारदादि व्यासदेव दिते नारे सीमा।।
नाम भज, नाम चिन्त, नाम कर सार।
अनन्त कृष्णेर नाम महिमा अपार।।
शतभार-सुवर्ण गो-कोटी कन्यादान।
तथापि ना हय कृष्ण-नामेर समान।।
येइ नाम, सेइ कृष्ण भज निष्ठा करि'।
नामेर सहित आछेन आपनि श्रीहरि।।
शुन शुन ओरे भाइ, नामसंकीर्त्तन।
ये-नाम श्रवणे हय पाप-विमोचन।।
कृष्णनाम भज जीव, आर सब मिछे।

पलाइते पथ नाइ, यम आछे पिछे।।
कृष्णनाम हरिनाम बड़इ मधुर।
येइ जन कृष्ण भजे सेइ बड़ चतुर।।
ब्रह्मा आदि देव याँ'रे ध्याने नाहि पाय।
से–हरि वञ्चित ह'ले कि हवे उपाय।।
हिरण्यकशिपुर करि' उदर विदारण।
प्रह्लादे करिला रक्षा देव नारायण।।
बलिरे छलिते प्रभु हइला वामन।
द्रौपदीर लज्जा हरि कैला निवारण।।
अष्टोत्तरशत–नाम ये करे पठन।
अनायासे पाय राधाकृष्णेर चरण।।
भक्तवाञ्छा पूर्ण करे नन्देर नन्दन।
मथुराय कंस–ध्वंस, लंकाय रावण।।
वकासुरवध–आदि कालीय दमन।
द्विज हरिदास कहे नामसंकीर्त्तन।।

अधिवास–कीर्त्तन

जय जय नवद्वीप माझ।
गौरांग–आदेश पाञा, ठाकुर अद्वैत याञा,
करे खोल मंगलेर साज।।
आनिया वैष्णव सब, हरिबोल कलरव,
संकीर्त्तनेर करे अधिवास।
आपनि निताइ धन, देइ माला–चन्दन,
करे प्रिय वैष्णव–सम्भाष।।
गोविन्द मृदंग लैया, बाजाय ताता थैया थैया,

करताले अद्वैत चपल।

हरिदास करे गान, श्रीवास धरये तान,

नाचे गोरा, कीर्त्तन मंगल।।

चौदिके वैष्णवगणे, हरि बोले घने घने,

कालि हवे कीर्त्तन–महोत्सव।

आजि खोल–मांगलि, राखिये आनन्द करि',

वंशी बले देह 'जय' रव।।

अरुणोदय–कीर्त्तन

(क)

उदिल अरुण पूरब भागे,
द्विजमणि गोरा अमनि जागे,
भकतसमूह लइया साथे,
गेला नगर–ब्राजे।

'ताथइ ताथइ' बाजल खोल,
घन घन ताहे झाँजेर रोल,
प्रेमे ढल ढल सोनार अंग,
चरणे नूपुर बाजे।।

मुकुन्द माधव यादव हरि,
बलरे बलरे वदन भरि',
मिछे निद–वशे गेलरे राति,
दिवस शरीर–साजे।

एमन दुर्लभ मानव देह,
पाइया कि कर, भावना केह,
एबे ना भजिले यशोदा–सुत,

चरमे पड़िबे लाजे।।
उदित तपन हइले अस्त,
दिन गेल बलि' हइबे व्यस्त,
तबे केन एबे अलस हइ',
ना भज हृदयराजे।
जीवन अनित्य जानह सार,
ताहे नानाविध विपद भार,
नामाश्रय करि' यतने तुमि,
थाकह आपन काजे।।
कृष्णनाम सुधा करिया पान,
जुड़ाओ '**भकतिविनोद**' प्राण,
नाम बिना किछु नाहिक आर,
चौद्द भुवन-माझे।
जीवेर कल्याणसाधन-काम,
जगते आसि' ए मधुर नाम,
अविद्या-तिमिर-तपनरूपे,
हृद्गगने विराजे।।

(ख)

जीव जाग, जीव जाग, गोराचाँद बले।
कत निद्रा याओ माया-पिशाचीर कोले।।
भजिब बलिया एसे' संसार-भितरे।
भुलिया रहिले तुमि अविद्यार भरे।।
तोमारे लइते आमि हइनु अवतार।
आमि बिना बन्धु आर के आछे तोमार।।

एनेछि औषधि माया नाशिवार लागि'।
हरिनाम–महामन्त्र लओ तुमि मागि'।।
भकतिविनोद प्रभु–चरणे पड़िया।
सेइ हरिनाम–मन्त्र लइल मागिया।।

श्रीनगर–कीर्त्तन
(श्रीनामहट्ट–आज्ञाटहल)
(क)

नदीया–गोद्रुमे नित्यानन्द महाजन।
पातियाछे नामहट्ट जीवेर कारण।।
(श्रद्धावान् जन हे, श्रद्धावान् जन हे)
प्रभुर आज्ञाय भाइ, मागि एइ भिक्षा।
बल कृष्ण, भज कृष्ण, कर कृष्ण शिक्षा।।
अपराध शून्य हये लह कृष्णनाम।
कृष्ण माता, कृष्ण पिता, कृष्ण धन–प्राण।।
कृष्णेर संसार कर, छाड़ि' अनाचार।
जीवे दया, कृष्णनाम–सर्वधर्मसार।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

बड़ सुखेर खबर गाइ।
सुरभि–कुञ्जेते नामेर हाट खुलेछे खोद–निताइ।।
बड़ मजार कथा ताय।
श्रद्धामूल्ये शुद्धनाम सेइ हाटेते बिकाय।।
यत भक्तवृन्द बसि'।

अधिकारी देखे' नाम वेच्छे दर कषि।।

यदि नाम किन्बे भाइ।

आमार संगे चल महाजनेर काछे याइ।।

तुमि किन्बे कृष्णनाम।

दस्तुरि लइव आमि, पूर्ण ह'बे काम।।

बड़ दयाल नित्यानन्द।

श्रद्धामात्र ल'ये देन परम आनन्द।।

एकबार देख्ले चक्षे जल।

गौर ब'ले निताइ देन सकल सम्बल।।

देन शुद्ध कृष्ण–शिक्षा।

जाति, धन, विद्या–बल ना करे अपेक्षा।।

अमनि छाड़े मायाजाल।

गृहे थाक, वने थाक, ना थाके जञ्जाल।।

आर नाइको कलिर भय।

आचण्डाले देन नाम निताइ दयामय।।

भकतिविनोद डाकि' कय।

निताइचाँदेर चरण बिना आर नाहि आश्रय।।

(च)

गाय गोरा मधुर स्वरे।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

गृहे थाक, वने थाक, सदा 'हरि' ब'ले डाक,

सुखे दुःखे भुल ना'क,

बदने हरिनाम कर रे।।

मायाजाले बद्ध ह'ये, आछ मिछे काज ल'ये,
एखनओ चेतन पे'ये,
राधा–माधव नाम बल रे।।
जीवन हइल शेष, ना भजिले हृषीकेश,
भक्तिविनोद–(एइ) उपदेश,
एकबार नामरसे मातरे।।

(घ)

एकबार भाव मने,
आशा–वशे भ्रमि' हेथा पा'वे कि सुख जीवने।
के तुमि कोथाय छिले, कि करिते हेथा एले,
किवा काज क'रे गेले, यावे कोथा शरीर–पतने।
केन सुख, दुःख, भय, अहंता–ममतामय,
तुच्छ जय–पराजय, क्रोध, हिंसा, द्वेष अन्यजने।
भकतिविनोद कय, करि' गोरापदाश्रय,
चिदानन्द–रसमय, हओ राधाकृष्ण–नामगाने।।

(ङ)

'राधाकृष्ण' बल् बल् बल रे सबाइ।
(एइ) शिक्षा दिया, सब नदीया फिर्‌छे नेचे गौर–निताइ।
(मिछे) मायार वशे', याच्छ भेसे', खाच्छ हाबुडुबु, भाइ।।
(जीव) कृष्णदास, ए विश्वास, कर्'ले त' आर दुःख नाइ।
(कृष्ण) बल्‌बे यबे, पुलक ह'बे, झ'र्‌बे आँखि, बलि ताइ।।
(राधा–) कृष्ण बल, संगे चल, एइमात्र भिक्षा चाइ।
(याय) सकल विपद, **भक्तिविनोद**, बलेन, यखन ओ–नाम गाइ।।

(च)

गाय गोराचांद जीवेर तरे।
हरे कृष्ण हरे।।ध्रु।।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे,
हरे कृष्ण हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे,
हरे कृष्ण हरे।।
एकबार बल रसना उच्चैःस्वरे।
(बल) नन्देर नन्दन, यशोदा–जीवन, श्रीराधारमण प्रेम–भरे।।
(बल) श्रीमधुसूदन, गोपी–प्राणधन, मुरलीवदन नृत्य क'रे।
(बल) अघ–निसूदन, पूतना–घातन, ब्रह्म–विमोहन, ऊर्द्ध्व–करे।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(छ)

अंग–उपांग–अस्त्र–पार्षद–संगे।
नाचइ भाव–मूरति गोरा रंगे।।
गाओत कलियुग–पावन नाम।
भ्रमइ शचीसुत नदीया धाम।।
(हरि) हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
गोपाल गोविन्द राम श्रीमधुसूदन।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ज)

हरे कृष्ण हरे।।ध्रु।।
निताइ कि नाम एनेछे रे।

(निताइ) नाम एनेछे, नामेर हाटे,

श्रद्धा-मूल्ये नाम दितेछे रे।।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे रे।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे रे।।

(निताइ) जीवेर दशा, मलिन देखे,

नाम एनेछे ब्रज थेके रे।

ए नाम, शिव जपे पञ्चमुखे रे

(मधुर एइ हरिनाम)

ए नाम, ब्रह्मा जपे चतुर्मुखे रे

(मधुर एइ हरिनाम)

ए नाम, नारद जपे वीणायन्त्रे रे

(मधुर एइ हरिनाम)

ए नामाभासे अजामिल बैकुण्ठे गेल रे।

ए नाम बल्ते बल्ते ब्रजे चल रे।।

(**भक्तिविनोद** बले)

(झ)

हरि ब'ले मोदेर गौर एलो।।धु।।

एल रे गौरांगचाँद प्रेमे एलो-थेलो।

निताइ-अद्वैत-संगे गोद्रुमे पशिल।।

संकीर्त्तन-रसे मेते नाम विलाइल।

नामेर हाटे एसे प्रेमे जगत् भासाइल।।

गोद्रुमवासीर आज दुःख दूरे गेल।

भक्तवृन्द-संगे आसि' हाट जागाइल।।

नदीया भ्रमिते गोरा एल नामेर हाटे।

गौर एल हाटे, संगे निताइ एल हाटे।।
नाचे मातोयारा निताइ गोद्रुमेर माठे।
जगत् माताय निताइ प्रेमेर मालसाटे।।
(तोरा देखे यारे)
अद्वैतादि भक्तवृन्द नाचे घाटे घाटे।
पलाय दुरन्त कलि पड़िया विभ्राटे।।
कि सुखे भासिल जीव गोराचाँदेर नाटे।
देखिया शुनिया पाषण्डीर बुक फाटे।।
(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

भजन–कीर्त्तन

(क)

भज रे भज रे आमार मन अति मन्द।
(भजन बिना गति नाइ रे)
(भज) ब्रजवने राधाकृष्ण–चरणारविन्द।।
(ज्ञान–कर्म परिहरि रे)
(भज) गौर–गदाधराद्वैत गुरु–नित्यानन्द।
(गौर–कृष्णे अभेद जेने रे)
(गुरु कृष्णप्रिय जेने रे)
(स्मर) श्रीनिवास हरिदास–मुरारि–मुकुन्द।।
(गौरप्रेमे स्मर, स्मर रे)
(स्मर) रूप–सनातन–जीव–रघुनाथद्वन्द्व।
(यदि भजन करबे रे)
(स्मर) राघव–गोपालभट्ट–स्वरूप–रामानन्द।।
(कृष्णप्रेम यदि चाओ रे)

(स्मर) गोष्ठीसह कर्णपूर, सेन शिवानन्द।
(अजस्र स्मर, स्मर रे)
(स्मर) रूपानुग साधुजन भजन – आनन्द।।
(ब्रजे वास यदि चाओ रे)

(ख)

भाव ना भाव ना, मन, तुमि अति दुष्ट।
(विषय – विषे आछ हे)
काम – क्रोध – लोभ – मोह – मदादि – आविष्ट।।
(रिपुर वशे आछ हे)
असद्वार्ता – भुक्ति – मुक्ति – पिपासा – आकृष्ट।
(असत्कथा भाल लागे हे)
प्रतिष्ठाशा – कुटिनाटि – शठतादि – पिष्ट।
(सरल त' ह'ले ना हे)
घिरेछे तोमारे, भाइ, ए सब अरिष्ट।।
(ए सब त' शत्रु हे)
ए सब ना छेड़े' किसे पा'बे राधाकृष्ण।
(यतने छाड़, छाड़ हे)
साधुसंग बिना आर कोथा तव इष्ट?
(साधुसंग कर हे)
वैष्णव – चरणे मज, घुचिबे अनिष्ट।।
(एकबार भेवे देख हे)

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

श्रीनाम–महिमा

(क)

कृष्णनाम धरे कत बल।

विषय–वासनानले, मोर चित्त सदा–ज्वले,

रवितप्त मरुभूमि–सम।

कर्णरन्ध्र–पथ दिया, हृदि–माझे प्रवेशिया,

वरिषय सुधा अनुपम।।

हृदय हइते बले, जिह्वार अग्रेते चले,

शब्दरूपे नाचे अनुक्षण।

कन्ठे मोर भंगे स्वर, अंग काँपे थर थर,

स्थिर हइते ना पारे चरण।।

चक्षे धारा, देहे घर्म, पुलकित सब चर्म,

विवर्ण हइल कलेवर।

मूर्च्छित हइल मन, प्रलयेर आगमन,

भावे सर्व–देह जर जर।।

करि' एत उपद्रव, चित्ते वर्षे सुधाद्रव,

मोरे डारे प्रेमेर सागरे।

किछु ना बुझिते दिल, मोरे त' वातुल कैल,

मोर चित्त–वित्त सब हरे'।।

लइनु आश्रय याँ'र, हेन व्यवहार ताँ'र,

वर्णिते ना पारि ए–सकल।

कृष्णनाम इच्छामय, याहे याहे सुखी हय,

सेइ मोर सुखेर सम्बल।।

प्रेमेर कलिका 'नाम', अद्भुत रसेर धाम,

हेन बल करये प्रकाश।

ईषत् विकशि' पुनः, देखाय निज – रूप – गुण,
चित्त हरि' लय कृष्णपाश।।
पूर्ण विकशित हञा, ब्रजे मोरे याय लञा,
देखाय मोरे स्वरूप – विलास।
मोरे सिद्ध – देह दिया, कृष्णपाशे राखे गिया,
ए देहेर करे सर्वनाश।।
कृष्णनाम – चिन्तामणि, अखिल रसेर खनि,
नित्यमुक्त शुद्धरसमय।
नामेर बालाइ यत, सब ल'ये हइ हत,
तबे मोर सुखेर उदय।।
(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

भोजन लालसे, रसने आमार, शुनह विधान मोर।
श्रीनाम – युगल, राग – सुधारस, खाइया थाकिओ भोर।।
नवसुन्दर पीयुष राधिका – नाम।
अतिमिष्ट मनोहर तर्पण धाम।।
कृष्णनाम मधुराद्भुत गाढ़ दुग्धे।
अतीव यतने कर मिश्रित लुब्धे।।
सुरभि राग, हिम रम्य ताँहि आनि'।
अहरह पान करह सुख जानि'।।
नाहि रवे रसने प्राकृत पिपासा।
अद्भुत रस तुया पूराओब आशा।।
दास – रघुनाथ – पदे भक्तिविनोद।
याचइ राधाकृष्ण – नाम प्रमोद।।

(ग)

सइ, केवा शुनाइल श्याम–नाम।

कानेर भितर दिया, मरमे पशिल गो,

आकुल करिल मोर प्राण।।

ना जानि कतेक मधु, श्याम नामे आछे गो,

वदन छाड़िते नाहि पारे।

जपिते जपिते नाम, अवश करिल गो,

केमने पाइव सइ, तारे।।

नाम–परतापे या'र, ऐछन करिल गो,

अंगेर परशे किवा हय।

येखाने वसति ता'र, नयने हेरिब गो,

युवती–धरम केछे रय।।

पासरिते चाहि मने, पासरा ना याय गो,

कि करिब, कि हवे उपाय।

कहे द्विज चण्डीदासे, कुलवती–कुल नाशे,

आपनार यौवन याचाय।।

श्रीनामाष्टक

(क)

निखिल–श्रुतिमौलि–रत्नमाला–द्युति–नीराजित–पादपंकजान्त।

अयि मुक्तकुलैरुपास्यमानं परितस्त्वां हरिनाम संश्रयामि ।।क।।

श्रीरूप–वदने, श्रीशचीकुमार।

स्वनाम–महिमा करल प्रचार।।

यो नाम सो हरि, किछु नाहि भेद।

सो नाम सत्यमिति गायति वेद।।

सबु उपनिषद्, रत्नमाला द्युति, झकमकि' चरण-समीपे।
मंगल-आरति, करव अनुक्षण, द्विगुणित-पञ्चप्रदीपे।।
चोद्‌दभुवन माह, देव-नर-दानव, भाग याकर बलवान्।
नामरस-पीयुष, पियइ अनुक्षण, छोड़त करम-गेयान।।
नित्यमुक्त पुनः, नाम-उपासना, सतत करइ सामगाने।
गोलोके बैठत, गाओये निरन्तर, नाम-विरह नाहि जाने।।
सबु रस-आकर, 'हरि' इतिद्वयक्षर, सबुभावे करल आश्रय।
नामचरणे प'ड़े, **भकतिविनोद** कहे, तुया पदे मागहु निलय।।

(ख)

जय नामधेय मुनिवृन्दगेय,
जनरञ्जनाय परमक्षराकृते।
त्वमनादरादपि मनागुदीरितं,
निखिलोग्रताप-पटलीं विलुम्पसि।।ख।।

जय जय हरिनाम, चिदानन्दामृतधाम,
परतत्व अक्षर-आकार।
निज-जने कृपा करि', नामरूपे अवतरि',
जीवे दया करिले अपार।।
जय हरि-कृष्ण-नाम, जगजन-सुविश्राम,
सर्वजन-मानस-रञ्जन।
मुनिवृन्द निरन्तर, ये नामेर समादर,
करि' गाय भरिया वदन।।
ओहे कृष्णनामाक्षर, तुमि सर्वशक्तिधर,
जीवेर कल्याण-वितरणे।

तोमा बिना भवसिन्धु, उद्धारिते नाहि बन्धु,
आसियाछ जीव–उद्धारणे।।

आछे ताप जीवे यत, तुमि सब कर हत,
हेलाय तोमारे एकबार।

डाके यदि कोन जन, ह'ये दीन अकिञ्चन,
नाहि देखि' अन्य प्रतिकार।।

तव स्वल्पस्फूर्ति पाय, उग्रताप दूरे याय,
लिंग–भंग हय अनायासे।

भकतिविनोद कय, जय हरिनाम जय,
प'ड़े थाकि तुया पद–आशे।।

(ग)

यदाभासोऽप्युद्यन् कवलित–भवध्वान्तविभवो
दृशं तत्वान्धानामपि दिशति भक्ति–प्रणयिनीम्।
जनस्तस्योदात्तं जगति भगवन्नाम–तरणे
कृती ते निर्बक्तुं क इह महिमानं प्रभवति।।ग।।

विश्वे उदित, नाम तपन,
अविद्या–विनाश लागि'।

छोड़त सब, माया–विभव,
साधु ताहे अनुरागी।।

हरिनाम–प्रभाकर, अविद्या–तिमिरहर,
तोमार महिमा केवा जाने।

के हेन पण्डितजन, तोमार माहात्म्यगण,
उच्चैःस्वरे सकल वाखाने।।

तोमार आभास पहिलहि भाय।
ए भव-तिमिर कवलितप्राय।।
अचिरे तिमिर नाशिया प्रज्ञान।
तत्वान्ध-नयने करेन विधान।।
सेइ त' प्रज्ञान विशुद्धा भकति।
उपजाय हरि-विषयिनी मति।।
ए अद्भुतलीला सतत तोमार।
भकतिविनोद जानियाछे सार।।

(घ)

यद्ब्रह्म साक्षात्कृतिनिष्ठयापि
विनाशमायाति बिना न भोगैः।
अपैति नाम-स्फुरणेन तत्ते
प्रारब्ध-कर्मेति विरौति वेदः।।घ।।

ज्ञानी ज्ञानयोगे, करिया यतने, ब्रह्मेर साक्षात् करे।
ब्रह्म-साक्षात्कार, अप्रारब्ध कर्म, सम्पूर्ण ज्ञानेते हरे।।
तबु त' प्रारब्ध, नाहि हय क्षय, फलभोग बिना कभु।
ब्रह्मभूत जीव, फलभोग लागि' जनम-मरण लभु।।
किन्तु ओहे नाम, तव स्फुर्ति ह'ले, एकान्ती जनेर आर।
प्रारब्धाप्रारब्ध, किछु नाहि थाके, वेदे गाय बार बार।।
तोमार उदये, जीवेर हृदय, सम्पूर्ण शोधित हय।।
कर्मज्ञान-बन्ध, सब दूरे याय, अनायासे भव-क्षय।।
भकतिविनोद, बाहु तुले कय, नामेर निशान धर।
नामडंका-ध्वनि, करिया याइवे, भेटिवे मुरलीधर।।

(ङ)

अघदमन–यशोदानन्दनौ नन्दसूनो
कमलनयन–गोपीचन्द्र–वृन्दावनेन्द्राः।
प्रणतकरुण–कृष्णावित्यनेकस्वरूपे
त्वयि मम रतिरुच्चैर्वर्द्धतां नामधेय।।ङ।।

हरिनाम तुया अनेक स्वरूप।
यशोदा–नन्दन, आनन्द–वर्द्धन, नन्दतनय रसकूप।।
पूतना–घातन, तृणावर्त्तहन, शकट–भञ्जन गोपाल।
मुरली–वदन, अघ–वक–मर्द्दन, गोवर्धनधारी राखाल।।
केशि–मर्द्दन, ब्रह्म–विमोहन, सुरपति–दर्प–विनाशी।
अरिष्ट–पातन, गोपी–विमोहन, यामुनपुलिन–विलासी।।
राधिका–रञ्जन, रास–रसायन, राधाकुण्ड–कुञ्जबिहारी।
राम–कृष्ण–हरि, माधव–नरहरि, मत्स्यादि–गणे अवतरि।।
गोविन्द–वामन, श्रीमधुसूदन, यादवचन्द्र–वनमाली।
कालीय–शातन, गोकुल–रञ्जन, राधाभजन–सुखशाली।।
इत्यादिक नाम, स्वरूपे प्रकाम, वाडुक मोर रति रागे।
रूप–स्वरूप–पद, जानि' निज–सम्पद, **भक्तिविनोद** धरि' मागे।।

(च)

वाच्यं वाचकमितुयुदेति भवतो नाम स्वरूपद्धयं
पूर्वस्मात् परमेव हन्त करुणं तत्रापि जानीमहे।
यस्तस्मिन् विहितापराध–निवहः प्राणी समन्तादभवे
दास्येनेदमुपास्य सोऽपि हि सदानन्दाम्बुधो मज्जति।।च।।

वाच्य, वाचक—एइ दुइ स्वरूप तोमार।
वाच्य—तव श्रीविग्रह चिदानन्दाकार।।

वाचक–स्वरूप—तव श्रीकृष्णादि नाम।
वर्णरूपी सर्वजीव–आनन्द–विश्राम।।
एइ दुइ स्वरूपे तव अनन्त प्रकाश।
दया करि' देय जीवे तोमार विलास।।
किन्तु जानियाछि नाथ, वाचक–स्वरूप।
वाच्यापेक्षा दयामय—एइ अपरूप।।
नाम–नामी भेद नाइ—वेदेर वचन।
तबु नाम—नामी ह'ते अधिक करुण।।
कृष्ण–अपराधे यदि नामे श्रद्धा करि'।
प्राण भरि' डाके नाम—राम, कृष्ण, हरि।।
अपराध दूरे याय, आनन्द–सागरे।
भासे सेइ अनायासे रसेर पाथारे।।
विग्रहस्वरूप वाच्ये अपराध करि'।
शुद्धनामाश्रये सेइ अपराधे तरि।।
भकतिविनोद मागे श्रीरूप–चरणे।
वाचक–स्वरूप नामे रति अनुक्षणे।।

(छ)

सूदिताश्रित–जनार्त्तिराशये रम्यचिद्घन–सुख–स्वरूपिणे।
नाम गोकुल–महोत्सवाय ते कृष्ण पूर्णवपुषे नमो नमः।।छ।।

ओहे हरिनाम, तव महिमा अपार।
तव पदे नति आमि करि बारबार।।
गोकुलेर महोत्सव आनन्दसागर!
तोमार चरणे पड़ि हइया कातर।।
तुमि कृष्ण पूर्णवपु रसेर निदान।

तब पदे पड़ि' तव गुण करि गान।।
ये करे तोमार पदे एकान्त आश्रय।
ता'र आर्त्तिराशि नाश करह निश्चय।।
सर्व अपराध तुमि नाश कर ता'र।
नाम-अपराधावधि नाशह ताहार।।
सर्वदोष धौत करि' ताहार हृदय-।
सिंहासने वैस तुमि परम आश्रय।।
अतिरम्य चिद्घन-आनन्द-मूर्त्तिमान्।
'रसौ वै सः' बलि' वेद करे तुया गान।।
भक्तिविनोद रूप-गोस्वामि-चरणे।
मागये सर्वदा नाम-स्फुर्ति सर्वक्षणे।।

(ज)

नारदविणोज्जीवन सुधोर्मि-निर्यास-माधुरीपुर।
त्वं कृष्णनाम कामं स्फुर मे रसने रसेन सदा।।ज।।

नारद मुनि, बाजाय वीणा, राधिकारमण-नामे।
नाम अमनि, उदित हय, भकत-गीत सामे।।
अमिय-धारा, वरिषे घन, श्रवण-युगले गिया।
भकत-जन, सघने नाचे, भरिया आपन हिया।।
माधुरी-पुर, आसव पशि', माताय जगत-जने।
केह वा काँदे, केह वा नाचे, केह माते मने मने।।
पञ्चबदन, नारदे धरि', प्रेमेर सघन रोल।
कमलासन, नाचिया बले, 'बोल बोल हरिबोल'।।
सहस्रानन, परमसुखे, 'हरि हरि' बलि' गाय।
नाम-प्रभावे, मातिल विश्व, नाम-रस सबे पाय।।

श्रीकृष्णनाम, रसने स्फुरि', पुरा'ल आमार आश।
श्रीरूप–पदे, याचये इहा, **भकतिविनोद**–दास।।

श्रीशिक्षाष्टक

(क)

चेतोदर्पण–मार्जनं भव–महादावाग्नि–निर्वापणं
श्रेयःकैरवचन्द्रिका–वितरणं विद्यावधू–जीवनम्।
आनन्दाम्बुधि–वर्द्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनं
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्णसंकीर्तनम्।।क।।

पीतवरण कलि–पावन गोरा।
गाओयइ ऐछन भाव–विभोरा।।
चित्तदर्पण–परिमार्जनकारी।
कृष्णकीर्तन जय चित्तविहारी।।
हेला–भवदाव–निर्वापण–वृत्ति।
कृष्णकीर्तन जय क्लेशनिवृत्ति।।
श्रेयः–कुमुदविधु–ज्योत्स्ना–प्रकाश।
कृष्णकीर्तन जय भक्तिविलास।।
विशुद्ध–विद्यावधू–जीवनरूप।
कृष्णकीर्तन जय सिद्धस्वरूप।।
आनन्द–पयोनिधि–वर्धन–कीर्त्ति।
कृष्णकीर्तन जय प्लावन–मूर्त्ति।।
पदे पदे पीयूष–स्वाद–प्रदाता।
कृष्णकीर्तन जय प्रेमविधाता।।
भक्तिविनोद स्वात्मस्नपन विधान।
कृष्णकीर्तन जय प्रेम–निदान।।

(ख)

नाम्नामकारि बहुधा निजसर्वशक्ति–
स्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।
एतादृशी तव कृपा भगवन्ममापि
दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः।।ख।।

तुहुँ दया–सागर तारयिते प्राणी।
नाम अनेक तुया शिखाओलि आनि।।
सकल शकति देइ नामे तोहारा।
ग्रहणे राखलि नाहि काल–विचारा।।
श्रीनामचिन्तामणि तोहारि समाना।
विश्वे बिलाओलि करुणा–निदाना।।
तुया दया ऐछन परम उदारा।
अतिशय मन्द नाथ! भाग ह मारा।।
नाहि जनमल नामे अनुराग मोर।
भकतिविनोद–चित्त दुःखे विभोर।।

(ग)

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः।।ग।।

श्रीकृष्णकीर्तने यदि मानस तोंहार।
परम यतने तँहि लभ अधिकार।।
तृणाधिक हीन दीन अकिञ्चन छार।
आपने मानबि सदा छाड़ि' अहंकार।।
वृक्षसम क्षमा गुण करबि साधन।
प्रतिहिंसा त्यजि' अन्ये करबि पालन।।

जीवन-निर्वाहे आने उद्वेग ना दिबे।
पर-उपकारे निज-सुख पासरिबे।।
हइलेओ सर्वगुणे गुणी महाशय।
प्रतिष्ठाशा छाड़ि' कर अमानी हृदय।।
कृष्ण-अधिष्ठान सर्व जीवे जानि' सदा।
करबि सम्मान सबे आदरे सर्वदा।।
दैन्य, दया, अन्ये मान, प्रतिष्ठा-वर्जन।
चारिगुणे गुणी हइ', करह कीर्तन।।
भकतिविनोद काँदि' बले प्रभु पाय।
हेन अधिकार कबे दिबे हे आमाय।।

(घ)

न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद्भक्तिरहैतुकी त्वयि।।घ।।

प्रभु! तव पदयुगे मोर निवेदन।
नाहि मागि देह-सुख, विद्या, धन, जन।।
नाहि मागि स्वर्ग, आर मोक्ष नाहि मागि।
ना करि प्रार्थना कोन विभूतिर लागि।।
निज-कर्म-गुण-दोषे ये ये-जन्म पाइ।
जन्मे जन्मे येन तव नाम-गुण गाइ।।
एइमात्र आशा मम, तोमार चरणे।
अहैतुकी भक्ति हृदे जागे अनुक्षणे।।
विषये ये प्रीति एबे आछये आमार।
सेइ मत प्रीति हउक, चरणे तोमार।।

विपदे सम्पदे ताहा थाकुक समभावे।
दिने दिने वृद्धि हउक नामेर प्रभावे।।
पशुपक्षी हये थाकि स्वर्गे वा निरये।
तव भक्ति रहु **भक्तिविनोद**–हृदये।।

(ङ)

अयि नन्दतनुज किंकरं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ।
कृपया तव पादपंकज–स्थित–धूलीसदृशं विचिन्तय।।ङ।।

अनादि करम–फले, पड़ि' भवार्णव–जले,
तरिबारे ना देखि' उपाय।
ए विषय–हलाहले, दिवा–निशि हिया ज्वले,
मन कभु सुख नाहि पाय।।
आशा–पाश शतशत, क्लेश देय अविरत,
प्रवृत्ति–ऊर्मिर ताहे खेला।
काम–क्रोध आदि छय, बाटपाड़े देय भय,
अवसान हैल आसि' वेला।।
ज्ञान–कर्म–ठग दुइ, मोरे प्रतारिया लइ,
अवशेषे फेले सिन्धु–जले।
ए हेन समये बन्धु, तुमि कृष्ण कृपासिन्धु,
कृपा करि' तोल मोरे बले।।
पतित किंकरे धरि', पादपद्मधूलि करि',
देह **भक्तिविनोदे** आश्रय।
आमि तव नित्यदास, भुलिया मायार पाश,
बद्ध ह'ये आछि दयामय।।

(च)

नयनं गलदश्रुधारया वदनं गद्गदरुद्धया गिरा।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नामग्रहणे भविष्यति।।च।।

अपराध – फले मम, चित्त भेल वज्रसम,
तुया नामे ना लभे विकार।
हताश हइये हरि, तव नाम उच्च करि',
बड़ दुःखे डाकि बारबार।।
दीन दयामय करुणा – निदान।
भावविन्दु देइ राखह पराण।।
कबे तव नाम उच्चारणे मोर।
नयने झरब दरदर लोर।।
गदगद – स्वर कण्ठे उपजब।
मुखे बोल आध आध बाहिराब।।
पुलके भरब शरीर हामार।
स्वेद – कम्प – स्तंभ हबे बारबार।।
विवर्ण – शरीरे हाराओब ज्ञान।
नाम – समाश्रये धरबुँ पराण।।
मिलब हामार किए ऐछे दिन।
रोये भक्तिविनोद मतिहीन।।

(छ)

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम्।
शून्यायितं जगत् सर्वं गोविन्द – विरहेण मे।।छ।।

(1)

गाइते गाइते नाम कि दशा हइल।
'कृष्ण नित्यदास मुञि' हृदये स्फुरिल।।
जानिलाम मायापाशे ए – जड़ जगते।
गोविन्द – विरहे दुःख पाइ नाना मते।।
आर ये संसार मोर नाहि लागे भाल।
काँहा याइ, कृष्ण हेरि—ए चिन्ता विशाल।।
काँदिते काँदिते मोर आँखि वरिषय।
वर्षाधारा हेन चक्षे हइल उदय।।
निमेष हइल मोर शतयुग – सम।
गोविन्द – विरह आर सहिते अक्षम।।
शून्य धरातल, चौदिके देखिये, पराण उदास हय।
कि करि, कि करि, स्थिर नाहि हय, जीवन नाहिक रय।।
ब्रजवासिगण, मोर प्राण राख, देखाओ श्रीराधानाथे।
भक्तिविनोद – , मिनति मानिया, लओहे ताहारे साथे।।
श्रीकृष्णविरह आर सहिते ना पारि।
पराण छाड़िते आर दिन दुइ चारि।।

(2)

गाइते गोविन्द नाम, उपजिलभावग्राम, देखिलामयमुनारकूले।
वृषभानुसुता – संगे, श्यामनटवर – रंगे, वाँशरी बाजायनीपमूले।।
देखिया युगलधन, अस्थिर हइल मन, ज्ञानहारा हइलुँ तखन।
कतक्षण नाहि जानि, ज्ञान लाभ हैल मानि, आर नाहि भेल दरशन।।
सखी गो, केमते धरिव पराण।
निमेष हइल युगेर समान।।

श्रावणेर धारा, आँखि वरिषय, शून्य भेल धरातल।
गोविन्द–विरहे, प्राण नाहि रहे, केमने बाँचिव बल।।
भकतिविनोद, अस्थिर हइया, पुनः नामाश्रय करि'।
डाके राधानाथ, दिया दरशन, प्राण राख, नहे मरि।।

(ज)

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु
मामदर्शनान्मर्महतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो
मत्प्राणनाथस्तु स एव नापरः।।ज।।

(1)

(अधिकार–भेदे)

बन्धुगण! शुनह वचन मोर।
भावेते विभोर, थाकिये यखन, देखा देय चित–चोर।।
विचक्षण करि', देखिते चाहिले, हय आँखि अगोचर।
पुनः नाहि देखि', काँदये पराण, दुःखेर नाहि थाके ओर।।
जगतेर बन्धु सेइ कभु मोरे लय साथ।
यथा तथा राखु मोरे, आमार से प्राणनाथ।।
दर्शन–आनन्द–दाने, सुख देय मोर प्राणे,
बले मोरे प्रणय–वचन।
पुनः अदर्शन दिया, दग्ध करे मोर हिया,
प्राणे मोरे मारे प्राणधन।।
याहे तार सुख हय, सेइ सुख मम।
निज सुखे दुःखे मोर सर्वदाइ सम।।

भकतिविनोद, संयोगे – वियोगे, ताहे जाने प्राणेश्वर।
ताँ'र सुखे सुखी, सेइ प्राणनाथ, से कभु ना हय पर।।

(2)

योगपीठोपरि स्थित, अष्टसखी – सुवेष्टित,
वृन्दारण्ये कदम्ब – कानने।
राधासह बंशीधारी, विश्वजन – चित्तहारी,
प्राण मोर ताँहार चरणे।।
सखी – आज्ञामत करि दोंहार सेवन।
पाल्यदासी सदा भावि दोंहार चरण।।
कभु कृपा करि', मम हस्त धरि' मधुर वचन बले।
ताम्बूल लइया, खाय दुइजने, माला लय कुतूहले।।
अदर्शन हय करवन कि छले।
ना देखिया दोंहे हिया मोर ज्वले।।
येखाने सेखाने, थाकुक दु'जने, आमि त'चरण – दासी।
मिलने आनन्द, विरहे यातना, सकल समान वासि।।
राधाकृष्ण प्राण मोर जीवने मरणे।
मोरे राखि' मारि' सुखे थाकुक दु'जने।।
भकतिविनोद, आन नाहि जाने, पड़ि' निजसखी – पाय।
राधिकार गणे, थाकिया सतत, युगल – चरण चाय।।

श्रीउपदेशामृत

(क)

वाचो वेगं मनसः क्रोधवेगं
जिह्वा – वेगमुदरोपस्थ – वेगम्।

एतान् वेगान् यो विषहेत धीरः
सर्वामपीमां पृथिवीं स शिष्यात्।।क।।

हरि हे!

प्रपन्चे पड़िया, अगति हइया, ना देखि' उपाय आर।
अगतिर गति, चरणे शरण, तोमाय करिनु सार।।
करम गेयान, किछु नाहि मोर, साधन-भजन नाइ।
तुमि कृपामय, आमि त' कांगाल, अहैतुकी कृपा चाइ।।
वाक्य-मनोवेग, क्रोध-जिह्वा-वेग, उदर-उपस्थ-वेग।
मिलिया ए सब, संसारे भासाये, दितेछे परमोद्वेग।।
अनेक यतने, से-सब दमने, छाड़ियाछि आशा आमि।
अनाथेर नाथ, डाकि तव नाम, एखन भरसा तुमि।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

अत्याहारः प्रयासश्च प्रजल्पो नियमाग्रहः।
जनसंगश्च लौल्यंच षड्भिर्भक्तिर्विनश्यति।।ख।।

हरि हे!

अर्थेर सन्चये, विषय-प्रयासे, आन कथा प्रजल्पने।
आन अधिकार, नियम-आग्रहे, असत्संग-संघटने।।
अस्थिर सिद्धान्ते, रहिनु मजिया, हरिभक्ति रैल दूरे।
ए हृदये मात्र, परहिंसा-मद, प्रतिष्ठा, शठता, स्फुरे।।
ए सब आग्रह, छाड़िते नारिनु, आपन दोषेते मरि'।
जनम विफल, हइल आमार, एखन कि करि' हरि।।
आमि त'पतित, पतित-पावन, तोमार पवित्र नाम।
से-सम्बन्ध धरि', तोमार चरणे, शरण लइनु हाम।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ग)

उत्साहान्निश्चयाद्धैर्यात् तत्तत्कर्म–प्रवर्त्तनात्।
संगत्यागात् सतो वृत्तेः षड्भिर्भक्तिः प्रसिध्यति।।ग।।

हरि हे!

भजने उत्साह, भक्तितते विश्वास, प्रेमलाभे धैर्य–धन।
भक्ति–अनुकूल, कर्म–प्रवर्त्तन, असत्संग–विसर्जन।।
भक्ति–सदाचार, एइ छय गुण, नहिल आमार नाथ।
केमने भजिव, तोमार चरण, छाड़िया मायार साथ।।
गर्हित आचारे, रहिलाम मजि', ना करिनु साधुसंग।
ल'ये साधु–वेश, आने उपदेशि, ए बड़ मायार रंग।।
ए हेन दशाय, अहैतुकी कृपा, तोमार पाइव, हरि।
श्रीगुरु–आश्रये, डाकिव तोमाय, कवे वा मिनति करि'।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(घ)

ददाति प्रतिगृह्णाति गुह्यमाख्याति पृच्छति।
भुंक्ते भोजयते चैव षड्विधं प्रीतिलक्षणम्।।घ।।

हरि हे!

दान–प्रतिग्रह, मिथो गुप्त–कथा, भक्षण, भोजन–दान।
संगेर लक्षण, एइ छय हय, इहाते भक्तिर प्राण।।
तत्व ना बुझिये, ज्ञाने वा अज्ञाने, असते ए सव करि'।
भक्ति हाराइनु, संसारी हइनु, सुदूरे रहिले हरि।।
कृष्णभक्त–जने, ए संग–लक्षणे, आदर करिव यवे।
भक्ति–महादेवी, आमार हृदय–, आसने वसिवे तवे।।

योषित्संगी जन, कृष्णाभक्त आर, दुँहु–संग परिहरि'।
तव भक्तजन–, संग अनुक्षण, कवे वा हइवे हरि।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ङ)

कृष्णोति यस्य गिरि तं मनसाद्रियेत
दीक्षास्ति चेत् प्रणतिभिश्च भजन्तमीशम्।
शुश्रुषया भजनविज्ञमनन्यमन्य–
निन्दादिशून्य–हृदमीप्सित–संगलब्ध्या।।ङ।।

हरि हे!

संगदोष–शून्य, दीक्षितादीक्षित, यदि तव नाम गाय।
मानसे आदर, करिव ताँहारे, जानि' निज–जन ता'य।।
दीक्षित हइया, भजे तुया पद, ताँहारे प्रणति करि।
अनन्य–भजने, विज्ञ येइ जन, ताँहारे सेविव, हरि।।
सर्वभूते सम, ये भक्तेर मति, ताँहार दर्शने मानि।
आपनाके धन्य, से–संग पाइया, चरितार्थ हइलुँ जानि।।
निष्कपट मति, वैष्णवेर प्रति, एइ धर्म कवे पा'व।
कबे ए संसार–, सिन्धु पार ह'ये, तव ब्रजपुरे या'व।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(च)

दृष्टैः स्वभावजनितैर्वपुषश्च दोषै–
र्न प्राकृतत्त्वमिह भक्तजनस्य पश्येत्।
गंगाम्भसां न खलु बुद्बुदफेनपंकै–
र्ब्रह्मद्रवत्वमपगच्छति नीरधर्मैः।।च।।

हरि हे!

नीरधर्म-गत, जाह्नवी-सलिले, पंक-फेन दृष्ट हय।
तथापि कखन, ब्रह्मद्रव-धर्म, से सलिल ना छाड़य।।
वैष्णव-शरीर, अप्राकृत सदा, स्वभाव-वपुर धर्मे।
कभु नहे जड़, तथापि ये निन्दे, पड़े से विषमाधर्मे।।
सेइ अपराधे, यमेर यातना, पाय जीव अविरत।
हे नन्दनन्दन! सेइ अपराधे, येन नाहि हइ हत।।
तोमार वैष्णव, वैभव तोमार, आमारे करुन दया।
तवे मोर गति, हवे तव प्रति, पा'व तव पदछाया।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(छ)

स्यात् कृष्णनाम-चरितादि-सिताप्यविद्या-
पित्तोपतप्त-रसनस्य न रोचिका नु।
किन्त्वादरादनुदिनं खलु सैव जुष्टा
स्वाद्वी क्रमाद्भवति तद्गदमूलहन्त्री।।छ।।

हरि हे!

तोमारे भुलिया, अविद्या-पीड़ाय, पीड़ित रसना मोर।
कृष्णनाम-सुधा, भाल नाहि लागे, विषय-सुखेते भोर।।
प्रतिदिन यदि, आदर करिया, से-नाम कीर्तन करि।
सितपल येन, नाशि' रोग-मूल, क्रमे स्वादु हय, हरि!!
दुर्दैव आमार, से नामे आदर, ना हइल दयामय!
दश अपराध, आमार दुर्दैव, केमने हइबे क्षय।।
अनुदिन येन, तव नाम गाइ, क्रमेते कृपाय तव।
अपराध या'वे, नामे रुचि ह'वे, आस्वादिव नामासव।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ज)

तन्नाम-रूप-चरितादि-सुकीर्त्तनानु-
स्मृत्योः क्रमेण रसना-मनसी नियोज्य।
तिष्ठन् ब्रजे तदनुरागि-जनानुगामी
कालं नयेदखिलमित्युपदेशसारम्।।ज।।

हरि हे!

श्रीरूपगोसाईं, श्रीगुरु-रूपेते, शिक्षा दिला मोर काणे।
'जान मोर कथा, नामेर कांगाल! रति पा'वे नाम-गाने।।
कृष्णनाम-रूप-, गुण-सुचरित, परम यतने करि'।
रसना-मानसे, करह नियोग, क्रम-विधि अनुसरि'।।
ब्रजे करि' वास, रागानुगा हञा, स्मरण, कीर्त्तन कर।
ए निखिल काल, करह यापन, उपदेश-सार धर।।'
हा! रूपगोसाञि, दया करि' कवे, दिवे दीने ब्रजवासा।
रागात्मिक तुमि, तव पदानुग, हइते दासेर आशा।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(झ)

वैकुण्ठाज्जनितो वरा मधुपुरी तत्रापि रासोत्सवाद्-
वृन्दारण्यमुदारपाणि-रमणात्तत्रापि गोवर्धनः।
राधाकुण्डमिहापि गोकुलपतेः प्रेमामृताप्लावनात्
कुर्यादस्य विराजतो गिरितटे सेवां विवेकी न कः।।झ।।

वैकुण्ठ हइते श्रेष्ठा 'मथुरा' नगरी।
जनम लभिला यथा कृष्णचन्द्र हरि।।
मथुरा हइते श्रेष्ठ 'वृन्दावन-धाम'।
यथा साधियाछे हरि रासोत्सव-काम।।

वृन्दावन हइते श्रेष्ठ 'गोवर्धन–शैल'।
गिरिधारि–गान्धर्विका यथा क्रीड़ा कैल।।
गोवर्धन हइते श्रेष्ठ 'राधाकुण्ड–तट'।
प्रेमामृते भासाइल गोकुल–लम्पट।।
गोवर्धन–गिरितट राधाकुण्ड छाड़ि'।
अन्यत्र ये करे निज कुंज—पुष्पवाड़ी।।
निर्बोध ताहार सम केह नाहि आर।
कुण्ड–तीर सर्वोत्तम स्थान प्रेमाधार।।

(श्रील सरस्वती ठाकुर)

(ञ)

कर्मिभ्यः परितो हरेः प्रियतया व्यक्तिं ययुर्ज्ञानिन–
स्तेभ्यो ज्ञानविमुक्त–भक्तिपरमाः प्रेमैकनिष्ठास्ततः।
तेभ्यस्ताः पशुपालपंकजदृशस्ताभ्योऽपि सा राधिका
प्रेष्ठा तद्वदियं तदीय–सरसी तां नाश्रयेत् कः कृती।।ञ।।

सत्त्वगुणे अधिष्ठित पुण्यवान् कर्मी।
हरिप्रिय–जन बलि' गाय सव–धर्मी।।
कर्मी हइते ज्ञानी हरि–प्रियतर जन।
सुखभोग–बुद्धि ज्ञानी न करे गणन।।
ज्ञानमिश्र भाव छाड़ि' मुक्त ज्ञानी जन।
पर–भक्ति समाश्रये हरिप्रिय ह'न।।
भक्तिमान् जन हैते प्रेमनिष्ठ श्रेष्ठ।
प्रेमनिष्ठ हैते गोपी श्रीहरिर प्रेष्ठ।।
गोपी हैते श्रीराधिका कृष्ण–प्रियतमा।
से राधा–सरसी प्रिय हय ताँ'र समा।।

से कुण्ड–आश्रय छाड़ि' कोन् मूढ़ जन।
अन्यत्र वसिया चाय हरिर सेवन??

(श्रील सरस्वती ठाकुर)

(ट)

कृष्णस्योच्चैः प्रणयवसतिः प्रेयसीभ्योऽपि राधा–
कुण्डं चास्या मुनिभिरभितस्तादृगेव व्यधायि।
यत् प्रेष्ठ्यैरप्यलमसुलभं किं पुनर्भक्तिभाजां
तत् प्रेमेदं सकृदपि सरः स्नातुराविष्करोति।।ट।।

श्रीमती राधिका—कृष्णकान्ता–शिरोमणि।
कृष्णप्रिय–मध्ये ताँ'र सम नाहि धनी।।
मुनिगण शास्त्रे राधाकुण्डेर वर्णने।
गान्धर्विका–तुल्य कुण्ड करये गणने।।
नारदादि–प्रियवर्गे ये प्रेम दुर्लभ।
अन्य साधकेते ताहा कभु ना सुलभ।।
किन्तु, राधाकुण्डे स्नान येइ जन करे।
मधुर रसेते ताँ'र स्नाने सिद्धि धरे।।
अप्राकृत–भावे सदा युगल–सेवन।
राधा–पादपद्म लभे सेइ हरिजन।।
श्रीवार्षभानवी कबे दयितदासेरे।
कुण्ड–तीरे स्थान दिवे निज–जन क'रे।।
'उपदेशामृत' धरि' रूपानुग–भावे।
जीवन यापिले कृष्ण–कृपा सेइ पा'वे।।
सत्य, त्रेता, द्वापरेर ये–सकल भक्त।
कृष्णकृपा लभियाछे गृहस्थ–विरक्त।।

भावी–काले, वर्त्तमाने भक्तेर समाज।
सकलेर पदरजः याचे दीन आज।।
भकतिविनोद–प्रभु अनुग ये–जन।
दयित–दासेर ता'र पदे निवेदन।।
दया करि', दोष हरि', बल 'हरि! हरि!'
'उपदेशामृत'–वारि शिरोपरि धरि'।।

(श्रील सरस्वती ठाकुर)

श्रीमनःशिक्षा

[श्रील रघुनाथदास–गोस्वामि–विरचिता]

1(क)

गुरौ गोष्ठे गोष्ठालयिषु सुजने भूसुरगणे
स्वमन्त्रे श्रीनाम्नि व्रज–नवयुवद्वन्द्व–शरणे।
सदा दम्भं हित्वा कुरु रतिमपूर्वामतितरा–
मये स्वान्तर्भ्रातश्चटुभिरभियाचे धृतपदः।।क।।

ब्रजधाम नित्यधन, राधाकृष्ण दुइजन,
लीलावेशे एकतनु हञा।
धामसह गौड़देशे, प्रकट हइला एसे',
निज नित्य–पारिषद लञा।।
मन, तुमि सत्य बलि' जान।
नवद्वीपे गौरहरि, नाम–संकीर्त्तन करि',
प्रेमामृत गौड़े कैल दान।।
सन्यासेर छल करि', नीलाचले सेइ हरि,
श्रीकृष्णचैतन्य यतीश्वर।
दामोदर, रामानन्द, लये करि' परानन्द,
गूढ़तत्त्व जानाय विस्तर।।

रघुनाथे सेइ तत्त्व, शिखाइया परमार्थ,
पाठाइला श्रीरूपेर काछे।
श्रीदासगोस्वामी ब्रजे, रूपसह कृष्ण-भ'जे,
'मनःशिक्षा'-श्लोक लिखियाछे।।
ताँहार दासेर दास, हैते या'र वड़ आश,
ए **भक्तिविनोद** अकिञ्चन।
'मनःशिक्षा भाषा' गाय, यथा शुद्धभक्त पाय,
दया करि' करेन श्रवण।।

(क 2)

गुरुदेवे, ब्रजवने, ब्रजभूमिवासी जने,
शुद्धभक्ते, आर विप्रगणे।
इष्टमन्त्रे, हरिनामे, युगल-भजन-कामे,
कर रति अपूर्व यतने।।
धरि, मन, चरणे तोमार।
जानियाछि एवे सार, कृष्णभक्ति बिना आर,
नाहि घुचे जीवेर संसार।।
कर्म ज्ञान तपः योग, सकलइ त' कर्मभोग,
कर्म छाड़ाइते केह नारे।
सकल छाड़िया भाइ, श्रद्धादेवीर गुण गाइ,
याँ'र कृपा भक्ति दिते पारे।।
छाड़ि' दम्भ अनुक्षण, स्मर अष्टतत्त्व, मन,
कर ताहे निष्कपट रति।
सेइ रति-प्रार्थनाय, श्रीदासगोस्वामि-पाय,
ए **भक्तिविनोद** करे नति।।

(ख)

न धर्मं नाधर्मं श्रुतिगण–निरुक्तं किल कुरु
ब्रजे राधाकृष्ण–प्रचुर–परिचर्यामिह तनु।
शचीसूनुं नन्दीश्वरपतिसुतत्वे गुरुवरं
मुकुन्दप्रेष्ठत्वे स्मर परमजस्रं ननु मनः।।ख।।

'धर्म' बलि वेदे यारे, एतेक प्रशंसा करे,
'अधर्म' बलिया निन्दे या'रे।
ताहा किछु नाहि कर, धर्माधर्म परिहर,
हओ रत निगूढ़ व्यापारे।।
याचि' मन, धरि' तव पाय।
से–सकल परिहरि', ब्रजभूमे वास करि',
रत हओ युगलसेवाय।।
श्रीशचीनन्दन–धने, श्रीनन्दनन्दन–सने,
एक करि' करह भजन।
श्रीमुकुन्द–प्रियजन, गुरुदेवे जान मन,
तोमा' लागि' पतितपावन।।
जगते प्रकट, भाइ, ताँहा बिना गति नाइ,
यदि चाओ आपन कुशल।
ताँहार चरणे धरि', तदादेश सदा स्मरि',
एक भक्तिविनोदे देह बल।।

(ग)

यदीच्छेरावासं ब्रजभुवि सरागं प्रतिजनु–
र्युवद्वन्द्वं तच्चेत् परिचरितुमारादभिलषेः।

स्वरूपं श्रीरूपं सगणमिह तस्याग्रजमपि
स्फुटं प्रेम्णा नित्यं स्मर नम तदा त्वं श्रृणु मनः।।ग।।

रागावेशे ब्रजधाम–, वासे यदि तीव्र काम,
थाके तव हृदय–भितरे।
राधाकृष्ण–लीलारस, परिचर्या–सुलालस,
हओ यदि नितान्त अन्तरे।।
बलि तवे, शुन, मम मन।
भजन चतुरवर, श्रीस्वरूपदामोदर,
प्रभुसेवा याँहार जीवन।।
सगण श्रीरूप—यिनि, रसतत्त्व–ज्ञानमणि,
लीलातत्त्व ये कैल प्रकाश।
ताँहार अग्रज भाइ, याँहार समान नाइ,
वर्णिल ये युगलविलास।।
सेइ सब महाजने, स्पष्टप्रेम–विज्ञापने,
स्मर, मन तुमि निरन्तर।
भक्तिविनोदेर नति, महाजनगण–प्रति,
विज्ञापित करह सत्वर।।

(घ)

असद्वार्त्ता–वेश्या विसृज मतिसर्वस्व–हरणीः
कथा मुक्तिव्याघ्रा न श्रृणु किल सर्वात्मगिलनीः।
अपि त्यक्त्वा लक्ष्मीपतिरतिमितो व्योमनयनीं
ब्रजे राधाकृष्णौ स्वरति–मणिदौ त्वं भज मनः।।घ।।

कृष्णवार्त्ता बिना आन, 'असद्वार्त्ता' बलि' जान,
सेइ वेश्या अति भयंकरी।

श्रीकृष्णविषया मति, जीवेर दुर्लभ अति,
सेइ वेश्या मति लय हरि'।।
शुन, मन, बलि हे तोमाय।
'मुक्ति'–नामे शार्द्दूलिनी, ता'र कथा यदि शुनि,
सर्वात्मसम्पत्ति गिलि' खाय।।
तदुभय त्याग कर, मुक्तिकथा परिहर,
लक्ष्मीपति–रति राख दूरे।
से–रति प्रबल ह'ले, परव्योमे देय फेले,
नाहि देय वास ब्रजपुरे।।
ब्रजे राधाकृष्ण–रति, अमूल्य–धनद अति,
ता'इ तुमि भज चिरदिन।
रूप–रघुनाथ–पाय, सेइ रति प्रार्थनाय,
ए भक्तिविनोद दीन हीन।।

(ङ)

असच्चेष्टा–कष्टप्रद–विकट–पाशालिभिरिह
प्रकामं कामादि–प्रकट–पथपातिव्यतिकरैः।
गले बद्ध्वा हन्येऽहमिति बकभिद्वर्त्मपगणे
कुरु त्वं फुत्कारानवति स यथा त्वां मन इतः।।ङ।।

काम–क्रोध–लोभ–मोह– मद–मत्सरता–सह,
जीवेर जीवनपथे वसि'।
असच्चेष्टा–रज्जुफाँसे, पथिकेर धर्म नाशे,
प्राण ल'ये करे कषाकषि।।
मन, तुमि धर वाक्य मोर।

एइ सब वाटपाड़, अतिशय दुर्निवार,
यखन घेरिया करे जोर।।
आर किछु ना करिया, वैष्णवेर नाम लञा,
फुकारिया डाक उच्चराय।
वकशत्रु–सेनागणे, कृपा करि' निजजने,
या'ते करे उद्धार तोमाय।।
वाटपाड़ छयजन, असच्चेष्टा–रज्जुगण,
दिया गले करिल बन्धन।
प्राणवायु गतप्राय, रूप–रघुनाथ, हाय,
कर भक्तिविनोदे रक्षण।।

(च)

अरे चेतः प्रोद्यत्–कपट–कुटिनाटी–भर–खर–
क्षरन्मूत्रे स्नात्वा दहसि कथमात्मानमपि माम्।
सदा त्वं गान्धर्वा–गिरिधरपद–प्रेमविलसत्–
सुधाम्भोधौ स्नात्वा स्वमपि नितरां मांच सुखय।।च।।

काम–क्रोध–आदि करि', बाहिरे से–सब अरि,
आछे एक गूढ़शत्रु तव।
'कपटता'–नाम ता'र, ता'हे कुटिनाटी भार,
खरमूर्त्ति परम कितव।।
ओरे मन, गूढ़ कथा धर।
सेइ खरमूत्रे भु'ले, स्नान करि' कुतूहले,
'पवित्र' बलिया मने कर।।
वने वा गृहे वा थाक, सेइ खरे दूरे राख,
या'र मूत्रे तुमि आमि ज्वलि।

छाड़िया कापट्य–वश, युगल–विलासरस–,
सागरे करह स्नानकेलि।।

रूप–रघुनाथ–पाय, ए भक्तिविनोद चाय,
देखिते युगल–रससिन्धु।

जीवन सार्थक करे, सर्वजीव–चित्त हरे,
सेइ सागरेर एक बिन्दु।।

(छ)

प्रतिष्ठाशा धृष्टा श्वपचरमणी मे हृदि नटेत्
कथं साधुः प्रेमा स्पृशति शुचिरेतन्ननु मनः।
सदा त्वं सेवस्व प्रभुदयित–सामन्तमतुलं
यथा तां निष्काश्य त्वरितमिह तं वेशयति सः।।छ।।

कपटता हैले दूर, प्रवेशे प्रेमेर पुर,
जीवेर हृदय धन्य करे।

अतएव बहु यत्ने, आनिवारे प्रेमरत्ने,
कापट्य राखह अति दूरे।।

शुन मन, निगूढ़ वचन।

प्रतिष्ठाशा धृष्टाधम–, चण्डालिनी हृदे मम,
यतकाल करिवे नर्त्तन।।

कापट्य तदुपपति, ना छाड़िवे मम मति,
श्वपचिनी याहे हय दूर।

तदर्थे यतन करि', प्रभुप्रेष्ठ–पद धरि',
सेवा तुमि करह प्रचुर।।

तेंह प्रभु–सेनापति, विक्रम करिया अति,
श्वपचिनी–संग छाड़ाइया।

राधाकृष्ण–प्रेमधने, दिवे कबे अकिन्चने,
बले भक्तिविनोद काँदिया।।

(ज)

यथा दुष्टत्वं मे दवयति शठस्यापि कृपया
यथा मह्यं प्रेमामृतमपि ददात्युज्ज्वलमसौ।
यथा श्रीगान्धर्वा–भजन–विधये प्रेरयति मां
तथा गोष्ठे काक्वा गिरिधरमिह त्वं भज मनः।।ज।।

ब्रजभूमि चिन्तामणि, चिदानन्द–रत्नखनि,
यथा नित्य रसेर विलास।
'जीवे दिव गूढ़ धन', चिन्ति' कृष्ण वृन्दावन,
जड़े आनि' करिल प्रकाश।।
कृष्ण मोर दयार सागर।
तुमि मन, ब्रजधाम, भ्रमि' भ्रमि' अविराम,
डाक कृष्णे हइया कातर।।
अविद्या–विलासवशे, छिले तुमि जड़रसे,
दुष्टता हृदये पाइल स्थान।
हैले तुमि शठराज, भुलिले आपन काज,
हृदये वरिले अभिमान।।
एवे उपदेश शुन, गाइया युगल–गुण,
गोष्ठे गोष्ठे करह रोदन।
दया करि' गिरिधर, शुनिया काकुति–स्वर,
तवे दोष करिवे शोधन।।
उज्ज्वल–रसेर प्रीति, श्रीराधाभजन–नीति,
अनायासे दिवेन आमाय।

रूप – रघुनाथ मोरे, कृपा करि' अतःपरे,
एइ तत्त्व गोपने शिखाय।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(झ)

मदीशानाथत्वे ब्रजविपिनचन्द्रं ब्रजवने –
श्वरीं मन्नाथत्वे तदतुलसखीत्वे तु ललिताम्।
विशाखां शिक्षाली – वितरण – गुरुत्वे प्रियसरो –
गिरीन्द्रौ तत्प्रेक्षा – ललितरतिदत्वे स्मर मनः।।झ।।

ब्रजवन – सुधाकर, ब्रजवनेर ईश्वर,
ब्रजेश्वरी आमार ईश्वरी।
ललिता ताँहार सखी, तुल्य ता'र नाहि लिखि,
विशाखा शिक्षिका – पद धरि।।
एइभावे भाव, ओरे मन।
राधाकुण्ड – सरोवर, गोवर्धन – गिरीश्वर,
रतिप्रद – तत्त्व तदीक्षण।।
ब्रजे गोपीदेह धरि', मञ्जरी आश्रय करि',
प्राप्त – सेवा कर सम्पादन।
मञ्जरीर कृपा ह'वे, सखीर चरण पा'वे,
सखी देखाइवे नित्यधन।।
प्रहरे प्रहरे आर, दण्डे दण्डे सेवासार,
करिया युगलधने डाक।
सकल अनर्थ या'वे, चिद्विलास – रस पा'वे,
भक्तिविनोदेर कथा राख।।

(ञ)

रतिं गौरीलीले अपि तपति सौन्दर्यकिरणैः
शची–लक्ष्मी–सत्याः परिभवति सौभाग्यवलनैः।
वशीकारैश्चन्द्रावलीमुख–नवीन–ब्रजसतीः
क्षिपत्याराद् या तां हरिदयित–राधां भज मनः।।ञ।।

सौन्दर्य–किरणमाला, जिने रति, गौरी, लीला,
अनायासे स्वरूपवैभवे।
शची, लक्ष्मी, सत्यभामा, यत भाग्यवती रामा,
सौभाग्य–बलने पराभवे।।
भज मन, चरण ताँहार।
चन्द्रावली–मुख यत, नवीना नागरी शत,
वशीकारे करे तिरस्कार।।
से ये कृष्ण–प्राणेश्वरी, कृष्ण–प्राणाह्लादकरी,
ह्लादिनी स्वरूपशक्ति सती।
ताँहार चरण त्यजि', यदि कृष्णचन्द्र भजि,
कोटीयुगे कृष्णगेहे गति।।
सखीकृपा–भेला धरि', प्रेमसिन्धुमाझे चरि',
वृषभानुनन्दिनी–चरणे।
कबे वा पड़िया र'व, ईश्वरीर कृपा पा'व,
गणित हइव निजजने।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ट)

समं श्रीरूपेण स्मर–विवश–राधागिरिभृतो–
र्व्रजे साक्षात्सेवा–लभन–विधये तद्गणयुजोः।

तदिज्याख्या-ध्यान-श्रवण-नति पंचामृतमिदं
धयन्नीत्या गोवर्धनमनुदिनं त्वं भज मनः।।ट।।

ब्रजेर निकुञ्ज-वने, राधाकृष्ण सखीसने,
लीलारसे नित्य थाके भोर।
सेइ दैनन्दिन-लीला, बहुभाग्ये ये सेविला,
ताहार भाग्येर बड़ जोर।।
मन, यदि चाह सेइ धन।
श्रीरूपेर संग ल'ये, ताँ'र अनुचरी ह'ये,
कर' ताँ'र निर्दिष्ट भजन।।
हृदये रागेर भावे, कालोचित सेवा पा'वे,
सदा रसे रहिवे मजिया।
वाहिरे साधन-देह, करिवे भजन-गेह,
निःसंगे वा साधुसंग लञा।।
युगल-पूजन, ध्यान, नति, श्रुति, संकीर्तन,
पञ्चामृते सेव गोवर्धने।
रूप-रघुनाथ पाय, ए भक्तिविनोद चाय,
दृढ़मति एरूप भजने।।

(ठ)

मनःशिक्षादैकादशक-वरमेतन्मधुरया
गिरा गायत्युच्चैः समधिगत-सर्वार्थतति यः।
सयूथः श्रीरूपानुग इह भवन् गोकुलवने
जनो राधाकृष्णातुल-भजनरत्नं स लभते।।ठ।।

उपदेश (मनःशिक्षा)

2 (क)

मन रे, केन मिछे भजिछ असार?

भूतमय ए संसार, जीवेर पक्षेते छार,
अमंगल–समुद्र अपार।।

भूतातीत शुद्धजीव, निरञ्जन सदा शिव,
मायातीत प्रेमेर आधार।

तव शुद्धसत्ता ताइ, ए जड़–जगते भाइ,
केन मुग्ध हओ बार बार??

फिरे देख एकबार, आत्मा अमृतेर धार,
ता'ते बुद्धि उचित तोमार।

तुमि आत्मा–रूपी ह'ये, श्रीचैतन्य–समाश्रये,
वृन्दावने थाक अनिवार।।

नित्यकाल सखीसंगे, परानन्द–सेवारंगे,
युगल–भजन कर' सार।

ए–हेन युगल–धन, छाड़े येइ मूर्खजन,
ता'र गति नाहि देखि आर।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

मन, तुमि भालवास कामेर तरंग।

जड़काम परिहरि', शुद्धकाम सेवा करि',
विस्तारह अप्राकृत रंग।।

अनित्य जड़ीय काम, शान्तिहीन अविश्राम,
नाहि ताहे पिपासार भंग।

कामेर सामग्री चाओ, तबु ताहा नाहि पाओ,
पाइलेओ छाड़े तव संग।।
तुमि सेवा कर' या'रे, से तोमा' भजिते नारे,
दुःखे ज्वले **विनोदेर** अंग।
छाड़' तवे मिछा–काम, हओ तुमि सत्यकाम,
भज वृन्दावनेर अनंग।।
याँहार कुसुम–शरे, तव नित्य–कलेवरे,
व्याप्त ह'वे प्रेम अन्तरंग।।

(ग)

मन रे, तुमि बड़ सन्दिग्ध–अन्तर।
आसियाछ ए संसारे, बद्ध ह'ये जड़ाधारे,
जड़ासक्त ह'ले निरन्तर।।
भुलिया स्वकीय धाम, सेवि' जड़गत काम,
जड़ बिना ना देख अपर।
तोमार तुमित्व यिनि, आच्छादित ह'ये तिनि,
लुप्तप्राय देहेर भितर।।
तुमि त' जड़ीय ज्ञान, सदा करितेछ ध्यान,
ताहे सृष्टि कर' चराचर।
ए दुःख कहिब का'रे, नित्यपति–परिहारे,
तुच्छतत्त्वे करिले निर्भर।।
नाहि देख आत्मतत्त्व, छाड़ि' दिले शुद्धसत्त्व,
आत्मा ह'ते निले अवसर।
आत्मा आछे कि ना आछे, सन्देह तोमार काछे,
क्रमे क्रमे पाइल आदर।।

एइरूपे क्रमे क्रमे, पड़िया जड़ेर भ्रमे,
आपना आपनि ह'ले पर।
एवे कथा राख मोर, नाहि हओ आत्मचोर,
साधुसंग कर' अतःपर।।
वैष्णवेर कृपाबले, सन्देह याइवे च'ले,
तुमि पुनः हइवे तोमार।
पा'वे वृन्दावन–धाम, सेविवे श्रीराधाश्याम,
पुलकाश्रुमय कलेवर।।
भक्तिविनोदेर धन, राधाकृष्ण–श्रीचरण,
ताहे रति रहुँ निरन्तर।।

(घ)

मन, तुमि बड़इ पामर।
तोमार ईश्वर हरि, ताँ'के केन परिहरि',
काममार्गे भज' देवान्तर??
परब्रह्म एक तत्त्व, ताँहाते सँपिया सत्त्व,
निष्ठागुणे करह आदर।
आर यत देवगण, 'मिश्रसत्त्व' अगणन,
निज निज कार्येर ईश्वर।।
से–सबे सम्मान करि', भज' एकमात्र हरि,
यिनि सर्व–ईश्वर–ईश्वर।
माया याँ'र छायाशक्ति, ताँ'ते एकान्तिकी भक्ति,
साधि' काल काट निरन्तर।।
मूलेते सिञ्चिले जल, शाखा–पल्लवेर बल,
शिरे बारि नहे कार्यकर।
हरिभक्ति आछे याँ'र, सर्वदेव बन्धु ताँ'र,

भक्ते सबे करेन आदर।।

विनोद कहिछे—मन, राधाकृष्ण–श्रीचरण,

भज भज भज निरन्तर।

(ङ)

मन, तब केन ए संशय?

जड़–प्रति घृणा करि', भजिते प्रेमेर हरि, स्वरूप लक्षिते कर' भय।।
स्वरूप करिते ध्यान, पाछे जड़ पाय स्थान, एइ भये भाव' ब्रह्ममय।
निराकार निरञ्जन, सर्वव्यापी सनातन, अस्वरूप करिछ निश्चय।।
अभाव–धर्मेर वशे, स्वभाव ना चित्ते पशे, भावेर अभाव ताहे हय।
त्यज एइ तर्कपाश, परानन्द–परकाश, कृष्णचन्द्रे करह आश्रय।।
सच्चित्–आनन्दमय, कृष्णेर स्वरूप हय, सर्वानन्द–माधुर्य–निलय।
सर्वत्र सम्पूर्ण रूप, एइ एक अपरूप, सर्वव्यापी ब्रह्मे ताहा नय।।
अतएव ब्रह्म ताँ'र, अंगकान्ति सुविस्तार, बृहत् बलिया ताँ'रे कय।
ब्रह्म परब्रह्म येइ, श्रीकृष्णस्वरूप सेइ, **विनोदेर** याहाते प्रणय।।

(च)

मन, तुमि पड़िले कि छार?

नवद्वीपे पाठ करि', न्यायरत्न नाम धरि',

भेकेर कचकचि कैले सार।।

'द्रव्य'ादि पदार्थज्ञान, 'छल'ादि निग्रह–स्थान,

'समवाय' करिले विचार।

तर्केर चरम फल, भयंकर हलाहल,

नाहि विचारिले दुर्निवार।।

हृदय कठिन ह'ल, भक्ति–बीज ना बाड़िल,

किसे ह'वे भवसिन्धु पार?

अनुमिले ये ईश्वर, से कुलालचक्रधर,

साधन केमने ह'वे ताँ'र??

सहज–समाधि त्यजि', 'अनुमिति' मान भजि',

तर्कनिष्ठ हृदय तोमार।

से हृदये कृष्णधन, नाहि पान सुखासन,

अहो, धिक् सेइ तर्क छार।।

अन्याय न्यायेर मत, दूर कर अविरत,

भज कृष्णचन्द्र सारात्सार।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(छ)

मन, योगी ह'ते तोमार वासना।

योगशास्त्र अध्ययन, नियम–यम–साधन, प्राणायाम, आसन–रचना।।

प्रत्याहार, ध्यान, धृति, समाधिते ह'ले व्रती, फल किवा हइवे बल ना।

देह–मन शुष्क करि', रहिवे कुम्भक धरि', ब्रह्मात्मता करिवे भावना।।

अष्टादश सिद्धि पा'वे, परमार्थ भुले या'वे, ऐश्वर्यादि करिवे कामना।

स्थूल–जड़ परिहरि', सूक्ष्मेते प्रवेश करि', पुनराय भुगिवे यातना।।

आत्मा नित्य शुद्धधन, हरिदास–अकिञ्चन, योगे ता'र कि फल घटना।

कर' भक्ति–योगाश्रय, ना थाकिवे कोन भय, सहज अमृत सम्भावना।।

विनोदेर ए मिनति, छाड़ि' अन्य योगगति, कर' राधाकृष्ण–आराधना।।

(ज)

ओहे भाइ, मन केन ब्रह्म ह'ते चाय।

कि आश्चर्य क'ब का'के, सदोपास्य वल याँ'के,

ताँ'ते केन आपने मिशाय।।

बिन्दु नाहि हय सिन्धु, वामन ना स्पर्शे इन्दु,
रेणु कि भूधर – रूप पाय?
लाभ मात्र अपराध, परमार्थ हय वाध,
सायुज्यवादीर हाय हाय।।
ए हेन दुरन्त बुद्धि, त्यजि' कर' सत्त्वशुद्धि,
अन्वेषह प्रीतिर उपाय।
'सायुज्य' – 'निर्वाण' – आदि, शास्त्रे शब्द देख यदि,
से – सब भक्तिर अंगे याय।।
कृष्णप्रीति – फलमय, 'तत्त्वमसि' आदि हय,
साधक चरमे कृष्ण पाय।
अखण्ड आनन्दमय, वृन्दावन कृष्णालय,
परब्रह्म – स्वरूप जानाय।।
ता' ह'ते किरण जाल, ब्रह्मरूपे शोभे भाल,
मायिक जगत् चमकाय।
मायाबद्ध जीव ताहे, निर्वृत हइते चाहे,
सूर्याभावे खद्योतेर प्राय।।
यदि कभु भाग्योदये, साधु – गुरु – समाश्रये,
वृन्दावन सम्मुखेते भाय।
कृष्णाकृष्ट ह'ये तवे, क्षुद्ररस – अनुभवे,
ब्रह्म छाड़ि' परब्रह्मे धाय।।
शुकादिर सुजीवन, कर' भाइ आलोचन,
ए दास धरिछे तव पाय।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(झ)

मन रे, केन आर वर्ण – अभिमान।

मरिले पातकी ह'ये, यमदूते या'वे ल'ये, ना करिवे जातिर सम्मान।।
यदि भाल कर्म कर', स्वर्गभोग अतःपर, ता'ते विप्र चण्डाल समान।
नरकेओ दुइजने, दण्ड पा'वे एक सने, जन्मान्तरे समान विधान।।
तवे केन अभिमान, ल'ये तुच्छ वर्ण – मान, मरण अवधि या'र मान।
उच्च वर्णपद धरि', वर्णान्तरे घृणा करि', नरकेर ना कर सन्धान।।
सामाजिक मान ल'ये, थाक भाइ विप्र ह'ये, वैष्णवे ना कर' अपमान।
आदार व्यापारी ह'ये, विवाद जाहाज ल'ये, कभु नाहि करे बुद्धिमान्।।
तवे यदि कृष्णभक्ति, साध तुमि यथाशक्ति, सोनाय सोहागा पा'वे स्थान।
सार्थक हइवे सूत्र, सर्वलाभ इहामुत्र, **विनोद** करिवे स्तुतिगान।।

(ञ)

मन रे, केन कर विद्यार गौरव।

स्मृतिशास्त्र, व्याकरण, नाना – भाषा – आलोचन, वृद्धि करे यशेर सौरभ।।
किन्तु देख चिन्ता करि', यदि ना भजिले हरि, विद्या तव केवल रौरव।
कृष्ण – प्रति अनुरक्ति, सेइ बीजे जन्मे भक्ति, विद्या ह'ते ताहा असम्भव।।
विद्याय मार्जन ता'र, कभु कभु अपकार, जगतेते करि अनुभव।
ये विद्यार आलोचने, कृष्णरति स्फुरे मने, ताहारि आदर जान' सव।।
भक्ति – बाधा याहा ह'ते, से विद्यार मस्तकेते, पदाघात कर' अकैतव।
सरस्वती कृष्णप्रिया, कृष्णभक्ति ता'र हिया, **विनोदेर** सेइ से वैभव।।

(ट)

रूपेर गौरव केन भाइ?

अनित्य ए कलेवर, कभु नहे स्थिरतर, शमन आइले किछु नाइ।

ए अंग शीतल ह'वे, आँखि स्पन्दहीन र'वे, चितार आगुने ह'वे छाइ।।
ये मुखसौन्दर्य हेर, दर्पनेते निरन्तर, श्व-शिवार हइवे भोजन।
ये वस्त्रे आदर कर', येवा आभरण पर', कोथा सब रहिवे तखन??
दारा सुत बन्धु सबे, श्मशाने तोमारे ल'वे, दग्ध करि' गृहेते आसिवे।
तुमि का'र, के तोमार, एवे बुझि' देख सार, देह-नाश अवश्य घटिवे।।
सुनित्य-सम्बल चाओ, हरिगुण सदा गाओ, हरिनाम जपह सदाइ।
कुतर्क छाड़िया मन, कर कृष्ण-आराधन, **विनोदेर** आश्रय ताहाइ।।

(ठ)

मन रे, धनमद नितान्त असार।

धन जन वित्त यत, ए देहेर अनुगत, देह गेले से-सकल छार।।
विद्यार यतेक चेष्टा, चिकित्सक उपदेष्टा, केह देह राखिवारे नारे।
अजपा हइले शेष, देह मात्र अवशेष, जीव नाहि थाकेन आधारे।।
धने यदि प्राण दित, धनी राजा ना मरित, धरामर हइत रावण।
धने नाहि राखे देह, देह गेले नहे केह, अतएव कि करिवे धन।।
यदि थाके बहु धन, निजे ह'वे अकिञ्चन, वैष्णवेर कर उपकार।
जीवे दया अनुक्षण, राधाकृष्ण-आराधन, कर सदा ह'ये सदाचार।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ड)

मन, तुमि संन्यासी साजिते केन चाओ?

वाहिरेर साज यत, अन्तरेते फाँकि तत, दम्भ पूजि' शरीर नाचाओ।।
आमार वचन धर, अन्तर विशुद्ध कर, कृष्णामृत सदा कर पान।
जीवन सहजे याय, भक्ति बाधा नाहि पाय, तदुपाय करह सन्धान।।
अनायासे याहा पाओ, ताहे तुष्ट ह'ये याओ, आडम्बरे ना कर' प्रयास।

पूर्णवस्त्र यदि नाइ, कौपीन पर हे भाइ, शीतवस्त्र कन्था बहिर्वास।।
अगुरु चन्दन नाइ, मृत्तिका–तिलक भाइ, हारेर बदले धर माला।
एइरूपे आशा–पाश, सुखादिर कुविलास, खर्वि' छाड़ संसारेर ज्वाला।।
सन्यास–वैराग्य–विधि, सेह आश्रमेर निधि, ताहे कभु ना कर आदर।
से–सब आदरे भाइ, संसारे निस्तार नाइ, दाम्भिकेर लिंग निरन्तर।।
तुमि त' चैतन्यदास, हरिभक्ति तव आश, आश्रमेर लिंगे किवा फल।
प्रतिष्ठा करह दूर, वास तव शान्तिपुर, साधु कृपा तोमार सम्बल।।
वैष्णवेर परिचय, आवश्यक नाहि हय, आडम्बरे कभु नाहि याओ।
विनोदेर निवेदन, राधाकृष्ण–गुणगण, फुकारि' फुकारि' सदा गाओ।।

(ढ)

मन, तुमि तीर्थे सदा रत।
अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काञ्ची, अवन्तिया,
द्वारावती आर आछे यत।।
तुमि चाह भ्रमिवारे, ए सकल बारे बारे,
मुक्तिलाभ करिवार तरे।
से केवल तव भ्रम, निरर्थक परिश्रम,
चित्तस्थिर तीर्थे नाहि करे।।
तीर्थफल साधुसंग, साधुसंगे अन्तरंग,
श्रीकृष्णभजन मनोहर।
यथा साधु, तथा तीर्थ, स्थिर करि' निज चित्त,
साधुसंग कर निरन्तर।।
ये तीर्थे वैष्णव नाइ, से तीर्थेते नाहि याइ,
कि लाभ हाँटिया दूरदेश।

यथाय वैष्णवगण, से-स्थान वृन्दावन,
सेइ स्थाने आनन्द अशेष।।
कृष्भक्ति येइ स्थाने, मुक्ति दासी सेइखाने,
सलिल तथाय मन्दाकिनी।
गिरि तथा गोवर्धन, भूमि तथा वृन्दावन,
आविर्भूता आपनि ह्लादिनी।।
विनोद कहिछे भाइ, भ्रमिया कि फल पाइ,
वैष्णव-सेवन मोर व्रत।।

(ण)

देख मन, व्रते येन ना हओ आच्छन्न।
कृष्णभक्ति आशा करि', आछ नाना व्रत धरि',
राधाकृष्णे करिते प्रसन्न।।
भक्ति ये सहज तत्त्व, चित्ते ता'र आछे सत्त्व,
ताहार समृद्धि तव आश।
देखिवे विचार करि', सु-कठिन व्रत धरि',
सहजेर ना कर विनाश।।
कृष्ण-अर्थे कायक्लेश, ता'र फल आछे शेष,
किन्तु ताहा सामान्य ना हय।
भक्तिर बाधक ह'ले, भक्ति आर नाहि फले,
तपःफल हइवे निश्चय।।
किन्तु भेवे देख भाइ, तपस्याय काज नाइ,
यदि हरि आराधित ह'न।
भक्ति यदि न फलिल, तपस्यार तुच्छ फल,
वैष्णव ना लय कदाचन।।

इहाते ये गूढ़ मर्म, बुझ वैष्णवेर धर्म,
पात्रभेदे अधिकार भिन्न।
विनोदेर निवेदन, विधिमुक्त अनुक्षण,
सारग्राही श्रीकृष्णप्रपन्न।।

(त)

मन, तुमि बड़इ चञ्चल।
एकान्त सरल भक्त – , जने नह अनुरक्त,
धूर्तजने आसक्ति प्रबल।।
बुज्रुगी जाने येइ, तव साधुजन सेइ,
ता'र संग तोमारे नाचाय।
क्रूर – वेश देख या'र, श्रद्धास्पद से तोमार,
भक्ति करि, पड़ ता'र पाय।।
भक्त – संग हय याँ'र, भक्तिफल फले ताँ'र,
अकैतवे शान्तभाव धर।
चञ्चलता छाड़ि' मन, भज कृष्ण – श्रीचरण,
धूर्तसंग दूरे परिहर।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(ख)

मन, तोरे बलि ए वारता।
अपक्क वयसे हाय, वञ्चित वञ्चक – पा – य,
विकाइले निज स्वतन्त्रता।।
सम्प्रदाये दोष – बुद्धि, जानि' तुमि आत्मशुद्धि,
करिवारे हैले सावधान।

ना निले तिलक – माला, त्यजिले दीक्षार ज्वाला,
निजे कैले नवीन विधान।।
पूर्वमते तालि दिया, निजमत प्रचारिया,
निजे अवतार – बुद्धि धरि'।
व्रताचार ना मानिले, पूर्वपथ जले दिले,
महाजने भ्रमदृष्टि करि'।।
फोंटा दीक्षा माला धरि', धूर्त करे सुचातुरी,
ताइ ताहे तोमार विराग।
महाजन – पथे दोष, देखिया तोमार रोष,
पथ – प्रति छाड़ अनुराग।।
एखन देखह भाइ, स्वर्ण छाड़ि' लैले छाइ,
इहकाल परकाल याय।
कपट बलिल सबे, भकति वा पेले कबे,
देहान्ते वा कि ह'वे उपाय।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(द)

कि आर बलिव तोरे मन।
मुखे बल 'प्रेम – प्रेम', वस्तुतः त्यजिया हेम, शून्यग्रन्थि अञ्चले बन्धन।।
अभ्यासिया अश्रुपात, लम्फ झम्फ अकस्मात्, मूर्च्छाप्राय थाकह पड़िया।
ए लोक वञ्चिते रंग, प्रचारिया असत्संग, कामिनी – काञ्चन लभ गिया।।
प्रेमेर साधन—'भक्ति', ता'ते नैल अनुरक्ति, शुद्धप्रेम केमने मिलिवे?
दश – अपराध त्यजि', निरन्तर नाम भजि', कृपा ह'ले सुप्रेम पाइवे।।
ना मानिले सुभजन, साधुसंगे संकीर्तन, ना करिले निर्जने स्मरण।
ना उठिया वृक्षोपरि, टानाटानि फल धरि', दुष्टफल करिले अर्जन।।

अकैतव कृष्ण–प्रेम, येन सुविमल हेम, एइ फल नृलोके दुर्लभ।
कैतवे वञ्चना मात्र, हओ आगे योग्यपात्र, तबे प्रेम हइवे सुलभ।।
कामे प्रेमे देख भाइ, लक्षणेते भेद नाइ, तबु काम 'प्रेम' नाहि हय।
तुमि त' वरिले काम, मिथ्या ताहे 'प्रेम'–नाम, आरोपिले किसे शुभ हय।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(घ)

केन मन, कामेरे नाचाओ प्रेम–प्राय?

चर्ममांसमय काम, जड़सुख अविराम, जड़ विषयेते सदा धाय।।
जीवेर स्वरूप–धर्म, चित्स्वरूपे प्रेम–मर्म, ताहार विषयमात्र हरि।
काम–आवरणे हाय, प्रेम एवे सुप्त–प्राय, प्रेमे जागाओ काम दूर करि'।।
श्रद्धा हैते साधुसंगे, भजनेर क्रिया–रंगे, निष्ठा–रुचि–आसक्ति–उदय।
आसक्ति हइते भाव, ताहे प्रेम प्रादुर्भाव, एइ क्रमे प्रेम उपजय।।
इहाते यतन या'र, सेइ पाय प्रेमसार, क्रमत्यागे प्रेम नाहि जागे।
ए–क्रम–साधने भय, केन कर' दुराशय, कामे प्रेम कभु नाहि लागे।।
नाटकाभिनय प्राय, सकपट प्रेम भाय, ताहे मात्र इन्द्रिय–सन्तोष।
इन्द्रिय–तोषण छार, सदा कर' परिहार, छाड़' भाइ अपराध–दोष।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

मनःशिक्षा

3 (क)

भज भज हरि, मन दृढ़ करि', मुखे बोल ताँ'र नाम।
ब्रजेन्द्रनन्दन, गोपी–प्राणधन, भुवनमोहन श्याम।।
कखन मरिवे, केमने तरिवे, विषम शमन डाके।
याँहार प्रतापे, भुवन काँपये, ना जानि मर विपाके।।

कुल-धन पाइया, उनमत हैया, आपनाके जान बड़।
शमनेर दूते, धरि' पाये हाते, बाँधिया करिवे जड़।।
किवा यति, सती, किवा नीच जाति, येइ हरि नाहि भजे।
तवे जनमिया, भ्रमिया भ्रमिया, रौरव-नरके मजे।।
ए दास **लोचन**, भावे अनुक्षण, वृथाइ जनम गेल।
हरि ना भजिनु, विषये मजिनु, हृदये रहल शेल।।

(ख)

भजहुँ रे मन, श्रीनन्दनन्दन, अभय चरणारविन्द रे।
दुर्लभ मानव-, जनम सत्संगे, तरह ए भवसिन्धु रे।।
शीत-आतप, वात-वरिषण ए दिन यामिनी जागि' रे।
विफले सेविनु कृपण दुरजन चपल सुख-लव लागि' रे।।
ए धन, यौवन, पुत्र-परिजन इथे कि आछे परतीति रे।
कमलदल-जल, जीवन टलमल भजहुँ हरिपद निति रे।।
श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, वन्दन, पादसेवन, दास्य रे।
पूजन, सखीजन, आत्मनिवेदन **गोविन्ददास** अभिलाष रे।।

(ग)

भोला मन, एकबार भाव परिणाम।
भज कृष्ण, कह कृष्ण, लह कृष्ण-नाम।।
कृष्ण भजिवार सेथा प्रतिज्ञा करिले।
संसारे आसिवामात्र सकल भुलिले।।
कत कष्टे पाल' भाइ-भार्या, बेटी, बेटा।
कृष्णपद भजितेइ बाधे सब लेठा।।

शत जिह्वा—परनिन्दा, पर–तोषामोदे।
कृष्णनाम कहितेइ रसनाय बाधे।।
परपद धरि' सदा करिछ लेहने।
नियुक्त ना कर' कर से पदसेवने।।
आरे मन, भवरोगे घिरिल तोमारे।
हासफास करितेछ विषम विकारे।।
कृष्णपद ना भजिया मर उपसर्गे।
कृष्णपद भज, लाभ हवे चतुर्वर्गे।।
लइते मधुर नाम केनरे कातर।
केन भाइ मिछामिछि हइछ फाँपर।।
कहे ए अधम दास घुचिवे विकार।
नाम भज, नाम चिन्त, नाम कर सार।।

(घ)

भज मन! नन्दकुमार
भाविया देखह भाइ गति नाहि आर।।
धन जन पुत्र आदि केवा आपनार।
अतएव करह मन हरिपद सार।।
कुसंग छाड़िया सदा सत्संगे थाक।
परम निपुण हइ, नाम बलि' डाक।।
ताँ'र नाम–लीला–गाने सदा हओ मत्त।
से चरण–धन पावे, हइवे कृतार्थ।।
राधामोहन बले, मन! कि बलिव तोरे।
संसार–यातना आर नाहि देह मोरे।।

(ड़)

सुखेर लागिया, ए घर बाँधिनु, आगुने पुड़िया गेल।
अमिया – सागरे, सिनान करिते, सकलि गरल भेल।।
सखि, कि मोर कपाले लेखि।
शीतल बलिया, चाँद सेविनु, भानुर किरण देखि।।
उचल वलिया, अचले चड़िनु, पड़िनु अगाध जले।
लछमी चाहिते, दारिद्रय वेढ़ल, माणिक हारानु हेले।।
नगर वसालाम, सागर बाँधिलाम, माणिक पावार आशे।
सागर शुकाल, माणिक लुकाल, अभागी – करम – दोषे।।
पियास लागिया, जलद सेविनु, वजर पड़िया गेल।
कहे **चण्डीदास**, श्यामेर पिरीति, मरमे रहल शेल।।

मनःशिक्षा

4(1)

वैष्णव कौन है?

(प्रभुपाद श्रीश्रील भक्तिसिद्धान्तसरस्वती गोस्वामी ठाकुर)

दुष्ट मन, तुमि किसेर वैष्णव?
प्रतिष्ठार तरे, निर्जनेर घरे,
तव हरिनाम केवल कैतव।।
जड़ेर प्रतिष्ठा, शूकरेर विष्ठा,
जान ना कि ताहा मायार वैभव।
कनक – कामिनी, दिवस – यामिनी,
भाविया कि काज, अनित्य से – सब।।
तोमार कनक, भोगेर जनक,
कनकेर द्वारे सेवह माधव।

कामिनीर काम, नहे तव धाम,
ताहार मालिक केवल यादव।।
प्रतिष्ठाशा–तरु, जड़माया–मरु,
ना पेल रावण युझिया राघव।
वैष्णवी–प्रतिष्ठा, ता'ते कर निष्ठा,
ताहा ना भजिले लभिवे रौरव।।
हरिजन–द्वेष, प्रतिष्ठाशा–क्लेश,
कर केन तबे ताहार गौरव।
वैष्णवेर काछे, प्रतिष्ठाशा आछे,
ता'त कभु नहे अनित्य वैभव।।
से हरि–सम्बन्ध, शून्य–मायागन्ध,
ताहा कभु नय जड़ेर कैतव।
प्रतिष्ठा–चण्डाली, निर्जनता–जालि,
उभये जानिह मायिक रौरव।।
कीर्तन छाड़िब, प्रतिष्ठा माखिव,
कि काज ढुँड़िया तादृश गौरव।
माधवेन्द्र–पुरी, भावघरे चुरि,
ना करिल कभु सदाइ जानव।।
तोमार प्रतिष्ठा, शूकरेर विष्ठा,
तार सह सम कभु ना मानव।
मत्सरता–वशे, तुमि जड़रसे,
मजे'छ छाड़िया कीर्त्तन–सौष्ठव।।
ताइ दुष्ट मन, निर्जन–भजन,
प्रचारिछ छले कुयोगि–वैभव।
प्रभु सनातने, परम यतने,

शिक्षा दिल याहा चिन्त' सेइ सब।।
सेइ दु'टी कथा, भुल' ना सर्वथा,
उच्चैःस्वरे कर हरिनाम – रव।
फल्गु आर युक्त, बद्ध आर मुक्त,
कभु ना भाविह 'एकाकार' सब।।
कनक – कामिनी, प्रतिष्ठा – बाघिनी,
छाड़ियाछे या'रे सेइ त' वैष्णव।
सेइ अनासक्त, सेइ शुद्धभक्त,
संसार तथाय पाय पराभव।।
यथायोग्य भोग, नाहि तथा रोग,
अनासक्त सेइ, कि आर कहब।
आसक्ति – रहित, सम्बन्ध – सहित,
विषयसमूह सकलि माधव।।
से – युक्तवैराग्य, ताहा त' सौभाग्य,
ताहाइ जड़ेते हरिर वैभव।
कीर्तने याहार, प्रतिष्ठा – सम्भार,
ताहार सम्पत्ति केवल कैतव।।
विषय – मुमुक्षु, भोगेर बुभुक्षु,
दु'ये त्यज मन, दुइ अवैष्णव।
कृष्णेर सम्बन्ध, अप्राकृत स्कन्ध,
कभु नहे ताहा जड़ेर सम्भव।।
मायावादी जन, कृष्णेतर मन,
मुक्त अभिमाने से निन्दे वैष्णव।
वैष्णवेर दास, तब भक्ति – आश,
केन वा डाकिछ निर्जन आहव।।

ये फल्गु-वैरागी, कहे निजे त्यागी,
से ना पारे कभु हइते वैष्णव।
हरिपद छाड़ि', निर्जनता बाड़ि',
लभिया कि फल फल्गु से-वैभव।।
राधादास्ये रहि, छाड़' भोग-अहि,
प्रतिष्ठाशा नहे कीर्तन-गौरव।
राधा-नित्यजन, ताहा छाड़ि' मन,
केन वा निर्जन-भजन-कैतव।।
ब्रजवासिगण, प्रचारक धन,
प्रतिष्ठा-भिक्षुक ता'रा नहे शव।
प्राण आछे ता'र, से-हेतु प्रचार,
प्रतिष्ठाशाहीन कृष्णगाथा सब।।
श्रीदयित दास, कीर्त्तनेते आश,
कर उच्चैःस्वरे हरिनाम-रव।
कीर्त्तन-प्रभावे, स्मरण हइवे,
से-काले भजन निर्जन सम्भव।।

(2)

ए मन! आर कि मानुष हवे।
भारत-भूमेते, जनम लभिये, कि काज करिलि कवे।।
प्रथमे जननी-, कोलेते कौतुक, नाहि छिल ज्ञान आर।
शिशुर सहिते, खेलालि वेड़ालि, पौगण्ड एमति पार।।
प्रकृति अर्थ, अनर्थ हइल, से मदे हइलि भोर।
बुझिते नारिये, कामिनी-सापिनी, मातिये राखिलि क्रोड़।।
सुत-सुता लये, मगन रहिलि, भुलिये पूरव कथा।

मायेर उदरे, कत ना कहिलि, यखन पाइलि व्यथा।।
चतुर्थे आसिये, जराय घेरिल, सामर्थ्य हइल हीन।
तबु 'तोर' 'मोर', ना घुचे वचन, शमन गणिछे दिन।।
कुबुद्धि छाड़िये, 'हरि हरि' बल, निकटे शमन भाइ।
कहे प्रेमानन्द, ये-नाम लइले, शमन-गमन नाइ।।

(3)

ओरे मन! शुन शुन तु अति बर्बर।
शत-सन्धि-जरजर, पेये एइ कलेवर,
किवा गर्व करिछ अन्तर।।
एयात्मिका व्याधि यत, वेड़िया आछये कत,
कि जानि कखन केवा नाशे।
'ए आमि आमार' बलि, निज-प्रभु पासरिलि,
शमन-किंकर देखि' हासे।।
ये देह आपन-ज्ञाने, यत्न कर' रात्रिदिने,
वसन भूषण कत वेश।
परमात्मा भगवान्, यवे हवे अन्तर्द्धान,
भस्म कीट कृमि अवशेष।।
निद्राते पड़िले मन, कोथा घर-द्वार-धन,
स्त्री-पुत्र-बान्धव थाके कथि।
इहाते ना लागे धन्द, तबु कार्य कर मन्द,
ना चिन्तिले आपनार गति।।
निति निति जीय मर, इते ना विचार कर,
एमति याइवे एकबार।
कहे दीन प्रेमानन्द, भज कृष्ण-पदद्वन्द्व,
माया-पाश घुचिवे गलार।।

(4)

ओरे मन! किसे कर देहेर गुमान ।

मैले देहेर ये-अवस्था, नह कि ताहार ज्ञाता,

देखिये शुनिये नहे ज्ञान।।

भूषणे भूषित येइ, पचियेपड़िवेसेइ,

पोड़ा'ये करिवे नहे छाइ।

कुक्कुर-शकुनि-शिवा, बेड़िये खाइवे किवा,

किम्वा कृमि, इहा कि एड़ाइ।।

सत्ये लक्ष्य-वर्ष या'रा, केह नाहि आछे ता'रा,

एवे कलि कि आयु तोमार।

चराचर देख यत, सकलि हइवे हत,

धन-जन-सम्पद आर।।

'कृष्ण' हैते जन्म तोर, मायाते भुलिया भोर,

चुरि-दारी प्रवन्च-वचने।

आपन-उद्धार-पथे, तिले दृष्टि नाहि ता'ते,

नरकेर हेतु रात्रि-दिने।।

चारि युगे त्रिभुवने, भूत-भविष्य-वर्त्तमाने,

सत्य सत्य 'हरिनाम' सार।

स्मृति छाड़ि' हरिपदे, डुबिले संसार-मदे,

ए सुख लुटिवे यम-द्वार।।

कहे प्रेमानन्द-दास, दन्ते तृण, गले वास,

'हरि हरि' कह ओरे भाइ।

यदि 'हरि' वल वक्त्रे, फुकार करये शास्त्रे,

त्रिभुवने तार सम नाइ।।

(5)

ए मन! तुमि वा भुलेछ किसे।

तोमारे देखिया, शमन–किंकर, हाते तालि दिया हासे।।
रात्रिदिने कत, असत पचालो, 'श्रीहरि' कहिते नारो।
एमन दुर्ल्लभ, जनम पाइये, कि सुखे ए क्षेप हारो।।
धन–जने यत, आपना बलिछ, के तोर याइवे साथे।
गायेर गुमाने, पिछु ना गणिलि, ठेकालि शमन–हाते।।
देखिये शुनिये, बुझिते नारिलि, असारे जानिलि सार।
आपनार माथा, आपनि भांगिलि, वल ना ए दोष का'र।।
एखन तखन, करखन कि जानि, हासिते खेलिते पड़ि।
ए सुख स्मरिवे, गलाय यखन, चड़िवे चामेर दड़ि।।
वदन भरिया, 'हरि हरि' वल, शमन तरिवे सुखे।
कहे प्रेमानन्द, 'हरि' ना भजिलि, कालि चुण तोर मुखे।।

(6)

ओरे मन! कि रसे हैया रैलि भोर।

कि बलिया एलि सेथा, कि काज वा कर हेथा,
तिलेक चेतन नाहि तोर।।
पुत्र दारा–सम्पद, जीवन–यौवन–मद,
ये कर, सकलि असार।
जलबिम्ब कतक्षण, तेमति जानिह मन,
त्रिभुवने 'कृष्ण' मात्र सार।।
ये दिन ये गेल याय, या आछे सामालो ताय,
कालदूत दाँड़ाइया पथे।
छाड़िया अन्यथा काम, बल 'राधाकृष्ण' नाम,

कभु देखवा ना हबे ता-साथे।।
आज्ञाकारी ब्रह्मा-हर, शमन किंकर आर,
सुर-मुनि ये पद धेयाय।
हेन कृष्ण पद छाड़ि', गले दिया मायादड़ि,
दुःख देह केन रे आमाय।।
प्रेमानन्द कहे भाइ, 'कृष्ण' बिना गति नाइ,
भज कृष्ण-चरणारविन्दे।
संसार-सागरे पड़ि', केन कर काड्वाड़ि,
कह 'कृष्ण' तरिवे आनन्दे।।

(7)

ओरे मन! शुन शुन तु बड़ि गोड़ार।
छाड़िया सतेर संग, असत्-संगे सदा रंग,
परिणाम ना कर विचार।।
कामादिर वश ह'ये, सदा फिर मत्त ह'ये,
जान' तोमा अक्षय अमर।
दण्ड कर्त्ता आछे येइ, दण्डे दण्डे लिखे सेइ,
तिलेके भांगिवे गर्व तोर।।
खर-प्राय वह भार, येवा कन्या-पुत्र-दार,
पाल' या'रे आपना जानिया।
यवे काल बान्धि' लवे, ए देह पड़िया र'वे,
देखि' मुख रहिवे फिरिया।।
करिया वाहिर-वाटी, गृहे दिवे छड़ा-माटी,
स्नान करे पवित्र लागिया।
कह देखि केवा छिल, काहारआदर कैल,

एवे केने फेले पोड़ाइया।।

कहे **प्रेमानन्द** चित, यदि चाह निज हित,

'कृष्ण कृष्ण' कह श्वास श्वास।

कृष्ण जगतेर कर्त्ता, कृष्ण तिन-लोकत्राता,

भजि' कृष्ण काट कर्मफाँस।।

(8)

ओरे मन! रुचि नहे केन कृष्ण-नाम।

तबे जानि पूर्व-जन्मे, आछे कत पाप-कर्मे,

से लागि' विधाता तोरे वाम।।

यदि अन्य कथा पाओ, आँटिया साँटिया कओ,

'कृष्णनाम' लइते आलिस।

यदि शुन 'कृष्ण-कथा', वज्र येन पड़े माथा,

घुमे झुमे तल्लास' वालिश।।

यदि हय असत्-कथा, घुमेते चियाओ तथा,

शुनिते वाड़ये कत रति।

नीच-संगे सदा वास, साधुजन देखि' हास,

कुलटा वन्दिया निन्द सती।।

श्राद्ध-देव-अधिकारी, भांगिवे ए भारिभुरि,

आसि' दूत लइवे बान्धिया।

कि गुमान कर देह, पचि' गलि' या'वे एह,

धन-जन रहिवे पड़िया।।

ये-सुखे ह'येछ मत्त, बुझि' देख ता'र तत्त्व,

इहा तोर रहिवे कोथाय?

आजि मर, मर कालि, मरण ए नहे गालि,

'कृष्ण कृष्ण' कह, दिन याय।।

ये-कैले से-कैले मन, एवे हओ सचेतन,

फिरे वैस के तोरे हाराय।

कहे प्रेमानन्द सुखे, 'राधाकृष्ण' बल मुखे,

शमन जिनिया उठ नाय।।

(9)

ओरे मन! धन-जन-जीवन-यौवन।

एइ आछे एइ नाइ, चक्षे किना देख ताइ,

तुमि किसे वलिछ आपन।।

निशिर स्वपन येन, ए धन-सम्पद तेन,

तिलेके सकलि भाइ मिछे।

देखिया ना देख केने, शुनियाना शुन काणे,

कि लागि छाड़िते नार इच्छे।।

कन्या पुत्र यत इथि, मरिले से याय कथि,

कि जानि कोथाय तुमि याओ।

मिथ्या 'मोर मोर' कर, रात्रिदिन भावि' मर,

पर लागि' आपना हाराओ।।

किवा आर अन्य पर, आपनाए कलेवर,

से नाहि तोमार संगे याय।

पाछु नाहि देख एवा, तोर लागि कान्दे केवा,

कार लागि कर हाय हाय।।

येवा हइयाछे आयु, से मात्र नासार वायु,

सरिया पड़िले आर नाइ।

किवा वृद्ध किवा बाल, नाहि तार कालाकाल,
कोथा थाके यौवन–बड़ाइ।।
ए–सकल याँर माया, ताँरे केन भुल भाया,
याँर नामे त्रिभुवन तरे।
प्रेमानन्द कहे यदि, 'कृष्ण' कह निरवधि,
तवे कि ए जन आर मरे??

(10)

ओरे मन! एबार बुझिव भारिभुरि।
कुपियाछे सूर्य–सुत, बान्धिवे ताहार दूत,
येन फिर असताइ करि।।
यदि मोर बोल धर, तवे मोके रक्षा कर,
यदि जय करिवे शमन।
कृष्णनाम गड़ करि, साधुगण–शूर भरि,
तार माझे रह अनुक्षण।।
त्रिभुवने येइ आला, तिलक तुलसी–माला,
दृढ़ करि' धर आगुयान।
देखि हैंट करि' माथा, ससैन्ये से यमभ्राता,
भंग दिया करिवे प्रस्थाने।।
श्रीगुरु–करुणा–छाया, चन्द्रातप टांगाइया,
वसि' थाक आनन्द–हृदय।
कृष्ण–नित्यदास बलि, सर्वत्र फिराओढुलि,
प्रेमानन्द कहे कारे भय।।

(11)

ए मन! कि लागि' आइलि भवे।
एमन जनमे, 'हरि' ना भजिलि, से तुइ मानुष कवे।।
मानुष-आकार, हइले कि हय, करह भूतेर काम।
नहिले वदने, केन ना बलह, 'श्रीकृष्ण' 'गोविन्द'-नाम।।
पाखीरे ये-नाम, लओयाइले लय, शारी शुक आदि कत।
तुमि ये इहाते, आलस्य करह, ए हय केमन मत।।
दिवस-रजनी, आबोल ताबोल, पचाल पाड़िते पार।
ताहार भितरे, कखन केन कि, 'गोविन्द' बलिते नार।।
भजिव बलिये, कहिया आइलि, भुलिलि कि सुख पाइये।
बुझिनु आवार, शमन-नगरे, नरके मजिवि याइये।।
वदन भरिया, 'हरि' बल यदि, क्षति ना हइवे ताय।
कहे प्रेमानन्द, तवे ये नितान्त, एड़ावे कृतान्त-दाय।।

(12)

ओरे मन! आर कि हइवे हेनजन्म।
ना जानि कि पुण्य-फले, मानुष-उत्तम-कुले,
हेले या'र ना बुझिले मर्म।।
देख आयु-संख्या यत, निद्राते अर्द्धेक गत,
चौठि रोग-शोक-अपकथा।
चौठि विद्या-धने-माने, काम-क्रोध-दुर्वासने,
हास्य-कौतुके गेल वृथा।।
सत्य-त्रेता-द्वापरेते, वहु आयु छिल ताते,
बिना संख्या-पूर्ण मृत्यु नाइ।

कत करि' परिश्रम, आचरित युग-धर्म,
ध्यान यज्ञार्चन भरि आइ।।
एवे कलि अल्प आइ, शतेक वत्सर भाइ,
सेह दृढ़ नहे निरूपण।
ता गाङलि मिछा काजे, कि वलिवि कोन् लाजे,
यवे तोरे सुधावे शमन।।
एमन सुलभ कलि, याते 'हरे कृष्ण' वलि,
हेन नामे ना करिलि रति।
प्रेमानन्द कहे पुनि, ए चौराशीलक्ष योनि,
भ्रमाइवे कतेक दुर्गति!!

(13)

ओरे मन! किवा तुमि विचारि ना चाओ।
'कृष्ण' भुलि एइ पाप, तैंह तोर तिन ताप,
नाना योनि भ्रमिया वेड़ाओ।।
तुमि कृष्ण-नित्यदास, कोथा गेल से अभ्यास,
धन-जन-मदे हैया आन्धे।
बिनामूल्ये माथा पाति, दास हये खाओ लाथि,
श्रद्धाते वसन दिया कान्धे।।
एइ मोर सदा धन्द, कह लक्ष कथा मन्द,
'कृष्णनाम' लइते आलिस।
थाकिते रसना तुण्ड, याओ केन नरक-कुण्ड,
इहा हैते के आर वालिश।।
वृथा तवे नर-तनु, श्रीकृष्ण-भजन बिनु,

केमने पामर जीते चाय।
कृष्ण बिना कोटियुग, जीयेइ वा कोन् सुख,
से जीवन पाथरेर प्राय।।
एवार मानुष – देह, आर कि हइवे एह,
भज कृष्ण, छाड़ अनाचार।
देख सब नाशा – फाँदा, केवल अनर्थ – धाँधा,
असमये हय केवा का'र।।
प्रेमानन्द कहे मन, 'कृष्ण' कह अनुक्षण,
आपनार तत्त्वे हओ दढ़।
संसार – वासना – गर्त्त, कीट – क्रिमिमय कत,
देखिया शुनिया केन पड़।।

(14)

ओरे मन! केन हेन बुझ विपरीत।
दण्डे पले आयुक्षय, ताते तोर बोध नय,
आइसे दिन इथे हरषित।।
दिने मासे अब्दे बाढ़, ऐछे जानियाछ दढ़,
घाटे के, ता बुझिते ना पार।
नाये चड़ि' चाह कुले, देख येन पृथ्वी चले,
तुमि ये चलिछ ता ना हेर।।
धन जन आपनार, से ना भावियाछ सार,
से कि तोर, जान ना से कार।
तिलेके काड़िया लय, यारे इच्छा तारे देय,
नहे तुमि मरिलेओ तार।।

वृथा अहंकारे मर, विचारिया पूर्वापर,
साधुजन–पथेते दाँड़ाओ।
मनुष्य दुर्लभ जन्म, केन कर अपकर्म,
करे रत्न पाइया फेलाओ।।
यावत सामर्थ्य आछे, जरा ना आसिछे काछे,
'कृष्ण कृष्ण' कह अविराम।
जराय भांगिवे तनु, सर्वेन्द्रिय हवे क्षीणु,
तवे कि स्फुरिवे कृष्णनाम??
नहे वा कखने याइ, किछु निरूपण नाइ,
तिले एक नाहिक विश्वास।
प्रेमानन्द कहे भाइ, कह 'कृष्ण', व्याज नाइ,
ए जीवन केवल निश्वास।।

(15)

ओरे मन! निवेदन शुनह आमार।
जन्मिले मरण आछे, कालदूत आछे पिछे,
भुञ्जाइवे कर्म–अनुसारे।।
यावत आछये आइ, 'कृष्ण कृष्ण' कह भाइ,
कहि 'कृष्ण' सार' आपनाके।
कृष्णनाम ये वदने, से जितिल त्रिभुवने,
कि भय शमने आछे ताके।।
यदि चिन्त निज–हित, साधु–संगे कर प्रीत,
असत्संग ना करिह क्षणे।
कुक्कुर–भवने गेले, अस्थि–चर्म खुब मिले,
गज–दन्त–मुक्ता सिंह–स्थाने।।

कृष्ण–नाम–लीला–गुण–, श्रवण–कीर्त्तन मन,
अश्रु–कम्प–पुलक आनन्दे।
साधुसंगे सदा वसि', विलसह दिवानिशि,
तवे वाञ्छा पुरे **प्रेमानन्दे**।।

(16)

ओरे मन! भाविया ना बुझ आपनाके।
या'र लागि' दुःख कर, स्वदेशे विदेशे फिर,
से–जन कि सुख दिवे तोके??
यावत् सामर्थ्य आछे, तावत् तोमार काछे,
यावत् आनिया देह अर्थ।
यखन से गन्ध नाइ, डाकिले ना शुने भाइ,
ना पुछे, देखिले असमर्थ।।
अवस्था देखिया हासे, भाल कथा मन्द वासे,
बाँका–मुखे ओ नाक–तोलाइ।
क्षुधाय ना देय भात, ता'ते आर कटु बात,
कहे एकि हइल वालाइ।।
दिने दिने खाट रति, किसे आर पिता पति,
परिजने ना कर बड़ाइ।
येवा आगे योड़–हाते, ता'रा शुनाय निर्घाते,
ए समये बन्धु के रे भाइ।।
परके आपन करि, भेवे मलि जन्म भरि,
के तुमि, तोमार आछे केवा?
प्रेमानन्द कहे मति, 'कृष्ण' बिना नाहि गति,
कह 'कृष्ण'—ए दुःख तरिवा।।

(17)

ओरे मन! स्वर्ग नरक बुझ कोथा।

ये येमन कर्म करे, तेमनि भुञ्जाय तारे,
भाविया देखिले सब हेथा।।

केह घोड़ाय दोलाय फेरे, केह स्कन्धे वहे कारे,
छत्र धरि केहचले पथे।

केह कर्म–अनुसारे, जन्म भरि कारागारे,
कारो विष्ठा केह वहे माथे।।

शत सहस्त्रायुत लक्ष, केह पाले दिया भक्ष्य,
उदर भरिते केह नारे।

एखाने देखिछ येवा, परे या'ता' जाने केवा,
विधातार मने से विचारे।।

देवता–गन्धर्व–यक्ष, प्रेत–पिशाच–दैत्य–रक्ष,
स्वभावे सकल परचार।

याहार येमन मत, सेइ कर्मे अनुरत,
सेइमत भक्ष्य से आचार।।

कृष्ण–पारिषद भक्त, कृष्णकर्मे सदा रत,
कभु लिप्त नहे ए संसारे।

से रहे मायार पार, ताते कार अधिकार,
नित्य–संग नित्य–परिवारे।।

कृष्ण–लीला–गुण–नाम, रात्रिदिने अविराम,
श्रवण–कीर्त्तन सदानन्द।

प्रेमानन्द कहे मति, हये ताँ'र अनुगति,
'कृष्ण' कहि छिँड़ कर्मबन्ध।।

(18)

ए मन! तुमि से केवल भूत।
कुसंग-श्मशाने, सतत वसिछ, पाइया परम युत।।
मल मूत्र यत, असत पचाल, ए तोर भक्षण सुखे।
'राम कृष्ण हरि', 'गोपाल गोविन्द', वलिते नारिछ मुखे।।
ये 'कर' तोमार, गोविन्द-पूजने, तीरथ भ्रमिते पा-य।
से दुइ राखिले, चुरिये दारिये, तवे कि उल्टा नय??
यत ना करिछ, साधुर हेलन, से तोर अनल मुखे।
देख ना ताहाते, आपनि दहिछ, एमति गोङावि दुखे।।
कृष्णेर वसति, साधुर हृदये, सुखेर विश्राम-भूमि।
एमन दुर्दैव, ताँहार परश, करिते नारिछ तुमि।।
श्रीहरि-चरण, करह शरण, गया-गंगा सब ता'ते।
कहे प्रेमानन्द, तवे से उद्धार, नहिले वा हवे का'ते।।

(19)

जलजा नवलक्षाणि स्थावरा लक्षविंशतिः।
क्रिमयो रुद्रसंख्यकाः पक्षीणां दशलक्षकम्।
त्रिंशल्लक्षाणि पशवश्चर्तुलक्षाणि मानवाः।।
(पद्मपुराण)

ए मन! तुमि कि भेवेछ सुख।
सुपथ छाड़िया, कुपथे गमन, ए तोर केमन बुक।।
स्थावर-योनिते, क्रमे ये-जनम, हइया विंशति लक्ष।
जल-जन्तु-माझे, नव लक्ष आर, जलेइ वसति भक्ष्य।।
एकादश लक्ष, कृमिते जनम, दश लक्ष योनि पक्ष।
पशुर माझारे, क्रमे तेत्रिश लक्ष, मानव चतुर् लक्ष।।

मानुषे आसिया, कुत्सित् द्वि – लक्ष, शुद्रादि द्विशतबार।
ब्राह्मण – कुलेते, परे एकबार, ता – सम नाहिक आर।।
कतेक कलप, भ्रमिया मानुष, एमन जनमे पाप।
शमने बान्धिया, पुन ना फेलावे, आवार तोमारे वाप।।
वदन भरिया, 'हरि हरि' बल, असत – भावना छाड़।
कहे **प्रेमानन्द**, तवे से चतुर, ए सब यातना एड़।।

(20)

ए मन! तु वड़ कलिर भूत।
कर वल जारि, शून्ये दिया वाड़ि, हासये तपन – सुत।।
भूतेर वापेर, श्राद्ध कर निति, भूतेर वेगार खाट।
लाज नाहि मुखे, काल काट' सुखे, चलिछ यमेर वाट।।
कामिनी – काञ्चन, हृदय – रञ्जन, ताहाते मगन थाक।
ओ दिके तोमार, कि दशा घटिछे, तार किछु खोँज राख।।
चौराशी नरके, यावे एके एके, पथ परिष्कार प्राय।
कपालेर जोर, बड़ वटे तोर, बाहादुरी हबे ताय।।
मूरख बर्बर, सुयुकति धर, यदि तरिवारे चाओ।
कहे **प्रेमानन्दे**, मनेर आनन्दे, सदा हरिगुण गाओ।।

(21)

ओरे मन! एवे तोर ए केमन रीत।
ये कर्मे आइलि हेथा, से – सब रहिल कोथा,
एवे ये देखिये विपरीत।।
कृष्ण – कर्म लागि' कर, ताहे केन बर्बर,
से – करे परेर वित्त हर।

से अवश नहे केने, कि सुसार बहु दाने,
ताहे आर कर वा ना कर।।
मुखे क'वे 'हृषीकेश', ताहे यदि साधु–द्वेष,
तवे वक्रमुख केने नओ।
अग्नि दिया हेन मुख, पोड़ा'ले ना घुचे दुख,
ताहे 'कृष्ण' कओ वा ना कओ।।
भ्रमिते कृष्णेर तीर्थ, पदेर ना एहि कृत्य,
ताहे यदि पर–दारे चल।
कि काज पदेर एइ, पंगु केने नहे सेइ,
तवे तीर्थे गेल वा ना गेल।।
कृष्ण–लीला–गुण–कथा, कर्णेते शुनिवे यथा,
ताहे यदि कु–कथाय भोर।
यदि आर साधु–निन्दा, शुनिया वाड़ये श्रद्धा,
से काण वधिर हउ तोर।।
गुरु–कृष्ण–वैष्णव–मूर्त्ति, देखिवे करिया आर्त्ति,
से यदि देखये पर–दारे।
असन्तोष साधु देखि', केन विधि हेन आँखि,
आशु अन्ध ना करे ताहारे।।
तुमि कृष्ण–स्मृति–काजे, जन्मिला संसार–माझे,
ताहा छाड़ि' धने–जने आश।
तबे जीये किवा काज, पड़ुक तोर मुण्डे बाज,
केने आर नहे सर्वनाश।।
प्रेमानन्द कहे मन, 'कृष्ण' कह अनुक्षण,
केने भुल आपनार प्रभु।
मुखे 'हरि हरि' बल, सदाइ आनन्दे दोल,
तिन–लोके दुःख नहे कभु।।

(22)

ए मन! कि करे वरण-कुल।
येइ कुले केन, जनम ना हय, केवल भकति मूल।।
कपि-कुले धन्य, वीर हनुमान, श्रीराम-भकतराज।
राक्षस हइया, विभीषण वैसे, ईश्वर-सभार माझ।।
दैत्येर औरसे, प्रह्लाद जनमि, भुवने राखिल यश।
स्फटिक-स्तम्भेते, प्रकटे नृहरि, हइया याँहार वश।।
चण्डाल हइया, मितालि करिला, गुहक चण्डालवर।
बल ना कि कुल, विदुरेर छिल, खाइल ताँहार घर।।
देख ना केमन, साधन करिल, गोकुले गोपेर नारी।
जाति-कुलाचारे, तबे कि करिल, से हरि ये भजे तारि।।
श्रीकृष्ण-भजने, सबे अधिकारी, कुलेर गरव नाइ।
कहे प्रेमानन्द, ये करे गरव, नितान्त मूरख भाइ।।

(23)

ओरे मन! कि भय शमने करि आर।
यदि कृष्ण पदे रति, कि करिवे पितृ-पति,
इहा केने ना कर विचार।।
ये पद भरसा करि', ब्रह्मा सृष्टि-अधिकारी,
ये-पद वाञ्छये पञ्चानन।।
ये पदे गंगार जन्म, लक्ष्मी जाने या'र मर्म,
अहर्निशि स्मरे अनुक्षण।।
ध्रुव-आदि ये प्रसादे, योगीन्द्र धरये हृदे,
मुनिगण ये-पद धेयाय।

द्रौपदी प्रह्लाद करि, ये–पद हृदये स्मरि,
देख कत संकट एड़ाय।।
यदि कर निज काज, मित्र हवे धर्मराज,
वृथा चिन्त असार–संसार।
कहे दीन **प्रेमानन्द**, चिन्त कृष्ण–पदद्वन्द्व,
त्रिभुवने शत्रु नहे आर।।

(24)

ओरे भाइ! कृष्ण से ए तिन–लोक–बन्धु।
जीव निज–कर्मे बन्ध, मायाते पड़िया अन्ध,
उद्धारिते करुणार सिन्धु।।
निज–शक्ति–गुणगण, सब 'नामे' समर्पण,
न्यूनाधिक नाहिक विचार।
नाम–नामी भेद नाइ, नामेर गुणे नामी पाइ,
नाम करे हेलाय उद्धार।।
नाहि कालाकाल ता'र, शुचि कि अशुचि आर,
नाम लैते निषेध ना इथे।
कि मोर दुर्दैव हाय, हेन से दयालु–पाय,
अनुराग ना जन्मिल ता'ते।।
ओरे मन! पाये पड़ि, असत् प्रयास छाड़ि',
'कृष्ण कृष्ण' कह अनुक्षण।
ए बड़ सुलभ अति, नामे यदि कर प्रीति,
तबे **प्रेमानन्देर** नन्दन।।

(25)

ओरे मन! साधु सङ्गे करह वसति।

यदि कर्मपाश – बन्धे, मगन करये अन्धे,
यदि कुल – विहीन उत्पति।।

यदि पशु – पक्षी – कृमि, जन्मिया जन्मिया भ्रमि,
सतत कराय गतागति।

येमन तेमन स्थाने, गृहे वा पर्वते वने,
काँहा केने ना हय वसति।।

थाके येन एइ सूत्र, दृढ़ – चित एइ मात्र,
श्रीहरिचरणे रति – मति।

घुचिवे सकल दुख, पाइवे अशेष सुख,
बुझि कर श्रीहरि – भकति।।

धर्म – कर्म – ज्ञान – योग, स्वर्ग – मोक्ष – भुक्ति – भोग,
'कृष्ण – सेवानन्द'—इहा विने।

यदि इथे कोन क्षण, बान्ध ताय आमाय मन,
तवे येन हय त' मरणे।।

'राधा' 'कृष्ण' दुटी नाम, जिह्वा येन अविराम,
दुँहु – गुण – लीलाते श्रवण।

कहे प्रेमानन्द दीने, दुहुँ चिन्ता अनुक्षणे,
रूपे येन थाकये नयन।।

(26)

ए मन! विचारि केन ना चाओ।

देख भवरोग, ते केने घुचे ना, कत ना औषध खाओ।।

कत ना करिछ, प्रसाद भक्षण, चरण – धौत जल।

ए सब औषधि, पान कर तवु, धातुते नाहिक वल।
जिह्वार परशे, ये हरिनामेते, प्रेमेते भासाय तनु।।
से नाम लइये, आर्द्र ना हइलि, लोहार पिण्ड से जनु।।
भाविया देख ना, औषधे कि करे, कुपथ्य छाड़िते नारो।
कुपथ्य थाकिले, रोग ना छाड़िवे, अरुचि वाड़िवे आरो।।
अनुपान जानि, औषधि खाओ तो', रोगेर दमन हवे।
एखनो ता यदि, बुझिते ना पार, तबे से बुझिवे कबे।।
क्षुधाटी वाड़ये, रुचिटी जनमे, खाइते आनन्द-जल।
कहे **प्रेमानन्द**, तबे से जानिह, औषधि-धारण-फल।।

(27)

ओरे मन! कृष्णनाम- सम नाहि आन।
धर्म-कर्म-तप-त्याग, ध्यान-ज्ञान-व्रत-याग,
किछु नहे नामेर समान।।
ये नाम लइते हर, प्रेमे मत्त दिगम्बर,
वाल्मीकि हइल तपोधन।
अजामिल पापी छिल, नामाभासे तरे गेल,
पुत्रके डाकिया नारायण।।
ये-नामेर स्वाद पेये, तम्बुरे फिरये गेये,
देवऋषि नारद-गोसाँइ।
सत्यभामा व्रत-छले, कृष्ण-संगे करि' तूले,
देखाइला नामेर बड़ाइ।।
अनन्त सहस्र मुखे, ये नाम गायेन सुखे,
तवु तो करिते नारे सीमा।
लक्ष्य करि' अर्जुनके, प्रभु आपनार मुखे,
कहेछेन नामेर महिमा।।

प्रेमानन्द कहे मन, 'कृष्ण' बल अनुक्षण,
दुर्वासना छाड़िया हृदय।
प्रेमे उच्च नाम करि', अवश्य पाइवे हरि,
नाम आर नामी भिन्न नय।।

(28)

ए मन! 'हरिनाम' कर सार।
ए भव–सागर, हवे बालि–चर, हाँटिया हइवि पार।।
धरम करम, ए जप, ए तप, ज्ञान–योग–याग–ध्यान।
नहि नहि नहि, कलिते केवल, उपाय 'गोविन्द'–नाम।।
भुकति मुकति, ये–गति से–गति, ताहे ना करिह रति।
मेघेर छायाय, जुड़ान येमन, कह ना से कोन् गति।।
बदन भरिया, 'हरि हरि' बल, एमन सुलभ कवे।
भारत–भूमेते, मानुष–जनम, आर कि एमन हवे।।
यतेक पुराण–, प्रमाण देख ना, नामेर समान नाइ।
नामे रति हैले, प्रेमेर उदय, प्रेमेते हरिके पाइ।।
श्रवण–कीर्त्तन, कर अनुक्षण, असत पचाल छाड़ि'।
कहे प्रेमानन्द, मानुष–जनम, सफल कर ना भाड़ि।।

षड़ंग–शरणागति

(1)

आनुकूलस्य संकल्पः प्रातिकूल्यविवर्जनम्।
रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृप्वे वरणं तथा।
आत्मनिक्षेपकार्पण्ये षड्विधा शरणागति।।
(वैष्णवतन्त्र–वाक्य)

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु जीवे दया करि'।
स्वपार्षद स्वीय धाम सह अवतरि'।।
अत्यन्त दुर्लभ प्रेम करिवारे दान।
सिखाय शरणागति भकतेर प्राण।।
दैन्य, आत्मनिवेदन, गोप्तृत्वे वरण।
'अवश्य रक्षिबे कृष्ण'—विश्वास–पालन।।
भक्ति–अनुकूलमात्र कार्येर स्वीकार।
भक्ति–प्रतिकूल–भाव वर्जनांगीकार।।
षड़ंग शरणागति हइबे याँहार।
ताँहार प्रार्थना सुने श्रीनन्दकुमार।।
रूप–सनातन–पदे दन्ते तृण करि'।
भकतिविनोद पड़े दुहुँ पद धरि'।।
काँदिया काँदिया बले—''आमि त' अधम।
शिखाये शरणागति कर हे उत्तम।।''

(2)

दैन्य—दुःखात्मक (वाचिक)

भुलिया तोमारे, संसारे आसिया, पेये नानाविध व्यथा।
तोमार चरणे, आसियाछि आमि, बलिब दुःखेर कथा।।
जननी–जठरे, छिलाम यखन, विषम बन्धनपाशे।
एकबार प्रभु, देखा दिया मोरे, वञ्चिले ए दीन दासे।।
तखन भाविनु, जनम पाइया, करिब भजन तव।
जनम हइल, पडि'माया–जाले, ना हइल ज्ञान–लव।।
आदरेर छेले, स्वजनेर कोले, हासिया काटानु काल।
जनक–जननी, स्नेहेते भुलिया, संसार लागिल भाल।।

क्रमे दिन दिन, बालक हइया, खेलिनु बालक–सह।
आर किछु दिने, ज्ञान उपजिल, पाठ पडि' अहरहः।।
विद्यार गौरवे, भ्रमि' देशे देशे, धन उपार्जन करि।
स्वजन–पालन, करि एकमने, भुलिनु तोमारे हरि!!
वार्द्धक्ये एखन, **भकतिविनोद**, काँदिया कातर अति।
ना भजिया तोरे, दिन वृथा गेल, एखन कि ह'वे गति!!

(3)

दैन्य—दुःखात्मक (कायिक)

(प्रभु हे!) शुन मोर दुःखेर काहिनी।

विषय–हलाहल, सुधाभाणे पियलुँ,
आव् अवसान दिनमणि।।
खेलारसे शैशव, पढ़इते कैशोर,
गोंयाओलुं, ना भेल विवेक।
भोगवशे यौवने, घर पाति' बसिलुँ,
सुत–मित बाड़ल अनेक।
वृद्धकाल आओल, सब सुख भागल,
पीड़ावशे हइनु कातर।
सर्वेन्द्रिय दुर्बल, क्षीण कलेवर,
भोगाभावे दुःखित अन्तर।।
ज्ञान–लव–हीन, भक्तिरसे वंचित,
आर मोर कि ह'वे उपाय।
पतित बन्धु तुहुँ, पतिताधम हाम,
कृपाय उठाओ तब पा–य।।
विचारिते आवहि, गुण नाहि पाओबि,
कृपा कर, छोड़त विचार।

सीधु पिवाओत,
तव पदपंकज–,
भकतिविनोदे कर' पार।।

(4)

दैन्य—दुःखात्मक (मानसिक)

काटाइनु काल,
विद्यार विलासे,
परम साहसे आमि।
ना भजिनु कभु,
तोमार चरण,
एखन शरण तुमि।।
भरसा बाड़िल,
पड़िते पड़िते,
ज्ञाने गति हबे मानि'।
से–आशा विफल,
से–ज्ञान दुर्बल,
से–ज्ञान अज्ञान जानि।।
जड़विद्या यत,
मायार वैभव,
तोमार भजने बाधा।
मोह–जनमिया,
अनित्य–संसारे,
जीवके करये गाधा।।
सेइ गाधा ह'ये,
संसारेर बोझा,
बहिनु अनेक काल।
वार्द्धक्ये एखन,
शक्तिर अभावे,
किछु नाहि लागे भाल।।
जीवन—यातना,
हइल एखन,
से–विद्या अविद्या भेल।
अविद्यार ज्वाला,
घटिल विषम,
से–विद्या हइल शेल'।।

तोमार चरण, बिना किछु धन,
संसारे ना आछे आर।
भकतिविनोद, जड़विद्या छाड़ि',
तुया पद करे सार।।

(5)(क)
दैन्य—त्रासात्मक

यौवने यखन, धन–उपार्जने,
हइनु विपुल कामी।
धरम स्मरिया, गृहिनीर कर,
धरिनु तखन आमि।
संसार पाता'ये, ताहार सहित,
कालक्षय कैनु कत।
बहु सुत–सुता, जनम लभिल,
मरमे हइनु हत।
संसारेर भार, बाड़े दिने दिने,
अचल हइल गति।
वार्द्धक्य आसिया, घेरिल आमारे,
अस्थिर हइल मति।
पीड़ाय अस्थिर, चिन्ताय ज्वरित,
अभावे ज्वलित चित।
उपाय ना देखि', अन्धकारमय,
एखन ह'येछि भीत।
संसार–तटिनी–, स्रोत नहे शेष,
मरण निकटे घोर।

सब समापिया, भजिब तोमाय,
ए आशा विफल मोर।
एवे शुन, प्रभु! आमि गतिहीन,
भकतिविनोद कय।
तव कृपा बिना, सकलि निराशा,
देह मोरे पदाश्रय।

(ख)

(प्रभु हे!) तुया पदे ए मिनति मोर।
तुया पदपल्लव, त्यजत मरु-मन,
विषम विषये भेल भोर।।
उठयिते ताकत, पुन नाहि मिलइ,
अनुदिन करहुँ हुताश।
दीनजन-नाथ, तुहुँ कहायसि,
तोहारि चरण मम आश।।
ऐछन दीनजन, कँहि नाहि मिलइ,
तुहुँ मोरे कर परसाद।
तुया जन-संगे, तुया कथारंगे,
छाड़हुँ सकल परमाद।।
तुया धाम-माहे, तुया नाम गाओत,
गोँयाओबुँ दिवानिशि आश।
तुया पदछाया, परम सुशीतल,
मागे **भकतिविनोद** दास।।

(६)

दैन्य—अपराधात्मक

आमार जीवन, सदा पापे रत,
नाहिक पुण्येर लेश।
परेरे उद्वेग, दियाछि ये कत,
दियाछि जीवेरे क्लेश।
निज सुख लागि,' पापे नाहि डरि,
दयाहीन स्वार्थपर।
पर – सुखे दुःखी, सदा मिथ्याभाषी,
परदुःख सुखकर।
अशेष कामना, हृदि माझे मोर,
क्रोधी दम्भपरायण।
मदमत्त सदा, विषये मोहित,
हिंसा – गर्व – विभूषण।
निद्रालस्य – हत, सुकार्ये विरत,
अकार्ये उद्योगी आमि।
प्रतिष्ठा लागिया, शाठ्य आचरण,
लोभहत सदा कामी।
ए हेन दुर्जन, सज्जन – वर्जित,
अपराधी निरन्तर।
शुभकार्यशून्य, सदानर्थमना,
नाना दुःखे जर जर।
वार्द्धक्ये एखन, उपायविहीन,
ता'ते दीन अकिंचन।
भकतिविनोद, प्रभुर चरणे,
करे दुःख निवेदन।

7 (क)

दैन्य—अपराध एवं लज्जात्मक

निवेदन करि प्रभु! तोमार चरणे।
पतित-अधम आमि, जाने त्रिभुवने।।
आमा-सम पापी नाहि जगत्-भितरे।
मम-सम अपराधी नाहिक संसारे।।
सेइ सब पाप आर अपराध, आमि।
परिहारे पाइ लज्जा, सब जान' तुमि।।
तुमि बिना का'र आमि लइब शरण?
तुमि सर्वेश्वरेश्वर ब्रजेन्द्रनन्दन।।
जगत् तोमार नाथ! तुमि सर्वमय।
तोमा-प्रति अपराध तुमि कर' क्षय।।
तुमि त' स्खलित-पद जनेर आश्रय।
तुमि बिना आर केबा आछे, दयामय।।
सेइरूप तव अपराधी जन यत।
तोमार शरणागत हइबे सतत।
भकतिविनोद एवे लइया शरण।
तुया पदे करे आज आत्मसमर्पण।।

(ख)

(प्राणेश्वर!) कहबुँ कि सरम् कि बात्।
ऐछन पाप नाहि, यो हाम् न करलुँ,
हस्त्र सहस्त्र वेरि नाथ।
सोहि करम-फल, भवे मोके पेशइ,
दोख देओव आव् काहि।

तखनक परिणाम, कछु ना विचारलुँ,
आव् पछु तरइते चाहि।।
दोख विचारइ, तुहुँ दण्ड देओबि,
हाम् भोग करबुँ संसार।
करत गतागति, भकतजन – संगे,
मति रहु चरणे तोहार।।
आपन चतुरपण, तुया पदे सोंपलुँ,
हृदय–गरव दूरे गेल।
दीन दयामय, तुया कृपा निरमल,
भकतिविनोद आशा भेल।।

8 (क)

आत्मनिवेदन—ममतास्पद देहसमर्पण (वाचिक)

सर्वस्व तोमार, चरणे सँपिया, पड़ेछि तोमार घरे।
तुमि त' ठाकुर, तोमार कुकुर, बलिया जानह मोरे।।
बाँधिया निकटे, आमारे पालिवे, रहिब तोमार द्वारे।
प्रतीप–जनेरे, आसिते ना दिव, राखिब गड़ेर पारे।।
तव निजजन, प्रसाद सेविया, उच्छिष्ट राखिबे याहा।
आमार भोजन, परम आनन्दे, प्रतिदिन हबे ताहा।।
बसिया शुइया, तोमार चरण, चिन्तिव सतत आमि।
नाचिते नाचिते, निकटे याइब, यखन डाकिबे तुमि।।
निजेर पोषण, कभु ना भाविव, रहिब भावेर भरे।
भकतिविनोद, तोमारे पालक, बलिया वरण करे।।

(ख)

वस्तुतः सकलि तव, जीव केह नय।
'अहं'-'मम'-भ्रमे भ्रमि' भोगे शोक-भय।।
'अहं'-'मम'-अभिमान एइमात्र धन।
बद्धजीव निज-बलि' जाने मने मन।।
सेइ अभिमाने आमि संसारे पड़िया।
हाबुडुबु खाइ भवसिन्धु साँतारिया।।
तोमार अभय पदे लइया शरण।
आजि आमि करिलाम आत्मनिवेदन।।
'अहं'-'मम'- अभिमान छाड़िल आमाय।
आर येन मम हृदे स्थान नाहि पाय।।
एइमात्र बल प्रभु! दिवे हे आमारे।
अहंता-ममता दूरे पारि राखिवारे।।
आत्मनिवेदन-भाव हृदे दृढ़ रय।
हस्तिस्नान-सम येन क्षणिक ना हय।
भकतिविनोद प्रभु-नित्यानन्द-पा-य'।
मागे परसाद, याहे अभिमान याय।।

(९)

आत्मनिवेदन—ममतास्पद देहसमर्पण
(कायिक)

'आमार' बलिते प्रभु! आर किछु नाइ।
तुमिइ आमार मात्र पिता-बन्धु-भाइ।।
बन्धु, दारा, सुत-सुता—तव दासी-दास।
सेइ त' सम्बन्धे सबे आमार प्रयास।।

धन, जन, गृह, दार, 'तोमार' बलिया।
रक्षा करि आमि मात्र सेवक हइया।।
तोमार कार्येर तरे उपार्जिब धन।
तोमार संसार–व्यय करिब वहन।।
भालमन्द नाहि जानि सेवा मात्र करि।
तोमार संसारे आमि विषय–प्रहरी।।
तोमार इच्छाय मोर इन्द्रिय–चालना।
श्रवण, दर्शन, घ्राण, भोजन–वासना।।
निजसुख लागि' किछु नाहि करि आर।
भकतिविनोद बले, तव सुख सार।।

(10)

आत्मनिवेदन—ममतास्पद देहसमर्पण

(मानसिक)

दारा–पुत्र–निज–देह–कुटुम्ब–पालने ।
सर्वदा व्याकुल आमि छिनु मने मने।।
केमने अर्जिव अर्थ, यश किसे पाव।
कन्या–पुत्र–विवाह केमने सम्पादिव।।
एवे आत्मसमर्पणे चिन्ता नाहि आर।
तुमि निर्वाहिवे प्रभु! संसार तोमार।
तुमि त' पालिबे मोरे निजदास जानि'।
तोमार सेवाय प्रभु! बड़ सुख मानि।।
तोमार इच्छाय प्रभु! सर्व कार्य हय।
जीव बले,—'करि आमि', से त' सत्य नय।।
जीव कि करित्ते पारे, तुमि ना करिले?

आशामात्र जीव करे, तब इच्छा—फले।।
निश्चिन्त हइया आमि सेविव तोमाय।
गृहे भाल – मन्द ह'ले नाहि मोर दाय।।
भकतिविनोद निज – स्वातन्त्र्य त्यजिया।
तोमार चरण सेवे' अकिंचन हइया।।

(11)

आत्मनिवेदन—अहंतास्पद देहीसमर्पण (वाचिक)

मानस, देह, गेह, यो किछु मोर।
अर्पिलुँ तुया पदे, नन्दकिशोर!!
संपदे – विपदे, जीवने – मरणे।
दाय मम गेला तुया ओ – पद वरणे।।
मारबि राखबि—यो इच्छा तोहारा।
नित्यदास – प्रति तुया अधिकारा।।
जन्माओबि मोए इच्छा यदि तोर।
भक्तगृहे जनि जन्म हउ मोर।।
कीटजन्म हउ यथा तुया दास।
बहिर्मुख ब्रह्मजन्मे नाहि आश।।
भुक्ति – मुक्ति – स्पृहाविहीन ये भक्त।
लभइते ताँ'क संग अनुरक्त।।
जनक, जननी, दयित, तनय।
प्रभु, गुरु, पति—तुहुँ सर्वमय।।
भकतिविनोद कहे, शुन कान!
राधानाथ! तुहुँ हामार पराण।।

(12)

आत्मनिवेदन—अहंतास्पद देहीसमर्पण (कायिक)

'अहं' – 'मम' – शब्द – अर्थे याहा किछु हय।
अर्पिलुँ तोमार पदे ओहे दयामय!!
'आमार' आमि त' नाथ! ना रहिनु आर।
एखन हइनु आमि केवल तोमार।।
'आमि' – शब्दे देही जीव अहंता छाड़िल।
त्वदीयाभिमान आजि हृदये पशिल।।
आमार सर्वस्व–देह, गेह, अनुचर।
भाइ, बन्धु, दारा, सुत, द्रव्य, द्वार, घर।।
से – सब हइल तव, आमि हैनु दास।
तोमार गृहेते एबे आमि करि वास।।
तुमि गृहस्वामी, आमि सेवक तोमार।
तोमार सुखेते चेष्टा एखन आमार।।
स्थूल – लिंग – देहे मोर सुकृत – दष्कृत।
आर मोर नहे, प्रभु! आमि त' निष्कृत।।
तोमार इच्छाय मोर इच्छा मिशाइल।
भकतिविनोद आज आपने भुलिल।।

(13)

आत्मनिवेदन—फलस्वरूप देहसमर्पण (मानसिक)

आत्मनिवेदन, तुया पदे करि',
हइनु परम सुखी।

दुःख दूरे गेल, चिन्ता ना रहिल,
चौदिके आनन्द देखि।।
अशोक-अभय, अमृत-आधार,
तोमार चरणद्वय।
ताहाते एखन, विश्राम लभिया,
छाड़िनु भवेर भय।।
तोमार संसारे, करिव सेवन,
नहिव फलेर भागी।
तव सुख याहे, करिव यतन,
ह'ये पदे अनुरागी।।
तोमार सेवाय, दुःख हय यत,
सेओ त' परम सुख।
सेवा-सुख-दुःख, परम सम्पद्,
नाशये अविद्या-दुःख।।
पूर्व-इतिहास, भुलिनु सकल,
सेवा-सुख पे'ये मने।
आमि त' तोमार, तुमि त' आमार,
कि काज अपर धने।।
भकतिविनोद, आनन्दे डुबिया,
तोमार सेवार तरे।
सब चेष्टा करे, तव इच्छा-मत,
थाकिया तोमार घरे।।

(14)

गोप्तृत्वेवरण—अवश्य रक्षिवे कृष्ण (वाचिक)

तुमि सर्वेश्वरेश्वर, ब्रजेन्द्रकुमार!
तोमार इच्छाय विश्वे सृजन–संहार।।
तव इच्छामत ब्रह्मा करेन सृजन।
तव इच्छामत विष्णु करेन पालन।।
तव इच्छामते शिव करेन संहार।
तव इच्छामते माया सृजे कारागार।।
तव इच्छामते जीवेर जनम–मरण।
समृद्धि–निपात दुःख–सुख–संघटन।।
मिछे मायाबद्ध जीव आशापाशे फिरे'।
तव इच्छा बिना किछु करिते ना पारे।।
तुमि त' रक्षक आर पालक आमार।
तोमार चरण बिना आशा नाहि आर।।
निज–बल–चेष्टा–प्रति भरसा छाड़िया।
तोमार इच्छाय आछि निर्भर करिया।।
भकतिविनोद अति दीन अकिंचन।
तोमार इच्छाय ता'र जीवन–मरण।।

(15)

गोप्तृत्वे वरण–दैन्यात्मक (कायिक)

कि जानि कि बले, तोमार धामेते,
हइनु शरणागत।
तुमि दयामय, पतित–पावन,
पतित–तारणे रत।।

भरसा आमार, एइमात्र नाथ,
तुमि त' करुणामय।
तव दयापात्र, नाहि मोर सम,
अवश्य घुचावे भय।।
आमारे तारिते, काहारो शकति,
अवनी-भितरे नाहि।
दयाल ठाकुर, घोषणा तोमार,
अधम पामरे त्राहि।।
सकल छाड़िया, आसियाछि आमि,
तोमार चरणे नाथ!
आमि नित्यदास, तुमि पालयिता,
तुमि गोप्ता जगन्नाथ!!
तोमार सकल, आमि मात्र दास,
आमारे तारिवे तुमि।
तोमार चरण, करिनु वरण,
आमार नहि त' आमि।।
भकतिविनोद, काँदिया शरण,
ल'येछे तोमार पा-य।
क्षमि' अपराध, नामे रुचि दिया,
पालन करह ताय।।

(16)

गोप्तृत्वे वरण—आत्मनिवेदनात्मक (मानसिक)

ना करलुँ करम, गेयान नाहि भेल,
ना सेविलुँ चरण तोहार।

जड़सुखे मातिया, आपनकु वन्चइ,

पेखहुँ चौदिश आन्धियार।।

तुहुँ नाथ! करुणा – निदान।

तुया पदपंकजे, आत्म – समर्पिलुँ,

मोरे कृपा करबि विधान।।

प्रतिज्ञा तोहार ऐ, यो हि शरणागत,

नाहि सो जानव परमाद।

सो हाम दुष्कृति, गति ना हेरइ आन,

आव् मागों तुया परसाद।।

आन मनोरथ, निःशेष छोड़त,

कब् हाम हउबुँ तोहारा।

नित्य सेव्य तुहुँ, नित्य – सेवक मुईं,

भकतिविनोद भाव सारा।।

(17)

अवश्य रक्षिवे कृष्ण—एइरूप विश्वास (वाचिक एवं कायिक)

एखन बुझिनु प्रभु! तोमार चरण।

अशोकाभयामृत पूर्ण सर्वक्षण।।

सकल छाड़िया तुया चरणकमले।

पड़ियाछि आमि नाथ! तब पदतले।।

तब पादपद्म, नाथ! रक्षिवे आमारे।

आर रक्षाकर्त्ता नाहि ए भव – संसारे।।

आमि तव नित्यदास – जानिनु एबार।

आमार पालन – भार एखन तोमार।।

बड़ दुःख पाइयाछि स्वतन्त्र जीवने।
सब दुःख दूरे गेल ओ–पद वरणे।।
ये–पद लागिया रमा तपस्या करिला।
ये–पद पाइया शिव शिवत्व लभिला।।
ये–पद लभिया ब्रह्मा कृतार्थ हइला।
ये–पद नारदमुनि हृदये धरिला।।
सेइ से अभय पद शिरेते धरिया।
परम–आनन्दे नाचि पदगुण गाइया।।
संसार–विपद् ह'ते अवश्य उद्धार।
भकतिविनोदे, ओ–पद करिबे तोमार।।

(18)

अवश्य रक्षिवे कृष्ण—एइरूप विश्वास (मानसिक)

तुमि त' मारिबे या'रे, के ता'रे राखिते पारे,
तव इच्छा–वश त्रिभुवन।
ब्रह्मा–आदि देवगण, तव दास अगणन,
करे तव आज्ञार पालन।।
तव इच्छामते यत, ग्रहगण अविरत,
शुभाशुभ फल करे दान।
रोग–शोक–मृति–भय, तव इच्छामते हय,
तव आज्ञा सदा बलवान्।।
तव भये वायु वय, चन्द्र–सूर्य समुदय,
स्व–स्व नियमित कार्य करे।
तुमि त' परमेश्वर, परब्रह्म परात्पर,

तव वास भकत – अन्तरे।।

सदा – शुद्ध सिद्धकाम, 'भकतवत्सल' – नाम,

भकत – जनेर नित्यस्वामी।

तुमि त' राखिवे या'रे, के ता'रे मारिते पारे,

सकल विधिर विधि तुमि।।

तोमार चरणे नाथ! करियाछि प्रणिपात,

भकतिविनोद तव दास।

विपद् हइते स्वामी! अवश्य ताहारे तुमि,

रक्षिवे—ताहार ए विश्वास।।

(19)

अनुकूल ग्रहण (कायिक)

तुया भक्ति – अनुकूल ये – ये कार्य हय।
परम – यतने ताहा करिव निश्चय।।
भक्ति – अनुकूल यत विषय संसारे।
करिव ताहाते रति इन्द्रियेर द्वारे।।
शुनिव तोमार कथा यतन करिया।
देखिव तोमार धाम नयन भरिया।।
तोमार प्रसादे देह करिव पोषण।
नैवेद्य – तुलसी – घ्राण करिव ग्रहण।।
कर – द्वारे करिव तोमार सेवा सदा।
तोमार वसति – स्थले वसिव सर्वदा।।
तोमार सेवाय काम नियोग करिव।
तोमार विद्वेषि – जने क्रोध देखाइव।।
एइरूपे सर्ववृत्ति आर सर्वभाव।

तुया अनुकूल ह'ये लभुक प्रभाव।।
तुया भक्त–अनुकूल याहा याहा करि।
तुया भक्ति–अनुकूल बलि' ताहा धरि।।
भकतिविनोद नाहि जाने धर्माधर्म।
भक्ति–अनुकूल ता'र हउ सब कर्म।।

(20)

अनुकूल ग्रहण—वाचिक और मानसिक

शुद्धभकत–, चरण–रेणु, भजन–अनुकूल।
भकत–सेवा, परम–सिद्धि, प्रेम–लतिकार मूल।।
माधव–तिथि, भक्ति–जननी, यतने पालन करि।
कृष्णवसति, वसति बलि', परम–आदरे वरि।।
गौर आमार, ये–सब स्थाने, करल भ्रमण रंगे।
से–सब स्थान, हेरिब आमि, प्रणयि–भकत–संगे।।
मृदंग–वाद्य, शुनिते मन, अवसर सदा याचे।
गौर–विहित, कीर्त्तन शुनि', आनन्दे हृदय नाचे।।
युगलमूर्त्ति, देखिया मोर, परम–आनन्द हय।
प्रसाद–सेवा, करिते हय, सकल प्रपन्च जय।।
ये–दिन गृहे, भजन देखि, गृहेते गोलोक भाय।
चरण–सीधु, देखिया गंगा, सुख ना सीमा पाय।।
तुलसी देखि', जुड़ाय प्राण, माधवतोषणी जानि'।।
गौर–प्रिय, शाक–सेवने, जीवन सार्थक मानि।।
भकतिविनोद, कृष्णभजने, अनुकूल पाय याहा।
प्रतिदिवसे, परम–सुखे, स्वीकार करये ताहा।।

(21)
प्रतिकूल वर्जन (वाचिक)

केशव! तुया जगत विचित्र।
करम – विपाके, भव – वन भ्रमइ,
पेखलुँ रंग वहु चित्र।।
तुया पद – विस्मृति, आ – मर यन्त्रणा,
क्लेश – दहने दहि' याइ।
कपिल – पतन्जलि, गौतम – कणभोजी,
जैमिनि – बौद्ध आओये धाइ'।।
तव् कोइ निज – मते, भुक्ति – मुक्ति याचत,
पातइ नानाविध फाँद।
सो – सबु—वन्चक, तुया भक्ति – बहिर्मुख,
घटाओये विषम परमाद।
वैमुख – वन्चने, भट सो – सवु,
निरमिल विविध पसार।
दण्डवत् दूरत, **भकतिविनोद** भेल,
भकतचरण करि' सार।।

(22)
प्रतिकूल वर्जन (कायिक)

तुया भक्ति – प्रतिकूल धर्म या'ते रय।
परम यतने ताहा त्यजिव निश्चय।।
तुया भक्ति – बहिर्मुख संग ना करिव।
गौरांग – विरोधि – जन – मुख ना हेरिव।।
भक्ति – प्रतिकूल स्थाने ना करि वसति।

भक्तिर अप्रिय कार्ये नाहि करि रति।।
भक्तिर विरोधी ग्रन्थ पाठ ना करिब।
भक्तिर विरोधी व्याख्या कभु ना शुनिव।।
गौरांगवर्जित स्थान तीर्थ नाहि मानि।
भक्तिर बाधक ज्ञान–कर्म तुच्छ जानि।।
भक्तिर बाधक काले ना करि आदर।
भक्ति–बहिर्मुख निज–जने जानि पर।।
भक्तिर बाधिका स्पृहा करिब वर्जन।
अभक्त–प्रदत्त अन्न ना करि ग्रहण।।
याहा किछु भक्ति–प्रतिकूल बलि' जानि।
त्यजिव यतने ताहा, ए निश्चय वाणी।।
भकतिविनोद पड़ि' प्रभुर चरणे।
मागये शकति प्रातिकूल्येर वर्जने।।

(23)

प्रतिकूल वर्जन (मानसिक)

विषयविमूढ़ आर मायावादी जन।
भक्तिशून्य दुँहे प्राण धरे अकारण।।
एइ दुइ–संग नाथ! ना हय आमार।
प्रार्थना करिये आमि चरणे तोमार।।
से दु'येर मध्ये विषयी तवु भाल।
मायावादि–संग नाहि मागि कोन काल।।
विषयि–हृदय यवे साधुसंग पाय।
अनायासे लभे भक्ति भक्तेर कृपाय।।
मायावाद–दोष या'र हृदये पशिल।

कुतर्के हृदय ता'र वज्रसम भेल।।
भक्तिर स्वरूप, आर 'विषय', 'आश्रय'।
मायावादी 'अनित्य' बलिया सब कय।।
धिक् ता'र कृष्ण – सेवा श्रवण – कीर्त्तन।
कृष्ण – अंगे वज्र हाने ताहार स्तवन।।
मायावाद – सम भक्ति – प्रतिकूल नाइ।
अतएव मायावादि – संग नाहि चाइ।।
भकतिविनोद मायावाद दूर करि'।
वैष्णव – संगेते वैसे नामाश्रय धरि'।।

(24)

सिद्धदेह में—गोप्तृत्वे वरण

छोड़त पुरुष – अभिमान।
किंकरी हइलुँ आजि, कान!!
वरज – विपिने सखीसाथ।
सेवन करबुँ, राधानाथ!!
कुसुमे गाँथबुँ हार।
तुलसी – मणिमन्जरी तार।।
यतने देओबुँ सखी – करे।
हाते लओब सखी आदरे।।
सखी दिव तुया दुँहुक गले।
दूरत हेरबुँ कुतूहले।।
सखी कहब, — "शुन, सुन्दरि!
रहबि कुंजे मम किंकरी।।
गाँथबि माला मनोहारिणी।

निति राधाकृष्ण–विमोहिनी।।
तुया रक्षण–भार हामारा।
मम कुँजकुटीर तोहारा।।
राधामाधव – सेवनकाले।
रहबि हामार अन्तराले।।
ताम्बूल साजि' कर्पूर आनि'।
देओबि मोए आपन जानि'।।''
भकतिविनोद शुनि' बात्।
सखीपदे करे प्रणिपात।।

(25)

सिद्धदेह में—आत्मनिवेदन

आत्मसमर्पणे गेला अभिमान।
नाहि करबुँ निज रक्षा–विधान।।
तुया धन जानि' तुहँ राखबि, नाथ।
पाल्य गोधन ज्ञान करि' तुया साथ।।
चराओबि माधव! यामुनतीरे।
वंशी बाजाओत डाकबि धीरे।।
अघ–बक मारत' रक्षा–विधान।
करबि सदा तुहुँ गोकुल–कान!!
रक्षा करबि तुहुँ निश्चय जानि'।
पान करबुँ हाम यामुनपानि।।
'कालिय–दोख' करबि विनाशा।
शोधबि नदीजल, बाड़ाओबि आशा।।

पियत दावानल राखवि मोय।
'गोपाल', 'गोविन्द' नाम तव होय।।
सुरपति – दुर्मति – नाश विचारि'।
राखवि वर्षणे, गिरिवरधारि!!
चतुरानन करब यव् चोरि।
रक्षा करबि मुझे, गोकुल – हरि!!
भकतिविनोद—तुया गोकुल – धन।
राखबि केशव! करत यतन।।

(26)
सिद्धदेह में—अनुकूल

गोद्रुमधामे भजन – अनुकूले।
माथुर – श्रीनन्दीश्वर समतुले।।
तँहि माह सुरभि – कुन्ज कुटीरे।
बैठबुँ हाम सुरतटिनी – तीरे।।
गौरभकत – प्रियवेश – दधाना।
तिलक – तुलसीमाला – शोभमाना।।
चम्पक, बकुल, कदम्ब, तमाल।
रोपत निरमिव कुन्ज विशाल।।
माधवी, मालती उठावुँ ताहे।
छाया – मण्डप करबुँ तँहि माहे।।
रोपवुँ तत्र कुसुमवनराजि।
यूथि, जाति, मल्ली विराजव साजि'।।
मन्चे वसाओबु तुलसी महाराणी।
कीर्त्तन – सज्ज तँहि राखब आनि'।।

वैष्णवजन – सह गाओबुँ नाम।
जय गोद्रुम जय गौर कि धाम।।
भकतिविनोद भक्ति – अनुकूल।
जय कुन्ज, मुन्ज, सुरनदीकूल।।

(27)

सिद्धदेह में—प्रतिकूल
(त्रास एवं दुःखात्मक)

आमि त स्वानन्द – सुखदवासी।
राधिकामाधव – चरणदासी।।
दुँहार मिलने आनन्द करि।
दुँहार वियोगे दुःखेते मरि।।
सखीस्थली नाहि हेरि नयने।
देखिले शैव्याके पड़ये मने।।
ये – ये प्रतिकूल चन्द्रार सखी।
प्राणे दुःख पाइ ताहारे देखि'।।
राधिका – कुन्ज आँधार करि'।
लइते चाहे से राधार हरि।।
श्रीराधागोविन्द – मिलन – सुख।
प्रतिकूलजन ना हेरि मुख।।
राधा – प्रतिकूल यतेक जन।
सम्भाषणे कभु ना हय मन।।
भकतिविनोद श्रीराधाचरणे।
सँपेछे पराण अतीव यतने।।

(28)

सिद्धदेह में—कृष्णभजन का उद्दीपन

राधाकुण्डतट - कुंजकुटीर।
गोवर्धन-पर्वत, यामुनतीर।।
कुसुमसरोवर, मानसगंगा।
कलिन्द-नन्दिनी विपुलतरंगा।।
वंशीवट, गोकुल, धीरसमीर।
वृन्दावन-तरु-लतिका-वानीर।।
खग-मृगकुल, मलय-वातास।
मयूर, भ्रमर, मुरली, विलास।।
वेणु, श्रृंग, पदचिन्ह, मेघमाला।
वसन्त, शशान्क, शंख, करताला।।
युगलविलासे अनुकूल जानि।
लीला-विलास-उद्दीपक मानि।।
ए सब छोड़त कँहि नाहि याँउ।
ए सब छोड़त पराण हाराँउ।।
भकतिविनोद कहे, शुन कान!
तुया उद्दीपक हामारा पराण।।

श्रेयोनिर्णय

(क)

कृष्णभक्ति बिना कभु नाहि फलोदय।
मिछे सब धर्माधर्म जीवेर उपाधिमय।।
योग-याग-तपोध्यान, संन्यासादि ब्रह्मज्ञान।
नाना काण्डरूपे जीवेर बन्धन-कारण हय।।

विनोदेर वाक्य धर, नाना काण्ड त्याग कर।
निरुपाधि कृष्णप्रेम हृदये देह आश्रय।।

(ख)

आर केन मायाजाले पड़ितेछ, जीव मीन।
नाहि जान बद्ध ह'ये र'बे तुमि चिरदिन।।
अति तुच्छ भोग–आशे, बन्दी ह'ये माया–पाशे।
रहिले विकृतभावे दण्ड्य यथा पराधीन।।
एखन भकतिबले, कृष्णप्रेमसिन्धु–जले।
क्रीड़ा करि अनायासे थाक तुमि कृष्णाधीन।।

(ग)

पीरिति सच्चिदानन्दे रूपवती नारी।
दयाधर्म–आदि गुण अलंकार सब ताहारि।।
ज्ञान—ता'र पट्टशाटी, योग—गन्ध–परिपाटी।
ए सवे शोभिता सती करे कृष्णमन चुरि।।
रूप बिना अलंकारे, किवा शोभा ए–संसारे।
पीरिति–विहीन गुणे, कृष्ण ना तुषिते पारि।।
वानरीर अलंकार, शोभा नाहि हय ता'र।
कृष्णप्रेम बिना तथा गुणे ना आदर करि।।

(घ)

'निराकार निराकार' करिया चीत्कार।
केन साधकेर शान्ति भांग, भाइ, बार बार।।

तुमि या' बुझेछ भाल, ताइ ल'ये काट काल।
भक्ति बिना फलोदय, तर्के नाहि जान सार।।
सामान्य तर्केर बले, भक्ति नाहि आस्वादिले।
जनम हइल वृथा, ना करिले सुविचार।।
रूपाश्रये कृष्ण भजि', यदि हरिप्रेमे मजि।
ता' ह'ले अलभ्य, भाइ, कि रहिवे बल आर।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

यामुन–भावावली
(शान्त–दास्य–भक्तिसाधन–लालसा)

(1)

यन्मूर्ध्नि मे श्रुतिशिरःसु च भाति यस्मि–
न्नस्मन्मनोरथपथः सकलः समेति।
स्तोष्यामि नः कुलधनं कुलदैवतं तत्
पादारविन्दमरविन्द–विलोचनस्य।।1।।

हरि हे!
ओहे प्रभु दयामय, तोमार चरणद्वय,
श्रुति–शिरोपरि शोभा पाय।
गुरुजन–शिरे पुनः, शोभा पाय शत गुण,
देखि' आमार पराण जुड़ाय।।
जीव–मनोरथ–पथ, ताँहि सब अनुगत,
जीव–वाञ्छाकल्पतरु यथा।
जीवेर से कुलधन, अति पूज्य सनातन,
जीवेर चरमगति तथा।।

कमलाक्ष – पदद्वय, परम – आनन्दमय,
निष्कपटे सेविया सतत।
ए भक्तिविनोद चाय, सतत तुषिते ताय,
भक्तजनेर ह'ये अनुगत।।

(2)

नावेक्षसे यदि ततो भुवनान्यमुनि
नालं प्रभो भवितुमेव कुतः प्रवृत्तिः।
एवं निसर्ग – सुहृदि त्वयि सर्वजन्तोः
स्वामिन् न चित्रमिदमाश्रित – वत्सलत्वम्।।2।।

हरि हे!
तोमार ईक्षणे हय, सकल उत्पत्ति लय,
चतुर्द्दश भुवनेते यत।
जड़ जीव आदि करि', तोमार कृपाय हरि,
लभे जन्म, आर क'व कत।।
ताहादेर वृत्ति यत, तोमार ईक्षणे स्वतः,
जन्मे, प्रभु तुमि सर्वेश्वर।
सकल जन्तुर तुमि, स्वाभाविक नित्यस्वामी,
सुहृन्मित्र—प्राणेर ईश्वर।।
ए भक्तिविनोद कय, शुन, प्रभु दयामय,
भक्तप्रति वात्सल्य तोमार।
नैसर्गिक धर्म हय, औपाधिक कभु नय,
दासे दया हइया उदार।।

(3)

त्वां शीलरूपचरितैः परमप्रकृष्ट –
सत्त्वेन सात्त्विकतया प्रबलैश्च शास्त्रैः।
प्रख्यात – दैवपरमार्थविदां मतैश्च
नैवासुर – प्रकृतयः प्रभवन्ति बोद्धुम्॥3॥

हरि हे!
परतत्त्व विचक्षण, व्यास – आदि मुनिगण,
शास्त्र विचारिया बार बार।
प्रभु, तव नित्यरूप, गुणशील अनुरूप,
तोमार चरित्र सुधासार॥
शुद्धसत्त्वमयी लीला, मुख्यशास्त्रे प्रकाशिला,
जीवेर कुशल सुविधाने।
रजस्तमोगुण – अन्ध, असुर – प्रकृति मन्द,
जने ताहा बुझिते ना जाने॥
नाहि माने नित्यरूप, भजिया मण्डबन्धकूप,
रहे ताहे उदासीनप्राय।
ए भक्तिविनोद गाय, कि दुर्दैव हाय हाय,
हरिदास हरि नाहि पाय॥

(4)

उल्लंघित – त्रिविधसीम – समातिशायि –
सम्भावनं तव परिव्रढ़िम – स्वभावम्।
मायाबलेन भवताऽपि निगुह्यमानं
पश्यन्ति केचिदनिशं त्वदनन्यभावाः॥4॥

हरि हे!

जगतेर वस्तु यत, बद्ध सब स्वभावत:,
देश-काल-वस्तु-सीमाश्रये।
तुमि प्रभु सर्वेश्वर, नह सीमा-विधिपर,
विधि सब काँपे तव भये।।
सम वा अधिक तव, स्वभावत: असम्भव,
विधि लंघि' तव अवस्थान।
स्वतन्त्र-स्वभाव धर, आपने गोपन कर,
मायाबले करि' अधिष्ठान।।
तथापि अनन्य-भक्त, तोमारे देखिते शक्त,
सदा देखे स्वरूप तोमार।
ए भक्तिविनोद दीन, अनन्यभजन-हीन,
भक्त-पद-रेणु मात्र सार।।

(5)

वशी वदान्यो गुणवानृजुः
शुचिर्मृदुर्दयालुर्मधुरः स्थिरः समः।
कृती कृतज्ञस्त्वमसि स्वभावतः
समस्तकल्याण-गुणामृतोदधिः।।5।।

हरि हे!

तुमि सर्वगुणयुत, शक्ति तव वशीभूत,
वदान्य, सरल, शुचि, धीर।
दयालु, मधुर, सम, कृती, स्थिर, सर्वोत्तम,
कृतज्ञ-लक्षणे पुन: वीर।।

समस्त कल्याण – गुण – , गणामृत – सम्भावन,
समुद्र – स्वरूप भगवान्।
बिन्दु बिन्दु गुण तव, सर्वजीव – सुवैभव,
तुमि पूर्ण सर्वशक्तिमान्।।
ए **भक्तिविनोद** छार, कृताञ्जलि बार बार,
करे चित्तकथा विज्ञापन।
तव दासगण – संगे, तव लीलाकथा – रंगे,
याय येन आमार जीवन।।

(6)

तदाश्रितानां जगदुद्भव – स्थिति –
प्रणाश – संसार – विमोचनादयः।
भवन्ति लीला विधयश्च वैदिकास्त्वदीय –
गंभीर – मनोऽनुसारिणः।।6।।

हरि हे!
तोमार गम्भीर मन, नाहि बुझे अन्य जन,
सेइ मन – अनुसारि' सब।
जगत् – उद्भव – स्थिति – प्रलय – संसारगति,
मुक्ति – आदि शक्तिर वैभव।।
ए सब वैदिक लीला, इच्छामात्र प्रकाशिला,
जीवेर वासना – अनुसारे।
तोमाते विमुख ह' ये, मजिल अविद्या ल' ये,
सेइ जीव कर्म – पारावारे।।

पुनः यदि भक्ति करि', भजे भक्तसंग धरि',
तवे पाय तोमार चरण।
अन्तरंग–लीलारसे, भासे, माया ना परशे,
भक्तिविनोदेर फिरे मन।।

(7)

नमो नमो वाङ्मनसातिभूमये
नमो नमो वाङ्मनसैकभूमये।
नमो नमोऽनन्तमहाविभूतये
नमो नमोऽनन्तदयैकसिन्धवे।।7।।

हरि हे!
मायाबद्ध यतक्षण, थाके त' जीवेर मन,
जड़माझे करे विचरण।
परव्योम ज्ञानमय, ताहे तब स्थिति हय,
मन नाहि पाय दरशन।।
भक्तिकृपा–खड्गाघाते, जड़बन्ध छेद ता'ते,
याय मन प्रकृतिर पार।
तोमार सुन्दर रूप, हेरे' तब अपरूप,
जड़वस्तु करये धिक्कार।।
अनन्त विभूति याँ'र, यिनि दया–पारावार,
सेइ प्रभु जीवेर ईश्वर।
ए **भक्तिविनोद** हीन, सदा शुद्धभक्तिहीन,
शुद्धभक्ति मागे निरन्तर।।

(8)

न धर्मनिष्ठोऽस्मि न चात्मवेदी
न भक्तिमांस्त्वच्चरणारविन्दे।
अकिंचनोऽनन्यगतिः शरण्य!
त्वत्पादमूलं शरणं प्रपद्ये।।8।।

हरि हे!

धर्मनिष्ठा नाहि मोर, आत्मबोध वा सुन्दर,
भक्ति नाहि तोमार चरणे।
अतएव अकिञ्चन, गतिहीन दुष्टजन,
रत सदा आपन वञ्चने।।
पतितपावन तुमि, पतित अधम आमि,
तुमि मोर एकमात्र गति।
तव पादमूले पैनु, तोमार शरण लैनु,
आमि दास, तुमि मोर पति।।
ए **भक्तिविनोद** काँदे, हृदे धैर्य नाहि बाँधे,
भूमे पड़ि' बले अतःपर।
अहैतुकी कृपा करि', एइ दुष्टजने हरि,
देह पद – छाया निरन्तर।।

(9)

न निन्दितं कर्म तदस्ति लोके
सहस्रशो यन्न मया व्यधायि।
सोऽहं विपाकावसरे मुकुन्द!
क्रन्दामि सम्प्रत्यगतिस्तवाग्रे।।9।।

हरि हे!

हेन दुष्ट कर्म नाइ, याहा आमि करि नाइ,
सहस्र सहस्रवार हरि।
सेइ सब कर्मफल, पेये अवसर–बल,
आमाय पिशिछे यन्त्रोपरि।।
गति नाहि देखि' आर, काँदि हरि अनिवार,
तोमार अग्रेते एवे आमि।
या तोमार हय मने, दण्ड देओ अकिञ्चने,
तुमि मोर दण्डधर स्वामी।।
क्लेश–भोग भाग्ये यत, भोग मोर हउ तत,
किन्तु एक मम निवेदन।
ये ये दशा भोगि आमि, आमाके ना छाड़ स्वामि!
भक्तिविनोदेर प्राणधन।।

(10)

निमज्जन्तोऽनन्त–भवार्णवान्त–
श्चिराय मे कूलमिवासि लब्धः।
त्वयापि लब्धं भगवन्निदानी–
मनुत्तमं पात्रमिदं दयायाः।।10।।

हरि हे!

निजकर्म–दोष–फले, पड़ि' भवार्णव–जले,
हावुडुवु खाइ कतकाल।
साँतारि' साँतारि' याइ, सिन्धु–अन्त नाहि पाइ,
भवसिन्धु अनन्त विशाल।।

निमग्न हइनु यवे, डाकिनु कातर रवे,
केह मोरे करह उद्धार।
सेइकाले आइले तुमि, तोमा जानि' कूलभूमि,
आशाबीज हइल आमार।।
तुमि हरि दयामय, पाइले मोरे सुनिश्चय,
सर्वोत्तम दयार विषय।
तोमाके ना छाड़ि आर, ए **भक्तिविनोद** छार,
दयापात्र पाइले दयामय।।

(11)

निरासकस्यापि न तावदुत्सहे
महेश हातुं तव पादपंकजम्।
रुषा निरस्तोऽपि शिशुः स्तनन्धयो
न जातु मातुश्चरणौ जिहासति।।11।।

हरि हे!
अन्य आशा नाहि या'र, तव पादपद्म ता'र,
छाड़िवार योग्य नाहि हय।
तब पदाश्रये नाथ, करे सेइ दिनपात,
तब पदे ताहार अभय।।
स्तन्यपायी शिशुजने, माता छाड़े क्रोधमने,
शिशु तबु नाहि छाड़े माय।
येहेतु ताहार आर, ए जीवन धरिवार,
माता बिना नाहिक उपाय।।

ए भक्तिविनोद कय, तुमि छाड़ दयामय,
देखिया आमार दोषगण।
आमि त' छाड़िते नारि, तोमा बिना नाहि पारि,
कखन धरिते ए जीवन।।

(12)

तवामृतस्यन्दिनि पादपंकजे
निवेदितात्मा कथमन्यदिच्छति।
स्थितेऽरविन्दे मकरन्दनिर्भरे
मधुव्रतो नेक्षुरकं हि वीक्षते।।12।।

हरि हे,
तव पद – पंकजिनी, जीवामृत – सञ्चारिणी,
अतिभाग्ये जीव ताहा पाय ।
से – अमृत पान करि', मुग्ध हय ताहे हरि,
आर ताहा छाड़िते ना चाय।।
निविष्ट हइया ताय, अन्य स्थाने नाहि याय,
अन्य रस तुच्छ करि' माने।
मधुपूर्ण पद्मस्थित, मधुव्रत कदाचित,
नाहि चाय इक्षुदण्ड – पाने।।
ए भक्तिविनोद कबे, से – पंकजस्थित ह'वे,
नाहि या'वे संसाराभिमुखे।
भक्तकृपा, भक्तिबल, एइ दुइटी सुसम्बल,
पाइले से – स्थिति घटे सुखे।।

(13)

त्वदंघ्रिमुद्दिश्य कदापि केनचिद्
यथा तथा वापि सकृत् कृतोऽंजलिः।
तदैव मुष्णात्यशुभान्यशेषतः
शुभानि पुष्णाति न जातु हीयते।।13।।

हरि हे!
भ्रमिते संसार – वने, कभु दैव – संघटने,
कोनमते कोन भाग्यवान्।
तव पद उद्देशिया, थाके कृताञ्जलि हञा,
एकबार ओहे भगवान्।।
सेइक्षणे ता'र यत, अमंगल हय हत,
सुमंगल हय पुष्ट अति।
आर नाहि क्षय हय, क्रमे ता'र शुभोदय,
ता'रे देय सर्वोत्तम – गति।।
एमन दयालु तुमि, एमन दुर्भागा आमि,
कभु ना करिनु परणाम।
तव पादपद्म – प्रति, ना जाने ए दुष्टमति,
भक्तिविनोदेर परिणाम।।

(14)

उदीर्ण – संसार – दवाशुशुक्षणिं
क्षणेन निर्व्वाप्य परांच निर्वृतिम्।
प्रयच्छति त्वच्चरणारुणाम्बुज –
द्वयानुरागामृत – सिन्धुशीकरः।।14।।

हरि हे!

तोमार चरणपद्म, अनुराग–सुधासद्म–,
सागरशीकर यदि पाय।
कोन भाग्यवान् जने, कोन कार्य–संघटने,
ता'र सब दुःख दूरे याय।।
से–सुधा–समुद्रकण, संसाराग्नि–निर्वापण,
क्षनेके करिया फेले ता'र।
परम–निर्वृति दिया, तोमार चरणे लञा,
देय तवे आनन्द अपार।।
ए **भक्तिविनोद** काँदे, पड़िया संसार–फाँदे,
वले, नाहि कोन भाग्य मोर।
ए घटना ना घटिल, आमार जनम गेल,
वृथा रैनु ह'ये आत्मभोर।।

(15)

विलास–विक्रान्त–परावरालयं
नमस्यदार्त्ति–क्षपणे कृतक्षणम्।
धनं मदीयं तव पादपंकजं
कदा नु साक्षात्करवाणि चक्षुषा।।15।।

हरि हे!

तवांघ्रि–कमलद्वय, विलास–विक्रममय,
परावर जगत् व्यापिया।
सर्वक्षण वर्तमान, भक्तक्लेश–अवसान,

लागि' सदा प्रस्तुत हइया।।

जगतेर सेइ धन, आमि जगमध्य जन,

अतएव सम अधिकार।

आमि किवा भाग्यहीन, साधने वञ्चित दीन,

कि काज जीवने आर छार।।

कृपा विना नाहि गति, ए **भक्तिविनोद** अति,

दैन्य करि' बले प्रभु – पाय।

कबे तव कृपा पे'ये, उठिब सबले धे'ये,

हेरिब से पदयुग हाय।।

(16)

भवन्तमेवानुचरन्निरन्तर

प्रशान्त – निःशेष – मनोरथान्तरः।

कदाहमैकान्तिक नित्यकिंकरः

प्रहर्षयिष्यामि स नाथ जीवितम्।।16।।

हरि हे,

आमि सेइ दुष्टमति, ना देखिया अन्य गति,

तब पदे ल'येछि शरण।

जानिलाम आमि नाथ, तुमि प्रभु जगन्नाथ,

आमि तव नित्य परिजन।।

सेइदिन कबे ह'बे, एकान्तिकभावे यबे,

नित्यदास – भाव ल'ये आमि।

मनोरथान्तर यत, निःशेष करिया स्वतः,

सेविव आमार नित्यस्वामी।।

निरन्तर सेवा–मति, वहिवे चित्तेते सती,
प्रशान्त हइबे आत्मा मोर।
ए भक्तिविनोद बले, कृष्णसेवा–कुतूहले,
चिरदिन थाकि येन भोर।।

(17)

अपराधसहस्रभाजनं पतितं भीमभवार्णवोदरे।
अगतिं शरणागतं हरे कृपया केवलमात्मसात् कुरु।।17।।

हरि हे,
आमि अपराधि–जन, सदा दण्डय, दुर्लक्षण,
सहस्र सहस्र दोषे दोषी।
भीम भवार्णवोदरे, पतित विषम घोरे,
गतिहीन गति–अभिलाषी।।
हरि! तब पादद्वये, शरण लइनु भये,
कृपा करि' कर आत्मसाथ।
तोमार प्रतिज्ञा एइ, शरण लइवे येइ,
तुमि ता'र रक्षाकर्ता नाथ।।
प्रतिज्ञाते करि' भर, ओ माधव प्राणेश्वर!
शरण लइल एइ दास।
ए भक्तिविनोद गाय, तोमार से रांगापाय,
देह दासे सेवाय विलास।।

(18)

अविवेक – घनान्ध – दिङ्मुखे बहुधा सन्तत – दुःखवर्षिणि।
भगवन् भव दुर्द्दिने पथः स्खलितं मामवलोकयाच्युत।।18।।

हरि हे!

अविवेकरूप घन, ताहे दिक् आच्छादन,
हैल ता'ते अन्धकार घोर।
ताहे दुःख – वृष्टि हय, देखि' चारिदिके भय,
पथभ्रम हइयाछे मोर।।
निज अविवेक – दोषे, पड़ि दुर्द्दिनेर रोषे,
प्राण याय संसार – कान्तारे।
पथप्रदर्शक नाइ, ए दुर्द्दैवे मारा याइ,
डाकि ताइ, अच्युत, तोमारे।।
एकबार कृपादृष्टि, कर आमा – प्रति वृष्टि,
तबे मोर घुचिवे दुर्द्दिन।
विवेक सबल ह'बे, ए भक्तिविनोदे तवे,
देखाइवे पथ समीचीन।।

(19)

न मृषा परमार्थमेव मे श्रृणु विज्ञापनमेकमग्रतः।
यदि मे न दयिष्यसे ततो दयनीयस्तव नाथ दुर्लभः।।19।।

हरि हे!

अग्रे एक निवेदन, करि मधु – निसूदन,
शुन कृपा करिया आमाय।

निरर्थक कथा नय, निगूढ़ार्थमय हय,
हृदय हइते वाहिराय।।

अति अपकृष्ट आमि, परम दयालु तुमि,
तव दया मोर अधिकार।

ये यत पतित हय, तब दया तत ताय,
ता'ते आमि सुपात्र दयार।।

मोरे यदि उपेक्षिवे, दया – पात्र कोथा पा'वे,
'दयामय' – नामटी घुचा'वे।

ए **भक्तिविनोद** कय, दया कर दयामय,
यशःकीर्त्ति चिरदिन पा'वे।।

(20)

तदहं त्वदृते न नाथवान् मदृते त्वं दयनीयवान्न च।
विधिनिर्मितमेतदन्वयं भगवन् पालय मास्म जीहय।।20।।

हरि हे!

तोमा छाड़ि' आमि कभु, सनाथ ना हइ प्रभु,
प्रभुहीन दास निराश्रय।

आमाके ना निले साथ, कैछे तुमि ह'वे नाथ,
दयनीय के तोमार हय।।

आमादेर ए सम्बन्ध, विधिकृत सुनिर्बन्ध,
सविधि तोमार गुणधाम।

अतएव निवेदन, शुण हे मधुमथन,
छाड़ा – छाड़ि नहे कोन काम।।

ए **भक्तिविनोद** गाय, राख मोरे तब पाय,

पाल' मोरे ना छाड़ कखन।

यवे मम पाओ दोष, करिया उचित रोष,

दण्ड दिया देओ श्रीचरण।।

(21)

वपुरादिषु षोऽपि कोऽपि वा गुणतोऽसानि यथातथाविधः।
तदयं तव पादपद्मयोरहमद्यैव मया समर्पितः।।21।।

हरि हे!

स्त्री–पुरुष–देहगत, वर्ण–आदि धर्म यत,

ताहे पुनः देहगत भेद।

सत्वरजस्तमोगुण, आश्रयेते भेद पुनः,

एइरूप सहस्र प्रभेद।।

ये–कोन शरीरे थाकि, ये–कोन अवस्था राखि,

से–सब एखन तब पा–य।

सँपिलाम, प्राणेश्वर! मम बलि' अतःपर,

आर किछु ना रहिल दाय।।

तुमि, प्रभु! राख मार, सब तव अधिकार,

आछि आमि तोमार किंकर।

ए **भक्तिविनोद** बले, तव दास्य कौतूहले,

थाकि येन सदा सेवापर।।

(22)

तव दास्यसुखैकसंगिनां भवनेष्वस्त्वपि कीटजन्म मे।
इतरावसथेषु मास्म भूदपि मे जन्म चतुर्मुखात्मना।।22।।

हरि हे!

वेदविधि-अनुसारे, कर्म करि' ए संसारे,
पुनः पुनः जीव जन्म पाय।
पूर्वकृत-कर्मफले, तोमार वा इच्छाबले,
जन्म यदि लभि पुनराय।।
तबे एक कथा मम, शुन हे पुरुषोत्तम,
तब दास-संगिजन-घरे।
कीट-जन्म यदि हय, ताहातेओ दयामय,
रहिव हे सन्तुष्ट-अन्तरे।।
तब दास-संगहीन, ये-गृहस्थ अर्वाचीन,
ता'र गृहे चतुर्मुख-भूति।
ना हउ कखन, हरि! करद्वय योड़ करि',
करे **भक्तिविनोद** मिनति।।

(23)

सकृत्त्वदाकार-विलोकनाशया
तृणीकृतानुत्तम-भुक्तिमुक्तिभिः।
महात्मभिर्मामवलोक्यतां नय
क्षणोऽपि ते यद्विरहोऽतिदुःसहः।।23।।

हरि हे!

तोमार ये शुद्धभक्त, तोमाते से अनुरक्त,
भुक्ति-मुक्ति तुच्छ करि' जाने।
बारेक देखिते तब, चिदाकार-श्रीवैभव,
तृण बलि' अन्य सुख माने।।

से सब भक्तेर संगे, लीला कर नानारंगे,
विरह सहिते नाहि पार।
कृपा करि' अकिञ्चने, देखाओ महात्मगणे,
साधु विना गति नाहि आर।।
से–भक्तचरण–धन, कवे पा'व दरशन,
शोधिव आमार दुष्ट मन।
ए **भक्तिविनोद** भणे, कृपा ह'वे यतक्षणे,
महात्मार ह'वे दरशन।।

(24)

न देहं न प्राणान्न च सुखमशेषाभिलषितं
न चात्मानं नान्यत्तव किमपि शेषत्वविभवात्।
बर्हिभूतं नाथ क्षणमपि सहे यातु शतधा
विनाशं तत् सत्यं मधुमथन विज्ञापनमिदम्।।24।।

हरि हे!
शुन हे मधुमथन! मम एक विज्ञापन,
विशेष करिया बलि आमि।
तोमार शेषत्व मम, स्वकीय वैभवोत्तम,
आमि दास, तुमि मोर स्वामी।।
से–विभव–बहिर्भूत, हैते हैले, हे अच्युत,
क्षणमात्र सहिते ना पारि।
देह–प्राण–सुख आशा, आत्मप्रति भालवासा,
सर्वत्याग करिते विचारि।।

ए सब याउक नाश, शतवार श्रीनिवास,
तवु थाकु दासत्व तोमार।
ए **भक्तिविनोद** कय, कृष्णदास जीव हय,
दास्य बिना किवा आछे आर।।

(25)

दुरन्तस्यानादेरपरिहरणीयस्य महतो
विहीनाचारोऽहं नृपशुरशुभस्यास्पदमपि।
दयासिन्धो बन्धो निरवधिक–वात्सल्य–जलधे–
स्तव स्मारं स्मारं गुणगणमितीच्छामि गतभीः।।25।।

हरि हे!
आमि नरपशुप्राय, आचारविहीन ताय,
अनादि अनन्त सुविस्तार।
अतिकष्टे परिहार्य, सहजेते अनिवार्य,
अशुभेर आस्पद आवार।।
तुमि त' दयार सिन्धु, तुमि त' जगद्बन्धु,
असीम वात्सल्य–पयोनिधि।
तव गुणगण स्मरि', भवबन्ध छेद करि',
निर्भीक हइव निरवधि।।
एइ इच्छा करि' मने, श्रीयामुन–चरणे,
गाय **भक्तिविनोद** एखन।
यामुन–विपिन–विधु, श्रीचरणाम्बुज–सीधु,
ता'र शिरे करुन अर्पण।।

(26)

पिता त्वं माता त्वं दयित – तनयस्त्वं प्रियसुहृत्व –
मेव त्वं मित्रं गुरुरपि गतिश्चासि जगताम्।
त्वदीयस्त्वद्भृत्यस्तव परिजनस्त्वद्गतिरहं
प्रपन्नश्चैवं स त्वहमपि तवैवास्मि हि भरः ।।26।।

हरि हे!

तुमि जगतेर पिता, तुमि जगतेर माता,
दयित, तनय हरि तुमि।
तुमि सुहृन्मित्र गुरु, तुमि गति कल्पतरु,
त्वदीय सम्बन्धमात्र आमि।।
तव भृत्य, परिजन, गतिप्रार्थी, अकिञ्चन,
प्रपन्न तोमार श्रीचरणे।
तब सत्त्व, तब धन, तोमार पालित जन,
आमार ममता तब जने।।
ए भक्तिविनोद कय, अहंता – ममता नय,
श्रीकृष्णसम्बन्ध – अभिमाने।
सेवार सम्बन्ध धरि', अहंता – ममता करि',
तदितर प्राकृत विधाने।।

(27)

अमर्यादः क्षुद्रश्चलमतिरसूयाप्रसवभूः
कृतघ्नो दुर्मानी स्मरपरवशो वंचनपरः।
नृशंसः पापिष्ठः कथमहमितो दुःखजलधे –
रपारादुत्तीर्णस्तव परिचरेयं चरणयोः ।।27।।

हरि हे!

आमि त' चञ्चलमति, अमर्याद, क्षुद्र अति,
असूया–प्रसव सदा मोर।
पापिष्ठ, कृतघ्न, मानी, नृशंस, वञ्चने ज्ञानी,
कामवशे थाकि' सदा घोर।।
ए हेन दुर्जन ह'ये, ए दुःख–जलधि व'ये,
चरितेछि संसार–सागरे।
केमने ए भवाम्बुधि, पार ह'ये निरवधि,
तव पादसेवा मिले मोरे।।
तोमार करुणा पाइ, तवे त' तरिया याइ,
आमि एइ दुरन्त सागर।
तुमि प्रभु, श्रीचरणे, राख दासे धूलिसने,
नहे **भक्तिविनोद** कातर।।

अनुताप–लक्षण–उपलब्धि

(1)

आमि अति पामर दुर्जन।
कि करिनु हाय हाय, प्रकृतिर दास ताय,
काटाइनु अमूल्य जीवन।।
कतदिन गर्भावासे, काटाइनु अनायासे,
बाल्य गेल बालधर्मवशे।
ग्राम्यधर्मे ए यौवन, मिछे दिनु विसर्जन,
वृद्धकाल एल अवशेषे।।
विषये नाहिक सुख, भोगशक्ति सुवैमुख,
अन्त दन्त, शरीर अशक्त।

जीवन यन्त्रणामय, मरणेते सदा भय,
बल' किसे हइ अनुरक्त।।
भोग्यवस्तु – भोगशक्ति, ता'ते छिल अनुरक्ति,
ये – पर्यन्त छिल देहे बल।
समस्त विगत ह'ल, कि लइया थाकि बल,
एवे चित्त सदाइ चञ्चल।।
सामर्थ्य थाकिते काय, हरि ना भजिनु हाय,
आसन्न कालेते किवा करि।
धिक् मोर ए – जीवने, ना साधिनु नित्यधने,
मित्र छाड़ि' भजिलाम अरि।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(2)

साधुसंग ना हइल हाय!
गेल दिन अकारण, करि' अर्थ उपार्ज्जन,
परमार्थ रहिल कोथाय??
सुवर्ण करिया त्याग, तुच्छ लोष्ट्रे अनुराग,
दुर्भागार एइ त' लक्षण।
कृष्णेतर संग करि', साधुजने परिहरि',
मदगर्वे काटा'नु जीवन।।
भक्तिमुद्रा – दरशने, हास्य करिताम मने,
वातुलता बलिया ताहाय।
ये सभ्यता श्रेष्ठ गणि', हाराइनु चिन्तामणि,
शेषे ताहा रहिल कोथाय??
ज्ञानेर गरिमा बले, भक्तिरूप सुसम्बले,

उपेक्षिणु स्वार्थ पाशरिया।

दुष्ट जड़ाश्रित ज्ञान, एवे ह'ल अन्तर्द्धान,

कर्मभोगे आमाके राखिया।।

एवे यदि साधुजने, कृपा करि' ए दुर्जने,

देन भक्ति-समुद्रेर बिन्दु।

ता' हइले अनायासे, मुक्त ह'ये भवपाशे,

पार हइ ए संसार-सिन्धु

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(3)

ओरे मन, कर्मेर कुहरे गेल काल।

स्वर्गादि सुखेर आशे, पड़िलाम कर्म-फाँसे,

ऊर्णनाभि-सम कर्मजाल।।

उपवास-व्रत धरि', नाना कायक्लेश करि',

भस्मे घृत ढालिया अपार।

मरिलाम निज दोषे, जरा-मरणेर फाँसे,

हइवारे नारिनु उद्धार।।

वर्णाश्रम-धर्म यजि', नाना देव-देवी भजि',

मद-गर्वे काटानु जीवन।

स्थिर ना हइल मन, ना लभिनु शान्ति-धन,

ना भजिनु श्रीकृष्ण-चरण।।

धिक् मोर ए जीवने, धिक् मोर धन-जने,

धिक् मोर वर्ण-अभिमान।

धिक् मोर कुल-माने, धिक् शास्त्र-अध्ययने,

हरिभक्ति ना पाइल स्थान।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(4)

ओरे मन, कि विपद हइल आमार,
मायार दौरात्म्य – ज्वरे, विकार जीवेरे धरे,
ताहा हैते पाइते निस्तार।।
साधिनु अद्वैत – मत, याहे माया हय हत,
विष सेवि' विकार काटिल।
किन्तु ए दुर्भाग्य मोर, विकार काटिल घोर,
विषेर ज्वालाय प्राण गेल।।
'आमि ब्रह्म एकमात्र', ए ज्वालाय दहे गात्र,
इहार उपाय किवा भाइ?
विकार ये छिल भाल, औषध जंजाल ह'ल,
औषध – औषध कोथा पाइ??
मायादत्त – कुविकार, मायावाद विषभार,
ए दुइ आपद – निवारण।
हरिनामामृत – पान, साधु – वैद्य – सुविधान,
श्रीकृष्णचैतन्य – श्रीचरण।।
(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(5)

ओरे मन, क्लेश – ताप देखि ये अशेष!
'अविद्या' 'अस्मिता' आर, 'अभिनिवेश' दुर्वार,
'राग' 'द्वेष', एइ पञ्चक्लेश।।
अविद्यात्म – विस्मरण, अस्मितान्य – विभावन,
अभिनिवेशान्ये गाढ़मति।
अन्ये प्रीति रागान्धता, विद्वेषात्माविशुद्धिता,
पञ्चक्लेश सदाइ दुर्गति।।

भुलिया बैकुण्ठतत्त्व, माया-भोगे सुप्रमत्त,
'आमि' 'आमि' करिया वेड़ाइ।
'ए आमार से आमार', ए भावना अनिवार,
व्यस्त करे मोर चित्त भाइ।।
ए रोग-शमनोपाय, अन्वेषिया हाय हाय,
मिले वैद्य सद्य यमोपम।
'आमि-ब्रह्म, माया-भ्रम', एइ औषधेर क्रम,
देखि' चिन्ता हइल विषम।।
एके त' रोगेर कष्ट, यमोपम वैद्य भ्रष्ट,
ए-यन्त्रणा किसे याय मोर?
श्रीचैतन्य दयामय, कर' यदि समाश्रय,
पार ह'वे ए विपद घोर।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

निर्वेद-लक्षण-उपलब्धि

(1)

ओरे मन, भाल नाहि लागे ए संसार।
जनम-मरण-जरा, ये संसारे आछे भरा,
ताहे किबा आछे बल' सार।।
धन-जन-परिवार, केह नहे कभु का'र,
काले मित्र, अकाले अपर।
याहा राखिवारे चाइ, ताहा नाहि थाके भाइ,
अनित्य समस्त विनश्वर।।
आयु अति अल्पदिन, क्रमे ताहा हय क्षीण,

शमनेर निकट दर्शन।

रोग–शोक अनिवार, चित्त करे छारखार,
बान्धव–वियोग दुर्घटन।।
भाल क'रे देख भाइ, अमिश्र आनन्द नाइ,
ये आछे, से दुःखेर कारण।
से सुखेर तरे तबे, केन माया–दास ह'बे,
हाराइवे परमार्थ–धन।।
इतिहास–आलोचने, भेवे' देख निज मने,
कत आसुरिक दुराशय।
इन्द्रिय–तर्पण सार, करि' कत दुराचार,
शेषे लभे मरण निश्चय।।
मरण–समय ता'रा, उपाय हइया हारा,
अनुताप–अनले ज्वलिल।
कुक्कुरादि पशु–प्राय, जीवन काटाय हाय,
परमार्थ कभु ना चिन्तिल।।
एमन विषये मन, केन थाक अचेतन,
छाड़ छाड़ विषयेर आशा।
श्रीगुरु–चरणाश्रय, कर' सबे भव जय,
ए दासेर सेइ त' भरसा।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(2)

ओरे मन, वाड़िवार आशा केन कर'?
पार्थिव उन्नति यत, शेषे अवनति तत,
शान्त हओ, मोर वाक्य धर'।।

आशार इयत्ता नाइ, आशा–पथ सदा भाइ,
नैराश्य–कन्टके रुद्ध आछे।
बाड़' यत आशा तत, आशा नाहि हय हत,
आशा नाहि नित्यानित्य बाछे।।
एक राज्य आज पाओ, अन्य राज्य काल चाओ,
सर्वराज्य कर' यदि लाभ।
तबु आशा नहे शेष, इन्द्रपद अवशेष
छाड़ि' चा'वे ब्रह्मार प्रभाव।।
ब्रह्मत्व छाड़िया भाइ, शिवपद किसे पाइ,
एइ चिन्ता ह'वे अविरत।
शिवत्व लभिया नर, ब्रह्मसाम्य तदन्तर,
आशा करे शंकरानुगत।।
अतएव आशा–पाश, याहे हय सर्वनाश,
हृदय हइते राख दूरे।
अकिञ्चन–भाव ल'ये, चैतन्य–चरणाश्रये,
वास कर' सदा शान्तिपुरे।।
(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(3)

ओरे मन, भुक्ति–मुक्ति–स्पृहा कर' दूर।
भोगेर नाहिक शेष, ताहे नाहि सुखलेश,
निरानन्द ताहाते प्रचुर।।
इन्द्रिय–तर्पण वइ, भोगे आर सुख कइ,
सेओ सुख अभाव–पूरण।
ये–सुखेते आछे भय, ताके सुख बला नय,

ताके दुःख बले विज्ञ – जन।।

शास्त्रे फलश्रुति यत, सेइ लोभे कतशत,

मूढ़जन भोग – प्रति धाय।

से – सब कैतव जानि', छाड़िया वैष्णव – ज्ञानी,

मुख्यफल कृष्णरति पाय।।

मुक्ति – वाञ्छा दुष्ट अति, नष्ट करे शिष्टमति,

मुक्तिस्पृहा कैतव – प्रधान।

ताहा ये छाड़िते नारे, माया नाहि छाड़े तारे,

तार यत्न नहे फलवान्।।

अतएव स्पृहाद्वय, छाड़ि' शोध' ए हृदय,

नाहि राख कामेर वासना।

भोग – मोक्ष नाहि चाइ, श्रीकृष्णचरण पाइ,

विनोदेर एइ त साधना।।

(4)

दुर्लभ मानव – जन्म लभिया संसारे।

कृष्ण ना भजिनु – दुःख कहिव काहारे??

'संसार' 'संसार', क'रे मिछे गेल काल।

लाभ ना हइल किछु, घटिल जञ्जाल।।

किसेर संसार एइ, छायाबाजी प्राय।

इहाते ममता करि' वृथा दिन याय।।

ए देह पतन ह'ले कि र'वे आमार?

केह सुख नाहि दिवे पुत्र – परिवार।।

गर्द्दभेर मत आमि करि परिश्रम।

का'र लागि' एत करि ना घुचिल भ्रम।।

दिन याय मिछा काजे, निशा निद्रा–वशे।
नाहि भावि–मरण निकटे आछे व'से।।
भाल मन्द खाइ, हेरि, परि, चिन्ताहीन।
नाहि भावि, ए देह छाड़िव कोन दिन।।
देह–गेह–कलत्रादि चिन्ता अविरत।
जागिछे हृदये मोर बुद्धि करि' हत।।
हाय, हाय! नाहि भावि,– अनित्य ए सब।
जीवन विगते कोथा रहिवे वैभव??
श्मशाने शरीर मम पड़िया रहिवे।
विहंग–पतंग ताय विहार करिवे।।
कुक्कुर–श्रृगाल सब आनन्दित ह'ये।
महोत्सव करिवे आमार देह ल'ये।।
ये देहेर एइ गति, ता'र अनुगत।
संसार–वैभव आर बन्धुजन यत।।
अतएव मायामोह छाड़ि' बुद्धिमान्।
नित्यतत्त्व कृष्णभक्ति करुन सन्धान।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(5)

शरीरेर सुखे, मन, देह जलाञ्जलि।
ए देह तोमार नय, वरञ्च ए शत्रु हय,
सिद्ध–देह–साधन–समये।।

सर्वदा इहार वले रहियाछ बली।
किन्तु नाहि जान मन, ए शरीर अचेतन,
पड़े रय जीवन–विलये।।

देहेर सौन्दर्य – बल – नहे चिरदिन।
अतएव ताहा ल'ये, ना थाक गर्वित ह'ये,
तोमा', प्रति एइ अनुनय।।

शुद्धजीव सिद्धदेहे सदाइ नवीन।
जड़ीभूत देह – योग, जीवनेर कर्मभोग,
जीवेर पतन यदाश्रय।।

ये – पर्यन्त ए देहेते जीवेर संगति।
चक्षु कर्ण नासा जिह्वा, त्वगादिर जड़स्पृहा,
जीवे ल'ये करे टानाटानि।।

देख, देख, भयंकर जीवेर दुर्गति।
जीव चाय कृष्ण भजि', देह जड़े याय मजि',
शेषे जीव पाशरे आपनि।।

आर केन जीव जड़े करिवे समर?
जड़ देओ विसर्जन, शुद्धजीव – प्रबोधन,
सहजसमाधि – योगे साध'।।

क्रमे क्रमे जड़सत्ता ह'वे अवसर।
सिद्धदेह – अनुगत, कर' देह जड़ाश्रित,
परमार्थ ना हइवे वाध।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

सम्बन्धाभिधेय-प्रयोजन
(सम्बन्ध -विज्ञान-लक्षण-उपलब्धि)

ओरे मन, बलि, शुन तत्त्व-विवरण।
याँहार विस्मृति-जन्य जीवेर बन्धन।।
तत्त्व एक अद्बितीय अतुल्य अपार।
सेइ तत्त्व परबह्म सर्वसारात्सार।।
सेइ तत्व शक्तिमान् सम्पूर्ण सुन्दर।
शक्ति-शक्तिमान् - एक वस्तु निरन्तर।।
नित्यशक्ति-नित्यसर्व-विलास-पोषक।
विलासार्थ वृन्दावन, बैकुण्ठ, गोलोक।।
विलासार्थ नाम-धाम-गुण-परिकर।
देश-काल-पात्र सब शक्ति-अनुचर।।
शक्तिर प्रभाव आर प्रभुर विलास।
परब्रह्म-सह नित्य एकात्म-प्रकाश।।
'अतएव ब्रह्म आगे, शक्ति-कार्य परे।'
ये करे सिद्धान्त, सेइ मूर्ख ए संसारे।।
पूर्णचन्द्र बलिले किरण-सह जानि।
अकिरण चन्द्रसत्ता कभु नाहि मानि।।
ब्रह्म आर ब्रह्मशक्ति-सह परिकर।
समकाल नित्य वलि' मानि अतःपर।।
अखण्ड विलासमय परब्रह्म येइ।
अप्राकृत वृन्दावने कृष्णचन्द्र सेइ।।
सेइ से अद्वयतत्त्व परानन्दाकार।
कृपाय प्रकट हैल भारते आमार।।
कृष्ण से परमतत्त्व प्रकृतिर पर।

ब्रजेते विलास कृष्ण करे निरन्तर।।
चिद्धाम – भास्कर कृष्ण, ताँ'र ज्योतिर्गत।
अनन्त चित्कण जीव तिष्ठे अविरत।।
सेइ जीव प्रेमधर्मी, कृष्णगत प्राण।
सदा कृष्णाकृष्ट, भक्तिसुधा करे पान।।
नानाभाव – मिश्रित पिया दास्य – रस।
कृष्णेर अनन्तगुणे सदा थाके वश।।
कृष्ण माता, कृष्ण पिता, कृष्ण सखा, पति।
एइ सव भिन्नभावे कृष्णे करे रति।।
कृष्ण से पुरुष एक, नित्यवृन्दावने।
जीवगण नारीवृन्द, रमे कृष्णसने।।
सेइ त' आनन्दलीला या'र नाइ अन्त।
अतएव कृष्णलीला अखण्ड अनन्त।।
ये – सब जीवेर भोग – वाञ्छा उपजिल।
पुरुष – भावेते ता'रा जड़े प्रवेशिल।।
मायाकार्य जड़, माया—नित्यशक्ति – छाया।
कृष्णदासी सेह सत्य, कारा – कर्त्री माया।।
सेइ माया आदर्शेर समस्त विशेष।
लइया गठिल विश्व याहे पूर्ण क्लेश।।
जीव यदि हइलेन कृष्णबहिर्मुख।
मायादेवी तवे ता'रे याचिलेन सुख।।
माया – सुखे मत्त जीव श्रीकृष्ण भुलिल।
सेइ से अविद्या – वशे अस्मिता जन्मिल।।
अस्मिता हइते हैल मायाभिनिवेश।
ताहा हइते जड़गत राग आर द्वेष।।

एइरूपे जीव कर्मचक्रे प्रवेशिया।
उच्चावच – गतिक्रमे फिरेन भ्रमिया।।
कोथा से बैकुण्ठानन्द, श्रीकृष्णविलास!
कोथा मायागत सुख, दुःख, सर्वनाश!!
चित्तत्त्व हइया जीवेर मायाभिरमण।
अति तुच्छ जुगुप्सित अनन्त पतन।।
मायिक देहेर भावाभावे दास्य करि'।
परतत्त्व जीवेर कि कष्ट आहा मरि!!

(अभिधेय – विज्ञान – उपलब्धि)

भ्रमिते भ्रमिते यदि साधुसंग हय।
पुनराय गुप्त नित्यधर्मेर उदय।।
साधुसंगे कृष्णकथा हय आलोचन।
पूर्वभाव उदि' काटे मायार बन्धन।।
कृष्ण – प्रति जीव यवे करेन ईक्षण।
विद्या – रूपा माया करे' बन्धन छेदन।।
मायिक जगते विद्या नित्य – वृन्दावन।
जीवेर साधन जन्य करे' विभावन।।
सेइ वृन्दावने जीव भावाविष्ट ह'ये।
नित्य – सेवा लाभ करे चैतन्य – आश्रये।।
प्रकटित लीला आर गोलोक – विलास।
एक तत्त्व, भिन्न नय, द्विविध प्रकाश।।
नित्यलीला नित्यदासगणेर निलय।
ए प्रकट – लीला बद्धजीवेर आश्रय।।
अतएव वृन्दावन जीवेर आवास।

असार संसारे नित्य – तत्त्वेर प्रकाश।।
वृन्दावन – लीला जीव करह आश्रय।
आत्मगत रति – तत्त्व याहे नित्य हय।।
जड़रति – खद्योतेर आलोक अधम।
आत्मरति – सूर्योदये हय उपशम।।
जड़रतिगत यत शुभाशुभ कर्म।
जीवेर सम्बन्धे सब औपाधिक धर्म।।
जड़रति हैते लोक – भोग अविरत।
जड़रति ऐश्वर्य्येर सदा अनुगत।।
जड़रति, जड़देह प्रभु – सम भाय।
मायिक विषय – सुखे जीवके नाचाय।।
कभु ता 'रे ल 'ये याय ब्रह्मलोक यथा।
कभु ता 'रे शिक्षा देय योगैश्वर्य – कथा।।
योगैश्वर्य, भोगैश्वर्य—सकलि सभय।
वृन्दावने आत्मरति जीवेर अभय।।
श्रीकृष्णविमुख – जन ऐश्वर्य्येर आशे।
मायिक जड़ीयसुखे बद्ध माया – पाशे।।
अकिञ्चन आत्मरत, कृष्णरति—सार।
जानि 'भुक्ति – मुक्ति – आशा करे 'परिहार।।
संसारे जीवनयात्रा अनायासे करि'।
नित्यदेहे नित्य सेवे आत्मप्रद हरि।।
वर्णमद, वलमद, रूपमद यत।
विसर्ज्जन दिया भक्तिपथे हन रत।।
आश्रमादि विधानेते रागद्वेषहीन।
एकमात्र कृष्णभक्ति जानि' समीचीन।।

साधुगण – संगे सदा हरिलीला – रसे।
यापन करेन काल नित्यधर्मवशे।।
जीवनयात्रार जन्य वैदिक – विधान।
राग – द्वेष विसर्ज्जिया करेन सम्मान।।
सामान्य वैदिकधर्म अर्थफलप्रद।
अर्थ हैते काम – लाभ मूढ़ेर सम्पद।।
सेइ धर्म, सेइ अर्थ, सेइ काम यत।
स्वीकार करेन दिन – यापनेर मत।।
ताहाते जीवनयात्रा करेन निर्वाह।
जीवनेर अर्थ—कृष्णभक्तिर प्रवाह।।
अतएव लिंगहीन सदा साधुजन।
द्वन्द्वातीत ह'ये करेन श्रीकृष्ण – भजन।।
ज्ञानेर प्रयासे काल ना करि' यापन।
भक्तिबले नित्यज्ञान करेन साधन।।
यथा – तथा वास करि', ये – से वस्त्र परि'।
सुलब्ध – भोजनद्वारा देहरक्षा करि'।।
कृष्णभक्त कृष्णसेवा – आनन्दे मातिया।
सदा कृष्णप्रेम – रसे फिरेन गाहिया।।
नवद्वीपे श्रीचैतन्य – प्रभु अवतार।
भक्तिविनोद गाय कृपाय ताँहार।।

प्रयोजन – विज्ञान – उपलब्धि

(2)

अपूर्व वैष्णव – तत्त्व! आत्मार आनन्द –
प्रस्रवण! नाहि या'र तुलना संसारे।

स्वधर्म बलिया या'र आछे परिचय
ए जगते! ए तत्त्वेर शुन विवरण।
परब्रह्म सनातन, आनन्दस्वरूप,
नित्यकाल रस–रूप, रसेर आधार–
परात्पर, अद्वितीय, अनन्त, अपार।
तथापि स्वरूपतत्त्व, शक्ति–शक्तिमान्,
लीलारस–पराकाष्ठा, आश्रय–स्वरूप।
तर्क कि से–तत्त्व कभु स्पर्शिवारे पारे?
रसतत्त्व सुगम्भीर! समाधि–आश्रये
उपलब्ध! आहा मरि, समाधि कि धन!!
समाधिस्थ ह'ये देख, सुस्थिर अन्तरे,
हे साधक! रसतत्त्व अखण्ड आनन्द,
किन्तु ताहे आस्वादक–आस्वाद्य–विधान,
नित्यधर्म अनुस्यूत! अद्वितीय प्रभु,
आस्वादक कृष्णरूप,– आस्वाद्य राधिका,
द्वैतानन्द! परानन्द–पीठ वृन्दावन!
प्राकृत जगते याँ'र प्रकाश–विशेष,
योगमाया–प्रकाशित! ताँहार आश्रये
लभिछे साधकवृन्द नित्य प्रेमतत्त्व—
आदर्श, याहार नाम बिकुण्ठ–कल्याण!!
यदि याह नित्यानन्द–प्रवाह सेविते
अविरत, गुरुपादाश्रय कर' जीव!
निरस भजन समुदय परिहरि'—
ब्रह्म–चिन्ता आदि यत, सदा साध'
रति, कुसुमित वृन्दावने श्रीरासमण्डले।

पुरुषत्व – अहङ्कार नितान्त दुर्बल
तव। तुमि शुद्ध जीव। आस्वाद्य स्वजन,
श्रीराधार नित्यसखी! परानन्दरस
अनुभवि'! मायाभोग तोमार पतन!!

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(3)

चिज्जड़ेर द्वैत यिनि करेन स्थापन, जड़ीय कुतर्कबले हाय!
भ्रमजाल ता'र बुद्धि करे आच्छादन, विज्ञान – आलोक नाहि ताय।।
चित्तत्त्वेआदर्श बलि' जाने येइ जने, जड़े अनुकृति बलि' मानि।
ताहार विज्ञान शुद्ध – रहस्य – साधने, समर्थ बलिया आमि जानि।।
अतएव ए जगते याहा लक्ष्य हय, बैकुण्ठेर जड़ अनुकृति।
निर्दोष बैकुण्ठगत – सत्ता – समुदय, सदोष जड़ीय परिमिति।।
बैकुण्ठ – निलये येइ अप्राकृत रति—सुमधुर महाभावावधि।
ता'र तुच्छ अनुकृति पुरुष – प्रकृति – संगसुख—संक्लेश – जलधि।।
अप्राकृत सिद्ध देह करिया आश्रय, सहज – समाधि – योगबले।
साधक प्रकृति – भावे श्रीनन्दतनय, भजेन सर्वदा कौतूहले।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(4)

'जीवन – समाप्ति – काले करिव भजन, एवे करि गृहसुख।'
कखन ए कथा नाहि बले विज्ञजन, ए देह पतनोन्मुख।।
आजि वा शतेक वर्षे अवश्य मरण, निश्चिंत ना थाक भाइ।
यत शीघ्र पार, भज श्रीकृष्णचरण, जीवनेर ठिक नाइ।।

संसार निर्वाह करि' या'व आमि वृन्दावन,

ऋणत्रय शोधिवारे करितेछि सुयतन।।
ए आशाय नाहि प्रयोजन।
एमन दुराशा-वशे, या'वे प्राण अवशेषे,
ना हइवे दीनबन्धु-चरण-सेवन।।
यदि सुमंगल चाओ, सदा कृष्णनाम गाओ,
गृहे थाक, वने थाक इथे तर्क अकारण।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

उच्छ्वास-दैन्यमयी-प्रार्थना

(1)

भवार्णवे प'ड़े मोर आकुल पराण।
किसे कूल पा'व, ता'र ना पाइ सन्धान।।
ना आछे करम-बल, नाहि ज्ञान-बल।
याग-योग तपोधर्म-ना आछे सम्बल।।
नितान्त दुर्बल आमि, ना जानि साँतार।
ए विपदे के आमारे करिबे उद्धार??
विषय-कुम्भीर ताहे भीषण-दर्शन।
कामेर तरंग सदा करे उत्तेजन।।
प्राक्तन वायुर वेग सहिते ना पारि।
काँदिया अस्थिर मन, ना देखि काण्डारी।।
ओगो श्रीजाह्नवा देवि! ए दासे करुणा।
कर आजि निजगुणे, घुचाओ यन्त्रणा।।
तोमार चरण-तरी करिया आश्रय।
भवार्णव पार ह'ब करेछि निश्चय।।
तुमि नित्यानन्द-शक्ति कृष्णभक्ति-गुरु।

ए दासे करह दान पदकल्पतरु।।
कत कत पामरेरे क'रेछ उद्धार।
तोमार चरणे आज ए कांगाल छार।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

(2)

आमार समान हीन नाहि ए संसारे
अस्थिर ह'येछि पड़ि' भव – पारावारे।।
कुलदेवी योगमाया मोरे कृपा करि'।
आवरण सम्वरिबे कबे विश्वोदरी।।
शुनेछि आगमे – वेदे महिमा तोमार।
श्रीकृष्ण – विमुखे बाँधि 'कराओ संसार।।
श्रीकृष्ण – साम्मुख्य या'र भाग्यक्रमे हय।
ता'रे मुक्ति दिया कर' अशोक अभय।।
ए दासे जननि! करि' अकैतव दया।
वृन्दावने देह स्थान तुमि योगमाया।।
तोमारे लंघिया कोथा जीवे कृष्ण पाय।
कृष्ण रास प्रकटिल तोमार कृपाय।
तुमि कृष्ण – अनुचरी जगत – जननी।
तुमि देखाइले मोरे कृष्ण – चिन्तामणि।।
निष्कपट ह'ये माता चाओ मोर पाने।
वैष्णवे विश्वास वृद्धि ह'क प्रतिक्षणे।।
वैष्णव – चरण बिना भव – पारावार।
भकतिविनोद नारे हइवारे पार।।

श्रीषड़्गोस्वामि – शोचक

श्रीमद्रूप – गोस्वामि – प्रभुर शोचक

(1)

ओ मोर जीवन – गति, श्रीरूपगोसाँइ अति,
गुणेर समुद्र दयामय।
याँहार करुणा हैले, चैतन्य – चरण मिले,
ब्रजे राधाकृष्ण – प्राप्ति हय।।
परम – वैराग्य याँ'र, चरित्रेर नाहि पार,
असीम ऐश्वर्य परिहरि'।
चैतन्येर आगमन, शुनि' हरषित मन,
प्रयागे चलिला त्वरा करि'।।
अनुज वल्लभ – सने, शीघ्र गेला सेइ स्थाने,
महाप्रभु यथाय वसिया।
चैतन्येर श्रीचरण, दर्शने आनन्द मन,
भूमे दोँहि पड़े लोटाइया।।
पुनः पुनः दुइजने, निरखिया प्रभु – पाने,
प्रेम – जले भरिल नयन।
दन्ते तृण – गुच्छ धरे, विधि – मते स्तव करे,
शुनिले व्याकुल हय मन।।
श्रीरूपेरे निरखिये, प्रभु प्रेमे मत्त ह'ये,
प्रियवाक्य अनेक कहिला।
अज, भव, देवगण, आराधये ये चरण,
से चरण मस्तके धरिला।।
प्रेमे वश गौरराय, उठ उठ बलि' ताय,
महासुखे कैल आलिंगन।

श्रीरूप जुड़िया कर, स्तुति करे बहुतर,
ताहा किछु ना हय वर्णन।।
तवे प्रभु रूपे लैये, निकटेते वसाइये,
सनातनेर पुछे समाचार।
श्रीरूप कहिल सब, शुनिया चैतन्यदेव,
कहे किछु चिन्ता नाहि आर।।
श्रीरूपे प्रसन्न हैया, किछुदिन काछे थु'या,
राधाकृष्ण–तत्त्व जानाइला।
परम आनन्द मन, रूपे करि' आलिंगन,
वृन्दावन याइते आज्ञा दिला।।
कातरे श्रीरूप कय,– 'संगे थाकि, आज्ञा हय',
शुनि' प्रभु महाहर्ष–चित्ते।
कहेन मधुर वाणी,– 'सदा संगे आछ तुमि,
पुनश्च आसिवे ब्रज हैते।।'
एइ मत कहे यत, तवे प्रभु शचीसुत,
काशी चले नौकाय चड़िया।
प्रभुर श्रीमुखचन्द्र, नयने हेरिया रूप,
भूमे पड़े मूर्च्छित हइया।।
से समये भेल याहा, कहिते ना पारि ताहा,
कतक्षणे किछु सम्वरिला।
महाप्रभुर श्रीचरण, ताहे समर्पिया मन,
वृन्दावन गमन करिला।।
अत्यन्त आनन्द चिते, शीघ्र आइला मथुराते,
सुबुद्धि–रायेर देखा पाइला।
राय आनन्दित हैया, दुइजने संगे लैया,

द्वादश–कानन देखाइला।।

विस्तारिते नारि आर, गमनागमन ताँ'र,

कतदिन परे वृन्दावने।

श्रीरूप, श्रीसनातन, हैल दोंहे सुमिलन,

दोंहे प्रेमे आप्त नाहि जाने।।

आलिंगन करि' दोंहे, चैतन्येर गुण कहे,

याहा शुनि' पाषाण मिलाय।

आनन्द हइल चित्ते, नाहि पारे सम्वरिते,

काँदि दोंहे धरणी लोटाय।।

अति अनुराग मने, श्रीरूप श्रीवृन्दावने,

रहे सदा प्रेमेर उल्लासे।

फल–मूल माधुकरी, विप्रगृहे भिक्षा करि',

भुञ्जे, कभु थाके उपवासे।।

छिँड़ा काँथा बहिर्वास, एइमात्र वहे पाश,

तरुतले करेन शयन।

दिवानिशि अविश्राम, जपये मधुर नाम,

भाव–भरे करये नर्त्तन।।

क्षणे करे संकीर्तन, अन्तर्मना अनुक्षण,

कि क'ब भजन–रीति ताँ'र।

प्रभुर आज्ञाय कत, वर्णिला अमृत–ग्रन्थ,

प्रेम–सम अक्षर याँहार।।

महाधीर अत्युदार, के बुझे हृदय ताँ'र,

कभु यमुनार तटे याञा।

'हा शचीनन्दन बलि', काँदये दु'हात तुलि',

डाके राधाकृष्ण–नाम लञा।।

अति सुकोमल देह, सदा प्रेमे नाचे सेह,
आर कि बलिव एक मुखे।
अधम पामरगणे, पतित दुःखित जने,
निजगुणे कृपा करेन ता'के।।
नरहरि दुराचार, कर मोरे अंगीकार,
तापेते हइल सदा भोर।
तुया पादपद्मे मन, रहे येन सर्वक्षण,
एइ निवेदन शुन मोर।।

(2)

आरे मोर श्रीरूप गोसाञि।
गौरांग-चाँदेर भाव, प्रचार करिया सब,
जानाइते हेन आर नाइ।।
वृन्दावन नित्यधाम, सर्वोपरि अनुपम,
सर्व-अवतारी नन्दसुत।
ताँ'र कान्तागणाधिका, सर्वाराध्या श्रीराधिका,
ताँ'र संग सखीगण-यूथ।।
रागमार्गे ताहा पाइते, याँहार करुणा हैते,
बुझिल, पाइल ये ते जना।
एमन दयालु भाइ, कोथाओ ये देखि नाइ,
ताँ'र पद करह भावना।।
श्रीचैतन्य-आज्ञा पाञा, भागवत विचारिया,
यत भक्ति-सिद्धान्तेर खनि।
ताहा उठाइया कत, निज-ग्रन्थ करि'यत,
जीवे दिला प्रेम-चिन्तामणि।।

राधाकृष्ण-रसकेलि, नाट्यगीत-पदावली,
शुद्ध 'परकीया' मत करि'।
चैतन्येर मनोवृत्ति, स्थापन करिला क्षिति,
आस्वादिया ताहार माधुरी।।
चैतन्य-विरहे शेष, पाइ अतिशय क्लेश,
ताहे यत प्रलाप-विलाप।
सेइ सब कहिते भाइ, देहे प्राण रहे नाइ,
ए **राधावल्लभ**-हिये ताप।।

(3)

यङ् कलि रूप शरीर न धरत।
तङ् ब्रजप्रेम, महानिधि कुठरीक,
कोन् कपाट उघाड़त।।
नीर-क्षीर-हंसन, पान-विधायन,
कोन् पृथक् करि पायत।
को सब त्यजि', भजि' वृन्दावन,
को सब ग्रन्थ विरचित।।
यव् पितु वनफुल, फलत नानाविध,
मनोराजि अरविन्द।
सो मधुकर बिनु, पान कोन् जानत,
विद्यमान करि बन्ध।।
को जानत, मथुरा वृन्दावन,
को जानत व्रजनीत।
को जानत, राधामाधव-रति,
को जानत सोइ प्रीत।।

याकर चरण–,   प्रसादे सकल जन,
गाइ गाओयाइ सुख पाओत।
चरण–कमले,   शरणागत **माधो**,
तव महिमा उर लागत।।

(4)

जय जय रूप महारससागर।
दरशन–परशन, वचन रसायन, आनन्दहु के गागर।।
अति गम्भीर, धीर करुणामय, प्रेम–भकति के आगर।
उज्ज्वल–प्रेम–, महामणि प्रकटित, देश गौड़ वैरागर।।
सद्गुण–मण्डित, पण्डित–रञ्जन, वृन्दावन निज नागर।
किरीति विमल यश, शुन तँहि **माधो**, सतत रहल हिये जागर।।

श्रील–सनातन–गोस्वामि–प्रभुर शोचक

(1)

रूपेर वैराग्यकाले,   सनातन बन्दिशाले,
विषाद भावये मने मने।
''श्रीरूपे करुणा करि',   त्राण कैल गौरहरि,
मो अधमे नहिल स्मरणे।।
मोर कर्मदड़ि–फान्दे,   मोर हाते गले बान्धे,
राखियाछे कारागारे फेलि'।
आपन करुणा–फाँसे,   दृढ़ बान्धि'मोर केशे,
चरण–निकटे लह तुलि'।।
पश्चाते अगाध–जल,   दुइ पाशे दावानल,
सम्मुखे युड़िल व्याध वाण।

कातरे हरिणी डाके, पड़िया विषम पाके,
तुमि नाथ मोरे कर त्राण।।
जगाइ – माधाइ हेले, वासुदेवे अजामिले,
अनायासे करिले उद्धार।
करुणा आभास करि, सनातने पदतरी,
देह' येन घोषये संसार।।
ए दुःख – समुद्र – घोरे, निस्तार करह मोरे,
तोमा बिना नाहि अन्य जन।''
हेनकाले अन्यजने, अलक्षिते सनातने,
पत्र दिल रूपेर लिखन।।
रूपेर लिखन पे'ये, मने आनन्दित ह'ये,
सदा करे गौरांग धेयान।
श्रीराधावल्लभ – दास, मने करे अभिलाष,
पत्र पे'ये करिला पयान।।

(2)

श्रीरूपेर बड़ भाइ, श्रीसनातन गोसाँइ,
पात्सार उजिर हइया छिला।
श्रीरूपेर पत्र पे'ये, बन्दी हैते पलाइये,
काशीपुरे गौरांग भेटिला।।
छिँड़ा काँथा अंगे मलि, हाते नख, माथे चुलि,
निकटे याइते अंग हेले।
दुइ गुच्छ तृण करे, एकगुच्छ दन्ते ध'रे,
पड़िला चैतन्य – पदतले।।

दरवेश–रूप देखि', प्रभुर सजल आँखि,
बाहु पशारिया आइसे धेये।
सनातने करि' कोले, कातरे गोसाँइ वले,
''अधमेरे स्पर्श कि लागिये।।
अस्पृश्य, पामर, दीन, दुराचार, बुद्धिहीन,
नीच–कुले नीच व्यवहार।
एहेन पामर–जने, स्पर्श' प्रभु कि कारणे,
योग्य नहे तोमा स्पर्शिवार।।''
प्रभु कहे, 'सनातन, दैन्य कर कि कारण,
तव दैन्ये फाटे मोर हिया।
कृष्णेर करुणा आछे, भाल–मन्द नाहि बाछे,
तोमा स्पर्शि पावित्र्य लागिया।।'
भोट–कम्बल देखि' गाय, प्रभु पुनः पुनः चाय,
लज्जित हइला सनातन।
गौड़ीयारे भोट दिया, छिँड़ा एक कान्था लैया,
प्रभुपाशे पुनरागमन।।
आज्ञा दिल रूप–सने, देखा ह'वे वृन्दावने,
प्रभु–आज्ञाय करिला गमने।
गौरांग करुणा करि', राधाकृष्ण–नाम–माधुरी,
शिक्षा कराइला सनातने।।
छेंड़ा कान्था, नेड़ा माथा, मुखे कृष्ण–गुण–गाथा,
परिधाने छेँड़ा बहिर्वास।
कभु कान्दे, कभु हासे, कभु प्रेमानन्दे भासे,
कभु भिक्षा, कभु उपवास।।

अतःपर सनातन, प्रवेशिल वृन्दावन,
रूप–संगे हइल मिलन।
प्रेमे अश्रु नेत्रे भरि', सनातनेर गला धरि',
काँन्दे रूप गद्‌गद–वचन।।
ब्रजपुरे घरे घरे, माधुकरी भिक्षा करे,
एइरूपे गोँयाय सनातन।
कतदिने ताहा छाड़ि', कुञ्जे कुञ्जे रहे पड़ि',
फल–मूल करये भक्षण।।
उच्चस्वरे आर्त्तनादे, राधाकृष्ण बलि' काँदे,
'हा नाथ, हा नाथ' बलि' डाके।
गौरांगेर यत गुण, कहे रूप–सनातन,
एइरूपे कतदिन थाके।।
कतदिन अन्तर्मना, छापान्न–दण्ड भावना,
चारिदण्ड निद्रा वृक्षतले।
कृष्णनाम–गाने थाके, स्वप्ने राधाकृष्ण देखे,
अवसर नहे एकतिले।।
छाड़ि' भोग–अभिलाष, तरुतले करे वास,
दुइ–चारि दिन उपवास।
कखनओ वनेर शाक, अलवणे करि' पाक,
मुखे देय दुइ–एक ग्रास।।
सूक्ष्मवस्त्र वाजे गाय, धूलाय धूसर काय,
कन्टकेते विद्ध हय पाश।
ए राधावल्लभदास, मने करे अभिलाष,
कतदिने ह'व ता'र दास।।

(3)

जय जय पँहु श्रील सनातन नाम।
सकल भुवन माहा यछु गुणग्राम।।
तेजल सकल सुख सम्पद् अपार।
श्रीचैतन्य चरण–युगल करु सार।।
श्रीवृन्दावन–भूमे करि' वास।
लुपत तीर्थ सब करल प्रकाश।।
श्रीगोविन्द–सेवा परचारि'।
करल भागवत–अर्थ विचारि'।।
युगल–भजन, लीला–गुण–नाम।
करल विथार ग्रन्थ अनुपम।।
सतत गौरप्रेमे गरगर देह।
भ्रमइ वृन्दावने ना पायइ थेह।।
विपुल पुलकभर नयनहि नीर।
'राइ कानु' बलि' पड़इ अथिर।।
भाव–विभूषण सकल शरीर।
अनुखन विहरइ यमुनाक तीर।।
यछु करुणामय वृन्दावन पाइ।
भावइ मनोहर सोइ गोसाञि।।

श्रील–रघुनाथदास–गोस्वामि–प्रभुर शोचक

(1)

यवे रूप–सनातन, ब्रजे गेला दुइ जन,
सुनइते रघुनाथदास।
निजराज्य अधिकार, इन्द्रसम सुख याँ'र,

छाड़िया चलिला प्रभु – पाश।।

उठि' रात्रे निशा – भागे, दुयारे प्रहरी जागे,
पथ छाड़ि' विपथे गमन।

क्षुधा – तृष्णा नाहि पाय, मनोद्वेगे चलि' याय,
सदा चिन्ते चैतन्य – चरण।।

एकदिन एकग्रामे, सन्ध्याकाले गो – वाथाने,
'हा चैतन्य' बलिया बसिला।

एक गोप दुग्ध दिला, ताहा खे'ये विश्रामिला,
सेइ रात्रे तथाइ रहिला।।

ये अंग पालङ्क विने, भूमि – शय्या नाहि जाने,
से अंग वाथाने गड़ि' याय।

यिनि घोड़ा दोला विने, पथश्रम नाहि जाने,
कन्टके हाँटये सेइ पाय।।

यिहों बेला दण्ड चारि, तोला जले स्नान करि,
षड्रस करित भोजन।

एवे यदि किछु पान, सन्ध्याकाले ताहा खान,
ना पाइले अमनि शयन।।

वार दिनेर पथ यान, तिन सन्ध्या अन्न खान,
प्रवेशिला नीलाचल – पुरे।

देखिया से श्रीमन्दिर, दु'नयने बहे नीर,
'हा चैतन्य' बले उच्चस्वरे।।

ए राधावल्लभदास, मने करि अभिलाष,
कोथा मोर रघुनाथदास।

ताँहार प्रसंग – मात्र, पुलकित हय गात्र,
ताँ'र पदरेणु करि आश।।

(2)

श्रीचैतन्य–कृपा हैते, रघुनाथ–दास–चिते,
परम वैराग्य उपजिल।
कलत्र, गृह, सम्पद, निजराज्य, अधिपद,
मलप्राय सकल तेजिल।।
पुरश्चर्या कृष्णनामे, गिया से पुरुषोत्तमे,
गौरांगेर पदयुग सेवे।
एइ मने अभिलाष, पुनः रघुनाथदास,
नयनगोचर ह'बे कबे।।
गौरांग दयालु हैया, राधाकृष्ण–मन्त्र दिया,
गोवर्धन–शिला गुञ्जाहारे।
ब्रजवने गोवर्धने, श्रीराधार श्रीचरणे,
समर्पण करिल याँहारे।।
गौरांगेर अगोचरे, निजकेश छिँड़ि' करे,
विरहे व्याकुल ब्रजे गेला।
देहत्याग करि' मने, गेला गिरि–गोवर्धने,
दु'–गोसाँइ ताँहारे राखिला।।
धरि' रूप सनातन, राखिल ताँ'र जीवन,
देहत्याग करिते ना दिला।
दुइ गोसाँइर आज्ञा पेये, राधाकुण्डेर तटे गिये,
नियम करिया वास कैला।।
छिँडा वस्त्र परिधान, ब्रज–फल, गव्य पान,
अन्न–आदि ना करे आहार।
तिन सन्ध्या स्नानाचरि, स्मरण–कीर्त्तन करि',
राधापद–भजन याँहार।।

षाट दण्ड रात्रिदिने, राधाकृष्ण–लीला–गाने,
स्मरणेते सदाइ गोयाँय।
चारि दण्ड शुये थाके, स्वप्ने राधाकृष्ण देखे,
तिलार्द्धेक व्यर्थ नाहि याय।।
चैतन्येर पादाम्बुजे, राखे मनोभृंगराजे,
स्वरूपेर सदाइ आश्रय।
भिन्नदेह रूप–सने, गति याँ'र सनातने,
भट्ट गोसायेर प्रिय महाशय।।
श्रीरूपेर गण यत, याँहार पद आश्रित,
अत्यन्त वात्सल्य याँ'र 'जीवे'।
सेइ आर्त्तनाद करि', काँदि' बले हरि हरि,
प्रभुर करुणा हवे कबे।।
हे राधिकार वल्लभ, गान्धर्विकार बान्धव,
राधिकारमण राधानाथ।
हे हे वृन्दावनेश्वर, हा हा कृष्ण दामोदर,
कृपा करि' कर आत्मसाथ।।
प्रभु, रूप–सनातन, तिन हैला अदर्शन,
अन्ध हैल एइ दुइ नयन।
वृथा आँखि काँहा देखि, वृथा देहे प्राण राखि,
सेवाचार वाड़ाय द्विगुण।।
श्रीकृष्ण श्रीशचीसुत, ताँ'र गुण यत यत,
अवतार श्रीविग्रह नाम।
गुप्त–व्यक्त लीलास्थान, दृष्ट–श्रुत वैष्णवगण,
सभाकारे करये प्रणाम।।

राधाकृष्णेर वियोगे, छाड़िल सकल भोगे,
रुखा–शुखा अन्नमात्र सार।
श्रीचैतन्येर विच्छेदेते, अन्न छाड़ि' सेइ हैते,
फल, गव्य करेन आहार।।
सनातनेर अदर्शने, ताहा छाड़ि' सेइ दिने,
केवल करेन जल पान।
रूपेर विच्छेद यवे, जल छाड़ि' दिल तवे,
राधाकृष्ण बलि' राखे प्राण।।
स्वरूपेर अदर्शने, ना देखे रूपेर गणे,
विरहे विकल हैया कान्दे।
कृष्ण–कथालाप विने, श्रवणे नाहिक शुने,
उच्चस्वरे डाके आर्त्तनादे।।
"हा हा राधाकृष्ण कोथा, कोथा आछ हे ललिता,
हे विशाखे देह' दरशन।
हा चैतन्य–महाप्रभु, हा स्वरूप मोर प्रभु,
हा हा प्रभु रूप–सनातन।।"
काँदे गोसाँइ रात्रिदिने, पुड़ि' याय तनु–मने,
विरहे हइल जर जर।
मन्द मन्द जिह्वा नड़े, प्रेमे अश्रु नेत्रे पड़े,
मने कृष्ण करये स्मरण।।
सेइ रघुनाथदास, पूरिवे मनेर आश,
एइ मोर बड़ आछे साध।
ए **राधावल्लभदास**, मने करे अभिलाष,
सभे मोरे करह प्रसाद।।

श्रील – जीव – गोस्वामि – प्रभुर – शोचक

आरे मोर जीवन – धन, अनुपमेर नन्दन,
श्रीजीव – गोसाँइ दयामय।
अति सुचरित याँ’र, शुनि’ लागे चमत्कार,
परम पण्डित महाशय।।
गृहे थाकि’ अनुक्षण, कृष्णकथा आलापन,
तिलार्द्धेक नाहि याय वृथा।
अत्यन्त उदार – चित्त, प्रेमेते सतत मत्त,
क्षणेक ना शुने अन्य कथा।।
अल्पकाले हेन गुण, ऐश्वर्ये नाहिक मन,
सदा चिन्ते वृन्दावन याइते।
कि कहिब अनुराग, करि गोसाँइ सर्वत्याग,
यात्रा कैल महा आनन्देते।।
नित्यानन्द – प्रभु स्थाने, शीघ्र गेला हर्ष – मने,
याइया करिल दरशन।
नेत्रे अश्रुयुक्त हैया, धरणीते लोटाइया,
वन्दिलेन युगल चरण।।
नित्यानन्द प्रभु प्रीते, निजपद ता’र माथे,
धरिलेन परम आनन्दे।
दुइ भुज धरि’ तोले, श्रीजीवे करिल कोले,
रूप – सनातनेर सम्बन्धे।।
गोसाँइ आनन्द – मन, दैन्य करे पुनः पुनः,
आज्ञा देह याइ वृन्दावन।
शुनि’ नित्यानन्द राय, श्रीजीवेर पाने चाय,
प्रेमजले भरिल नयन।।

पुनः नित्यानन्द-राम, सोऽङरि चैतन्य-नाम,
कहे अति मधुर वचन।
तोमार वंशे सेइ स्थान, दियाछेन एइ शुन,
शीघ्र तुमि याह वृन्दावन।।
नित्यानन्देर आज्ञा पाञा, चले महासुखी हञा,
कि कहिब यैछन गमन।
श्रीकृष्णचैतन्य बलि', कभु डाके भुज तुलि',
कभु डाके रूप-सनातन।।
चिन्ते मने अनुक्षण, कबे याव वृन्दावन,
कबे राधागोविन्द देखिब।
सुललित कृष्णगुण, कबे ह'बे दरशन,
नयन-पराण जुड़ाइव।।
एइरूपे पथे चले, का'रे किछु नाहि बले,
भक्ष्य द्रव्य मिले अनायासे।
अति सुकुमार हय, कभु दुःख ना जानय,
चले मात्र प्रेमेर आवेशे।।
कतदिने मथुराते, गेलेन आनन्दचिते,
मधुपुरी करिल दर्शन।
यमुनाते स्नान करि', वृन्दावन-पाने हेरि',
अविरत झरये नयन।।
तथा हैते हर्षमने, प्रवेशिला वृन्दावने,
दु'-गोसाँइर चरण वन्दिल।
दूरे गेल मनोदुःख, हइल परम सुख,
आर कत वन्दिते नारिल।।
रूपेर आनन्द हैल, श्रीजीवेरे कृपा कैल,

सनातनेर अनुमति पेये।

राधाकृष्ण–तत्त्वसुखे, सुखी कराइल ताके,
सबे हर्ष श्रीजीव देखिये।।

श्रीजीवेर गुरुभक्ति, कहिते नाहिक शक्ति,
अनुक्षण करये सेवन।

गोसाँइ ये आज्ञा करे, ताहा यत्ने धरे शिरे,
अन्य ना जानये या'र मन।।

नित्यानन्देर आज्ञा लैया, यैछे आइला सुखी हैया,
तैछे गोसाँइ आज्ञाफल पाइला।

सर्वशास्त्रे विचक्षण, नाहिक ताँहार सम,
बहुग्रन्थ वर्णन करिला।।

गुणेर नाहिक अन्त, कि कहिब भक्तितत्त्व,
राखिलेन सिद्धान्त करिया।

सनातनेर दया यत, ताहा वा कहिब कत,
श्रीजीवेर वैराग्य देखिया।।

वृन्दावने सबे सुखी, देखिया जुड़ाय आँखि,
जीव–गोसाँइर चरित्र सुधीर।

येरूपे भजन करे, ताहा के कहिते पारे,
सदा प्रेमे पुलक शरीर।।

ब्रजपुरे एइमते, रहये उल्लास–चिते,
के बुझिवे ताँहार आशय।

दु'–गोसाँइर अदर्शने, ये विरह भेल मने,
ताहा कहिवार योग्य नय।।

धरणीते लोटाइया, कान्दये आकुल हैया,
फुत्कार करये अनुक्षण।

'हा चैतन्य' मोर प्राण, प्रभु नित्यानन्द राम,
कोथा प्रभु रूप–सनातन।।
धारा बहे दु'नयने, ना चाहये का'र पाने,
चित्ते अति अस्थिर हइला।
रात्रे प्रभु रूप आसि', स्वप्न दिल काछे वसि',
तवे किछु दुःख सम्वरिला।।
सेइदिन श्रीनिवास, आइल श्रीजीव–पाश,
ताँ'रे देखि' हर्ष हैल मन।
नरोत्तम ता'र परे, आसिया मिलिला ताँ'रे,
जीव–संगे सदाइ दु'जन।।
प्रेमेर स्वरूप दोंहे, देखिया आनन्दे रहे,
भक्तिग्रन्थ पठाय सदाय।
राधाकृष्ण–लीला यत, सेइ रसे महामत्त,
आर किछु मने नाहि भाय।।
सदा गोविन्देर सेवा, परिपाटी जाने केवा,
यैछन पिरीति नाहि सीमा।
यदि हय लक्ष मुख, तथापि ना हय सुख,
कि कहिब जीवेर महिमा।।
पतित अधम जने, करि' कृपा निजगुणे,
यत्ने प्रेमभक्ति करे दान।
आर कि कहिब गुण, शुनिया पाषण्डगण,
अनायासे पाय परित्राण।।
नरहरि–दासे कय, तराओ हे महाशय,
पड़ि' आछि भवसिन्धु–माझे।
ए पामरे करि' दया, देह मोरे पदछाया,
तवे से दयालु–नाम साजे।।

श्रील–गोपालभट्ट–गोस्वामि–प्रभुर शोचक

श्रीगोपालभट्ट प्रभु, तुया श्रीचरण कभु,
देखिब कि नयन भरिया।
शुनिया असीम गुण, पाँजरे विन्धिल घुण,
निछनि निया याइरे मरिया।।
पिरीते गड़ल तनु, दशबाण हेम जनु,
चान्द मुख अरुण अधर।
झलके दशन–काँति, जिनि मुकुतार पाँति,
हासि कहे अमृत–मधुर।।
पराणेर पराण या'र, रूप–सनातन आर,
रघुनाथ–युगल जीवन।
पण्डित कृष्ण, लोकनाथ, जाने देहभेदमात्र,
सरवस्व श्रीराधारमण।।
प्रेमेते विथार अंग, चैतन्य–चरण–भृंग,
श्रीनिवासे दयार अधीन।
सभे मेलि' रसास्वाद, भावभरे उन्माद,
एइ व्यवसाय चिरदिन।।
लीला–सुधा–सुरधुनी, रसिक–मुकुटमणि,
रसावेशे गदगद हिया।
अहो अहो रागसिन्धु, अहो दीनजन–बन्धु,
यश गाय जगत भरिया।।
हा हा मूर्त्ति सुमधुर, हा हा करुणार पूर,
हा हा चिन्तामणि–गुणखनि।
हा हा प्रभु एकबार, देखाओ माधुरी–सार,
श्रीचरणकमल–लावणि।।

अनेक जन्मेर परे, अशेष भाग्येर तरे,
तुया परिकर–पद–पाये।
निज करमेर दोषे, मजिनु विषय–रसे,
जनम गोयाँनु खलि खाये।।
अपराध पड़े मने, तथापि तोमार गुणे,
पतित–पावन आशाबन्ध।
लोभेते चञ्चल–मति, उपेखिले नाहि गति,
फुकारइ **मनोहर** मन्द।।

श्रील–रघुनाथभट्ट–गोस्वामि–प्रभुर शोचक

तपनमिश्रेर पुत्र रघुनाथ भट्टाचार्य।
प्रभुके देखिते चले छाड़ि' सर्वकार्य।।
काशी हइते चलिला गौड़पथ दिया।
संगेते सेवक एक चले झाँपि लैया।।
एइमते रघुनाथ आइला नीलाचले।
महाप्रभुर चरणे गिया मिलिला कुतूहले।।
दण्डवत् प्रणाम करि' पड़िला चरणे।
प्रभु रघुनाथ जानि' कैला आलिंगने।।
"भाल हैल आइला, देख कमललोचन।
आजि आमार इहा करिवा प्रसादभोजन।।"
गोविन्देरे कहि एक वासा देओयाइला।
स्वरूपादि भक्तगण–सने मिलाइला।।
एइमते प्रभु–सने रहिला अष्टमास।
दिने दिने प्रभु कृपाय बाड़ये उल्लास।।
मध्ये मध्ये महाप्रभुर करेन निमन्त्रण।

घर–भात करेन, आर विविध व्यंजन।।
रघुनाथ भट्ट—पाके अति सुनिपुण।
येइ रान्धे, सेइ हय अमृतेर सम।।
परम सन्तोषे प्रभु करेन भोजन।
प्रभुर अवशिष्ट पात्र भट्टेर भक्षण।।
अष्टमास रहि' प्रभु भट्टे विदाय दिला।
'विवाह ना करिह' बलि' निषेध करिला।।
"वृद्ध पितामातार याइ' करह सेवन।
वैष्णव–पाश भागवत कर अध्ययन।।
पुनरपि एकबार आसिह नीलाचले।"
एत कहि' कन्ठमाला दिल ता'र गले।।
आलिंगन करि', प्रभु ता'रे विदाय दिला।
प्रेमे गदगद भट्ट काँदिते लागिला।।
स्वरूप–आदि भक्त–ठाँइ आज्ञा मागिया।
वाराणसी आइला भट्ट प्रभु–आज्ञा पाइया।।
चारि वत्सर घरे पितामातार सेवा कैला।
वैष्णव–पण्डित ठाँइ भागवत पड़िला।।
पितामाता काशी पाइले उदासीन हैया।
पुनः प्रभुर ठाँइ गेल भावेते गलिया।।
पूर्ववत् अष्टमास प्रभुपाश छिला।
अष्टमास रहि' प्रभु पुनः आज्ञा दिला।।
"आमार आज्ञाय रघुनाथ, याह वृन्दावने।
तथा गिया रह रूप–सनातन–सने।।
भागवत पड़ सदा लह कृष्णनाम।
अचिरे करिवेन कृपा कृष्ण–भगवान्।।"

एत बलि' प्रभु ताँ'रे आलिंगन कैला।
प्रभुर कृपाते कृष्णप्रेमे मत्त हैला।।
चौद्दहात जगन्नाथेर तुलसीर माला।
छुटा – पान – चिड़ा महोत्सवे पाञाछिला।।
सेइ माला, छुटा – पान प्रभु ताँ'रे दिला।
इष्टदेव करि' माला धरिया राखिला।।
प्रभु ठाँइ आज्ञा पाञा आइला वृन्दावने।
आश्रय करिला आसि' रूप – सनातने।।
रूपगोसाँइर सभाय करे भागवत – पठन।
भागवत पड़िते प्रेमे आउलाय मन।।
अश्रु – कम्प गदगद प्रभुर कृपाते।
नेत्रे अश्रु, रुद्ध – कण्ठ ना पारे पड़िते।।
पिकस्वर कण्ठ ता'ते रागेर विभाग।
एक श्लोक पड़िते फिराय चारि राग।।
कृष्णेर माधुर्यगुण यवे पड़े मने।
प्रेमेते विह्वल हैया किछुइ ना जाने।।
गोविन्देर चरणे कैल आत्मसमर्पण।
गोविन्द – चरणारविन्द याँ'र प्राणधन।।
निज शिष्ये कहि गोविन्द – मन्दिर कराइला।
वंशी, मकर, कुण्डलादि भूषण करि दिला।।
ग्रामवार्त्ता ना शुने, ना कहे जिह्वाय।
कृष्णकथा – पूजादिते अष्टप्रहर याय।।
वैष्णवेर निन्द्यकर्म नाहि पाड़े काणे।
सबे कृष्ण भजन करे—एइमात्र जाने।।
महाप्रभुर दत्त माला मननेर काले।

प्रसाद-कड़ार सह बान्धि लन गले।।
महाप्रभुर कृपाय कृष्णप्रेम अनर्गल।
महाप्रभुर रघुनाथे कृपा-महाफल।।

(श्रीचैतन्यचरितामृत)

श्रील-नरोत्तम-ठाकुर-शोचक

ओ मोर करुणामय, श्रीठाकुर महाशय,
नरोत्तम प्रेमेर मूरति।
किवा से कोमल तनु, शिरिष-कुसुम जनु,
जिनिया कनक देह-ज्योति।।
अलप वयस ताय, कोन सुख नाहि भाय,
गोरा-गुण शुनि' सदा झुरे।
राज्यभोग तेयागिया, अति लालायित हैया,
गमन करिला ब्रजपुरे।।
प्रवेशिया वृन्दावने, परम आनन्दमने,
लोकनाथे आत्मसमर्पिल।
कृपा करि' लोकनाथ, करिलेन आत्मसाथ,
राधाकृष्णमन्त्र-दीक्षा दिल।।
नरोत्तम-चेष्टा देखि', वृन्दावने सबे सुखी,
प्राणेर समान करे स्नेह।
श्रीनिवासाचार्य-सने, ये मर्म ता' केवा जाने,
प्राण एक, भिन्नमात्र देह।।
श्रीराधाविनोद देखि', सदाइ जुड़ाय आँखि,
प्रभु-लोकनाथ सेवारत।
भक्तिशास्त्र-अध्ययने, महानन्द वाड़ये मने,

पूर्ण हैल अभिलाष यत।।

प्रभु–अनुमति मते, श्रीब्रजमण्डल हैते,
श्रीगौड़मण्डले प्रवेशिला।

प्रभु–अनुग्रहबले, नवद्वीप–नीलाचले,
भक्तगृहे भ्रमण करिला।।

किवा से मधुर रीति, खेतरि–ग्रामेते स्थिति,
सेवे 'गौर', 'श्रीराधारमणे'।

'श्रीवल्लभीकान्त'–नाम, 'राधाकान्त' रसधाम,
'राधाकृष्ण', 'श्रीब्रजमोहने'।।

एइ छय विग्रह येन, साक्षात् विहरे हेन,
शोभा देखि' केवा नाहि भुले।

प्रिय–रामचन्द्र–संगे, नरोत्तम–महारंगे,
भासे प्रेमरसेर हिल्लोले।।

नरोत्तम गुण यत, के ताहा कहिबे कत,
प्रेमवृष्टि याँ'र सङ्कीर्तने।

श्रीअद्वैत–नित्यानन्द, गणसह गौरचन्द्र,
नाचये—देखिल भाग्यवाने।।

गौरगण–प्रिय अति, नरोत्तम महामति,
वैष्णव–सेवने याँ'र ध्वनि।

कि अद्भुत दयावान्, कारे वा ना करे दान,
निर्मल–भकति चिन्तामणि।।

पाषण्डी असुरगणे, माताइला गोरा–गुणे,
विह्वल हइया प्रेमावेशे।

अलौकिक क्रिया या'र, हेन कि हइवे आर,
से ना यश घोषे देशे देशे।।

कहे **नरहरि** दीन, ह'वे कि एमन दिन,
नरोत्तम – पदे बिकाइव?
सघने दु'बाहु तुलि', 'प्रभु – नरोत्तम' बलि',
काँदि' कि धूलाय लोटाइव??

शोक – शातन
(श्रीगौरांग – लीला – चरित्र)

(1)

प्रदोष – समये, श्रीवास – अंगने, संगोपने गोरामणि।
श्रीहरिकीर्तने, नाचे नाना रंगे, उठिल मंगलध्वनि।।
मृदंग – मादल, बाजे करताल, माझे माझे जयतुर।
प्रभुर नटन, देखि' सकलेर, हइल सन्ताप दूर।।
अखण्ड प्रेमेते, मातल तखन, सकल भकतगण।
आपना पासरि', गोराचाँदे घेरि', नाचे गाय अनुक्षण।।
एमत समये, दैव – व्याधियोगे, श्रीवासेर अन्तःपुरे।
तनय – वियोगे, नारीगण शोके, प्रकाशल उच्चैःस्वरे।।
क्रन्दन उठिले, ह'वे रसभंग, **भकतिविनोद** डरे।
श्रीवास अमनि, बुझिल कारण, पशिल आपन घरे।।

(2)

प्रवेशिया अन्तःपुरे, नारीगणे शान्त करे,
श्रीवास अमिय – उपदेशे।
शुन पागलिनीगण, शोक कर अकारण,
किवा दुःख थाके कृष्णावेशे।।
कृष्ण नित्य सुत या'र, शोक कभु नाहि ता'र,

अनित्ये आसक्ति सर्वनाश।
आसियाछ ए संसारे, कृष्ण भजिवार तरे,
नित्य-तत्त्वे करह विलास।।
ए देहे यावत् स्थिति, कर कृष्णचन्द्रे रति,
कृष्णे जान, धन-जन-प्राण।
ए देह-अनुग यत, भाइ-बन्धु-पति-सुत,
अनित्य सम्बन्ध बलि' मान।।
केवा का'र पति-सुत, अनित्य-सम्बन्ध-कृत,
चाहिले राखिते नारे ता'रे।
करम-विपाक-फले, सुत ह'ये वैसे कोले,
कर्मक्षये आर रैते नारे।।
इते सुख-दुःख मानि', अधोगति लभे प्राणी,
कृष्णपद हैते पड़े दूरे।
शोक सम्वरिया एवे, नामानन्दे मज' सवे,
भकतिविनोद-वाञ्छा पूरे।।

(3)

धन, जन, देह, गेह कृष्णे समर्पण।
करियाछ, शुद्ध चित्ते करह स्मरण।।
तवे केन 'मम सुत' बलि' कर दुःख?
कृष्ण निल निज-जन ताहे ता'र सुख।।
कृष्ण-इच्छा-मते सब घटय घटना।
ताहे सुख-दुःख-ज्ञान अविद्या-कल्पना।।
याहा इच्छा करे कृष्ण, ताइ जान भाल।
त्यजिया आपन इच्छा घुचाओ जन्जाल।।

देय कृष्ण, नेय कृष्ण, पाले कृष्ण सबे।
राखे कृष्ण, मारे कृष्ण, इच्छा करे यबे।।
कृष्ण – इच्छा – विपरीत ये करे वासना।
ता'र इच्छा नाहि फले, से पाय यातना।।
त्यजिया सकल शोक शुन कृष्णनाम।
परम आनन्द पा'वे, पूर्ण ह'वे काम।।
भकतिविनोद मागे श्रीवास – चरणे।
आत्मनिवेदन – शक्ति जीवने – मरणे।।

(4)

सबु मेलि' बालक – भाग विचारि'।
छोड़बि मोह – शोक चित्तविकारी।।
चौद्द – भुवन – पति नन्दकुमारा।
शचीनन्दन भेल नदीया – अवतारा।।
सोहि गोकुलचाँद अंगने मोर।
नाचइ भक्त – सह आनन्द – विभोर।।
शुनत नामगान बालक मोर।
छोड़ल देह हरि – प्रीति – विभोर।।
ऐछन भाग यव भइ हामारा।
तवहुँ हउ भव – सागर – पारा।।
तुहुँ सबु विछरि' एहि विचारा।
काँहे करवि शोक चित्तविकारा।।
स्थिर नहि हओवि यदि उपदेशे।
वञ्चित हओवि रसे अवशेषे।।
पशिवुँ हाम सुर – तटिनी माहे।
भक्तिविनोद प्रमाद देखे ताहे।।

(5)

श्रीवास – वचन, श्रवण करिया, साध्वी पतिव्रतागण।
शोक परिहरि', मृत शिशु राखि', हरि – रसे दिल मन।।
श्रीवास तखन, आनन्देमातिया, अंगने आइल पुनः।
नाचे गोरा – सने, सकल पासरि, गाय नन्दसुत – गुण।।
चारि दण्ड रात्रे, मरिल कुमार, अंगने केह ना जाने।
श्रीनाम – मंगले, तृतीय – प्रहर, रजनी अतीत गाने।।
कीर्तन भांगिले, कहे गौरहरि, आजि केन पाइ दुःख?
बुझि, एइ गृहे, किछु अमंगल, घटिया हरिल सुख।।
तवे भक्तजन, निवेदन करे, श्रीवास – शिशुर कथा।
शुनि' गोराराय, बले, हाय हाय, मरमे पाइनु व्यथा।।
केह ना कहिले, आमारे तखन, विपद – संवाद – सवे।
भकतिविनोद, भक्त – वत्सल, स्नेहेते मजिल तवे।।

(6)

प्रभुर वचन, शुनिया तखन, श्रीवास लोटाञा भूमि।
बले, शुन नाथ! तव रसभंग, सहिते ना पारि आमि।।
एकटी तनय, मरियाछे नाथ, ताहे मोर किवा दुःख।
यदि सब मरे, तोमारे हेरिया, तबु त' पाइव सुख।।
तब नृत्यभंग, हइले आमार, मरण हइत, हरि!
ताइ कुसंवाद, नादिल तोमारे, विपद् आशंका करि'।।
एवे आज्ञा देह, मृत सुत ल'ये, सत्कार करुन सबे।
एतेक शुनिया, गोरा द्विजमणि, काँदिते लागिल तबे।।
केमने ए सबे, छाड़िया याइव, पराण विकल हय।
से – कथा शुनिया, **भकतिविनोद**, मनेते पाइल भय।।

(7)

गोराचाँदेर आज्ञा पे'ये, गृहवासिगण।
मृत सुते अंगनेते आने ततक्षण।।
कलि–मलहारी गोरा जिज्ञासे तखन।
श्रीवासे छाड़िया, शिशु, याओ कि कारण??
मृत शिशुमुखे जीव करे निवेदन—
''लोक–शिक्षा लागि' प्रभु, तव आचरण।।
तुमि त' परमतत्त्व अनन्त अद्वय।
पराशक्ति तोमार अभिन्न तत्त्व हय।।
सेइ परा शक्ति त्रिधा हइया प्रकाश।
तब इच्छामत कराय तोमार विलास।।
चिच्छक्ति–स्वरूपे नित्यलीला प्रकाशिया।
तोमारे आनन्द देन ह्लादिनी हइया।।
जीवशक्ति हञा तब चित्किरणचये।
तटस्थ–स्वभावे जीवगणे प्रकटये।।
मायाशक्ति हञा करे प्रपन्च सृजन।
बहिर्मुख–जीवे ताहे करय बन्धन।।''
भकतिविनोद बले अपराधफले।
बहिर्मुख ह'ये आछि प्रपन्च–कवले।।

(8)

''पूर्णचिदानन्द तुमि, तोमार चित्कण आमि,
स्वभावतः आमि तुया दास।
परम स्वतन्त्र तुमि, तुया परतन्त्र आमि,
तुया पद छाड़ि' सर्वनाश।।

स्वतन्त्र ह'ये यखन, माया-प्रति कैनु मन,
स्व-स्वभाव छाड़िल आमाय।
प्रपन्चे मायार बन्द्धे, पड़िनु कर्मेर धन्द्धे,
कर्मचक्रे आमारे फेलाय।।
माया तव इच्छामते, बाँधे मोरे ए जगते,
अदृष्ट-निर्बन्ध लौह-करे।
सेइ त' निर्बन्ध मोरे, आने श्रीवासेर घरे,
पुत्ररूपे मालिनी-जठरे।।
से-निर्बन्ध पुनराय, मोरे एवे ल'ये याय,
आमि त' थाकिते नारि आर।
तब इच्छा सुप्रबल, मोर इच्छा सुदुर्बल,
आमि जीव अकिन्चन छार।।
यथाय पाठाओ तुमि, अवश्य याइव आमि,
का'र केवा पुत्र-पति-पिता।
जड़ेर सम्बन्ध सब, ताहा नाहि सत्य लव,
तुमि जीवेर नित्य पालयिता।।
संयोग-वियोगे यिनि, सुख-दुःख मने गणि',
तब पदे छाड़ेन आश्रय।
मायार गर्द्दभ ह'ये, मजेन संसार ल'ये,''
भक्तिविनोदेर सेइ भय।।

(9)

''बाँधिल माया, येदिन ह'ते, अविद्या-मोह-डोरे।
अनेक जन्म, लभिनु आमि, फिरिनु माया-घोरे।।
देव-दानव, मानव-पशु, पतंग कीट ह'ये।

स्वर्गे नरके, भूतले फिरि, अनित्य आशा ल'ये।।
ना जानि किवा, सुकृति-बले, श्रीवास-सुत हैनु।
नदीया-धामे, चरण तव, दरश परश कैनु।।
सकल वारे, मरण-काले, अनेक दुःख पाइ।
तुया प्रसंगे, परम सुखे, एवार चले'याइ।।
इच्छाय तोर, जनम यदि, आबार हय, हरि।
चरणे तव, प्रेम-भकति, थाके मिनति करि।।''
यखन शिशु, नीरव भेल, देखिया प्रभुर लीला।
श्रीवास-गोष्ठी, त्यजिया शोक, आनन्द-मगन भेला।।
गौर-चरित, अमृत-धारा, करिते करिते पान।
भक्तिविनोद, श्रीवासे मागे, याय येन मोर प्राण।।

(10)

श्रीवासे कहेन प्रभु,—''तुहुँ मोर दास।
तुया प्रीते बाँधा आमि जगते प्रकाश।।
भक्तगण-सेनापति—श्रीवास-पण्डित।
जगते घुषुक आजि तोमार चरित।।
प्रपन्च-कारा-रक्षिणी मायार बन्धन।
तोमार नाहिक कभु, देखुक जगज्जन।।
धन, जन, देह, गेह आमारे अर्पिया।
आमार सेवार सुखे आछ सुखी हञा।।
मम लीलापुष्टि लागि' तोमार संसार।
शिखुक गृहस्थ-जन तोमार आचार।।
तव प्रेमे बद्ध आछि आमि, नित्यानन्द।
आमा-दुँहे सुत जानि' भुञ्जह आनन्द।।

नित्यसत्त्व सुत या'र, अनित्य तनये।
आसक्ति ना करे सेइ सृजने प्रलये।।
भक्तिते तोमार ऋणी आमि चिरदिन।
तब साधुभावे तुमि क्षम मोर ऋण।।''
श्रीवासेर पा-य **भक्तिविनोद** कुजन।
काकुति करिया मागे गौरांग-चरण।।

(11)

श्रीवासेर प्रति, चैतन्य-प्रसाद, देखिया सकल जन।
जय श्रीचैतन्य, जय नित्यानन्द, बलि' नाचे घन घन।।
श्रीवास-मन्दिरे, कि भाव उठिल, ताहा कि वर्णन हय।
भावयुद्ध-सने, आनन्द-क्रन्दन, उठे कृष्ण-प्रेममय।।
चारि भाइ पड़ि', प्रभुर चरणे, प्रेम-गदगद-स्वरे।
काँदिया काँदिया, काकुति करिया, गड़ि' याय प्रेमभरे।।
''ओहे प्राणेश्वर, ए हेन विपद, प्रतिदिन येन हय।
याहाते तोमार, चरण-युगले, आसक्ति बाड़िते रय।।
विपद-सम्पदे, सेइ दिन भाल, ये-दिन तोमारे स्मरि।
तोमार स्मरण-, रहित ये-दिन, से-दिन विपद, हरि।।''
श्रीवास-गोष्ठीर, चरणे पड़िया, **भक्तिविनोद** भणे।
तोमादेर गोरा, कृपा वितरिया, देखाओ दुर्गत जने।।

(12)

मृत शिशु ल'ये तवे भकतवत्सल।
भकत-संगेते गाय श्रीनाम-मंगल।।
गाइते गाइते गेला जाह्नवीर तीरे।

बालके सत्कार कैल जाह्नवीर नीरे।।
जाह्नवी बलेन, मम सौभाग्य अपार।
सफल हइल व्रत छिल ये आमार।।
मृत शिशु देन गोरा जाह्नवीर जले।
उथलि जाह्नवीदेवी शिशु लय कोले।।
उथलिया स्पर्शे गोरा – चरणकमल।
शिशु – कोले प्रेमे देवी हय टलमल।।
जाह्नवीर भाव देखि' यत भक्तगण।
श्रीनाम – मंगलध्वनि करे अनुक्षण।।
स्वर्ग हैते देवे करे पुष्प – वरिषण।
विमान – संकुल तवे छाइल गगन।।
एइरूपे नाना भावे हइया मगन।
सत्कार करिया स्नान कैल सर्वजन।।
परम – आनन्दे सबे गेल निज घरे।
भक्तिविनोद मजे गोरा – भावभरे।।

(श्रोतृगण – प्रति निवेदन)

नदीया – नगरे गोरा – चरित – अमृत।
पिया शोक – भय छाड़, स्थिर कर चित।।
अनित्य संसार, भाइ, कृष्णमात्र सार।
गोरा – शिक्षा – मते कृष्ण भज अनिवार।।
गोरार चरण धरि' येइ भाग्यवान्।
ब्रजे राधाकृष्ण भजे, सेइ मोर प्राण।।
'राधाकृष्ण – गोराचाँद', 'नदे – वृन्दावन'।
एइमात्र कर सार पा'वे नित्यधन।।

विद्या-बुद्धिहीन दीन अकिञ्चन छार।
कर्मज्ञान-शून्य आमि शून्य-सदाचार।।
श्रीगुरुवैष्णव मोरे दिलेन उपाधि।
भक्तिहीने उपाधि हइल एवे व्याधि।।
यतन करिया सेइ व्याधि-निवारणे।
शरण लइनु आमि वैष्णव-चरणे।।
वैष्णवेर पदरज मस्तके धरिया।
ए 'शोक-शातन' गाय **भक्तिविनोदिया**।।

बाउल-संगीत

[श्रील भक्तिविनोद ठाकुर, श्रीनिताइचाँद-श्रीगौराचाँद की शुद्ध-भक्ति रस में निमग्न होकर स्वयं को 'चाँद-बाउल' कहकर सम्बोधन कर रहे हैं।]

(1)

आमि तोमार दुःखेर दुःखी, सुखेर सुखी,
ताइ तोमारे बलि, भाइ रे।
निताइ-एर हाटे गिये (ओरे ओ भाइ)
नाम एनेछि तोमार तरे।।
गौरचन्द्र-मार्का करा, ए हरिनाम रसे भरा,
नामे नामी पड़्छे धरा, लओ यदि वदनभरे।।
पाप-ताप सब दूरे या'वे, सारमय संसार ह'वे,
आर कोन भय नाहि र'वे, डुब्वे सुखेर पाथारे।।
आमि कांगाल अर्थहीन, नाम एनेछि करे' ऋण,
देखे' आमाय अति दीन, श्रद्धामूल्ये देओ धरे'।।

मूल्य ल'ये तोमार ठाँइ, महाजनके दिव, भाइ,
ये किछु ताय लाभ पाइ, राख्बो निजेर भाण्डारे।।
नदीया–गोद्रुमे थाकि', **चाँद–बाउल** बलिछे डाकि',
'नाम बिना आर सकल फाँकि, छायाबाजी ए संसारे।।

(2)

धर्मपथे थाकि' कर जीवन यापन, भाइ।
हरिनाम कर सदा (ओरे ओ भाइ) हरि बिना बन्धु नाइ।।
ये–कोन व्यवसा धरि', जीवन निर्वाह करि',
बल मुखे 'हरि हरि', एइमात्र भिक्षा चाइ।।
गौरांगचरणे मज', अन्य–अभिलाष त्यज,
ब्रजेन्द्रनन्दने भज, तबे बड़ सुख पाइ।।
आमि **चाँद–बाउल** दास, करि तब कृपा–आश,
जानाइया अभिलाष, नित्यानन्द–आज्ञा गाइ।।

(3)

आसल कथा बल्ते कि।
तोमार केन्थाधरा, कप्नि' आँटा—सब फाँकि।।
धर्मपत्नी त्यजि' घरे, परनारी–संग करे,
अर्थलोभे द्वारे द्वारे फिरे', राख्ले कि बाकी।।
तुमि गुरु बल्छो, वटे, साधुगुरु निष्कपटे,
कृष्णनाम देन कर्णपुटे, से कि एमन हय मेकि??
येवा अन्य शिक्षा देय, ता'के कि 'गुरु' बल्ते हय?
दुधेर फल त' घोले नय, भेवे' चिन्ते देख देखि।।
शम–दम–तितिक्षा–बले, उपरति, श्रद्धा ह'ले,
तबे भेक, **चाँद–बाउल** बले, एँचड़े पेके'ह'वे कि??

(4)

'बाउल बाउल' बल्‌छ सबे, हच्छे बाउल कोन् जना।
दाड़ि–चूड़ा देखिये (ओ भाइ) कर्‌छे जीवके वन्चना।।
देहतत्त्व—जड़ेर तत्त्व, ता'ते कि छाड़ाय मायार गर्त्त?
चिदानन्द परमार्थ, जान्‌ते त' ताय पार्‌वे ना।।
यदि बाउल चाओरे ह'ते, तबे चल धर्मपथे,
योषित्संग सर्वमते छाड़ रे मनेर वासना।।
वेषभूषा–रंग यत, छाड़ि' नामे हओ रे रत,
निताइचाँदेर अनुगत, हओ छाड़ि' सब दुर्वासना।।
मुखे 'हरे कृष्ण' बल, छाड़ रे भाइ कथार छल,
नाम बिना त' सुसम्बल, **चाँद–बाउल** आर देखे ना।।

(5)

मानुष–भजन कर्‌छो, ओ भाइ, भावेर गान ध'रे।
गुप्त क'रे राख्‌छो भाल, व्यक्त ह'वे यमेर घरे।।
मेये हिज्‌ड़े पुरुष खोजा, तबे त' हय कर्ताभजा,
एइ छले कर्‌छो मजा, मनेर प्रति चोख ठेरे'।।
'गुरु सत्य' बल्‌छो मुखे, आछ त' भाइ, जड़ेर सुखे,
संग तोमार बहिर्मुखे, शुद्ध ह'वे केमन करे'??
योषित्संग–अर्थलोभे, मजे त' जीव चित्तक्षोभे,
बाउले कि से–सब शोभे, आगुन देखे' फड़िं मरे।।
चाँद–बाउल मिनति करि' बले—ओ सब परिहरि',
शुद्धभावे बल 'हरि', या'वे भवसागर–पारे।।

(6)

एओ त' एक कलिर चेला।
माथा नेड़ा, कप्नि परा, तिलक नाके, गलाय माला।।
देखते वैष्णवेर मत, आसल शाक्त काजेर बेला।
सहज-भजन कर्‌छेन मामु, संगे ल'ये परेर वाला।।
सखीभावे भज्‌छेन ता'रे, निजे ह'ये नन्दलाला।
कृष्णदासेर कथार छले महाजनके दिच्छेन शला।।
नव-रसिक आपने मानि', खाच्छेन आवार मन-कला।
बाउल बले, दोहाइ ओ भाइ, दूर कर ए लीलाखेला।।

(7)

(मन आमार) हुँसा'र थेको, भुल' नाक, शुद्ध सहज तत्त्वधने।
नइले मायार वशे, अवशेषे, काँदते ह'वे चिरदिने।।
शुद्धजीवे जड़ नाइ, भाइ, ठिक बुझ ताइ, निजे सखी (से) वृन्दावने।
से यखन कृष्णचन्द्रे भजे, सुखेते मजे, मधुर-रसे अनुक्षणे।।
जड़देहे तार साधनभक्ति, ज्ञान-विरक्ति, देहेर यात्रा धर्मभावे।
से गृहे थाके, वने वा थाके, मजिये डाके, 'कृष्ण' बले' एकमने।।
एकेइ त' बलि सहज-भजन, शुद्ध मन, कृष्ण पा'वार एक उपाय।
इहा छाड़ि' ये आरोप करे, सेइ त' मरे, तार त' नाहि भजन हय।।
चाँद-बाउलेर ए विश्वास, छोट-हरिदास, एकटु केवल विपथे चले।
शचीसुतेर कृपाय, दूर ह'ये, हाय, ना पाय आर गौरचरणे।।

(8)

मनेर माला जप्‌वि यखन, मन,
केन कर्‌वि बाह्य विसर्जन।

मने मने भजन यखन हय,
प्रेम उथ्ले पड़े' बाह्यदेहे व्याप्त ह'ये रय;
आवार देहे चरे, जपाय करे, धराय माला अनुक्षण।।
ये व्याटा भण्ड-तापस हय,
वक-विड़ाल देखा'ये बाह्य निन्दे अतिशय;
निजे जुत पेले, कामिनी-कनक, करे सदा संघटन।।
से व्याटार भितर फक्काकार,
बाह्य-साधन-निन्दा वइ आर आछे किवा ता'र;
(निजेर) मन भाल, देखा'ते गिये, निन्दे साधु-आचरण।।
शुद्ध करि' भितर बाहिर, भाइ,
हरिनाम कर्‌ते थाक, तर्के काज नाइ,
तोमार तर्क करते जीवन या'वे, चाँद-बाउल ताय दुःखी हन।

(९)

घरे व'से बाउल हओ रे मन,
केन कर्‌वि दुष्ट आचरण।।
मने मने राख्‌वि बाउल-भाव,
संग छाड़ि' धर्मभावे कर्‌वि विषय लाभ;
जीवन-यापन कर्‌वि, हरि-नामानन्दे सर्वक्षण।।
यतदिन हृदय-शोधन नय,
घर छाड़्ले परे 'मर्कट-वैरागी' ता'रे कय;
हृदय-दोषे, विपुर वशे, पदे पदे ता'र पतन।।
एँचड़े पाका वैरागी ये हय,
परेर नारी ल'ये पालेर गोदा ह'ये रय;

(आवार) अर्थलोभे, द्वारे द्वारे, करे नीचेर आराधन।।
घरे व'से पाकाओ निजेर मन,
आर सकल दिन कर हरिर नाम–संकीर्त्तन;
तवे, चाँद–बाउलेर संगे शेषे, कर्‌वि संसार विसर्जन।।

(10)

बलान् वैरागी ठाकुर, किन्तु गृहीर मध्ये वाहादुर।
आवार कप्नि करे', माला धरे', वहेन सेवादासीर धूर।।
अच्युतगोत्र–अभिमाने, भिक्षा करेन सर्वस्थाने,
टाका–पयसा गणि' ध्याने धारणा प्रचुर;
करि चुट्‌की भिक्षा, करेन शिक्षा, वणिग्‌वृत्ति पिण्डीशूर।।
बले ता'रे बाउल–चाँद, एटा तोमार गलार फाँद,
जीवेर एइ अपराध शीघ्र कर दूर;
यजि' गृहीर धर्म, सु–स्वधर्म, शुद्ध कर अन्तःपुर।।
न्यासि–मान–आशा त्यजि', दीनभावे कृष्णभजि',
स्वभावगत धर्म यजि', नाश' दोषांकुर;
तवे कृष्ण पा'वे, दुःख या'वे, ह'वे तुमि सुचतुर।।

(11)

केन भेकेर प्रयास?
हय अकाल–भेके सर्वनाश।
ह'ले चित्तशुद्धि, तत्त्वबुद्धि, भेक आपनि एसे' हय प्रकाश।।
भेक धरि' चेष्टा करे, भेकेर ज्वालाय शेषे मरे,
नेड़ानेड़ी छड़ाछड़ि आखड़ा बेँधे वास;

अकाल कुष्माण्ड, यत भण्ड, करछे जीवेर सर्वनाश।।

शुक, नारद, चतुःसन, भेकेर अधिकारी हन,

ता'देर समान पार्‌ले ह'ते भेके कर्‌वे आश;

वल—तेमन बुद्धि, चित्तशुद्धि, क'जन धराय कर्‌छे वास??

आत्मानात्म–सुविवेके, प्रेम–लताय चित्त–भेके,

भजन–साधन–वारि–सेके करह उल्लास;

चाँद–बाउल वले, एमन ह'ले, ह'ते पार्‌बे कृष्णदास।।

(12)

ह'ये विषये आवेश, पे'ले मन, यातना अशेष।

छाड़ि' राधाश्यामे, ब्रजधामे, भुग्‌छो हेथा नानाक्लेश।।

मायादेवीर कारागारे, निजेर कर्म–अनुसारे,

भूतेर वेगार खाट्‌ते खाटते जीवन कर्‌छ शेष;

करि''आमि–आमार', देहे आबार, कर्‌छ जड़ राग–द्वेष।।

तुमि शुद्ध चिदानन्द, कृष्णसेवा तो'र आनन्द,

पन्चभूतेर हाते पड़े' हये आछ एकटी मेष;

एखन साधुसंगे, चित्‌प्रसंगे, तोमार उपाय अवशेष।।

कनक–कामिनी–संग, छाड़ि' ओ भाइ मिछे रंग,

ग्रहण कर *बाउल–चाँदेर शुद्ध–उपदेश;

त्यजि' लुकोचुरि, बाउलगिरि, शुद्धरसे कर प्रवेश।।

(ख)

श्रीश्रीमद् भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज जी की आरति

जय जय गुरुदेव श्रीभक्तिप्रज्ञान।
परम मोहन रूप आर्त्त-विमोचन।।
मूर्त्तिमन्त श्रीवेदान्त अशुभ-नाशन।
"भक्तिग्रन्थ श्रीवेदान्त" तव विघोषण।।
वेदान्त समिति-दीपे श्रीसिद्धान्त-ज्योति।
आरति तोमार ताहे हय निरवधि।।
श्रीविनोदधारा-तैले दीप प्रपूरित।
रूपानुग-धूपे दशदिक् आमोदित।।
सर्वशास्त्र सुगम्भीर करुणा-कोमल।
युगपत सुशोभन बदन-कमल।।
स्वर्णकान्ति विनिन्दित श्रीअंग-शोभन।
यतिवास परिधाने जगत्-कल्याण।।
नाना छाँदे सज्जन चामर दुलाय।
गौरजन उच्चकण्ठे सुमधुर गाय।।
सुमंगल नीराजन करे भक्तगण।
दुरमति दूर हैते देखे त्रिविक्रम।।

(ग)

जगद्गुरु श्रीश्रील 'प्रभुपाद'
भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की आरति

जय जय प्रभुपादेर आरति नेहारि।
योगमायापुर – नित्यसेवा – दानकारी।।
सर्वत्र प्रचार – धूप सौरभ मनोहर।
बद्ध – मुक्त अलिकुल मुग्ध चराचर।।
भकति – सिद्धान्त – दीप ज्वालिया जगते।
पञ्चरस – सेवा – शिखा प्रदीप्त ताहाते।।
पञ्च महादीप यथा पञ्च महाज्योतिः।
त्रिलोक – तिमिर नाशे अविद्या – दुर्मति।।
भकतिविनोद – धारा जल – शंख – धार।
निरवधि बहे ताहा रोध नाहि आर।।
सर्ववाद्यमयी घन्टा बाजे सर्वकाल।
बृहत्मृदंग – वाद्य परम रसाल।।
विशाल ललाटे शोभे तिलक उज्ज्वल।
गलदेशे तुलसीमाला करे झलमल।।
आजानुलम्बित बाहु दीर्घ कलेवर।
तप्तकाञ्चन – वरण परम सुन्दर।।
ललित – लावण्यमुखे स्नेह – भरा हासि।
अंगकान्ति शोभे यैछे नित्य – पूर्णशशी।।
यतिधर्मे परिधाने अरुण वसन।
मुक्त कैल मेघावृत गौड़ीय – गगन।।
भकति – कुसुमे कत कुंज विरचित।
सौन्दर्य – सौरभे तार विश्व – विमोहित।।
सेवादर्शे नरहरि चामर ढुलाय।
केशव अति आनन्दे नीराजन गाय।।

(ग)

जगद्‌गुरु श्रीश्रील 'प्रभुपाद'
भक्तिसिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की आरति

जय जय प्रभुपादेर आरति नेहारि।
योगमायापुर–नित्यसेवा–दानकारी।।
सर्वत्र प्रचार–धूप सौरभ मनोहर।
बद्ध–मुक्त अलिकुल मुग्ध चराचर।।
भकति–सिद्धान्त–दीप ज्वालिया जगते।
पञ्चरस–सेवा–शिखा प्रदीप्त ताहाते।।
पञ्च महादीप यथा पञ्च महाज्योतिः।
त्रिलोक–तिमिर नाशे अविद्या–दुर्मति।।
भकतिविनोद–धारा जल–शंख–धार।
निरवधि बहे ताहा रोध नाहि आर।।
सर्ववाद्यमयी घन्टा बाजे सर्वकाल।
बृहत्‌मृदंग–वाद्य परम रसाल।।
विशाल ललाटे शोभे तिलक उज्ज्वल।
गलदेशे तुलसीमाला करे झलमल।।
आजानुलम्बित बाहु दीर्घ कलेवर।
तप्तकाञ्चन–वरण परम सुन्दर।।
ललित–लावण्यमुखे स्नेह–भरा हासि।
अंगकान्ति शोभे यैछे नित्य–पूर्णशशी।।
यतिधर्मे परिधाने अरुण वसन।
मुक्त कैल मेघावृत गौड़ीय–गगन।।
भकति–कुसुमे कत कुंज विरचित।
सौन्दर्य–सौरभे तार विश्व–विमोहित।।
सेवादर्शे नरहरि चामर दुलाय।
केशव अति आनन्दे नीराजन गाय।।

(घ)

मंगल – आरति

श्रीगौर – गोविन्द – आरति

(प्रभाती सुर)

(1)

मंगल श्रीगुरु – गौर मंगल मूरति।
मंगल श्रीराधाकृष्ण – युगल – पीरिति।।
मंगल निशान्त – लीला मंगल उदये।
मंगल आरति जागे भकत – हृदये।।
तोमार निद्राय जीव निद्रित धराय।
तब जागरणे विश्व जागरित हय।।
शुभ दृष्टि कर एवे जगतेर प्रति।
जागुक हृदये मोर सुमंगला रति।।
मयूर – शुकादि सारि कत पिकराज।
मंगल जागर – हेतु करिछे विराज।।
सुमधुर ध्वनि करे यत शाखिगण।
मंगल श्रवणे बाजे मधुर कूजन।।
कुसुमित सरोवरे कमल – हिल्लोल।
मंगल सौरभ बहे पवन – कल्लोल।।
झाँझर काँसर घण्टा शंख करताल।
मंगल मृदंग बाजे परम रसाल।।
मंगल आरति करे भकतेर गण।
अभागा केशव करे नाम – संकीर्त्तन।।

श्रीकृष्ण – चैतन्य प्रभु – नित्यानन्द।
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि – गौरभक्तवृन्द।।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।

श्रीगौर – आरति

(2)

मंगल आरति गौरकिशोर।
मंगल नित्यानन्द जोर हि जोर।।
मंगल अद्वैत भकतहि संगे।
मंगल गाओत प्रेम – तरंगे।।
मंगल बाजत खोल – करताल।
मंगल हरिदास नाचत भाल।।
मंगल धूपदीप लइया स्वरूप।
मंगल आरति करे अपरूप।।
मंगल गदाधर हेरि पँहु हास।
मंगल गाओत दीन कृष्णदास।।

श्रीयुगल – आरति

(3)

मंगल आरति युगलकिशोर।
जय जय करतहिँ सखीगण थोर।।
रतन प्रदीप करे टलमल घोर।
निरखत मुखविधु श्याम सुगोर।।

ललिता विशाखा सखी प्रेमे आगर।
करत निर्मंछन दोंहे दुँहु भोर।।
वृन्दावन–कुञ्जहि भुवन उजोर।
मूरति मनोहर युगल किशोर।।
गाओत शुक पिक, नाचत मयूर।
चाँद उपेखि मुख निरखे चकोर।।
बाजत विविध यन्त्र घन घोर।
श्यामानन्द आनन्दे बाजाय जय तोर।।

(ङ)

भोग–आरति

भज भकत–वत्सल श्रीगौरहरि।
श्रीगौरहरि सोहि गोष्ठबिहारी,
नन्द–यशोमती–चित्तहारी।।
बेला ह'ल दामोदर, आइस एखन।
भोग–मन्दिरे बसि' करह भोजन।।
नन्देर निर्देशे वैसे गिरिवरधारी।
बलदेवसह सखा वैसे सारि सारि।।
शुक्ता शाकादि भाजि नालिता कुष्माण्ड।
डालि डाल्ना दुग्धतुम्बी दधि मोचाखण्ड।।
मुद्‌गबड़ा माषबड़ा रोटिका घृतान्न।
शष्कुली पिष्टक क्षीर पुलि पायसान्न।।
कर्पूर अमृतकेलि रम्भा क्षीरसार।
अमृत रसाला, अम्ल द्वादशप्रकार।।

लुचि चिनि सरपुरी लाड्डू रसावली।
भोजन करेन कृष्ण ह'ये कुतूहली।।
राधिकार पक्व अन्न विविध व्यंजन।
परम आनन्दे कृष्ण करेन भोजन।।
छले–बले लाड्डू खाय श्रीमधुमंगल।
बगल बाजाय आर देय हरिबोल।।
राधिकादि–गणे हेरि' नयनेर कोणे।
तृप्त ह'ये खाय कृष्ण यशोदा–भवने।।
भोजनान्ते पिये कृष्ण सुवासित वारि।
सबे मुख प्रक्षालय ह'ये सारि सारि।।
हस्त–मुख प्रक्षालिया यत सखागणे।
आनन्दे विश्राम करे बलदेव–सने।।
'जाम्बुल' 'रसाल' आने ताम्बूल–मसाला।
ताहा खेये कृष्णचन्द्र सुखे निद्रा गेला।।
'विशालाक्ष' शिखिपुच्छ चामर ढुलाय।
अपूर्व शय्याय कृष्ण सुखे निद्रा याय।।
यशोमती–आज्ञा पेये धनिष्ठा–आनीत।
श्रीकृष्णप्रसाद राधा भुञ्जे ह'ये प्रीत।।
ललितादि सखीगण अवशेष पाय।
मने मने सुखे राधाकृष्ण–गुण गाय।।
हरिलीला एकमात्र याँहार प्रमोद।
भोगारति गाय सेइ भकतिविनोद।।

(च)
सन्ध्यारति

(1)
श्रीगौर – आरति

जय जय गोराचाँदेर आरतिको शोभा।
जाह्नवी – तटवने जगमन – लोभा।।
दक्षिणे निताइचाँद, वामे गदाधर।
निकटे अद्वैत, श्रीनिवास छत्रधर।।
बसियाछे गोराचाँद रत्न – सिंहासने।
आरति करेन ब्रह्मा – आदि देवगणे।।
नरहरि – आदि करि' चामर ढुलाय।
सञ्जय – मुकुन्द – वासुघोष – आदि गाय।।
शंख बाजे, घण्टा बाजे, बाजे करताल।
मधुर मृदंग बाजे परम रसाल।।
बहुकोटी चन्द्र जिनि' बदन उज्ज्वल।
गलदेशे वनमाला करे झलमल।।
शिव – शुक – नारद प्रेमे गदगद।
भकतिविनोद देखे गोरार सम्पद।।

(2)
श्रीयुगल – आरति

जय जय राधाकृष्ण – युगल मिलन।
आरति करये ललितादि सखीगण।।
मदनमोहन – रूप त्रिभंगसुन्दर।

पीताम्बर शिखिपुच्छ चूड़ा – मनोहर।।
ललितमाधव – वामे वृषभानु – कन्या।
नीलवसना गौरी रूपे गुणे धन्या।।
नानाविध अलंकार करे झलमल।
हरिमनो – विमोहन बदन उज्ज्वल।।
विशाखादि सखीगण नाना रागे गाय।
प्रियनर्मसखी यत चामर ढुलाय।।
श्रीराधामाधव – पद – सरसिज – आशे।
भकतिविनोद सखीपदे सुखे भासे।।

(3)

श्रीगौर – गोविन्द – आरति

भाले गोरा – गदाधरेर आरति नेहारि।
नदीया – पूरव – भावे याँउ बलिहारी।।
कल्पतरु – तले रत्न – सिंहासनोपरि।
सबु सखी – वेष्टित किशोर – किशोरी।।
पुरट – जड़ित कत मणि – गजमति।
झमकि' झमकि' लभे प्रति अंग – ज्योतिः।।
नील नीरद लागि' विद्युत – माला।
दुँहु अंग मिलि' शोभा भुवन उजाला।।
शंख बाजे, घण्टा बाजे, बाजे करताल।
मधुर मृदंग बाजे परम रसाल।।
विशाखादि सखीवृन्द दुँहु गुण गाओये।
प्रियनर्म्मसखीगण चामर ढुलाओये।।
अनंगमञ्जरी चुया – चन्दन देओये।

मालतीर माला रूपमञ्जरी लागाओये।।
पञ्चप्रदीपे धरि' कर्पूरबाति।
ललिता – सुन्दरी करे युगल – आरति।।
देवी, लक्ष्मी, श्रुतिगण धरणी लौटाओये।
गोपीजन – अधिकार रोओयत गाओये।।
भकतिविनोद रहि' सुरभीकि कुञ्जे।
आरति – दरशने प्रेम – सुख भुञ्जे।।

(4)

श्रीराधारानी जी की आरति

जय जय राधेजीको शरण तोंहारि।
ऐछन आरति याओ बलिहारी।।
पाट पटाम्बर उड़े नील शाड़ी।
सिँथिपर सिन्दुर याइ बलिहारी।।
वेश बनाओत प्रिय सहचरी।
रतन सिंहासने बैठल गौरी।।
रतने जड़ित मणि माणिक मोति।
झलकत आभरण प्रति अंगे ज्योति।।
चुया चन्दन अंगे देइ ब्रजबाला।
कत कोटी चन्द्र जिनि बदन उजला।।
चौदिके सखीगण देइ करतालि।
आरति करतँहि ललिता पियारी।।
नव नव ब्रजवधू मंगल गाओये।
प्रिय नर्मसखीगण चामर ढुलाओये।।
राधापद – पंकज सेवनकि आशा।
दास मनोहर करत भरसा।।

(5)

श्रीमदनगोपाल जी की आरति

हरत सकल सन्ताप जनमको,
मिटत तलप यम काल कि।
आरति किये जय जय मदनगोपाल कि।।

गोघृत रचित कर्पूर कि बाति,—
झलकत कान्चन थाल कि।
आरति किये जय जय मदनगोपाल कि।।

चन्द्र कोटी, कोटी भानु कोटी छवि,
मुखशोभानन्द दुलाल कि।
आरति किये जय जय मदनगोपाल कि।।

चरणकमलपर नूपुर राज,
अंजलि कुसुम गुलाल कि।
आरति किये जय जय मदनगोपाल कि।।

मयूर मुकुट पीताम्बर शोभे,
उड़े दोले बैजयन्तीमाल कि।
आरति किये जय जय मदनगोपाल कि।।

सुन्दर लोल कपोलन किये छवि,
निरखत मदनगोपाल कि।
आरति किये जय जय मदनगोपाल कि।।

सुरनर मुनिगण करतहिँ आरति,
भकत–वत्सल प्रतिपाल कि।
आरति किये जय जय मदनगोपाल कि।।

बाजे घण्टा ताल मृदंग झाझरि,
बाजत वेणु रसाल कि।
आरति किये जय जय मदनगोपाल कि।।

हुँ हुँ बलि बलि रघुनाथदास गोस्वामी,
मोहन गोकुललाल कि।
आरति किये जय जय मदनगोपाल कि।।

(छ)
श्रीतुलसी–आरति

'नमो नमः तुलसी कृष्ण–प्रेयसी' (नमो नमः)।
राधाकृष्ण–नित्यसेवा—'एइ अभिलाषी'।।
'ये तोमार शरण लय', सेइ कृष्णसेवा पाय,
'कृपा करि' कर तारे वृन्दावनवासी।'
तुलसी कृष्ण–प्रेयसी (नमो नमः)।।

तोमार चरणे धरि, मोरे अनुगत करि',
गौरहरि–सेवा–मग्न राख दिवानिशि।
तुलसी कृष्ण–प्रेयसी (नमो नमः)।।

दीनेर एइ अभिलाष, मायापुरे/नवद्वीपे दिओ वास,
अंगेते माखिब सदा धाम–धूलिराशि।
तुलसी कृष्ण–प्रेयसी (नमो नमः)।।

तोमार आरति लागि', धूप, दीप, पुष्प मागि,
महिमा बाखानि एबे—हओ मोरे खुशी।
तुलसी कृष्ण–प्रेयसी (नमो नमः)।।

जगतेर यत फूल, कभु नहे समतुल,
सर्वत्यजि' कृष्ण तव मंजरी–विलासी।
तुलसी कृष्ण–प्रेयसी (नमो नमः)।।

ओगो वृन्दे महाराणी!
तोमार पादप–तले, देव–ऋषि कुतूहले,
सर्वतीर्थ ल'ये ताँ'रा हन अधिवासी।
तुलसी कृष्ण–प्रेयसी (नमो नमः)।।

श्रीकेशव अतिदीन, साधन–भजन–हीन,
तोमार आश्रये सदा नामानन्दे भासि।
तुलसी कृष्ण–प्रेयसी (नमो नमः)।।

(अधिकार-भेद)

(ख)

नमो नमः तुलसी कृष्ण-प्रेयसी ।
राधाकृष्ण-पदसेवा एइ अभिलाषी।।
ये तोमार शरण लय, तार वाँछा पूर्ण हय,
कृपा करि' कर तारे वृन्दावनवासी।।
एइ निवेदन धर, सखीर अनुगत कर,
राधाकृष्ण-सेवा दिया कर निजदासी।।
मोर एइ अभिलाष, विलासकुँजे दिओ वास,
नयने हेरिब सदा युगलरूपराशि।।
दीन कृष्णदास कय, मोर येन एइ हय,
श्रीराधागोविन्द-प्रेमे सदा येन भासि।।

श्रीमन्महाप्रभु के द्वारा हरिवासर-व्रत-पालन

श्रीहरिवासरे हरि-कीर्त्तन-विधान।
नृत्य आरम्भिला प्रभु जगतेर प्राण।।
पुण्यवन्त श्रीवास-अंगने शुभारम्भ।
उठिल कीर्त्तन-ध्वनि 'गोपाल' 'गोविन्द'।।
मृदंग-मन्दिरा बाजे शंख-करताल।
संकीर्त्तन-संगे सब हइल मिशाल।।
ब्रह्माण्ड भेदिल ध्वनि पूरिया आकाश।
चौदिकेर अमंगल याय सब नाश।
ऊषःकाल हैते नृत्य करे विश्वम्भर।
यूथ यूथ हैल यत गायन सुन्दर।।

श्रीवास – पण्डित लञा एक सम्प्रदाय।
मुकुन्द लइया आर जन कत गाय।।
लइया गोविन्द घोष आर कत – जन।
गौरचन्द्र – नृत्ये सबे करेन कीर्त्तन।।
धरिया बुलेन नित्यानन्द महाबली।
अलक्षिते अद्वैत लयेन पदधूलि।।
गदाधर – आदि यत सजल नयने।
आनन्दे विह्वल हैल प्रभुर कीर्त्तने।।
यखन उद्दण्ड नाचे प्रभु विश्वम्भर।
पृथिवी कम्पित हय सबे पाय डर।।
कखनो वा मधुर नाचये विश्वम्भर।
येन देखि नन्देर नन्दन नटवर।।
अपरूप कृष्णावेश, अपरूप नृत्य।
आनन्दे नयन भरि देखे सब भृत्य।।
निजानन्दे नाचे महाप्रभु विश्वम्भर।
चरणेर ताल शुनि अति मनोहर।।
भाव – भरे माला नाहि रहये गलाय।
छिन्डिया पड़ये गिया भकतेर पाय।।
चतुर्द्दिके श्रीहरि – मंगल – संकीर्त्तन।
माझे नाचे जगन्नाथ – मिश्रेर नन्दन।।
याँ'र नामानन्दे शिव वसन ना जाने।
याँ'र यशे नाचे शिव, से नाचे आपने।।
याँर नामे वाल्मीकि हइला तपोधन।
याँ'र नामे अजामिल पाइल मोचन।।

याँ'र नाम–श्रवणे संसार–बन्ध घुचे।
हेन प्रभु अवतरि' कलियुगे नाचे।।
याँ'र नाम गाइ' शुक–नारद वेड़ाय।
सहस्र–वदन प्रभु याँ'र गुण गाय।।
सर्व–महा–प्रायश्चित्त ये प्रभुर नाम।
से–प्रभु नाचये, देखे यत भाग्यवान्।।
प्रभुर आनन्द देखि' भागवतगण।
अन्योन्ये गला धरि' करये क्रन्दन।।
सबार अंगेते शोभे श्रीचन्दन–माला।
आनन्दे गायेन कृष्ण–रसे हइ' भोला।।
यतेक वैष्णव सब कीर्त्तन–आवेशे।
ना जाने आपन देह, अन्य जन किसे।।
''जय कृष्ण–मुरारि–मुकुन्द–वनमाली।''
अहर्निश गाय सबे हइ' कुतूहली।।
अहर्निश भक्त–संगे नाचे विश्वम्भर।
श्रान्ति नाहि कारो, सबे सत्त्व–कलेवर।।
एइमत नाचे महाप्रभु विश्वम्भर।
निशि अवशेष मात्र से एक प्रहर।।
एइमत आनन्द हय नवद्वीप पुरे।
प्रेमरसे बैकुण्ठेर नायक विहरे।।
ए–सकल पुण्य कथा ये करे श्रवण।
भक्तसंगे गौरचन्द्रे रहु ता'र मन।।
श्रीकृष्णचैतन्य–नित्यानन्दचाँद जान।
वृन्दावन दास तछु पदयुगे गान।।

व्रत – पारण के समय
महाप्रसाद – सम्मान – विचार

एकदिन गौरहरि, श्रीगुण्डिचा परिहरि,
'जगन्नाथवल्लभे' वसिला।
शुद्धा एकादशी दिने, कृष्णनाम – सुकीर्त्तने,
दिवस – रजनी काटाइला।।
संगे स्वरूपदामोदर, रामानन्द, वक्रेश्वर,
आर यत क्षेत्रवासिगण।
प्रभु बले, "एकमने, कृष्णनाम – संकीर्त्तने,
निद्राहार करिये वर्जन।।
केह कर संख्यानाम, केह दण्ड – परणाम,
केह बल रामकृष्ण कथा।"
यथा तथा पड़ि' सबे, 'गोविन्द' 'गोविन्द' रवे,
महाप्रेमे प्रमत्त सर्वथा।।
हेनकाले गोपीनाथ, पड़िछा सार्वभौम – साथ,
गुण्डिचा – प्रसाद लञा आइल।
अन्नव्यंजन, पिठा, पाना, परमान्न, दधि, छाना,
महाप्रभु – अग्रेते धरिल।।
प्रभुर आज्ञाय सबे, दण्डवत् पड़ि' तवे,
महाप्रसाद वन्दिया वन्दिया।
त्रियामा रजनी सवे, महाप्रेमे मग्नभावे,
अकैतवे नामे काटाइया।।
प्रभु – आज्ञा शिरे धरि', प्रातःस्नान सबे करि',
महाप्रसाद – सेवाय पारण।

करि' हृष्ट चित्त सवे, प्रभुर चरणे तवे,
करयोड़े करे निवेदन।।
"सर्वव्रत-शिरोमणि, श्रीहरिवासरे जानि,
निराहारे करि जागरण।
जगन्नाथ-प्रसादान्न, क्षेत्रे सर्वकाले मान्य,
पाइलेइ करिये भक्षण।।
ए संकटे क्षेत्रवासे, मने हय बड़ त्रासे,
स्पष्ट आज्ञा करिये प्रार्थना।
सर्ववेद आज्ञा तव, याहा माने ब्रह्मा-शिव,
ताहा दिया घुचाओ यातना।।"
प्रभु बले, 'भक्ति-अंगे, एकादशी मान-भंगे,
सर्वनाश उपस्थित हय।
प्रसाद-पूजन करि', परदिने पाइले तरि,
तिथि परदिन नाहि रय।।
श्रीहरिवासर-दिने, कृष्णनाम-रसपाने,
तृप्त हय वैष्णव सुजन।
अन्य रस नाहि लय, अन्य कथा नाहि कय,
सर्वभोग करये वर्जन।।
प्रसाद-भोजन नित्य, शुद्ध वैष्णवेर कृत्य,
अप्रसाद ना करे भक्षण।
शुद्धा एकादशी यवे, निराहार थाके तवे,
पारणेते प्रसाद-भोजन।।
अनुकल्प-स्नानमात्र, निरन्न प्रसादपात्र,
वैष्णवके जानिह निश्चित।

अवैष्णव जन या'रा, प्रसाद-छलेते ता'रा,
भोगे हय दिवानिशि रत।
पाप-पुरुषेर संगे, अन्नाहार करे रंगे,
नाहि माने हरिवासर-व्रत।।
भक्ति-अंग सदाचर, भक्तिर सम्मान कर,
भक्तिदेवी-कृपा-लाभ हवे।
अवैष्णव-संग छाड, एकादशी-व्रत धर,
नाम-व्रते एकादशी तवे।।
प्रसादसेवन आर श्रीहरिवासरे।
विरोध ना कर कभु बुझह अन्तरे।।
एक अंग माने, आर अन्य अंगे द्वेष।
ये करे—निर्बोध सेइ जानह विशेष।।
ये-अंगेर येइ देश-काल-विधि-व्रत।
ताहाते एकान्तभावे हओ भक्तिरत।।
सर्व अंगेर अधिपति ब्रजेन्द्रनन्दन।
याहे तेंह तुष्ट, ताहा करह पालन।।
एकादशी-दिने निद्राहार-विर्सजन।
अन्य दिने प्रसाद-निर्माल्य सुसेवन।।
श्रीनामभजन आर एकादशी-व्रत।
एकतत्त्व नित्य जानि' हओ ताहे रत।।''

(श्रीप्रेमविवर्त्त)

श्रीमहाप्रसाद–माहात्म्य–कीर्त्तन

"महाप्रसादे गोविन्दे नाम ब्रह्मणि वैष्णवे।
स्वल्पपुण्यवतां राजन् विश्वासो नैव जायते।।"

(1)

भाइरे!
शरीर अविद्या–जाल, जड़ेन्द्रिय ताहे काल,
जीवे फेले विषय–सागरे।
ता'र मध्ये जिह्वा अति, लोभमय सुदुर्मति,
ता'के जेता कठिन संसारे।।
कृष्ण बड़ दयामय, करिवारे जिह्वा जय,
स्वप्रसाद–अन्न दिला भाइ।
सेइ अन्नामृत पाओ, राधाकृष्ण–गुण गाओ,
प्रेमे डाक चैतन्य–निताइ।।

(2)

भाइरे!
एकदिन शान्तिपुरे, प्रभु अद्वैतेर घरे,
दुइ प्रभु भोजने वसिल।
शाक करि' आस्वादन, प्रभु बले,—"भक्तगण,
एइ शाक कृष्ण आस्वादिल।।
हेन शाक आस्वादने, कृष्णप्रेम आइसे मने,
सेइ प्रेमे कर आस्वादन।
जड़बुद्धि परिहरि, प्रसाद भोजन करि',
हरि हरि बल सर्वजन।।"

(3)

भाइरे!

शचीर अंगने कभु, माधवेन्द्रपुरी प्रभु,
प्रसादान्न करेन भोजन।
खाइते खाइते ताँ'र, आइल प्रेम सुदुर्वार,
बले— "शुन, सन्यासीर गण।।
मोचा – घन्ट फुलवड़ि, डालि – डाल्ना – चच्चड़ि,
शचीमाता करिल रन्धन।
ताँ'र शुद्धा भक्ति हेरि', भोजन करिल हरि,
सुधा – सम ए अन्न – व्यंजन।।
योगे योगी पाय याहा, भोगे आज ह'वे ताहा,
हरि बलि' खाओ सवे भाइ।
कृष्णेर प्रसाद अन्न, त्रिजगत् करे धन्य,
त्रिपुरारि नाचे याहा पाइ।।"

(4)

भाइरे!

श्रीचैतन्य – नित्यानन्द, श्रीवासादि भक्तवृन्द,
गौरीदास – पण्डितेर घरे।
लुचि, चिनि, क्षीर, सर, मिठाइ, पायस आर,
पिठापाना आस्वादन करे।।
महाप्रभु भक्तगणे, परम आनन्द – मने,
आज्ञा दिल करिते भोजन।
कृष्णेर प्रसाद – अन्न, भोजने हइया धन्य,
कृष्ण बलि' डाके सर्वजन।।

(5)

भाइरे!

एकदिन नीलाचले, प्रसाद सेवन–काले,
महाप्रभु श्रीकृष्णचैतन्य।
बलिलेन,— "भक्तगणे, खेचरान्न शुद्धमने,
सेवा करि' हओ आज धन्य।।
खेचरान्न पिठापाना, अपूर्व प्रसाद नाना,
जगन्नाथ दिल तोमा सवे।
आकण्ठ भोजन करि', बल मुखे हरि हरि,
अविद्या–दुरित नाहि रवे।।
जगन्नाथ–प्रसादान्न, विरिन्चि–शम्भुर मान्य,
खाइले प्रेम हइवे उदय।
एमन दुर्लभ धन, पाइयाछ सर्वजन,
जय जय जगन्नाथ जय।।"

(6)

भाइरे!

रामकृष्ण गोचारणे, याइवेन दूर वने,
एत चिन्ति' यशोदा–रोहिणी।
क्षीर, सर, छाना, ननी, दु'जने खाओयान आनि',
वात्सल्ये आनन्द मने गणि'।।
वयस्य राखालगणे, खाय राम–कृष्ण सने,
नाचे गाय आनन्द अन्तरे।
कृष्णेर प्रसाद खाय, उदर भरिया याय,
'आर देओ' 'आर देओ' करे।।

(श्रील भक्तिविनोद ठाकुर)

जीव की दुर्गति एवं साधुसंग में निस्तार

चित्कण जीव, कृष्ण चिन्मय भास्कर।
नित्य कृष्ण देखि' कृष्णे करेन आदर।।
कृष्ण बहिर्मुख हइया भोगवान्छा करे।
निकटस्थ माया तारे जापटिया धरे।।
पिशाची पाइले येन मतिच्छन्न हय।
मायाग्रस्त जीवेर हय से–भाव उदय।।
'आमि सिद्ध कृष्णदास'—एइ कथा भुले'।
मायार नफर हञा चिरदिन बुले।।
कभु राजा, कभु प्रजा, कभु विप्र, शूद्र।
कभु दुःखी, कभु सुखी, कभु कीट क्षुद्र।।
कभु स्वर्गे, कभु मर्त्त्ये, नरके वा कभु।
कभु देव, कभु दैत्य, कभु दास प्रभु।।
एइरूपे संसार भ्रमिते कोनजन।
साधुसंगे निजतत्त्व अवगत हन।।
निजतत्त्व जानि' आर संसार ना चाय।
'केन वा भजिनु माया'—करे हाय हाय।।
केंदे बले,—'ओहे कृष्ण, आमि तव दास।
तोमार चरण छाड़ि' हैल सर्वनाश।।''
काकुति करिया कृष्णे यदि डाके एकबार।
कृपा करि' कृष्ण ता'रे छाड़ान संसार।।
मायाके पिछने राखि' कृष्णपाने चाय।
भजिते भजिते कृष्ण–पादपद्म पाय।।

कृष्ण ता'रे देन निज चिच्छक्तिर बल।
माया आकर्षण छाड़े हइया दुर्बल।।
'साधुसंगे कृष्णनाम'—एइमात्र चाइ।
संसार जिनिते आर कोन वस्तु नाइ।।

श्रीनामभजन-प्रणाली

असाधु-संगे भाइ, कृष्णनाम नाहि हय।
नामाक्षर वाहिराय वटे, तबु नाम कभु नय।।
कभु नामाभास हय, सदा नाम-अपराध।
एसब जानिबे भाइ कृष्णभक्तिर बाध।।
यदि करिवे कृष्णनाम, साधुसंग कर।
भुक्ति-मुक्ति-सिद्धिवांछा दूरे परिहर।।
'दश अपराध' त्यज, मान-अपमान।
अनासक्त्ये विषय भुंज, आर लह कृष्णनाम।।
कृष्णभक्तिर अनुकूल-सब करह स्वीकार।
कृष्णभक्तिर प्रतिकूल-सब कर परिहार।।
ज्ञान-योग-चेष्टा छाड़, आर कर्मसंग।
मर्कट-वैराग्य त्यज, याते देहरंग।।
'कृष्ण आमाय पाले, राखे', जान सर्वकाल।
आत्मनिवेदन-दैन्ये घुचाओ जंजाल।।
साधु पाओया कष्ट बड़ जीवेर जानिया।
साधु-भक्तरूपे कृष्ण आइल नदीया।।
गोरापद आश्रय करह बुद्धिमान्।
गोरा वइ साधु-गुरु आछे केवा आन्।।

गृहस्थ और वैरागी के प्रति आदेश

गृहस्थ – वैरागी—दुँहे बले गोराराय।
देख भाइ! नाम बिना (येन) दिन नाहि याय।।
बहु अंग – साधने भाइ नाहि प्रयोजन।
कृष्णनामाश्रये शुद्ध करह जीवन।।
बद्धजीवे कृपा करि', कृष्ण हैल 'नाम'।
कलि – जीवे दया करि', कृष्ण हैल गौरधाम।।
एकान्त सरलभावे भज गौरजन।
तबे त' पाइवे भाइ श्रीकृष्णचरण।।
गौरजन संग कर 'गौरांग' बलिया।
'हरे कृष्ण' नाम बल नाचिया नाचिया।।
अचिरे पाइवे भाइ नाम – प्रेमधन।
याहा बिलाइते प्रभुर नदे' आगमन।।

विशुद्ध वैरागी और उनका कर्त्तव्य

विशुद्ध वैरागी करे नाम – संकीर्त्तन।
मागिया खाइया करे जीवन यापन।।
वैरागी हैया येवा करे परापेक्षा।
कार्यसिद्धि नहे, कृष्ण करेन उपेक्षा।।
वैरागी हइया करे जिह्वार लालस।
परमार्थ याय, आर हय रसेर वश।।
वैरागी करिवे सदा नाम – संकीर्त्तन।
शाक – पत्र – फल – मूले उदर भरण।।
जिह्वार लालसे येइ समाजे वेड़ाय।

शिश्नोदर–परायण कृष्ण नाहि पाय।।
वैरागी भाइ ग्राम्यकथा, ना शुनिवे काणे।
ग्राम्यवार्त्ता ना कहिवे यवे मिलिवे आने।।
स्वपनेओ ना कर भाइ स्त्री–सम्भाषण।
गृहे स्त्री छाड़िया भाइ आसियाछ वन।।
यदि चाह प्रणय राखिते गौरांगेर सने।
छोट हरिदासेर कथा थाके येन मने।।
भाल ना खाइबे, आर भाल ना परिबे।
हृदयेते राधाकृष्ण सर्वदा सेविवे।।
बड़ हरिदासेर न्याय कृष्णनाम बलिवे वदने।
अष्टकाल राधाकृष्ण सेविवे कुंजवने।।

सरल–मन से 'गोरा'–भजन और कपट–भजन

गोरा भज, गोरा भज, गोरा भज भाइ।
गोरा बिना ए जगते गुरु आर नाइ।।
यदि भजिवे गोरा, सरल कर निज मन।
कुटिनाटि छाड़ि' भज गोरार चरण।।
मनेर कथा गोरा जाने, फाँकि केमने दिवे।
सरल ह'ले गोरार शिक्षा बुझिया लइवे।।
आनेर मन राखिते गिया आपनाके दिवे फाँकि।
मनेर कथा जाने गोरा केमने हृदय ढाकि।।
गोरा बले,— आमार मत करह चरित।
आमार आज्ञा पालन कर, चाह यदि हित।।
'गोरार आमि, गोरार आमि', मुखे बलिले नाहि चले।

गोरार आचार, गोरार विचार, लइले फल फले।।
लोक देखान गोरा–भजा तिलक–मात्र धरि'।
गोपनेते अत्याचार गोरा धरे चुरि।।
अध:पतन ह'वे भाइ कैले कुटिनाटि।
नाम–अपराधे तोमार भजन ह'वे माटि।।
नाम लञा ये करे पाप, हय अपराध।
एर मत आर किवा आछे भक्तिबाध??
नाम करिते कष्ट नाइ, नाम सहज धन।
ओष्ठ–स्पन्दनमात्रे हय नामेर कीर्त्तन।
ताहाओ ना हय यदि, हय नामेर स्मरण।।
तुण्ड बन्धे, चित्त भ्रंशे, श्रवण तबु हय।
सर्वपापक्षये जीवेर मुख्य फलोदय।।
बहुजन्म अर्चनेते एइ फल धरे।
कृष्णनाम निरन्तर तुण्डे नृत्य करे।।
कर्म–ज्ञान–योगादिर सेइ शक्ति नहे।
विधिभंग–दोषे फलहीन, शास्त्रे कहे।।
से–सब छाड़ भाइ, नाम कर सार।
अति अल्पदिने तबे जिनिवे संसार।।

(श्रीप्रेमविवर्त्त)

हिन्दी–कीर्तन

गुरु–चरणकमल भज मन।

गुरुकृपा बिना नाहि कोइ साधन बल, भज मन भज अनुक्षण।।

मिलता नाहि ऐसा दुर्लभ–जनम, भ्रमतहूँ चौदह भुवन।

किसी को मिलते हैं अहो भाग्य से, हरिभक्तों के दरशन।।

कृष्ण–कृपा की आनन्द मूर्ति, दीनजन करुणा निदान।

भक्ति–भाव–प्रेम—तीनों प्रकाशत, श्रीगुरु पतित पावन।।

श्रुति–स्मृति ओर पुरानन माहिं, कीनो स्पष्ट प्रमाण।

तन–मन–जीवन, गुरु पदे अर्पण, श्रीहरिनाम रटन।।

जय शचीनन्दन, जय गौरहरि।

विष्णुप्रिया–प्राणधन, नदीया–बिहारी।।

जय शचीनन्दन, गौर गुणाकार।

प्रेम–परशमणि, भाव–रस–सागर।।

जय गोविन्द, जय गोपाल, केशव, माधव, दीनदयाल।

श्यामसुन्दर कन्हैयालाल, गिरिवरधारी नन्ददुलाल।।

अच्युत, केशव, श्रीधर माधव, गोपाल, गोविन्द, हरि।

यमुना पुलिनमें वंशी बजावे, नटवर वेशधारी।

अब तो हरिनाम लौ लागि।

सब जग को यह माखन चौरा, नाम धर्‌यो वैरागी।।

कित छोड़ी वह मोहन मुरली, कित छोड़ी यब गोपी।

मूँड़ मुड़ाई डोरि कटि बाँधि, माथे मोहन टोपी।।
मात यशोमति माखन कारण, बाँधे जाके पाँव।
श्यामकिशोर भयो नव गोरा, चैतन्य जाको नाम।।
पीताम्बर को भाव दिखावे, कटि कोपीन कसे।
गौर–कृष्ण की दासी **मीरा**, रसना कृष्ण बसे।।

मदन गोपाल शरण तेरी आयो।
चरण कमल की सेवा दीजो,
चेरो करि राखो घर जायो।।
धन्य धन्य मात पिता सुत बन्धू,
धन्य जननी जिन गोद खिलायो।
धन्य धन्य चरण चलत तीर्थ को,
धन्य गुरु जिन हरिनाम सुनायो।।
जे नर विमुख भय गोविन्द सों,
जन्म अनेक महादुःख पायो।
'**श्रीभट्ट**' के प्रभु दियो अभय–पद,
यम डरप्यो जब दास कहायो।।

भज गोविन्द, भज गोविन्द, भज गोविन्द का नाम रे।
गोविन्द के नाम बिना, तेरे कोई न आवे काम रे।।
ये जीवन सुख दुःख का मेला,
दुनियादारी स्वप्न का खेला।।
जाना तुझको पड़ेगा अकेला,
भज ले हरि का नाम रे।।
गोविन्द की महिमा गाके,

प्रेम के उस पर फाग लगाके।
जीवन अपना सफल बना ले,
चल ईश्वर के धाम रे।।

सुन्दर लाला शचीर–दुलाला, नाचत श्रीहरि–कीर्तन में।
भाले चन्दन तिलक मनोहर, अलका शोभे कपोलन में।।
शिरे चूड़ा दरश निराले, वन फूलमाला हिया पर डोले।
पहिरन पीत–पटाम्बर शोभे, नूपुर रुणुझुनु चरणों में।।
कोई गावत है राधा–कृष्णनाम, कोई गावत है हरि–गुणगान।
मृदंग ताल मधुर रसाल, कोई गावत है रंग में।।
सुन्दर लाला शचीर–दुलाला, नाचत श्रीहरि–कीर्तन में।

आली! म्हाने लागे वृन्दावन नीको,
घर घर तुलसी, ठाकुर पूजा, दर्शन गोविन्दजी को।
आली! म्हाने लागे वृन्दावन नीको।।
निर्मल नीर बहत यमुना को, भोजन दूध दही को।
आली! म्हाने लागे वृन्दावन नीको।।
रत्न सिंहासन आप विराजे, मुकुट धर्‍यो तुलसी को।
आली! म्हाने लागे वृन्दावन नीको।।
कुञ्जन कुञ्जन रहत राधिका, शब्द सुनत मुरली को।
आली! म्हाने लागे वृन्दावन नीको।।
मीरा के प्रभु गिरिधरनागर, भजन बिना नर फीको।
आली! म्हाने लागे वृन्दावन नीको।।
जय मोर मुकुट पीताम्बरधारी, जय मुरलीधर गोवर्धनधारी।।

श्रीराधावर, कुञ्जबिहारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी।
जय यशोदानन्दन कृष्ण मुरारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी।।
जय गोपीजनवल्लभ वंशीबिहारी, मुरलीधर गोवर्धनधारी।।

अच्युतं, केशवं, राम, नारायणं,
कृष्ण दामोदरं, वासुदेवं भजे।
श्रीधरं, माधवं, गोपिका – वल्लभं,
जानकी नायकं रामचन्द्र भजे।
राधिका नायकं कृष्णचन्द्रं भजे।।

छाँड़ि मन, हरि – विमुखन को संग।
जिनके संग कुबुधि उपजति हैं, परत भजन में भंग।।
कहा होत पय पान कराये, विष नहिं तजत भुजंग।
कागहि कहा कपूर चुगाये, स्वान न्हवाये गंग।।
खरको कहा अरगजा – लेपन, मरकट भूषन अंग।
गजको कहा न्हवाये सरिता, बहुरि घरै खहि छंग।।
पाहन पतित बाँस नहीं बेधत, रीतो करत निषंग।
सूरदास खल कारी कामरि, चढ़त न दूजो रंग।।

जय राधे जय राधे राधे, जय राधे जय श्रीराधे।
जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण, जय कृष्ण जय श्रीकृष्ण।।
श्यामा गौरी नित्यकिशोरी, प्रीतमजोरी श्रीराधे।
रसिक रसीलो छैलछबीलो, गनगरवीलो श्रीकृष्ण।।
रासविहारिनि रसविस्तारिनि, पियउर धारिनि श्रीराधे।
नव – नवरंगी नवलत्रिभंगी, श्यामसुअंगी श्रीकृष्ण।।

प्राणपियारी रूपउजारी, अतिसुकुमारी, श्रीराधे।
नैन मनोहर महामोदकर, सुन्दरवरतर श्रीकृष्ण।।
शोभाश्रेनी मोहामैनी, कोकिलवैनी श्रीराधे।
कीरतिवन्ता कामिनीकन्ता, श्रीभगवन्ता, श्रीकृष्ण।।
चन्दावदनी कुन्दारदनी, शोभासदनी श्रीराधे।
परम उदारा प्रभा अपारा, अतिसुकुमारा श्रीकृष्ण।।
हंसागमनी राजतरमनी, क्रीड़ा कमनी श्रीराधे।
रूपरसाला नयनविशाला, परमकृपाला श्रीकृष्ण।।
कंचनवेली रतिरसरेली, अति अलबेली श्रीराधे।
सब सुख सागर सब गुनआगर, रूप उजागर श्रीकृष्ण।।
रमणीरम्या तरुतरतम्या, गुण अगम्या श्रीराधे।
धामनिवासी प्रभाप्रकाशी, सहज सुहासी श्रीकृष्ण।।
शक्त्याह्लादिनि अतिप्रियवादिनि, उरउन्मादिनि श्रीराधे।
अंग-अंग टोना सरससलोना, सुभगसुठोना श्रीकृष्ण।।
राधानामिनि गुणअभिरामिनि, श्रीहरिप्रियस्वामिनी श्रीराधे।
हरे हरे हरि हरे हरे हरि, हरे हरे हरि श्रीकृष्ण।।

मो सम कौन कुटिल खल कामी।
जिन तनु दियो ताहि बिसरायो, ऐसौ नमक-हरामी।।
भरि भरि उदर विषयकों धायो, जैसे सूकर-ग्रामी।
हरिजन छाँड़ि हरिविमुखन की, निसदिन करत गुलामी।।
पापी कौन बड़ो जग मोते, सब पतितन में नामी।
सूर पतित कौ ठौर कहाँ है, तुम बिन श्रीपति स्वामी।।

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे।।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण रक्ष माम्।
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण पाहि माम्।।
राम राघव राम राघव राम राघव रक्ष माम्।
कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम्।।

पायो जी मैं तो कृष्ण रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।।
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै न कोई चोर न लेवै, दिन–दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाँव खेवटिया सतगुरु, भवसागर तर आयो।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरख हरख जस गायो।।

हे गोविन्द राखो शरण अब तो जीवन हारी।
तुम बिनु मेरी कौन खबर ले गोवर्धन गिरिधारी।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, कुंकुम की छवि न्यारी।
भरी सभा में द्रौपदी ठाड़ी राखो लाज हमारी।।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, चरण कमल बलिहारि।।

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहि पठायो।।
चार पहर बंशीवट भटक्यो, साँझ परे घर आयो।
मैं बालक बहियन को छोटो, छीको केहि विधि पायो।।
ग्वाल बाल सब बैर पड़े हैं, बरबस मुख लपटायो।

तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतिआयो।।
जिय तेरे कछु भेद उपजि है, जान परायो जायो।
यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहि नाच नचायो।।
'सूरदास' तब विहँसि जसोदा, ले उर कण्ठ लगायो।।

सबसे ऊँची प्रेम सगाई।
दुर्योधन के मेवा त्यागे, साग विदुर घर खाई।।
झूठे फल सबरी के खाये, बहु विधि स्वाद बताई।
प्रेम के बस नृप सेवा कीन्हीं, आप बने हरि नाई।।
राजसु यज्ञ युधिष्ठिर कीन्हों, तामें झूँठ उठाई।
प्रेम के बस पारथ रथ हाँक्यों, भूलि गये ठकुराई।।
ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन, गोपिन नाच नचाई।
'सूर' कूर इहि लायक नाहीं, कहाँ लगि करौ बढ़ाई।।

बसो मेरे नयनन में नन्दलाल,
मोहनी मूरति, श्यामरी सूरति, नयना बने विशाल।
अधर सुधारस, मुरली बाजत, उर वैजन्ती माल।।
क्षुद्र घन्टिका कटितट शोभित, नूपुर शब्द रसाल।
मीरा प्रभु सन्तन सुखदाई, भक्त वत्सल गोपाल।।

मेरा मन कृष्णहिं कृष्ण रटै रे।
कृष्ण नाम जप लीजै प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।।
जनम–जनम के खत जु पुराने, नामहिं लेत फटै रे।
कनक कटोरे दूम्रत भरियो, पीवन कौन नटै रे।
मीरा कहे प्रभु हरि अविनाशी, तन मन ताहि पटै रे।।

जो सुख होत गोपाल हिं गाये।
सो नहिं होत किये जप तप के, कोटिक तीरथ न्हाये।।
दिये लेत नहिं चार पदारथ, चरण कमल चित्त लाये।
तीनि लोक तृण सम करि लेखत, नन्दनन्दन उर आये।।
बंशीवट, वृन्दावन, यमुना, तजि वैकुण्ठ से जाये।
सूरदास हरि को सुमिरन करि, बहुरि न भव चलि आये।।

श्याम म्हाने चाकर राखो जी।
गिरधारी लाल चाकर राखो जी।।
चाकर रहसूं बाग लगासूँ, नित उठ दरसण पासूँ।
वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में तेरी लीला गासूँ।।
चाकरी में दरसण पाऊँ, सुमिरण पाऊँ खरची।
भाव भगति चाकरि पाऊँ, तीनू बाताँ सरसी।।
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे, गल वैजन्ती माला।
वृन्दावन में धेनु चराये, मोहन मुरली वाला।।
हरे – हरे नित बाग लगाऊँ, बिच – बिच राखूँ क्यारी।
सांवरिया के दरसण पाऊँ, पहर कुसम्मी साड़ी।।
जोगी आया जोग करन कूँ, तप करणो संन्यासी।
हरि भजन कूँ साधु आया, वृन्दावन के वासी।।
मीरा के प्रभु गहर गम्भीरा, सदा रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हें, प्रेम नदी के तीरा।।

कोई कहियो रे प्रभु के आवन की।
आप न आवें लिख नही भेजें, बान पड़ी ललचावन की।
ये दोऊ नैन कह्यो नहीं मानें, नदिया बहे जैसे सावन की।।

कहा करूँ कछु बस नहीं मेरो, पंख नहीं उड़ जावन की।
'मीरा' के प्रभु कब रे मिलोगे, चेरी भई बिनु दामन की।।

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो।।
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो।
पारस गुण अवगुण नहिं चितवे, कंचन करत खरो।।
एक नदिया एक नार कहावत, मैलो हि नीर भरो।
जब मिलिकै दोउ एक बरन भए, सुरसरि नाम परो।।
एक जीव इक ब्रह्म कहावत, 'सूर' श्याम झगरो।
अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहिं पन जात टरो।।

हरिनाम सुमर सुख पायेगा, मत भूल मानव पछतायेगा।
यह तेरा मेरा झूठा है, तू हरि का है हरि तेरा है।
हरि बोल सही तर जायेगा, मत भूल मानव पछतायेगा।।
सुत मात पिता भ्रता बन्धु, इन सबसे बड़ा करूणा सिन्धु।
जो अन्ति साथ निभायेगा, मत भूल मानव पछतायेगा।।
धन जन यौवन पर फूल रहा, झूठे जीवन पर भूल रहा।
ये फूल तेरा कुम्हलायेगा, मत भूल मानव पछतायेगा।।

अब तो माधव मुझे उबार।
दिवस बीते रैण बीती, बार बार पुकार।।
नाव है मझधार भगवन, तीर कैसे पाये।
घिरि है घनघोर बदली, पार कौन लगाये।।
काम, क्रोध समेत तृष्णा, रही है पल छिन घेर।
नाथ दीनानाथ कृष्ण, मत लगाओ देर।।

दौड़ कर आये बचाने, द्रौपदी की लाज।
द्वार तेरा छोड़कर, किस द्वारे जाऊँ आज।।

कृष्ण नाम तू भज ले मनुआ, भव सागर तर जायेगा।
जो न तूने भजन किया तो, फिर पाछे पछतायेगा।।
क्या लेकर तू आया जगत में, क्या लेकर तू जायेगा।
मुट्ठी बाँधे आया जगत में, हाथ पसारे जायेगा।।
जो न तूने भजन किया तो, फिर पाछे पछतायेगा।
धन दौलत और माल खज़ाना, संग नहीं कुछ जायेगा।।
इस दुनिया से रिशता तेरा, इक दिन सब छुट जायेगा।
दो दिन यहाँ पड़ा है मूरख, फिर सच्चे घर जायेगा।।
जो न तूने भजन किया तो, फिर पीछे पछतायेगा।
मानव जनम मिला है तो, कृष्णनाम का जाप करो।।
चरण भक्ति प्रभु मुझको देकर, मेरा भी उद्धार करो।
मायामोह को छोड़के मूरख, तू ऊपर उठ जायेगा।
जो न तूने भजन किया तो, फिर पीछे पछतायेगा।।

जनम तेरा बातन बीत गयो, रे तूने कबहूँ न कृष्ण कहो।
पाँच बरस का भोला भाला, अब तो बीस भयो,
मकर पच्चीसी माया कारण, देश विदेश गयो।।
रे तूने कबहूँ न कृष्ण कहो।।
तीस बरस की अब मति उपजी, लोभ बढ़े नित नयो,
माया जोड़ी लाख करोड़ी, पर अबहु न तृप्त भयो।
रे तूने कबहूँ न कृष्ण कहो।।
वृद्ध भयो अब आलस उपजी, कफ नित कण्ठ रह्यो,

सत संगति कबहु न कीन्हीं, वृथा जनम गयो।
रे तूने कबहूँ न कृष्ण कहो।।
यह संसार मतलब का लोभी, स्वारथ भरो रच्यो,
कहत सन्तजन सुन मन मूरख, तू क्यों भूल गयो,
जनम तेरा बातन बीत गयो, रे तूने कबहूँ न कृष्ण कहो।।

जय गौरहरि जय गौरहरि जय गौरहरि जय गौरहरि।
जय गौरहरि जय गौरहरि जय गौरहरि जय गौरहरि।।
कीर्त्तनकारी, नदिया बिहारी, स्वयं अवतारी गौरहरि।
भाव–रसधारी, पतित उद्धारी, भव–दुःखहारी गौरहरि।।
रूप रसाला, नयन विशाला, परम कृपाला गौरहरि।
दीन दयाला, प्रणतपाला, शचीर–दुलाला गौरहरि।।

राधे कृष्ण गोविन्द, गोपाल केशव माधव।
गोविन्द केशव माधव, गोपाल केशव माधव।।
कृष्ण–कृष्ण मैं पुकारूँ, तेरे दर के सामने।
दिल तो मेरा हर लिया, गोविन्द–माधव–श्याम ने।।
खम्भे से प्रह्लाद को, तुमने बचाया था प्रभु।
द्रौपदी की लाज राखी, कौरव दल के सामने।।
वंशी वाले तेरी करुणा के भिखारी हैं प्रभु।
तेरी चर्चा हम करेंगे, हर बशर के सामने।।

मोहन प्यारे हो कन्हैया, नाम अनुपम भावे।
नन्द के लाला, यशोदादुलाला, सब कोई जन गावे, कन्हैया।।

राधारमण मदनमोहन प्रभु, यमुना–पुलिनबिहारी।
कृष्ण गोविन्द मुरलीमनोहर, गोवर्धन गिरिधारी, कन्हैया।।
अघ–बक–पूतना–कंस के नाशक, राधाकुण्डतट वनचारी।
व्रजजनरन्जन गोपीप्रमोदन, चंचल नटन, मुरारि कन्हैया।।
मधुर नाम अवतार तुम्हारा, दीनजनन आधार।
नाम–रूप में भेद न कोई, कीजिये कृपा मुरार, कन्हैया।।
ऐसा और नहीं पापी जन, जैसा मैं हूँ नाथ।
निजजन शरण देहो करुणामय, कीजिये मोहे सनाथ।।

हरि मैं दास तुम्हारो।
मुझे न अपने दिल से बिसारो।।
मैं दास तुम्हारो– – – – –
भव जलधारा दुस्तरपारा।
डूब रहा हूँ पार उतारो।।
परम कृपाला, दीन दयाला।
करुणा करी निज नैन निहारो।।
मैं दास तुम्हारो– – – – –
क्षमा कीजिये, निज–सेवा दीजिये।
मेरे अवगुण लाख हजारों।।
पतित का बन्धु तू है, मैं चरणों का चेरी।
दीनजनन भवबन्ध निवारो, मैं दास तुम्हारो।।

भजो रे मन, कृष्ण–नाम सुखदाई।
कृष्ण–नाम के दो अक्षर में, सब सुख शान्ति समाई।।

कृष्ण–नाम लेत मुख से, भवसागर तर जाई।
कृष्ण–नाम भजले मन मूरख, बनत बनत बन जाई।।
कृष्ण–नाम के कारण बन गई, पागल मीराबाई।
गणिका गिद्ध अजामिल तारे, तारे सदन कसाई।।
जूठे बेरन में शबरी के, भर गई कौन मिठाई।
मीठे समझ के ना प्रभु खाये, प्रेम की थी अधिकाई।।

जगत में कोई नहीं तेरा रे।

छाड़ वृथा अभिमान, त्याग दे मेरा–मेरा रे।।
काल कर्म बस जग–सराय, बिच कीन्हा डेरा रे।
इस सराय में सभी मुसफिर, रैन–बसेरा रे।।
जिस तन को तू सदा सँवारे, साँझ–सवेरा रे।
इक दिन मरघट पड़े, भस्म का होकर ढेरा रे।।
मात–पिता, भ्राता, सुत–बान्धव, नारी चेरा रे।
अन्त न होय सहाय, काल जब दैवे घेरा रे।।
जग का सारा भोग सदा, कारन दुःख केरा रे।
भज मन हरि का नाम, पार हो भव–जल बेरा रे।।
दीनदयालु भक्तवत्सल, हरि मालिक तेरा रे।
दीन होय उनके चरणों में, कर ले डेरा रे।।

गोविन्द हरे, गोपाल हरे, जय जय प्रभु दीन दयाल हरे।
नन्दलाल हरे घनश्याम हरे, चित्त चोर यशोदा लाल हरे।।
जगदीश हरे जगन्नाथ हरे, जय मात यशोदा के लाल हरे।।
जय राम हरे जय कृष्ण हरे, जय जय शचीनन्दन गौर हरे।।

राम कृष्ण वासुदेव मदनमोहन हरि हरि।
राम कृष्ण वासुदेव श्रीगोविन्द हरि हरि।
राम कृष्ण वासुदेव गोपीनाथ हरि हरि।
राम कृष्ण वासुदेव नित्यानन्द हरि हरि।
राम कृष्ण वासुदेव श्रीगौरांग हरि हरि।

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषण बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी।।
कह दुई कर जोरि अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता।।
करुणा सुखसागर सब गुण आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकांता।।
ब्रह्माण्ड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै।।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा।।

हरि बोल मेरी रसना घड़ी – घड़ी।
व्यर्थ बिताती है क्यों जीवन मुख मन्दिर में पड़ी – पड़ी।।
हरि बोल. . . . . . .
जाग उठे तेरी ध्वनि सुनकर, इस काया की कड़ी – कड़ी।।
हरि बोल. . . . . . .
नित्य निकाल गोविन्द नाम की, श्वास – श्वास में लड़ी – लड़ी।।
हरि बोल. . . . . . .
बरसा दे प्रभु नाम सुधारस, बिन्दु – बिन्दु से झड़ी – झड़ी।।
हरि बोल. . . . . . .

कृष्ण जिनका नाम है, गोकुल जिनका धाम है,
ऐसे श्रीभगवान को मेरा बारम्बार प्रणाम है।।
यशोदा जिनकी मैया हैं, नन्दजी बपैया हैं,
ऐसे श्रीगोपाल को, बारम्बार प्रणाम है।।
राधा जिनकी प्यारी हैं, कृष्णजी मुरारी हैं,
ऐसे श्रीघनश्याम को, बारम्बार प्रणाम है।।
लूट लूट दधि माखन खायो, ग्वालबाल संग धेनु चरायो,
ऐसे लीलाधाम को, बारम्बार प्रणाम है।।
द्रुपदसुता की लाज बचायो, गज और ग्राह के फन्द छुड़ायो,
ऐसे कृपाधाम को, बारम्बार प्रणाम है।।
कुरु – पाण्डव को युद्ध मचायो, अर्जुन को उपदेश सुनायो,
ऐसे दीन – नाथ को, बारम्बार प्रणाम है।।

करो हरि का भजन प्यारे, उमरिया बीती जाती है।
उमरिया बीती जाती है, उमरिया बीती जाती है।।
करो हरि का . . . . .
पूर्व, शुभ कर्म करि आया, मानुष तन धरणी पर पाया।
फिर विषयों में मन भरमाया, मौत नहीं याद आती है।।
करो हरि का . . . . .
बालापन सब खेल में खोया, यौवन काम क्रोध वश होया।
वृद्ध समय जब आलस आयो, आशा मन में सताती है।।
करो हरि का . . . . .
कुटुम्ब परिवारा, सुत और दारा, स्वपन सम देखो यह जग सारा।
माया मोह का जाल बिछाया, नहीं यह संग जाती है।।
करो हरि का . . . . .
जो हरि चरणन में चित लावे, सो भव सागर से तर जावे।
कृष्णानन्द, सो भक्ति पद पावे, वेद–पुराण सुनाती हैं।।
करो हरि का . . . . .

कृपा करो हम पर श्यामसुन्दर, हे भक्तवत्सल कहाने वाले।
तुम्हीं हो धनु–शर चलाने वाले, तुम्हीं हो मुरली बजाने वाले।।
कृपा करो.........
तुम्हें पुकारा था द्रौपदी ने, बचाया प्रह्लाद को तुम्हीं ने।
तुम्हीं हो खम्बे से आने वाले, तुम्हीं हो साड़ी बढाने वाले।।
कृपा करो.........
तुम्हीं ने व्रज से प्रलय हटाया, समुद्र पे सेतु बाँध बंधाया।
ओ जल पे पत्थर तराने वाले, ओ नख पे गिरिवर उठाने वाले।।
कृपा करो.........

उधर सुदामा गरीब ब्राह्मण, इधर भी था वो भक्त विभीषण।
उसे भी लंका दिलाने वाले, इस पर त्रिलोकी लुटाने वाले।।
कृपा करो.........
हे कौशल्या सुत, यशोदानन्दन, दया करो हे शची के नन्दन।
छुड़ा दो मेरे भी जग के फन्दे, ओ गज के फन्दे छुड़ाने वाले।।
कृपा करो.........

नाचे नन्द दुलाल, व्रज गोपाल,
गोपी किशोर वनमाली।
नाचे कानाइया राखाल, गिरिधारी लाल,
नाचे मदनमोहन चतुराली।
गोपी किशोर वनमाली।।
थइताता थइनाचे यमुनार जल,
माधवी तलाय नाचे व्रजबालार दल।
मयूर मयूरी नाचे, नाचे शुकशारी।
गोपी किशोर वनमाली।।
ललिता बाजाय बाँशी विशाखा मृदंग,
फुल चढ़ाये नाचे सखीविद्या–तुँग।
रास मंचे नाचे मुरारी त्रिभंग,
राजदुलाली नाचे दिया करतालि।
गोपी किशोर वनमाली।।

श्रीगौड़ीय वेदान्त समिति
से प्रकाशित शुद्ध-भक्ति हिन्दी ग्रन्थावली

- जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी
- केसरी-श्रीकेशव-वाणी
- श्रीवामन गोस्वामी पत्रामृत
- श्रीवामन गोस्वामी प्रबन्धावली
- श्रीवामन गोस्वामी उपदेशामृत
- श्रीवामन गोस्वामी हरिकथामृत
- श्रीहरिवासर-व्रतकथा
- भगवान् श्रीनृसिंहदेव
- श्रीमद्भगवद्गीता (पॉकेट संस्करण)
- श्रीगौड़ीय-गीतिगुच्छ
- अर्चन-दीपिका
- चेतना का जागरण (गो-सेवा)
- श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी